मानव जाग
स्वामी प्रेमानन्द, एम. ए.

ॐ माँ

To ~~[illegible]~~
Sri Ma Anandamayee Ashram Library
Varanasi, With Love and regards,

Premanand
30-8-59
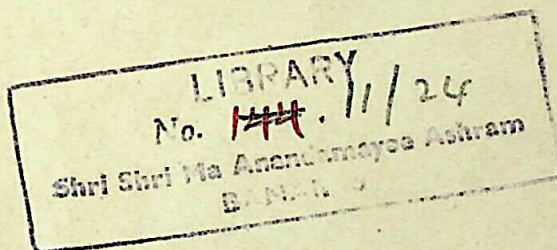
"जिन्दगी में जिन्दगी की शर्त गर पूरी न हो
तो जिन्दगी को जिन्दगी से रूठ जाना चाहिये।"

मानव जाग

स्वामी प्रेमानन्दजी, एम० ए०

संग्रहकर्ता व प्रकाशक
श्रीमती सतीश खुराना

लतीफ़ पर्दों मे अयां थे, मकीं के जलवे मकां से पहले,
मुहब्बत आइना बन चुकी थी, वजूदे बज़्में जहां से पहले।

मुसर्रतें राज़दार ग़म थी, मुसर्रतों में था आल्म पिन्हा,
जभी तो शायद सहने चमन में बहार आई खिज़ां से पहले।

उठा जो मीना बदस्त साकी, रही न ताबे ज़ब्त बाकी,
सभी मयकश पुकार बैठे, यहां से पहले यहां से पहले।

कसम निगाहों फ़रेब दिल की, हमें इस जुस्तजू ने मारा,
दरअस्ल वहीं पर थी हमारी मंजिल, कदम उठा था जहां से पहले।

•

पुस्तक मिलने का पता :
श्री सी० एल० मल्होत्रा
१-१६-अजमेर रोड,
आगरा छावनी

•

मूल्य : ३.००

मुद्रक : श्री गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

• • •

यह संग्रह स्वामी प्रेमानन्दजी के उन प्रवचनों
का है जो १६५८ में उदयपुर, अजमेर
और इन्दौर में दिए गए।

• • •

जाग प्यारे नींद से जाग
अब तो देख ले घर में तेरे
काम क्रोध की लगी है आग
आँख क्या तेरी लगी
यह ज़हान सो गया
यह ज़मीन सो गई
यह आस्मां सो गया
लुट गया तेरे जीवन का सुहाग
जाग प्यारे नींद से जाग
अब तो प्यारे होश में आजा
जीवन में कुछ अमल कमाजा
जाग जाय फिर तेरे भाग
जाग प्यारे नींद से जाग

स्वामी प्रेमानन्द जी, एम० ए०

"मेरे लिए"

इस अमूल्य कोष के अमूल्य रत्न मेरे लिए हैं—मेरे हृदय मन्दिर को सजाने के लिए ही हैं उस मन्दिर में जिसमें मेरा प्यारा राम वह बादशाहों का बादशाह वह शहनशाहों का शहनशाह आकर विराजमान होगा—यह एक-एक रत्न मेरे दिल की वासनाओं और तृष्णाओं को मिटाता हुआ चला जायगा और एक दिन वह आयगा जब मेरा हृदय मन्दिर मेरे राम के आने के योग्य हो जायगा—वह दिन ज़रूर आयगा जब मेरा प्रीतम मेरे हृदय मन्दिर में आने के लिए व्याकुल हो उठेगा—मेरे हृदय के मन्दिर की सजावट को देखकर वह तड़प उठेगा मेरे हृदय में आने को—यह अमूल्य रत्न मेरे हृदयरूपी मन्दिर में वह तड़प पैदा कर देंगे कि उसके आगे दुनिया के खज़ानों और संसार के ऐश्वर्य की चमक भी मन्द पड़ जायगी—और वह पर्दा जो मेरे और मेरे राम के बीच में आ गया था फट जायगा और मेरा प्रीतम मेरे हृदय में आकर सदा के लिए समा जायगा।

स्वामीजी का भी तो यही उपदेश है "ओ मानव तू अपने अन्दर वह तड़प पैदा कर कि भगवान भी तेरे पास आने के लिए तड़प उठे अगर तू ही उसके लिए तड़पता रह गया तो उसकी उतनी क़ीमत नहीं; मज़ा तो तब है जब वह भगवान तुझसे खुद अन्दर से कहे कि तूने अपना मन मन्दिर इतना सुन्दर सज़ा लिया है कि मैं यहाँ बैठने को बेचैन हूँ।"

इन अमूल्य रत्नों का प्रकाश मेरे इस दृढ़ निश्चय का फल है कि संसार में प्रत्येक मानव को एक-न-एक दिन उस प्यारे की जात में समा जाना है आज या कल, कल या बसों के बाद—इस जन्म में या १० जन्मों के बाद, आख़िर वही मानव को पहुँचना है—चाहे तो इन्सान

स्वयं अपने स्वरूप, को पहिचान कर उस अपने प्यारे में जा मिले नहीं तो यह दुःख के थपेड़े यह संसार की ठोकरें एक-न-एक दिन उसे होश दिला ही देगी—

मैं तो यही समझती हूँ कि इन अमूल्य रत्नों से यदि मैंने अपने हृदय मन्दिर को ही उस प्यारे राम के योग्य बना लिया तो वही मेरे जीवन की सफलता होगी। इसलिए जितना भी समय जितना भी परिश्रम मैंने इन अमूल्य रत्नों के संग्रह करने में किया वह सब अपने ही लिए किया—इसीलिए यह सब मेरे लिए हैं पर मुझ तक ही सीमित नहीं क्योंकि राम सब का है। और यह वाणी भी उसी की है जिसमें प्रेम और आनन्द भरा हुआ है क्योंकि यह 'प्रेमानन्द' के मुखवृन्द से निकली हुई है और अर्पित है।

गुरुपूर्णिमा
२०-७-५६

"उन्हीं के चरणों में"
—सतीश

प्रेम-प्रसाद

प्रत्येक जनीमत् प्राणी का मुख्य एवं चरम अभिप्रेत पदार्थ 'सुख की प्राप्ति' एवं 'दुःख की निवृत्ति' है। इसी बात को हम सरल शब्दों में कह सकते हैं कि, 'भगवान् का साक्षात्कार'।

यह संसार अनित्य और अनादि है। सूर्य, चन्द्र, समुद्र, नदी, पहाड़ आदि पिपीलिका से लेकर स्तम्भ-पर्यन्त निखिल प्रपंच माया का विस्तार है। उसका एक अधिष्ठाता है। वही सर्व का अधिष्ठान है। 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' समस्त प्रपंच का वह अधिष्ठानभूत है। 'अक्षरात्सम्भवतीह विश्वम्' उसी से यह समस्त विश्व प्राणित होता है। जो चीज़ जहाँ से निकलती है उसको वहीं शान्ति प्राप्त होती है। विलग रहने पर दुःख होता है। श्रुति में आया है—**"यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय। तथा विद्वान्नाम रूपाद्विमुक्तः परात् परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।"** इसका भाव यह है—जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ अपना-अपना नाम-रूप छोड़कर शान्ति के केन्द्रभूत समुद्र में विलीन हो जाती हैं तब उनको वास्तविक शान्ति का लाभ होता है। उसी प्रकार जीव जब नाम-रूप जञ्जाल से मुक्त होकर परब्रह्म परमात्मा, जो अपना केन्द्रभूत है, प्राप्त कर परं निश्चल शान्ति का अनुभव करता है। श्रीमद्गीता भी यही कहती है—**"स शान्तिमाप्नोति न कामकामी"** नाना प्रकार के क्षणिक सुखप्रद लौकिक पदार्थों को चाहने वाला मानव परमार्थ शान्ति का आस्वादन नहीं कर सकता। श्रुति का उद्घोष भी यही है। देखिये—**"तमेवैकं जानय आत्मानमन्यावाचो विमुञ्चय अमृतस्यैष सेतुः"** उसी एक, सब का अधिष्ठानभूत, जो सबका अपना आप है। परन्तु दूध में मक्खन की तरह

और काष्ठ में अनल की तरह नहीं दिखाई देता। उसी का साक्षात्कार करना चाहिए। इससे अतिरिक्त सब तुच्छ, दुःखप्रद एवं क्षणिक होने से संत्याज्य हैं। कभी भी उनकी चाहना नहीं करनी चाहिए। वही एक अमृत का सेतु अर्थात् संसार-समुद्र से निकालकर अमृतस्वरूप परमानन्द के केन्द्रभूत सच्ची शान्ति के आस्पद हैं। उसी के जानने का प्रयास करना मानव-जीवन का सफल प्रयास और अभीष्ट अभिप्रेत है।

जिस आत्मा को समझना है, और जो अपना आप है, वह अत्यन्त कठिन एवं सूक्ष्मातिसूक्ष्म पदार्थ है। श्रुति उसके स्वरूप को बताती है—**"अणोरणीयान् महतो महीयान्"** अर्थात् वह आत्मा अणु से भी अणु और महान् से भी महान्, सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी है। ऐसे सूक्ष्म आत्मा का ज्ञान सांसारिक विषयों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियों की पहुँच वहाँ क्योंकर हो सकती है। ऐसे सूक्ष्म आत्मा का ज्ञान आत्मज्ञानी ही दे सकते हैं।

यह जीव अपने नाना जन्म-जन्मान्तरों के मलिन संस्कारों से दबा हुआ है। अज्ञान एवं अविद्या से आवृत हो रहा है। अज्ञान एवं अन्धकार की निवृत्ति तो ज्ञान एवं प्रकाश से ही होगी। इस कार्य को अनुभवी, ब्रह्मवेत्ता, महात्मजन ही सरल साधनों एवं सुगम उपायों द्वारा जिज्ञासु साधकों को बताकर उनके अज्ञान की निवृत्ति कर सकने में समर्थ हो सकते हैं। **"नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"**।

अतः मानव का कर्तव्य है कि वह 'वेदान्त' जो वेद का चरम ज्ञान उसको ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों के चरणों में जाकर समझने का प्रयत्न करे। निविड़ अन्धकार को तेज प्रकाशपुञ्ज हटा सकता है और अज्ञान की परम्परा को निर्मल ज्ञान का दिव्य आलोक निवृत्त कर सकता है और वह ज्ञान वेदान्त-विचार से ही साध्य है। इसीलिए कहा है—**"आसुप्तेरामृतेश्चैव (कालं) नयेद् वेदान्तचिन्तया।"** वेदान्त ही एक ऐसा विषय है जो समस्त प्राणिमात्र को सुखप्रद, हितकर एवं शाश्वत शान्ति प्रदान कर त्रिविध ताप का अपाकरण कर सकता है।

श्रीमान् १०८ स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज एम० ए० का प्रशंसार्ह

सत्प्रयास सर्वथा श्लाघनीय है। साधक प्रेमी भक्तों की सत्प्रेरणा एवं सद् आग्रह से 'प्रवचन-संग्रह' लिपिबद्ध किया गया है।

इसमें समय-समय पर 'वेदान्त' के विषय में दिये हुए बहुमूल्य प्रवचनों का अपूर्व संग्रह है। साधक-जिज्ञासुओं के कल्याण के लिए अपने ढंग का एक अनोखा मार्ग ज्ञानार्जन का ढूँढ़ निकाला है। कहीं-कहीं रोचक, शिक्षाप्रद उपदेशात्मक संवाद एवं शास्त्रीय आख्यायिकाओं द्वारा वेदान्त की कठिन-से-कठिन गुत्थियों को सुलझाने का सत्प्रयास किया है। वस्तुतः स्तुत्य है। इस अपने अपूर्व 'संग्रह' द्वारा साधक-प्रेमी एवं वेदान्त तत्त्व-जिज्ञासुओं के लिए अपूर्व निधि प्रदान कर जिज्ञासु जन-मानस में तत्त्व-जिज्ञासा के क्लिष्ट मार्ग को सरस एवं सुगम कर दिया है। जैसे कि कठोपनिषद में आया है—**"क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति"** आत्मप्राप्ति एवं आत्मसाक्षात्कार का मार्ग सबसे सूक्ष्म और कठिन बतलाया गया है परन्तु ऐसे दुस्तर मार्ग को भी आपने सरल-सुगम उपाय बताकर कठिन मार्ग को भी सुगम कर देने में कमी नहीं की।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रेम-पीयूष 'संग्रह' साधकजन हितकर—चरित्र-निर्माण एवं ब्रह्मात्मैक्य ज्ञान-विज्ञान में परम सहायक होगा।

अन्त में आत्मज्ञान के परम प्रेमी जिज्ञासु-भक्तजनों से भी अनुरोध करूँगा कि महात्मा के अनुभव से आप्लावित इस पीयूष संग्रह को अपनाकर अपने अमूल्य जीवन के चरम एवं परम अभिप्रेत को समझने का भरसक प्रयास करेंगे। इसी में शाश्वत शान्ति एवं परमानन्द की प्राप्ति निहित है।

—पूर्णानन्द

क्या कहूं

जिन्दगी का बज रहा यह जो हरदम साज है
इस साज की हर तार में सत्गुरु की ही आवाज है

सब प्रेमी सज्जनों के आग्रह से और उनके पुरुषार्थ से और सन्तों की महान् कृपा से प्रवचनों का यह संग्रह आपके हाथों में आ रहा है। इस संग्रह से यदि किसी भी मानव की नींद खुल गई तो यह पुरुषार्थ सफल होगा। समय-समय पर अपने जीवन के अनुभवों की यह कहानी जिसे मानव-जीवन की व्याख्या भी कहा जा सकता है अगर किसी के हृदय पर भी अपना असर कर गई और कोई भी पाठक यदि इसको पढ़कर अपनी मंज़िल की ओर चल पड़ा तो यह ही इस कहानी को अति सुन्दर बना देगा। मुझे सिखाना नहीं, मुझे कुछ पढ़ाना नहीं, केवल जगाना है। कुछ मिलाना नहीं, मिले हुए की याद दिलानी है।

I come not to teach but just to awaken.

क्योंकि जीवन में ही सब कुछ है। वास्तविक शान्ति, वास्तविक आनन्द हमारे से जुदा नहीं है। जब हम अपने आपको दुखी मान रहे हैं तब भी सुख हम से जुदा नहीं है। जब प्यारे को दूर मानते हैं तब भी वह क्षण-भर के लिए भी हमसे अलग नहीं है। वेदान्त की यही टन्कार है। उठो और जागो, उठो और जागो। **Arise awake, arise awake.** बस केवल जागने की जरूरत है, सब कुछ पास में है सिर्फ मोह-निद्रा से जागना है। प्रभू से प्रार्थना है कि वह पाठकों के हृदय में अपने स्वरूप को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करे और जिन प्रेमी सजन या देवियों ने इस पुरुषार्थ को किया है उनके हृदयों में अपने स्वरूप का ध्यान उत्पन्न

होंगे। ये आपकी ही कहानी है।

कब किसकी कहानी मैं किसको सुनाने जाता हूँ
तुम्हारी ही कहानी है तुमको सुनाने आता हूँ

मैं पूज्य स्वामी पूर्णानन्दजी का भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने अपना आशीर्वाद भेजकर प्रकाशकों का उत्साह बढ़ाया है।

आपका
प्रेमानन्द

एक

ओम् ओम् ओम्
तेरी ठोकर से ऐ दाता, मुकद्दर को जगाने आया हूँ।
पीकर के जाम उल्फ़त का, मैं खुद को भुलाने आया हूँ।।
लगा रखा है सीने से, गुनाहों की पूँजी को।
तेरे अबरे रहमत को मै आज आज़माने आया हूँ।।
उठा दे रुख से अब तो परदा यह शर्म का।
तोड़कर रिश्ता जिस्म का तुझमें समाने आया हूँ।।
काटकर सब बंदिशें और फाड़कर परदे सभी।
तेरे दर पर सजदा को, मैं सिर झुकाने आया हूँ।।

प्रेम की आत्मा में प्यारे प्रीतम के रूप में विराजमान, पूजनीय संत सज्जन, माताओ और देवियो !

एक भजन

इसी को क्या जीवन कहते हैं, इसी को क्या जीवन कहते हैं।
ज़रा ध्यान देना इसकी एक-एक लाइन पर।
इसी को क्या जीवन कहते हैं, इसी को जीवन कहते हैं।
हैं अभी यहाँ कि चले वहाँ, है अभी यहाँ फिर चले वहां।।

है नित नई चाह नित नई राह, नित नई चाह······

जो रंग बदलता पल-पल में,
उसको अपना मन कहते हैं।
इसी को क्या जीवन कहते हैं।
इस हाथ लिया उस हाथ दिया !
कुछ पाया भी कुछ खोया भी !
मतलब से मतलब हो जिसका,
जीवन का साधन कहते हैं।
इसी को क्या जीवन कहते हैं।
कुछ प्यार किया कुछ वैर किया,
कुछ सुख पाया कुछ दुःख आया।
है करनी अपनी जिसको हम,
होनी का कारण कहते हैं।
इसी को क्या जीवन कहते हैं।
क्या है अपना क्या बेगाना,
क्या बुरा हुआ क्या भला हुआ।
जो इतना भी सुलझा न सकें,
जीवन की उलझन कहते हैं।
क्या इसी को जीवन कहते हैं।
कुछ जीत मिले कुछ हार मिले,
कुछ मान मिला अपमान मिला।
जग की इतनी-सी पूँजी को,
हम जीवन का धन कहते हैं।
इसी को क्या जीवन कहते हैं।

अब आप ध्यान देना इस लाइन पर—

मैं कौन हूँ क्या, जिसने समझा,
जिसने सोचा मुझमें मैं क्या।
जो लीन हुआ इस चिंतन में,
इसको सतचिंतन कहते हैं।
इसको क्या जीवन कहते हैं।

फिर जीवन किसको कहते हैं ?

जो काम किया निष्काम किया।
मन में प्रभु का नित प्रेम रहा।
'प्रेमानन्द' भेद जो पाय लिया,
उसको ही जीवन कहते हैं।
इसी को क्या जीवन कहते हैं।

प्यारो, हमारा प्रसंग यह है कि "मानव दुखी क्यों है, सुख चाहते हुए भी ? मानव बेचैन क्यों है, चैन चाहते हुए भी ?" क्योंकि वे कहते हैं, "कल कल करके नित कलपाये, कल कल करके नित कलपाये।" कल के कई अर्थ होते हैं—

ध्यान देना—"कल कहते हैं 'कल' आने वाला। कल पाना कहते हैं चैन को पाना—शान्ति पाना। कलपना—परेशान होना। कलपाना—किसी को तकलीफ देना, कल पाना—चैन पाना, शान्ति पाना और कल आना—कल की आने वाली वस्तु। कल के कई अर्थ हैं, तो

"कल कल करके नित कलपाये"

कल कल करते हुए हमेशा कलपते रहे 'कल कल करके नित कलपाये, कल पाये' कल तो आया 'कल पाये किन्तु न

कलपाये कल कल करके नित कलपाये, कल पाये किन्तु न कलपाये' कहते हैं कल तो आया किन्तु चैन न आया 'कल कल करके नित कलपाये, कलपाये किन्तु न कलपाये' तो कहते हैं— कब चैन मिलेगा। "कल पायेगा, जब आने लगे कुछ ध्यान तुम्हारे चरणों में।

"मेरा मन चंचल है भारी तुम कृपा डोर सुन्दर प्यारी"

कहते हैं—मेरा मन चंचल है और तुम्हारी कृपा की रस्सी बहुत सुन्दर है।

"मेरा मन चंचल है भारी, तुम कृपा डोर सुन्दर प्यारी।"

बांधो—इसके बंधन का है स्थान तुम्हारे चरणों में।

बांधो—इसके बंधन का है स्थान तुम्हारे चरणों में,— तो हमने जीवन के अन्दर देखा कि हम सुख चाहते हुए भी दुखी हो रहे हैं, शान्ति चाहते हुए भी अशान्त हो रहे हैं, जीवन चाहते हुए भी मौत के मुख में जा रहे हैं और ज़िन्दगी के अन्दर फूल चाहते हुए कांटे से परेशान हैं और यहाँ तक कि धन चाहते हुए निर्धन हो रहे हैं। हर इन्सान धन चाहता है। हर इंसान के अन्दर धन की कामना, जीवन के अन्दर जीने की कामना, जीवन के अन्दर स्वतन्त्रता की कामना है क्योंकि मैंने आपसे भी आगे कहा था कि पाँच इच्छाएँ इंसान के अन्दर रहती हैं, जो हर समय समाई रहती हैं। बाकी इच्छाएँ वक्त पर आती हैं, वक्त पर चली जाती हैं और वे पाँच इच्छाएँ कौनसी हैं मैं ज़रा एक मिनट में उनको कहे देता हूँ। पहली इच्छा जीने की। जीने की इच्छा। क्यों जीना चाहते हो? कुछ उत्तर है इसका? कोई इसका उत्तर है कि

क्यों जीना चाहते हो ? हर इंसान जीना चाहता है। आप कहेंगे, जो खुदकशी करता है, आत्महत्या करता है वह तो नहीं जीना चाहता है। लेकिन प्यारो, याद रखना कि जीना वह भी चाहता है, लेकिन मरने के लिए मजबूर हो जाता है। हर इन्सान जीना चाहता है। उसके बाद ? हर इन्सान स्वतन्त्रता चाहता है। आज़ादी कौन नहीं चाहता ? यहाँ तक कि Plants भी। मैडीकल साइंस कहती है कि Plants भी, पौधे भी अगर उनको आज़ादी से नहीं रखा जाय, तो वे बंद हो जाते हैं। वे खिलते नहीं हैं। उनमें शक्ति नहीं रहती। जिसको बंधन में बाँध लिया जाता है वह शक्तिक्षीण हो जाता है। जीवन के अन्दर जितना कुछ कर रहे हो, सब बंधन से मुक्त होने के लिए जीवन के अन्दर। दुनिया में आजादी के लिए लड़ाइयाँ होती हैं। ज़िन्दगी की सारी जद्दोजहद जो है, जिन्दगी की सारी लड़ाई जो है, यह जीवन का सारा युद्ध जो है, 'आजादी' पाने के लिए। बंधनों से आजादी, तृष्णाओं, वासनाओं से आजादी, देह से आजादी, हर चीज से आजादी, जिसको कि हम मोक्ष या मुक्ति कहते हैं। तो इसलिए, हर इंसान आजादी चाहता है। आपको शायद याद होगा—मैंने बतलाया था कि सीता ने एक छोटा-सा तोता पाला हुआ था। सोने के पिंजरे में उसे रखा हुआ था। बड़े आलीशान उसको खाने को मेवे देती थी। एक दिन सीता कमरा साफ कर रही थी, तो तोता कहता है कि तेरे और राजा जनक के पदार्थों पर बार-बार धिक्कार है। उसने कहा—हे तोते, क्या कहता है मूरख कहीं के ! तू अगर किसी गरीब के घर में होता तो लोहे

के पिंजड़े में होता। तू कहीं दूसरी जगह होता, तो ज्यादा परेशान होता। तुझे साने के पिंजड़े में रखा हुआ है, बढ़िया से बढ़िया मेवे देती हूँ। तोते ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया जो एक अंग्रेजी की लाइन में बड़ा सुन्दर लिखा गया है—

The goldness of the cage can not take away the cageness of the cage.

कहता है कि पिंजड़ा सोने का ज़रूर है लेकिन मैं तो बन्धन में हूँ। सोने की बेड़ी पहन ली, चाहे लोहे की। सोने की बेड़ी ज्यादा लुभावनी होती है, लोहे की बेड़ी छोड़ने का कभी ख्याल भी आ जाय? लेकिन सोने की बेड़ी देखकर तो हर इन्सान वैसे ही मोहित हो जाता है। भले ही बेड़ी हो, पर है तो सोना। तो ज़िन्दगी के अन्दर मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हर इन्सान आज़ादी चाहता है। आगे बढ़िये—हर इन्सान सुख चाहता है। कौन सुख के लिए मारा-मारा नहीं फिर रहा? हर इन्सान सुख के पीछे भाग रहा है। हर एक के अन्दर चाहना है लेकिन क्यों सुख चाहते हो? इसका कोई जवाब नहीं, क्योंकि यह तुम्हारा स्वभाव है। आगे चलिए—हर इन्सान के अन्दर ज्ञान की इच्छा पैदा होती है, जानने की इच्छा। छोटा बच्चा भी जब बाप की उंगली पकड़ कर बाजार में जाता है, बाजार के अन्दर पड़ी हुई चीजों को देखता है, तो कहता है—डेडी, यह क्या है? डेडी, यह क्या है? डेडी, यह क्या है? क्यों? जानने की इच्छा है। किसी के अन्दर वह छिपी रहती है किसी के अन्दर वह जाग्रत हो जाती है, लेकिन हर इन्सान के अन्दर स्वाभाविक इच्छा है, ज्ञान को

पाने की। और पांचवीं इच्छा। सबसे प्रबल इच्छा इन्सान के अन्दर प्रभुता की, प्रभु की नहीं।

प्रभुता को सब कोई चहे, प्रभु को चहे न कोय।
जो प्रभु को चह लेवे तो, प्रभुता चेरी होय ॥

हर इन्सान के अन्दर यह प्रभुता पाने की इच्छा, तो भई तुम्हारे अन्दर में बाकी इच्छाएँ वक्त पर पैदा होती हैं। इस बच्चे को कोई इच्छा नहीं कि धन क्या वस्तु है। बच्चे के लिए भोग की कोई कीमत नहीं। बच्चे के लिए विषय-वासना की कोई कीमत नहीं। लेकिन ये स्वाभाविक इच्छाएँ बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी के अन्दर स्वाभाविक समाई रहती हैं। क्यों ? क्यों भला ? तुम जीना क्यों चाहते हो ? क्योंकि जीना तुम्हारा स्वभाव है। मौत तुम्हारे स्वभाव के विरुद्ध है। जीना क्यों चाहते हो ? क्योंकि अमरता तुम्हारे स्वभाव में है। मौत तुमने मान रखी है। आजादी क्यों चाहते हो ? क्योंकि आजादी तुम्हारा स्वभाव है, स्वतन्त्रता तुम्हारा स्वभाव है, बन्धन तुमने मान रखा है। सुख क्यों चाहते हो ? क्योंकि सुख तुम्हारे स्वभाव में है, दुःख तुमने मान रखा है। ज्ञान क्यों चाहते हो ? क्योंकि ज्ञान तुम्हारा स्वरूप है, अज्ञान तुमने मान रखा है। और तुम प्रभुता क्यों चाहते हो ? क्योंकि तुम देह के ठाकुर हो, स्वामी हो, प्रभु हो अपने देह के और तुमने दासता मान रखी है—तो फिर क्या ज्ञान पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ेगा ? अज्ञान मिटाना पड़ेगा—बस ज्ञान पाने के लिए, अमरता पाने के लिए कुछ खेल करना पड़ेगा ? जप, तप, यज्ञ करना पड़ेगा ? नहीं ! मौत का भय मिटाना होगा। सुख पाने के

लिए कुछ करना पड़ेगा ? नहीं—दुःख मिटाना होगा। इसीलिए मैंने बार-बार आपसे कहा कि सुख पाने में आजाद नहीं हो, दुःख मिटाने में स्वतन्त्र हो क्योंकि दुःख तुमने बनाया हुआ है और सुख तुम्हारा स्वभाव है। स्वभाव मिट नहीं सकता। भगवान् कृष्ण गीता में कहते हैं—अमरता तुम्हारी मिट नहीं सकती, मौत आ सकती है। रामतीर्थ कहते हैं—Death will meet death if it intends to come to me. मौत को मौत आ जायगी। अगर मेरे पास आने का ख्याल करें तो मौत को मौत आ सकती है। जिन्दगी को जिन्दगी क्या मिलेगी, वह जिन्दगी को जिन्दगी तो मिली ही हुई है। मौत को मौत दिला दो। दुःख को दुखी कर दो। चिन्ता को चिन्तित कर दो। मैं सीलोन या लंका में गया और वहाँ नैवी (Navy) के अफसरों के अन्दर मेरा भाषण हो रहा था तो नैवी के कमाण्डर मिस्टर Johnson खड़े होकर कहते हैं—May I ask you, have you got any worry ? स्वामीजी, मैं आपसे पूछता हूँ—क्या आपको कोई चिन्ता है। मैंने हँसकर कहा—Mr. Johnson, I regret to say that worry is worried about me. मैंने हँसते हुए कहा कि मिस्टर जॉनसन, मुझे अत्यन्त अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि चिन्ता को मेरी चिन्ता लगी हुई है, क्योंकि वह मेरे पास नहीं आ सकती। तो ऐसा जीवन बना लो कि चिन्ता तुम्हारी चिन्ता में घुलघुलाकर चिता में चली जाय। प्रश्न वही है, ध्यान देना कि चिन्ता न करने योग्य की चिन्ता करते हैं और चिन्तन करने योग्य को

त्याग दिया है, याद है ना यह लाइन ? जरा एक बार सब बोलना आज। भगवान् हँसते हैं किसलिए ? चिन्ता न करने योग्य की चिन्ता करते हैं, और चिन्तन करने योग्य को त्याग दिया है। याद है न यह लाइन ? जरा एक बार सब बोलना आज। भगवान् हँसते हैं किसलिए ? चिन्ता न करने योग्य की चिन्ता करते हैं इसलिए। और चिन्तन करने योग्य को त्याग दिया है इसलिए। तो इसलिए ऐसा सुन्दर जीवन बनाओ कि चिन्ता को तुम्हारी चिन्ता होकर चिन्ता चिता में जल जाय। कहते हैं—

"दुनिया है एक पुतली और नचा रहा हूँ मैं।"

यह तुम्हारी अपनी दुनिया तुम अपने हाथों से नचा रहे हो। यह संसार तो नाचता है भगवान् के हाथों में और तुम्हारा संसार नाचता है तुम्हारे हाथों में। और यह तुम्हारी इच्छा है कि तुम उस संसार के हाथों में नाच लो या संसार को नचा लो। तो—

"दुनिया है एक पुतली और मैं नचा रहा हूँ।
खुद कर रहा हूँ करतब और सबको दिखा रहा हूँ।।
सर फट गया है गम का, खा खा के मुझसे टक्कर।।"

लोगों का सर फटता है किससे ? गम खा-खा के, चिन्ता खा-खा के।

"सर फट गया है गम का खा खा के मुझसे टक्कर।
अब गाड़ने को इसको तुरबत बना रहा हूँ।।"

कहता है कि बस अब इसकी कब्र बना दूँ, ताकि यह उठे ही नहीं। जिन्दगी को ऐसी जिन्दगी बना लो, जीवन को

ऐसा जीवन बना लो कि जिसको तुम मर्ज समझे हुए हो वह तुम्हारी दवा बन जाय।

"हमें देखो हम क्या से क्या हो गये हैं।
मरज से गरज अब दवा हो गये हैं।।"

कहते हैं कि हम तो स्वयं मरीज थे, स्वयं बीमारी से बीमार थे। अब दूसरों की दवाई करते हैं। स्वयं बीमार थे, अब disease से medicine बन गये हैं। कहते हैं—

"हमें देखो हम क्या से क्या हो गये हैं।
मरज से गरज अब दवा हो गये हैं।।
नहीं कोशिश में शक मेरी जान असला।
पहले नाखुदा थे, अब खुदा हो गये हैं।।
गम की झड़ी गई भाग दुम दबाकर।
जुदाई के बादल हवा हो गये हैं।।
दुआ का असर उल्टा सीधा हुआ है।
जो पहले बेवफा थे, बावफा हो गई हैं।।"

जिसे ईद का चाँद कहते थे हम वो। प्रभु को कहते हैं कि तू ईद का चाँद है। कभी नजर नहीं आता। अब प्रभु हमसे कहता है—

"जिसे ईद का चाँद कहते थे अब वो,
हमें कहते हैं आप बादशाह हो गये हैं।।
न डूबेगी बाला ये किश्ती तुम्हारी।"

कहते हैं दुनिया वालो घबराओ मत। अब तुम्हारी किश्ती नहीं डूबने की।

"न डूबेगी वाली ये किश्ती तुम्हारी।
प्रेमानन्द अब नाखुदा हो गये हैं।।"

कहते हैं अब तो वे केवट हो गये हैं। अब तो केवट किश्ती चलाने लग गये हैं। तो जिन्दगी को हमें पहुँचाना कहाँ है ? जहाँ चिन्ता हमारी चिन्ता करने लगे। जहाँ दुख भी हमसे दुखी होने लगे। लेकिन यह थोड़ा शब्द गलत है जो मैं कहता हूँ कि दुख भी दुखी होने लगे; क्योंकि प्यार तो वह है, जहाँ दुख भी दुखी न हों। मंजिल तो वह है जहाँ दुख भी परेशान न हो। जहाँ सुख और दुख, जहाँ जीना और मरना, जहाँ आना और जाना, जहाँ मौत और जिन्दगी, जहाँ फ़ूल और काँटा, एक समान हमारे जीवन के अन्दर अपनी-अपनी स्टेज पर आते रहे और चलते रहे। मैं तो सूर्य की तरह अपनी जगह पर चमकता रहूँ। बादल आयें और चले जायें।

If misery comes, I know it is transitary, therefore it must go, it must die.

अगर मुसीबत आये, मैं जानता हूँ, यह क्षणिक है। इसलिए चली जायगी।

If pleasure comes, I know, it is transitary, therefore it must die.

अगर खुशी आती है तो मैं जानता हूँ यह क्षणिक है, इसलिए यह चली जायगी। क्यों ?—क्योंकि ये सब चीजें बदलने वाली हैं और इन सब बदलने वाली चीजों के अन्दर एक मैं हूँ जो नहीं बदलता। बतलाओ ? बदला

क्या मैं ?—जब बच्चा छोटा था कहता था मैं हूँ, बड़ा हुआ कहता है 'मैं हूँ', जवान हुआ कहता है 'मैं हूँ', बूढ़ा हो गया कहता है 'मैं हूँ'। पच्चीस वर्ष बाद मित्र से मिला, मित्र से कहा मैं वही हूँ भाई। अरे तुम्हारी देह बदल गई, तुम्हारी काया बदल गई, तुम्हारा रंग-रूप बदल गया, क्योंकि साइंस ने अब सिद्ध कर दिया कि सात साल के बाद शरीर में इतनी तबदीली आ जाती है कि एक बूंद भी पुराने खून की बाकी नहीं रहती, सब नया हो जाता है। तो सात साल के बाद सारा शरीर बदल गया। शरीर की नाड़ी-नाड़ी बदल गई, शरीर की नाड़ियों में बहने वाला रक्त बदल गया, लेकिन तू नहीं बदला। मैंने कहा 'मैं हूँ'— मौत से एक मिनट पहले भी कह रहा हूँ, कि 'मैं हूँ' वो मैं हूँ। वो मैं हूँ को पहचानो, वो मैं हूँ को समझो, कि वो मैं क्या है ?

अगर तू देह होता तो तू कहता कि मैं तो बदल गया, अगर यह तुम्हारी मौत होती तो तू कहता नहीं-नहीं—तेरी मौत नहीं, मौत तेरी देह की। मौत तेरी देह की भी नहीं भाई, जैसा कि मैंने पहले दिन भी कहा था कि—

Composition of certain elements is life & de-composition of same elements is death.

"कुछ अनासर का जहूरे तरतीब" इसको जिन्दगी कहते हैं, जिन्दगी क्या है ? "कुछ अनासर का जहूरे तरतीब।" मौत क्या है ? किसी अजजा का परेशान होना। कुछ तत्वों का मिल जाना इसको जिन्दगी कहते हैं, तत्वों का बिखर

जाना मौत कहलाता है। तो फिर, इन चीजों की चिन्ता करना, इन भोगों की चिन्ता करना ! ये तो स्वयं ही आते रहेंगे, स्वयं ही साथ में मिलते रहेंगे। लेकिन जीवन के अन्दर हमें चिन्ता को छोड़कर चिन्तन को अपनाना होगा, और चिन्तन में भी इतनी लीनता करनी होगी कि अपना कोई अस्तित्व बाकी न रहे। तो फिर, क्या होता है जिन्दगी के अन्दर ? फिर ये भूखऔर प्यास, सर्दी और गर्मी, सुख और दुःख, जीवन और मरण, ये अपने वक्त पर आते हैं। लेकिन जैसा कि मैंने कहा था No Admission का बोर्ड देखकर चले जाते हैं, देख लेते हैं कि वहाँ बोर्ड लगा हुआ है कि अन्दर जाने की इजाजत नहीं है। देखा न तुमने कोई दफ्तरों के अन्दर, डाकखाने के ऊपर भी लिखा रहता है कि अन्दर आने की इजाजत नहीं है। तो अपने हृदय के ऊपर चिन्तन इतना जमा लो कि किसी दूसरी चीज को आने की इजाजत न हो।

"अल विदा है मर्जे दुनिया, अल विदा है जिस्मो जाँ।"

दुनिया के मर्जो, दुनिया के विषयो, दुनिया के भोगो, अब मुझसे छुट्टी लो। कहता है, देह की कैद, ए मेरी जान की कैद, अब तुम भी मेरे से छुट्टी ले लो। ए सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, अब तुम भी चलो। कहता है कि मेरा हृदय कोई कबूतरखाना नहीं है कि जो चाहे आकर चुग ले। यह तो मेरे प्यारे का मकान है, यह तो मेरे दिलवर का स्थान है, इसमें तो मुझे प्रीतम को बिठाना है, इसमें तो मुझे प्यारे प्रभु का निवास कराना है। यहाँ तुम्हारे लिए जगह नहीं,

यह कबूतरखाना नहीं कि एक आदमी ने मुझे गाली दी, दो मिनट में क्रोध आ गया अपना चोगा चुगने, मुझे नाश करने के लिए। यह कबूतरखाना नहीं कि जहाँ जरा सामने मिट्टी की पुतली सुन्दरी को देखा, और मन लुभा गया और फँस गये काम के अन्दर। काम की मजाल नहीं, क्रोध की मजाल नहीं कि वह तुम्हारे पास फटक सके, अगर वहाँ तुम्हारे हृदय के अन्दर प्रभु का चिन्तन हो रहा है तो। तुम इतने बुज-दिल क्यों बनते हो, इतने कायर क्यों बनते हो, कि एक छोटा-सा आदमी तुम्हें क्रोध दिला दे और तुम गुस्से के अन्दर पागल हो जाते हो। ये कहते हैं कि महाराज मैं बड़ी बहादुरी करके आया। उसने मुझे दो सुनाईं मैं चार सुना के आया। अरे भाई सोच तो सही—इससे ज्यादा और तेरी कायरता क्या होगी? इससे ज्यादा और तेरी बुजदिली क्या होगी? इस जीवन में छोटी-सी बात से उत्तेजित हो गया। एक छोटी-सी मिट्टी की पुतली को देखकर कामी हो गया? एक छोटा-सा कंकर का ढेला तेरे सामने आया, और तू लोभी हो गया? फिर कहता है कि मैं बड़ा बहादुर हूँ, महान् इन्सान कहलाता हूँ। और इन चीजों के पीछे भोगी बन जाता है। इसलिए अपनी बुद्धि को, अपनी इन्द्रियों को इतने विवेक में रखो कि सामने सुन्दरी आए तो थोड़ी देर के लिए जरा मन में Judgment कर लो, यह क्या है? है क्या? पहले वैराग्यवान होने के लिए एक भावना करनी होगी, फिर प्रेम पैदा करने के लिए दूसरी भावना पैदा करनी होगी। वैराग्य में जब कोई सुन्दरी को देखो, पर सुन्दरी कौन देखता है?

आँखें देखती हैं क्या ? आँखें देख सकती हैं ?

. आँखों के पीछे भी एक आला होता है और आले के पीछे मन होता है और मन के पीछे बुद्धि होती है, तब जाकर कहीं इन्द्रियाँ काम करती हैं इतना जीवन के अन्दर function करने के बाद, इतना कार्यक्रम चलने के बाद। तो मन ने अपनी आँखों द्वारा एक सुन्दरी को देखा और 'मन' ने फाइल रख दी बुद्धि के आगे—'सुन्दरी है ?' अब अगर वह बुद्धि मोही है, विवेकहीन है, तुरन्त कह दिया कि हाँ, सुन्दरी है। दस्तखत कर दिये। मन के पास दस्तखत की हुई फाइल पहुँची। मन ने इन्द्रियों से कहा—सुन्दरी है। काम शुरू करो। कर्म हो गया खराब। अब, अगर मन ने फाइल रखी, बुद्धि के आगे कापी रखी क्यों यह सुन्दरी है ? बुद्धि ने कहा, 'मूर्ख कहीं का।' हाड़, मांस, बलगम, मल मूत्र पाप का पुलन्दा, उस पर चमड़े का एक Cover। और अगर जिन शब्दों में मैं अक्सर कहा करता हूँ, नीचे सोने का थाल, बीच में विष्ठा और ऊपर रेशमी रूमाल। तो अज्ञानी तो सोने का थाल और रेशमी रूमाल देखकर लुभा जाता है, लेकिन ज्ञानी जरा रूमाल उतारकर देखता है, तो बदबू से नाक सड़ती है। तो तुरन्त बुद्धि ने जहाँ दस्तखत कर दिये वहाँ मन चुप हो गया। और अगर कहीं बुद्धि विवेक से भी ऊपर उठकर अपने तत्व में, अपने स्वरूप में, अपने प्यारे के स्वरूप में लीन हुई, तो उसने कहा, अरे पगले, देख, ये तेरे प्यारे ने कैसे मिट्टी के सुन्दर खिलौने बनाकर संसार में खड़े कर दिये हैं।

न तुझसे न तेरी सूरत से गरज है।
हम तो मुसव्वर की कलम देखते हैं।।

फिर वहाँ मुसव्वर की कलम दिखाई देती है। वहाँ कारीगर की कारीगरी दिखाई देती है। वहाँ फिर हर रंग के अन्दर तेरी रंगत हो जाती है, हर चीज के अन्दर उसका स्वरूप नजर आने लगता है।

सूर्य में भी तू ही रोशन, प्राणों का भी प्राण तू ही।
खुद ही मंगता, खुद ही दाता, खुद ही बनता दान तू ही।।
प्रेमी में तो प्रेम रचया, प्रीतम की भी शान तू ही।
फूलों में तू ही मुस्काता बुलबुल में हैरान तू ही।।
हिन्दू बनकर मन्दिर बैठे, मसजिद मुसलमान तू ही।
हर मकाँ में तुझको देखा, फिर भी लामकाँ तू ही।।
बात यहाँ पर खतम है होती, बनता कुल जहान तू ही।
बंदा बनकर बंदगी करता और, दया करें भगवान तू ही।।
'प्रेमानन्द' ने तुझको जाना, मेरी प्यारी जान तू ही।
हर रंग में है तेरी रंगत, हर रस का रसखान तू ही।

तो वहाँ उसमें भेद कहाँ रह जाता है? फिर कहाँ नफरत हो सकती है? किस वक्त? जब कि अपने चिन्तन को देख लिया।

"ये अदाएँ ओम् की,
किस कदर मसरूर करती हैं सदाएँ ओम् की।"
"एक मस्ती की हालत छा जाती है मुझ पर,
मन्द गति से आती हैं जब हवाएँ ओम् की।"

तो जीवन के अन्दर, जब इस तत्व को हमने समझ लिया कि चिन्ताओं से ऊपर उठकर, चिन्तन के अन्दर लीन होकर, हमने केवल चिन्तन में कुछ चीज—चिन्तन क्या है ? केवल प्यारे का चिन्तन, जैसा कि पहले—अभी महाराज कह रहे थे कि लेना नहीं कुछ भी, लेने का सवाल ही नहीं, मुक्ति की भी बात नहीं—मैंने तो उस दिन भी आपसे कहा था कि If God wants anything from me, He can have it—अगर ईश्वर को मेरे से कुछ जरूरत हो तो ले लेवे। I do not want anything from Him. I only love Him, because I want to love Him.—मैं उससे प्यार करता हूँ, क्योंकि प्यार करना चाहता हूँ। Who cares whether God is almighty or not—कौन परवाह करता है कि वही सर्व-शक्तिमान है ? I do not want any power from Him, nor any manifestation of His power—मुझे न तो उसकी शक्ति चाहिए, न उसकी शक्ति का कोई स्वरूप चाहिए। कहता है—He is the God of love, that is quite enough for me. I do not want any more questions.

कहता है—मुझे उसके आगे कुछ पूछना नहीं है, कुछ प्रश्न नहीं है। मुझे इतना ही काफी है कि वह प्यार करने वाला है, प्यार करने योग्य है। प्यार मैं उससे करता हूँ, बस। I do not want wealth nor health—कहता है, मैं न तो उससे धन चाहता हूँ, न स्वास्थ्य चाहता हूँ। कुछ नहीं चाहता, केवल जन्म-जन्म भी इस जीवन के अन्दर,

जन्म-जन्म भी यह मानवता का जीवन मिलता चला जाय और हर जन्म के अन्दर केवल उससे प्यार करने की ताकत मिलती चली जाय, तो मुझे उससे कुछ नहीं चाहिए। अगर उसको मेरे से कुछ चाहिए हो तो ले ले।

न मैं छोरे तकूँ, न मैं हुस्न चाहुँदा,
न मैं चाहुँदा कि मैंनू अमीरी मिल जाय।
मैं एहो राह मंगदा हो, के तेरे घर,
बिच मैंनू फकीरी मिल जाय।

जन्म-जन्म में मुझको तेरे चरण-कमल की प्रीत मिले।
फकीरी मेरे भाग्य में हो और गाने को प्रेम का गीत मिले ।।

कहता है—दो बातें देते रहना—एक फकीरी और दूसरी कविता, क्योंकि—

फकीरी में तुझसे प्यार कर सकूँगा।
और कविता में तेरे प्यार की झंकार कर सकूँगा।

कहता है—

नश्वर जीवन भी मुझको स्वीकार तुम्हें पाकर।
तुम साथ रहो फिर जग में चाहे हार मिले या जीत मिले ।।

जिन्दगी के अन्दर जब ऐसे चिन्तन में लीन हो जाओगे, तो क्या मजाल है दुनिया के भोगों की कि तुम्हें अपना दास बना सकें ? क्या मजाल है कि चिन्ता तुम्हें आकर सता सके ? लेकिन इस बात को हमेशा ध्यान रखना, जहाँ चिन्ता रहेगी, वहाँ चिन्तन नहीं रहेगा और जहाँ चिन्तन रहेगा वहाँ चिन्ता नहीं रहेगी। तो यह—जहाँ चिन्तन रहेगा वहाँ चिन्ता नहीं रहेगी। तो इसलिए चिन्तन को अपना

लो। चिन्ता को चिन्तन से नष्ट कर डालो। और चिन्ता को काटकर चिन्तन को जब अपनाओगे, जितना-जितना चिन्तन बढ़ता चला जायगा, उतनी चिन्ता खतम होती चली जायगी, इतनी लीनता हो जायगी। वह कहते हैं कि एक प्रेमिका, पुराने ज़माने की बात है, तो वहाँ उन दिनों यह ज्यादा Electricity—बिजली तो होती नहीं थी। गाँव की बात है। एक प्रेमिका शाम को अपना दीपक लेकर साथ वाले घर में, जहाँ उसका प्रेमी रहता था, वहाँ दीपक जलाने के लिए गई। जब दीपक जलाने के लिए वह प्रेमिका गई तो वहाँ सामने उसका प्रीतम बैठा था। उस प्रीतम को देखकर वह इतनी लीन हो गई कि दीपक को उसने लौ के ऊपर रखा और लौ के ऊपर उसको इतना ध्यान न रहा देह का कि लौ के बजाय दीपक के साथ लगने से उसकी उँगली जलने लगी। उँगली जलती रही और वह देखती रही प्यारे की तरफ। इतने में उसकी माँ ने देखा कि लड़की बहुत देर से गई है, अभी तक वापस नहीं आई। ढूँढ़ने के लिए जो जाती है साथ वाले घर में तो क्या देखती है कि उँगली तो जलकर बिलकुल खाक हो चुकी है और उसको अभी तक भी अपना होश नहीं है। वह तो अपने प्यारे की तरफ निगाह लगाये बैठी है। तो चिन्तन में जब इन्सान लीन हो जाता है तो दुनिया के भोगों की चिन्ता बाकी नहीं रह सकती। तो मेरा कहने का मतलब क्या है कि वहाँ दुनिया के भोग नहीं ठहर सकते, क्योंकि वहाँ इन्सान इनसे ऊपर उठ जाता है। फिर वह फूलों का पुजारी नहीं, बाग का पुजारी हो जाता

है। फूल का पुजारी होना काँटों से नफरत करना है, लेकिन बाग का पुजारी होना काँटों से प्यार करना है।

गुलशन परस्त हूँ मुझे गुल ही नहीं अजीज।
काँटों से भी निबाह किये जा रहा हूँ मैं॥

यह भी तो कहा ना ?
तुम्हें भगवान कहीं पाकर
ध्यान है ना ?

तुम्हें भगवन कहीं पाकर, हृदय-मन्दिर में लाऊँ मैं।
करूँ परदा मैं पलकों का, और तुम्हें अन्दर छुपाऊँ मैं॥
तुम्हें फूलों में पाया हूँ, तुम्हें रंगों में है देखा।
उलझ जाते हो दामन से, तुम्हें काँटों में पाऊँ मैं॥
हँसी बनते लबों की हो, खुशी दिल की तुम्हीं तो हो।
छलक आते हो आँखों में, अगर मिलना जो चाहूँ मैं॥

लेकिन जब मै तुझसे मिलना चाहता हूँ प्यारे, तो तूही तो आँसू की बिन्दु बनकर मेरी आँखों में आता है और मैं बिन्दु ले आईने में तेरा दीदार कर लेता हूँ।

अमर ज्योति हो तुम प्यारे, तुम्हीं से है जगत् रोशन।
तुम्हीं बनते हो परवाने, अगर दीपक जलाऊँ मैं॥

परवाने और दीपक में फिर कोई भेद नहीं रहता। फिर अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता। फिर हर रंग में वही प्यारा नजर आने लगता है, जैसे—

न बाप-बेटा, न दोस्त-दुश्मन, न आशिक और सनम किसीके।
अज़ब तरह की हुई फ़रांगत, न कोई हमारा न हम किसीके॥

अभी कल की बात है।

हमारी अभी बड़ी दुकान थी, अभी हमारा बड़ा कसब था,
बड़ी थी जात और बड़ी सिफ़ात और वड़ा हसब और नसब था,
खुदी के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न नसब था।
अभी ये ढब था, किसी से लड़िये, किसीसे जाकर यूँ ही अकड़िये,
किसीकी जाकर इमदाद करिये, किसीके जाकर पांव पड़िये,
अभी यह धुन थो दिल आपने में कहीं बिगड़िये कहीं झगड़िये
दुई का परदा उठते ही देखा, कि अब जो लड़िये तो किससे
लड़िये।

इसलिये मैंने कहा था कि तू खुद ही अपना मित्र है और खुद ही अपना शत्रु है। You are your friend and enemy too. तुम दोनों ही खुद हो। एक आदमी बड़ा विद्वान था। जॉनसन का नाम अंग्रेजी लिखी-पढ़ी जनता ने बहुत सुना होगा। वह बहुत विद्वान था। बातों में वह किसीसे हारता नहीं था। उसको कहते थे, बातों का शहजादा। बातों में उससे कोई नहीं जीत सकता था। एक रात को उसने स्वप्न देखा। स्वप्न में देखता है कि एक दूसरा विद्वान्, बर्के जिसका नाम था, इंग्लैंड में रहने वाले बर्के से वह विद्वत्ता में, रात को स्वप्न के अन्दर हार गया, बात-बात में। रात को परेशानी हो गई। एक बात मेरी याद रखना कि स्वप्न का दुख जाग्रत का सुख बन जाता है। कैसे? रात को सो रहे हो। भले ही तुम्हारे पास धन है, सब-कुछ है। परेशानी हो रही है। कोई पत्थर मार रहा है। लोग तुम्हें धकेल रहे हैं। कपड़े भी तुम्हारे फटे हुए हैं। भिखारी बनकर चीख रहे हो, चिल्ला रहे हो। इतने में जोर से कोई तुम्हारे ऊपर

साँप फेंकता है। वह सांप तुमको काटता है। दर्द से चिल्लाते हो और चिल्लाने से तुम्हारी आँख खुल जाती है। खुलती है न कई बार? कई बार स्वप्न में अच्छी या बुरी बात देखने पर नींद खुल जाती है ना? अच्छा खुल गई। कहाँ गया वह स्वप्न? कहाँ गया स्वप्न का दुख? स्वप्न का दुख जाग्रत का सुख बन गया न? भाई जब तक संसार के स्वप्न में सो रहे हो, दुखी रहोगे। यही स्वप्न का दुख जाग्रत का सुख बन जायगा। अज्ञानता का दुख जो है, ज्ञान का सुख हो जाता है। स्वप्न का दुख जो है जाग्रत का सुख हो जाता है। अब जॉनसन की नींद खुल गई। नींद खुलने से वह परेशान होकर कमरे में टहलने लगा कि मैं कैसे हार गया, मैं आज तक कभी अपने जीवन में नहीं हारा। यह मेरी मौत से भी ज्यादा खराबी है, क्योंकि मैं हार गया विद्वत्ता में आज। फिर थोड़ी देर बाद मन में प्रश्न करने लगा—

"अच्छा तेरे स्वप्न में जॉनसन तू था ना?—हाँ।"

"तेरे स्वप्न में बर्क कहाँ से आया? तेरे स्वप्न में दूसरा विद्वान् कहाँ से आया? वह तो इंग्लैंड में बैठा है। तू स्काटलैंड में सो रहा है। तो वह कहाँ से आ गया?

फिर अपने मन में कहा—

"पगले तू स्वप्न के अन्दर खुद ही जॉनसन बना हुआ था, खुद ही बर्क बना हुआ था। अपने आप तूने इधर से बात करी, अपने आप उधर से करी। अपने आपसे हारा और दुखी हो रहा है। जहाँ यह बात आई वहाँ मन शान्त हो गया। अपने आप आराम की नींद सो गया। सो भाई तू

अपने हाथों से मित्र है, अपने हाथों से शत्रु है। अपने हाथों से प्रेमी है, अपने हाथों से तू दुखी है। अपने हाथों से ही दुखी हो सकेगा। मैंने पहले दिन भी कहा था, हजारों भगवान कृष्ण, बुद्ध और ईसा भी अगर जब तक तू अपनी सहायता नहीं करेगा, कोई भी तेरा कल्याण नहीं कर सकता, जब तक तू अपना कल्याण नहीं करेगा। ये कल्याण का मार्ग दिखला सकते हैं, कल्याण का रास्ता दिखला सकते हैं, लेकिन चलना तुझे पड़ेगा। तुझे उठना पड़ेगा, जागना पड़ेगा और अगर जागकर तुझे जगा भी देंगे तो भोजन तुझे अपने आप ही करना पड़ेगा। अगर कोई सन्त तेरे मुख में भोजन भी डाल दे, तो पाचन तो तुझे ही करना होगा। इतना भी महान् मिल गया, जिसने तेरे सामने भोजन भी तैयार करके रख दिया, तेरे मुख में भी डाल दिया, लेकिन पाचन तुझे ही करना पड़ेगा। पाचन और कोई दूसरा नहीं कर सकता। हजम तुझे खुद करना पड़ेगा। तो तेरा कल्याण और कोई दूसरा न कर सकेगा। जब तक तू अपने कल्याण के लिए तैयार न होगा और इसीलिए मैंने कहा है कि ऐ इन्सान, तू इन्सान बन जा। भगवान तेरा—कल्याण—भगवान तेरे पीछे होगा। भगवान तेरी ख्वाहिश करेगा। भगवान तेरे दीदार के लिए तड़पेगा। तू इन्सान बन जा, इन्सान बन जा, क्योंकि तेरे सोने से दुनिया सो जाती है, तेरे जागने से संसार जाग उठता है। तेरे सोने से सूर्य में भी प्रकाश नहीं रहता। तेरे जागने से सूर्य भी प्रकाशित होता है। तू अपने आपको पहचान ले, अपनी हस्ती को पहचान ले, अपने

जीवन को पहचान ले। और अपने जीवन को पहचानकर, अपनी मंजिल को पहचानकर, जब तू अपनी स्टेज पर खड़ा हो जायगा, Master of Temple बनकर खड़ा हो जायगा, तो फिर संसार के अन्दर दुनिया की कोई भोग-वासनाएँ…। यह धन फिर भी तेरे पास रहेगा। कहीं ऐसा न सोचना कि महाराज की बात मानकर धन से खाली हो जायेंगे। हालाँकि मैंने ऐसे ही एक जगह लिखा था कि Blessed is he, whose property is stolen away. कहता है कि सबसे पहले भाग्यवान तो वह है जिसका धन चोरी हो जाय। अगला शब्द जरा सख्त है। माताओ, बुरा न मानना।

Thrice blessed is he, whose wife runs away और तीन गुना भाग्यवान वह है, जिसकी घरवाली भाग जाय। बशर्ते—शर्त साथ में है। ऐसा नहीं, कहीं एक भागे तो दूसरी को भी ले जाये। तो कहता है क्या ?

Provided, by such means he is brought into direct touch with all love—God.
बशर्ते कि ऐसा होने से वह सीधा प्रभु के चरणों में पहुँच जाय। तो दुःख तो कभी-कभी आशीर्वाद भी बन जाता है ना ? तो कभी-कभी महान् दुःख महान् सुख का कारण भी तो बन जाता है ना ? और ध्यान देना, एक और छोटी-सी बात कह दूँ—दोषी दण्ड भोगे तो यह उसका दण्ड है और निर्दोषी दण्ड भोगे तो यह उसकी परीक्षा है। बड़ी विचित्र बात है। इन्सान को अपने जीवन में सोचना चाहिए। कभी-कभी हम घबरा जाते हैं—सत मारग पर चला, मैंने बुराई नहीं

की, मुझे बुराई हो गई। ध्यान देना, उसमें ज़रा इम्तिहान है और इन इम्तिहानों में दृढ़ रहने वाला सच्ची यातना—एक लाइन और कहता हूँ—सच्ची यातना और झूठे जुलम की सहने वाला उदार चित्त से प्रसन्न रहने वाला सन्त है। यही सन्त का सबसे बड़ा सार है, जोकि संसार के सामने आदर्श बनता है, example बनता है। तो इसलिए इस जिन्दगी को, इस सार को, इस तत्व को जब समझ लोगे, इस भेद को जब समझ लोगे तो ज़िन्दगी के अन्दर ये दोष, ये बुराइयाँ, इस जिन्दगी का खेल, आना-जाना यह सब लगा रहेगा क्योंकि मैंने आपसे पहले कह दिया, संसार को बदलना नहीं जहाँ तुम हो अपने आपके घर में वापस आ जाओ माया का नाम ही है Maya is only a statement of facts, mixture of opposites. जो चीज है उसको बयान करने का नाम माया है। माया को लोग भरम समझते हैं, माया से बहुत से लोग घबरा जाते हैं, माया बदलने वाली चीज नहीं। माया जहाँ है वहाँ खड़ी रहेगी, इसीलिए भगवान कृष्ण ने कहा है—

O Arjuna, this Maya of Mine is divine. Come unto Me, and you shall be saved.

यह माया मेरी है यह बदली न जा सकेगी। तू मेरी शरण में आ जा। माया तुझे असर न करेगी। तू अपने सत्व में आ जा, अपने घर में आ जा, तुझे माया हिला न सकेगी, तुझे माया गिरा न सकेगी। माया रहेगी। माया मिट न सकेगी। लेकिन तू उससे ऊपर उठ जायगा, बस यही जिन्दगी का सार है, यही जिन्दगी की मंजिल है। यह जिन्दगी का तत्व

है और इस तत्व में यही दो बातें रोज जीवन में ध्यान रखो कि हम जिस-जिसकी चिन्ता कर रहे हैं वह चिन्ता करने वाली बात नहीं और हमें जिसका हर समय चिन्तन करना चाहिए, उसका चिन्तन हमने छोड़ रखा है। चिन्तन अपने तत्व का, अपने आत्म-स्वरूप का, आत्मा में विराजमान प्यारे परमात्म स्वरूप का, और उस चिन्तन को करते हुए जब तुम चिन्ता को त्याग दोगे, तो यही मानव मानवता की महानता तक पहुँच जायगा, जिसका कि मैंने वर्णन कल कर दिया था। आपके सामने ही मानव कितनी महानता तक पहुँच सकता है और मानव ही कितनी गहराइयों तक गिर सकता है। गिरना या उठना लेकिन प्यारे मैंने पहले दिन कह दिया था—

Everybody is mad in this world. Somebody after money, somebody after drinking and so on but, if, drowning to be the fate of the man it is better to be drowned in the ocean of milk than in the pool of dung.

अगर डूबना ही इन्सान की किस्मत हो, तो भाई कम-से-कम दूध के सागर में तो डूबो। अरे, गन्दगी के गड़े में गिरने से क्या लाभ ? तो बस भाई उस डूबने को ऐसा पैदा करो, कि

"उठे राम की मोहब्बत का तूफाँ,
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।
उठे राम की उल्फत का दरिया,
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।

तेरा दरस पाने को जी चाहता है,
ये सब कुछ मिटाने को जी चाहता है।"

तो जो कुछ किया हुआ है उसको मिटा दो। जो कुछ पास है वह पास ही रहेगा। कोठियों के मालिक रहोगे। धन भी तुम्हारे पास रहेगा। धन रहे, धन का लोभ छोड़ दो। परिवार रहे, परिवार की ममता छोड़ दो। अधिकार रहे, अधिकार का अभिमान छोड़ दो। ये तुम्हें दुःख न दे सकेंगे। ये चीजें दुखदायी नहीं। ये बुरी नहीं। ये तुम्हारे लिए बनाई गई हैं। तुम इनके लिए नहीं बनाये गए। ये तुम्हारी दास हैं, तुम इनके दास नहीं। इतना ही विचार करते हुए, इतना ही ध्यान रखते हुए कि—It is better to ride horses of desire than to be driven by them.

इच्छाओं के घोड़ों पर सवारी करो, न कि घोड़ों की दुम से खिचे चले जाओ, यही मानवता का सार है, यही मानवता की मंजिल है, यही मानव जिन्दगी का तत्व है। इसको समझिए, अपने जीवन को महान् बनाइये। आप इसमें गोते लगाइये और अपने जीवन के इस तत्व को पहचानिये। यही सत्संग का सार है। संग बड़ी भारी मोहना है। जितना जीवन के अन्दर हम सत्संग करेंगे उतना हमारा तत्व सुन्दर-तर होता चला जायगा और यह नशा बढ़ता चला जायगा और इसके बाद—लेकिन आप जीवन के अन्दर इस संग को—सत्संग को सार लो—क्योंकि यह तो एक मानसरोवर बन गया है, जिसमें कि कई नये हंस आयेंगे अपना-अपना मोती चुगने के लिए। आप भी अपने जीवन के अन्दर जीवन के कुछ

बिखरे हुए मोतियों को चुन लो और मोतियों को चुनकर जीवन को सजा लो—ऐसी सजावट कि जिसमें तन का शृङ्गार ही नहीं, मन का शृङ्गार भी सुन्दर हो जाय। बस अब एक भजन कहकर समाप्त करूँगा—वैसे तो इस तत्व को लेकर अपनी जिन्दगी को महान् बनाइये और यही सन्त की सबसे बड़ी सेवा है और कुछ हमें नहीं चाहिए आपसे। केवल इतना ही चाहिए कि आप अपनी जिन्दगी को—क्योंकि

हम न हैं इश्क के माते, हमन को दौलतां क्या रे।
नहीं कुछ माल की परवाह, किसी की मिन्नतांँ क्या रे।।
हमन को खुश्क रोटी बस, कमर पर एक लंगोटी बस,
जिस्म पर एक धोती बस, हमन को इज्ज़तां क्या रे?
क़बाशाला अमीरों को, ज़रबफ़्त अमीरों को,
हमन जैसे फकीरों को, जगत की नैमतां क्या रे?
हमन हैं इश्क के······
लिया हम दर्द का खाना, लियौ हम भस्म का बाना,
कियौ हम मौज मनमाना, हमन को मजलिसा क्या रे?
तकदीरों के सुख़न स्याने हैं, उन्हीं को खल्क़ माने हैं,
हमन आशिक दिवाने हैं, हमन को मजलिसां क्या रे?

जीवन के अन्दर इस तत्व को पहचानो, और सार को समझो। और आपसे हमें कुछ नहीं चाहिए। अगर जीवन में कुछ दे सकते हो संत-सेवा में, तो सबसे बड़ा यही है कि अपने जीवन के दोषों को छोड़कर अपने जीवन के तत्व को पहचानो। यह सबसे बड़ी सेवा है। इससे बड़ी सेवा तुम संत

की कर नहीं सकते। अब एक भजन कह समाप्त करूँगा कि हमें जिन्दगी के अन्दर इस तत्व को पाने के लिए क्या करना पड़ेगा। अपने जीवन के अंदर बड़े ध्यान से—और सँभालिए जीवन को और सत्संग का सार कभी मत छोड़िये।

ऐ प्यारे तुम्हें जाग जाना पड़ेगा।
ये दुई का पर्दा उठाना पड़ेगा॥
जो चाहे कि रोगों से बच रहे फिर।
तो भोगों से दामन छुड़ाना पड़ेगा॥
बुझा करके नफरत की अग्नि जो प्यारे।
मोहब्बत का दीपक जलाना पड़ेगा॥
भुला करके नगमे, ये माया के सारे।
तुम्हें गीत प्रेम का गाना पड़ेगा॥
तुम्हें बनके स्वामी, ये तन और मन का।
हा तृष्णा को दासी बनाना पड़ेगा॥
दरश अब जो पाना है, प्यारे का प्यारे।
तो अन्तर में ध्यान लगाना पड़ेगा॥
उठा करके सर को ये विषयों के जग से।
हाँ सतगुरु-शरण में गिराना पड़ेगा॥
'प्रेमानन्द' खामोश रहकर जो पाया।
उसे अब तो ज्ञान में लुटाना पड़ेगा॥
ऐ प्यारे तुम्हें जाग जाना पड़ेगा।
दुई का ये पर्दा उठाना पड़ेगा॥

ओ३म् ओ३म् ओ३म्

ये सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ।
बगैर सूरत अजब है जलवा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ।
मकाँ पूछा तो लामकाँ थाँ, न मैं वहाँ था न वो वहाँ था।
आँख खुली तो अजब ये देखा कि राम मुझमें मैं राम में हूँ।
जहाज दर्या में और दर्या जहाज में भी तो देखिये आज,
कि जिस्म कश्ती और राम दर्या कि राम मुझमें और मैं राम में हूँ।
बगैर सूरत अजब है जलवा कि राम मुझमें मैं राम में हूँ।

हर इन्सान खुशी की तलाश और सुख और शान्ति की तलाश में है। हर इन्सान अमरता की तलाश में, हर इन्सान आजादी की तलाश में, हर इन्सान इस प्रसन्नता को पाने की खोज में फिर रहा है। स्वाभाविक इच्छा है इन्सान में जीने की, स्वाभाविक इच्छा है इन्सान के अन्दर शान्ति पाने की, स्वाभाविक इच्छा है इन्सान को जीने की, स्वाभाविक इच्छा है इन्सान को स्वतन्त्रता पाने की, स्वाभाविक इच्छा है इन्सान के अन्दर सुख के पीछे भागने की। किसी से पूछा जाय कि भाई तुम सुख क्यों चाहते हो, तुम जीना क्यों चाहते हो,

तुम्हें आजादी क्यों चाहिए, तो इस प्रश्न का कोई उतर नहीं पायेंगे।

जीना चाहते हो क्योंकि जीना स्वभाव में है। शान्ति चाहते हो क्योंकि शान्ति स्वभाव में है। अमरता चाहते हो क्योंकि अमरता स्वभाव में है। दुःख कोई क्यों नहीं चाहता ? अशान्ति कोई क्यों नहीं चाहता ? दुःख जीवन के अन्दर कोई नहीं चाहता। हमें एक आदमी मिल जाता है, हम पूछते हैं, कहो भाई क्या हाल है ? तुरन्त वह कह देता है कि मेरे यहाँ फलाँ आदमी मर गया। हमारे मन में प्रश्न उठता है, हम तुरन्त उससे पूछ बैठते हैं, कि भाई कैसे मर गया ? क्या हुआ भाई उसे, बीमारी हो गई थी उसे ? क्योंकि मरना स्वाभाविक नहीं है हमारे लिए, क्योंकि मौत हमारे स्वभाव में नहीं है। अगर वह कह देता है, पुत्र पैदा हुआ है मेरे यहाँ, तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती, प्रश्न खतम हो जाता है, हम उससे कोई प्रश्न नहीं पूछते हैं कि भाई कैसे पुत्र हुआ। जीने के लिए और किसी प्रश्न की आवश्यकता नहीं, लेकिन मरने के लिए क्यों और कैसे पूछना पड़ता है। किसी आदमी को दुखी देखकर हम पूछते हैं कि क्यों दुखी है, कैसे दुखी है ? लेकिन अगर कोई आदमी हमसे यह कह देता कि मैं सुखी हूँ तो पूछने की ज़रूरत नहीं होती। यही प्रश्न खतम हो जाता है कि वह सुखी है। हर इन्सान सुख की खोज में मारा-मारा फिर रहा है। मिलता है या नहीं यह दूसरी बात है। "दुनिया तो भला सदा आराम को चाहे।

इससे भला इन्सान तो इन्सान को चाहे।

कोई अपने सुख के लिए स्वर्ग के सामान को चाहे ।
कोई हिन्दुस्तान को चाहे, कोई रेगिस्तान को चाहे ।
है भाग्यवान वही जो भगवान को चाहे ।"

बुलबुल को देखिए कि गुलिस्तान की तलाश
उल्लू को देखिए कि है वीरान की तलाश
हरएक को अपने दीनो ईमान की तलाश
मुल्ला और पंडित को पुराण और कुरान की तलाश ।

कहता है—"कोई तो अपने लिए भला परिस्तान को चाहे ।
है भाग्यवान वही जो भगवान को चाहे ।"

हर इन्सान सुख के पीछे भागता है । सुख उसे क्यों नहीं मिलता, प्रश्न यह बड़ा भारी है । हम हर काम सुख के लिए करते हैं । हर काम हमारा सुख के लिए होता है । हर बात हमारी इस चीज के लिए होती है, किसी प्रकार हमको सुख और शान्ति मिले । लेकिन फिर भी क्यों नहीं मिलता ? हम कभी धन में सुख मान बैठते हैं तो धन इकट्ठा करते हैं । कभी परिवार में सुख मान बैठते हैं तो परिवार इकट्ठा करते हैं । कभी कोठियों में सुख मान बैठते हैं तो कोठियाँ इकट्ठी करते हैं, लेकिन फिर भी हमें सुख नहीं मिलता । क्या कारण है कि हम सुख चाहते हुए भी दुखी हो रहे हैं, भोग चाहते हुए भी रोगी ही रहते हैं, शान्ति चाहते हुए भी अशान्त ही रहते हैं, जीना चाहते हुए भी मौत के मुख में जा रहे हैं ? इसका कारण क्या है ? कहीं-न-कहीं हमारे से गलती हो रही है । कहीं-न-कहीं हमारी खोज गलत हो रही है । हमारी खोज तो ठीक चीज की है लेकिन वह गलत हो रही है । वह

पुरानी बात ग्रा जाती है, माई की सुई घर में गुम हो गई है। ग्राँगन में ग्रँधेरा था। ग्राँगन में उस सुई को न पाकर वह street की रोशनी के ग्रन्दर उस गली के ग्रन्दर खोज करने लगी। इतने में एक नौजवान सामने ग्राया, माई क्या ढूँढ़ती है? बेटा, मेरी सुई गुम हो गई है। वह नौजवान भी उसे खोजने लगा। थोड़ी देर के बाद कहता है कि माँ, सुई खोई कहाँ? सुई तो बेटा खोई थी ग्राँगन में ग्रन्दर। तो ग्रन्दर सुई खोई थी, माँ ढूँढ़ कहाँ रही है? वाहर गली के ग्रन्दर, वाहर की स्ट्रीट लाइट के ग्रन्दर। बेटा, क्या करूँ ग्रन्दर अँधेरा है। ग्रन्दर ग्रँधेरा है, ग्रंधकार है। लेकिन माई, सुई जहाँ खोई है वहाँ मिलेगी। ग्रन्दर प्रकाश लेकर जाग्रो, ग्राखिर लाइट लेकर जाग्रो। वहीं तुम्हें सुई मिल सकेगी। इसी प्रकार जिन्दगी के ग्रन्दर जब हम देखते हैं कि हम सब चीजों के ग्रन्दर सुख की खोज करते हैं लेकिन बाहर के पदार्थों में करते हैं। पर वह चीज वाहर हमें नहीं मिलती, तब वह पदार्थ हमें बाहर नहीं मिलता। तो हम ग्रन्दर की तरफ जाना चाहते हैं। लेकिन ग्रन्दर हमें ग्रंधकार नजर ग्राता है। ग्रन्दर, हमारे ग्रन्दर दोषों का ग्रंधकार है। ग्रन्दर भोगों का ग्रँधेरा, ग्रन्दर ग्रज्ञानता का ग्रन्धकार है। उस ग्रज्ञान के ग्रन्धकार में क्योंकि हमें ग्रन्दर शान्ति नजर नहीं ग्राती, ग्रन्दर ग्रानन्द नज़र नहीं ग्राता, इसलिए हम उस ग्रानन्द की खोज में बाहर मारे-मारे फिरते हैं। ग्रब वास्तविकता देखें सही, जरा विचार करके देखें वह हैपीनेस (happiness), वह खुशी, वह ग्रानन्द है कहाँ? क्योंकि एक वार मंजिल का पता कर लेने के वाद

फिर हम उस खुशी की तरफ बढ़ सकेंगे कि वहै हमारी खुशी (happiness) कहाँ है ? अब देखिए एक बच्चा पैदा हुआ। बच्चे की खुशी कहाँ है ? क्या उसे दुनिया के भोगों की आवश्यकता है ? दुनिया के पदार्थ उसे कुछ चाहिए क्या ? उसके लिए धन-दौलत की कोई कीमत नहीं। उसकी सारी खुशी उस समय कहाँ है ?—माँ की गोदी में या माँ की छाती के साथ। लेकिन यह कितनी देर रही, कितने दिन रही यह खुशी ? (Happiness also travels) Happiness भी सफर करती है, खुशी भी सफर करती है। आनन्द भी सफर करता है। जिस समय वह बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ, माँ की गोद में सारी खुशी समाई थी, माँ की छाती के साथ सारी खुशी समाई हुई थी। उसे दुनिया के किसी पदार्थ की परवाह नहीं। दुनिया का लाट-से-लाट साहब भी आ जाये, बड़े-से-बड़ा भी आदमी उसको आकर उठाता है, वह परवाह नहीं करता। वह उसको धिक्कार देता है और उसे केवल चाहिए माँ की गोद, अपनी माँ की छाती। लेकिन यह कितने दिन रही, यह खुशी ज्यादा देर नहीं। वह आगे बढ़ा। बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ। माँ की गोद में जाता केवल उस वक्त जब उसे भूख लगती। अब उसकी सारी खुशी कहाँ समाई हुई है ? खिलौनों के अन्दर, छोटे-छोटे खिलौनों से खेलना, खिलौनों के घर बनाना, खिलौनों की चीजें बनाना। अब उसकी सारी खुशी वहाँ समा गई। लेकिन वह अब माँ की गोद में जाता जरूर है। लेकिन उस वक्त जाता है जबकि उसे भूख लगती है। माँ की गोद ही उसकी खुशी का सारा सामान नहीं है। लेकिन यहाँ भी खुशी

टिक न पाई। बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ। अब माँ की गोद उसके लिए बेकार हो गई। दुनिया-भर के खिलौने अब उसे अच्छे नहीं लगते। अब वह छोटी-छोटी कहानियाँ सुनना, छोटे-छोटे खेल खेलना, छोटा-सा बस्ता उठाकर स्कूल में भाग जाना, वह बचपन का आनन्द लेना, वह childhood को enjoy करना, वह उसके अन्दर लिप्त रहता है, छोटी-छोटी शरारतें करता है। इसलिए मैं कई बार कहा करता हूँ कि भाई जिस प्रकार इस शारीरिक जीवन का बचपन, जवानी, बुढ़ापा होता है, इसी प्रकार spiritual life, आत्मिक जीवन का भी बचपन, जवानी, बुढ़ापा होता है। जिस प्रकार बच्चा अपनी शरारतों में मस्त रहता है, उसी प्रकार एक पापी भी हर एक अपनी शरारतों में मस्त रहता है। मैं तो कई बार कहा करता हूँ कि worst type of sinners and the worst type of people they are only my Divine babies, and the child has got his own charm. No one can deny it. आज एक इन्सान बड़े-से-बड़े पापों में जा रहा है सो कोई हर्ज नहीं। उसको आना है एक-न-एक दिन इधर, कोई बच नहीं सकता। हर इन्सान अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा है। आज आप आ जायें, दस बरस के बाद आ जायें, दस जन्म के बाद आ जायें, लेकिन मंजिल पर पहुँचे बिना, अपने source पर पहुँचे बिना, अपने आत्म-तत्त्व पर पहुँचे बिना शान्ति कभी नहीं मिल सकती। इसीलिए मैं कहा करता हूँ कि जीवन योग के लिए है भोग के लिए नहीं। योग से मेरा मतलब कोई प्राणायाम या हठयोग

या राजयोग नहीं। योग से मेरा मतलब है Reunion मिलाप, मिलन नहीं। मिलाप और मिलन में बहुत फर्क होता है। Union और Reunion में भेद होता है। मैं कहता हूँ, Reunion—फिर मिलाप हो जाना। जहाँ से बिछुड़ा हुआ है वहाँ इसका फिर मिल जाना। मिलन तो होता है नई वस्तु से और मिलाप होता है बिछुड़ी हुई वस्तु से। इसका मिलाप होना है, मिलन नहीं होना है, क्योंकि यह बिछड़ा हुआ है। बूँद अपने सागर से बिछुड़कर परेशान हो रही है। नदियों के अन्दर ठोकर खाती है, पत्थरों की ठोकर सहती है। लेकिन उसको शान्ति नहीं मिल सकती, जब तक वह अपने दरिया के अन्दर नही पहुँच जाती। जब तक वह सागर में लीन नहीं हो जाती। इसीलिए कहा करता हूँ—O Drop ! expand thyself till you become an ocean. ऐ इन्सान, तू अपने-आपको इतना बढ़ा ले, इतना बढ़ा ले कि एक दिन तू विश्व का रूप हो जाये। जिस रूप से बिछुड़कर तू दुखी हो रहा है, जिस मंजिल से बिछुड़कर तू परेशान हो रहा है उस मंजिल पर वापस पहुँचना तुझे जरूर होगा। अब ध्यान दीजिए, हम अपनी बात पर चल रहे हैं। देखिए कि यह ओ३म् एक ऐसा शब्द है जिसको न केवल भारतवर्ष में बल्कि विदेशों में भी इसको मानने के लिए तकरीबन सारा संसार तैयार हो रहा है। क्योंकि अब तो साइंस ने भी यह सिद्ध कर दिया है, विज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि केवल एक ही energy है और उसकी तीन शक्तियाँ हैं जिनको Electron, Newton और

Proton कहते हैं और वे एक ही शक्ति के तीन रूप मान लिए हैं साइंसदानों ने भी। हम तो पहले से ही इस चीज़ को मानते आ रहे हैं कि एक ही शक्ति है जिसके तीन रूप हैं, जिनको ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहते हैं। ओ३म् में भी आप देखो कि तीन ही अक्षर आते हैं। Aum अंग्रेजी में लिखो तो हिन्दी में लिखो तो आ ऊ म, या उर्दू में लिखो तो अलफ वा मी ये तीनों अक्षर ही उर्दू में ॐ में आते हैं। तीन ही लोक माने गये—भू-भुवा-स्वाहा, Life, Love, Light। तीन ही अवस्थाएँ हैं–जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति, और उन चीजों के अन्दर जब इन चीजों को देखोगे तो तीन ही अनुभव होते हैं—सत, चित, आनन्द, means पूर्ण परमात्मा, वही आत्म-रूप, वही Lord Himself, बल्कि जिस समय यह शरीर यूरोप गया था वहाँ भी इस ॐ का ही। अब तो इस तत्त्व पर सारा संसार क्योंकि Om is sound and sound is energy.

तो जब भी इस तत्त्व को मैं ॐ कहूँ तो इस ॐ का उत्तर जरा ॐ से दीजिए, ताकि आपकी वृत्ति भी एकाग्र रहे।

हम दीवानों से कोई पूछे अदायें ॐ की,
किस कदर मसरूर करती हैं सदायें ॐ की ?

तो मै कह रहा था कि वह बच्चे की ख़ुशी माँ की गोदी में से उठकर खिलौनों में आई। खिलौनों से उठकर कहानियों में आई। अब वही बच्चा बड़ा हुआ। जिस समय वह बच्चा बड़ा हुआ अब उसके लिए माँ की गोद बेकार हो गई।

दुनिया भर के खिलौनों की अब उसके लिए कोई क़ीमत नहीं है। वह अब कहानियाँ भी नहीं सुनता। अब उसकी सबसे बड़ी खुशी होती है किस दिन डिग्री लेकर. किस दिन इम्तिहान का नतीजा लेकर घर को वापस आए। बड़ा खुशी का दिन होता है जिस दिन उसका रिज़ल्ट निकलता है और वह बहुत प्रसन्न होता है जिस दिन इम्तिहान का नतीजा लेकर घर को आता है। खैर, बड़ा होता चला गया और एक दिन वह आया जबकि वही नौजवान जोकि बच्चे से अब जवानी में आया, childhood से young age में आया, जिसकी खुशी कभी माँ की गोदी में समाई रहती थी, जिसकी खुशी कभी दुनिया के पदार्थों में समाई हुई थी। वही इन्सान उठकर अब नौजवान बना, वही बच्चा जवानी में पहुँचा और जवानी में पहुँचकर उसने जिस दिन एम० ए० का इम्तिहान पास किया, एम० ए० को डिग्री लेकर निकला उसी दिन तो वह अपने को खुदा समझने लगा कि उससे आज खुश कोई इन्सान नही। आज उस जैसा इन्सान कोई नहीं कि उसने एम० ए० पास कर लिया। लेकिन यह खुशी कितने दिन रही ? कितने दिन रहा यह नशा इम्तिहान का ? कितने दिन रहा नशा डिग्री का ? बहुत थोड़े दिन–दो महीने, चार महीने, छः महीने। अगर व्यापारी का बेटा है तो व्यापार करने का विचार पैदा हुआ। अगर नौकरी की इच्छा है तो नौकरी की इच्छा पैदा हुई। अब यह इच्छा पैदा हुई कि अब डिग्री तो ले ली, अब कहीं-न-कहीं सर्विस की जाय, कहीं-न-कहीं व्यापार किया जाय या कहीं-न-कहीं नौकरी की जाय।

दूसरे शब्दों में, वह खुशी जो कभी मां की गोद में थी, वह खुशी जो कभी खिलौने में भी, वह खुशी जो कभी किताबों में थी, वह खुशी जो कभी कहानियों में थी, वह खुशी जो कभी डिग्री में थी, अब आकर एक चीज में हुई—कि अब किसी-न-किसी प्रकार धन कमाया जाय। अब धन के अन्दर वह नौजवान लगता है। मान लीजिए उसको एक अच्छी नौकरी मिल गई, एक अच्छी Service मिल गई। पैसा कमाना है। खूब पैसा कमाया। खूब पैसा कमाने लगा। अब वह माँ की गोद को भूला हुआ अफसाना, किताबें, कहानियाँ बेकार की बातें, डिग्री भी अब पुरानी चीज हो गई है। अब उसकी सारी खुशी है—जिस दिन उसे तनख्वाह मिलती है, रुपया मिलता है उसकी सारी खुशी धन में आ जाती है। कितने दिन रही, ये कितने दिन रही ? शान्ति यहाँ भी टिक न पाई, शान्ति यहाँ भी ठहर न पाई। सुख यहाँ भी ठहर नहीं पाया। आखिर मन में विचार आया कि अब Settle हो जाना चाहिए, अब शादी हो जानी चाहिए, अब घर बसना चाहिए। अब घर बसने का खयाल जो है। कहाँ खुशी माँ की गोद में थी, कहाँ खिलौने में, कहाँ संसार के पदार्थों में आई, कहाँ अब वह धन में आई। अब धन से लेकर नारी में आई। लेकिन यह भी कितने देर ठहरी–साल, दो साल, तीन साल। अब घर में पहली संतान पैदा हुई। और पैदा भी हुआ पुत्र। अब सारी खुशी उस पुत्र में समाई हुई है। ध्यान देना कहाँ से चली थी खुशी—माँ की गोद से। माँ की गोद से खिलौने में आई, खिलौने से कहानियों और किताबों में आई, कहानियों और

किताबों से डिग्री में आई, डिग्री से धन में आई। धन से नारी में और नारी से पुत्र में आई। अब भाई that is the maximum happiness, height of the happiness in worldly life. जब घर में पहला पुत्र पैदा हो जाये उसके बाद चिन्ताएँ शुरू हो जाती हैं। आप लोगों को ज्यादा experience होगा इस बात का। वह वहाँ वास्तविकता में height है happiness की गृहस्थ लाइफ के अन्दर जब कि पहला पुत्र हो। इससे बढ़कर कोई happiness मानी नहीं गई। गृहस्थ के अन्दर उसके बाद चिन्ताएँ शुरू हो जाती हैं। Worries शुरू हो जाती हैं, बोझ शुरू हो जाता है। फिर तो दुख-ही-दुख मानने लगता है इंसान, चाहे वह अज्ञानता में ही मानता हो। लेकिन यह height है, अब यहाँ फैसला करें। जरा ध्यान देना भाई, एक मिनट के लिए मन को एकाग्र करना। अब हम यहाँ फैसला करते हैं कि हमारी खुशी कहाँ थी। हमारी Happiness कहाँ थी, यही जिसका हमने जिकर किया। यह नौजवान जो दफ्तर के अन्दर काम करता है बड़े अच्छे ओहदे पर है, एक दिन दफ्तर में बैठा हुआ है। दफ्तर में बैठा हुआ काम कर रहा है कि टेलीफोन की घण्टी बजती है। घण्टी के बजते ही टेलीफोन उठाता है। कोई घबराई हुई आवाज में बोलता है। क्या हो गया? दूसरी तरफ से आवाज़ पहुँचती है कि आप जल्दी घर में पहुँचिए। मकान को आग लग गई। अब यह आव देखता न ताव वहाँ से भागा हुआ बाहर जाता है। चाबियाँ कहीं बिखरी हुई हैं, कैश खुला हुआ पड़ा है, लेकिन किसी चीज की परवाह नहीं, कपड़े बिखर रहे हैं।

वाल बिखरे हुए हैं, आज उसे होश नहीं। आज उसे तन का होश है न धन का होश है। वह भागता है, बाहर टेक्सी पकड़ता है, टेक्सी पकड़कर घर पहुँचता है। घर पहुँचकर क्या देखता है कि उसके मकान को आग लगी हुई है। मकान सारा जो है वह आग की लपटों में जल रहा है। लोग तमाशा देख रहे हैं। लोग खड़े हुए हैं। संसार उसके साथ खड़ा हुआ, लेकिन कोई भी आग में कूदने को तैयार न हुआ। तब वह दिल में सोचता है कि जब मैंने यह मकान बनवाया था तब भी लोग आए थे। तब लोग आये थे मेरी खुशी में साथ देने के लिए और आज आये हैं मेरा तमाशा देखने के लिए। इसे कहते हैं, क्यों इसे कहते हैं--

Laugh and the world laughs with you
Weep and you weep alone
Rejoice and men will seek you
Grieve and they turn and go
They want full measure of your pleasure,
But they do not want your woe.
वे कहते हैं कि जिन्दगी के अन्दर
Feast and the halls are crowded.
Fast and the world goes by.
कहता है कि
Succeed and give.
And it helps you live,
But no one can help you die.
लोग तुम्हारी जीने में मदद कर सकते हैं, मगर मरने में

कोई सहायता नहीं कर सकता। हमने में साथ दे सकते हैं, लेकिन रो नहीं सकते। हाँ रोने का बहाना आकर करेंगे तुम्हारे साथ, तो दूसरी बात है। सो वह मन में सोचता है कि जिस समय वह यहाँ मकान के ऊपर पहुँचता है तो वहाँ पर पहुँच कर उसे मालूम होता है कि—ध्यान देना बात बड़ी गहरी है। मालूम क्या होता है—उसे वह बच्चा जिसके अन्दर सारी खुशी समाई हुई थी उसकी, वह आग के अन्दर, कोठी के अन्दर पड़ा हुआ है। अब माँ चिल्लाकर कहती है—जितने मेरे हीरे हैं सब दे दूँगी, सारी उमर गुलामी करूँगी, सारी उमर बर्तन साफ करूँगी, लेकिन कोई मेरे बच्चे को मुझे वाहर निकाल कर दे दे। बाप कहता है–जितना बैंक में रुपया है सब दे दूँगा, जीवन भर नौकरी करूँगा, गुलामी करूँगा, लेकिन कोई मेरे पुत्र को अन्दर से निकालकर बाहर दे दे। अब प्यारो, जरा एक मिनट के लिए सोचो कि बच्चे के लिए सब-कुछ कुर्बान किया जा रहा है। धन कुर्बान किया जा रहा है, जेवर कुर्बान किया जा रहा है, जीवन के अन्दर जायदाद कुर्बान की जा रही है, क्योंकि बच्चे से हर चीज प्यारी है। लेकिन जरा ध्यान देना, कोई ऐसी चीज है जिसके लिए वच्चा कुर्बान किया जा रहा है। सोचिये है न कोई ऐसी चीज, वच्चे से सब-कुछ प्यारा है। इसलिए बच्चे के ऊपर सब-कुछ कुर्बान किया जा रहा है। लेकिन बच्चे से प्यारी चीज है जिस पर बच्चा कुर्बान किया जा रहा है। वह चीज कौनसी है—अपना आप। माँ सब-कुछ देने को तैयार है, माँ जेवर देने को तैयार है, माँ सब-कुछ करने

को तैयार है, लेकिन आग में कूदने को तैयार नहीं। बाप जीवन-भर गुलामी करने को तैयार है, सारे Bank balances देने को तैयार है, जीवन-भर की हुई कमाई, रुपया देने को तैयार है, लेकिन आग में कूदने के लिए नहीं, क्योंकि बच्चे से सब-कुछ प्यारा है। लेकिन बच्चे से भी प्यारा अपना आप है—अपनी आत्मा, निज अपना आप। इसलिए यहाँ सोचना पड़ेगा कि क्या आनन्द बच्चे में था? क्या आनन्द बच्चे में था सही? अगर बच्चे में आनन्द होता तो बाप प्राणों को देकर बच्चे को बचा लेता। लेकिन वह तो जानता है कि आनन्द तो मेरे रहने के साथ है। अगर मै नहीं रहूँगा तो आनन्द कहाँ से रहेगा। तो इसलिए आनन्द बच्चे में नहीं था, दौलत में नहीं था। आनन्द नारी में नहीं था, आनन्द कोठियों में और कारों में नहीं था। आनन्द डिग्रियों में नहीं था। आनन्द माँ की गोद में नहीं था। आनन्द खिलौनों में नहीं। आनन्द जो था अपने अन्दर। जैसे-जैसे दृष्टि बदलती गई, जहाँ-जहाँ नज़र बदलती गई, जहाँ-जहाँ angle of vision बदलता गया, वहाँ-वहाँ आनन्द दीखने लगा। Happiness was within—खुशी अन्दर थी। लेकिन जहाँ-जहाँ नजर बाहर खोजती रही वहाँ-वहाँ वह आनन्द दीखने लगा था—वही आनन्द जो अपने ही अन्दर था लेकिन बाहर खोज करते हुए इंसान सारे जीवन भर भटकता रहा। अब जिन्दगी के अन्दर सोचने की आवश्यकता है, विचार करने की आवश्यकता है कि वह आनन्द अन्दर रहते हुए भी—

शहनशाहे जहान है साइल हुआ है तू।
पैदा कुने ज़माना है डायल हुआ है तू।
ख़ंजर की क्या मजाल कि एक जख्म कर सके।
तेरा ही है ख्याल कि घायल हुआ है तू।

तू अपने खयालों से दुखी हो रहा है, दुःख तुझे है नहीं। तू अपने खयालों से सुखी हो सकेगा, तुझे और कोई सुखी नहीं कर सकेगा। भगवान् ईसा और भगवान् बुद्ध भी आकर, लाखों कृष्ण और लाखों राम भी आकर तेरा कल्याण नहीं कर सकते।

जब तू अपने कल्याण के लिए तैयार नहीं हो जायेगा क्योंकि

Poverty and prisons can bind you not
You cannot be forced by means of lot
By thoughts of bondage yourself you bind
Of course you are free when free from the mind
You are your master and servant of course
And you are your bondage and freedom source
The change of fate thus lies in you
You can make it highest and lowest too
Life is yours make it or mar it.

ज़िन्दगी तुम्हारे हाथ में है। जिन्दगी तुम्हारी है, बना लो चाहे बरबाद कर लो। तुम्हारे हाथों में हैं ये खेल, तुम्हारे हाथों में कलम है। केवल इन्सान को ही यह फज़ीलत है, केवल इन्सान का ही यह दर्जा है कि चाहे तो अपनी जिन्दगी को इतना सुन्दर

वना ले कि भगवान् का दर्जा उसे मिले, भगवान् का स्वरूप हो जाये। और चाहे तो जिन्दगी को इतना गिरा दे कि हैवान भी शरम खाने लगे। यह इन्सान के अपने हाथ में होता है। इसीलिए इन्सान जो है वह अपनी देह का स्वामी बनाया गया है, अपनी देह का दास नहीं। इन्द्रियों का स्वामी वनाया गया है, इन्द्रियों का दास नहीं। मन का स्वामी बनाया गया है, मन का दास नहीं। Man, the master of temple must rule or perish. या तो इन्सान को अपने स्वामित्व को पहचानना होगा, या इन्सान को अपनी ठकुराई को पहचानना होगा, नहीं तो इन्सान भोगों और विषयों के हाथों बरबाद हो जायेगा। तीन stages मानी गई हैं—the stage of instinct, the stage of reason, the stage of realization. इन्द्रियों के वशीभूत होकर जीना यह पशुओं के लिए है। विवेक के सहारे जीना, यह इन्सान के लिए है और अनुभव के सहारे जीना, यह योगी के लिए है। Animal lives by instincts, man lives by reason and Yogi lives by realization. क्योंकि इस इन्सान को इस तत्व तक पहुँचने के लिए अपनी महानता को समझना होगा। ऐ इन्सान, तू दुनिया भर का मालिक होते हुए भी अपने-आपको भिखारी मान रहा है। अरे, अपनी देह का ठाकुर होते हुए भी, शहनशाह होते हुए भी दर-दर की ठोकरें खा रहा है। तो इन्सान जब इस तत्त्व को पहचानता है, तो कहता है कि मैं हूँ। मैं हूँ, मैं हूँ जो बचपन में भी कहता है मैं हूँ। मैं हूँ, वह जवानी में कहता है मैं हूँ, बुढ़ापे में भी कहता

है, मैं हूँ। उस मैं हूँ को पहचानो कि वह मैं हूँ क्या ह भई ? वह मैं है क्या ? वह मैं है क्या ?

क्या मैं यह साढ़े तीन हाथ का पुतला ? वह मैं है क्या ? मैं एक दिन अमृतसर में भाषण करके निकला तो एक नौजवान मेरे पास आया और कहता है कि बाबा यह क्या nonsense talk लगा रखी है God, God, God ? कहाँ है तुम्हारा ईश्वर जरा दिखाओ तो सही ? मैंने कहा—क्या ईश्वर से मिलना है ? हाँ अभी मिलना चाहता हूँ। अच्छा बहुत जल्दी है क्या ? क्या कहा ? हाँ पाँच मिनट हैं, मेरे कॉलिज के पीरियड लगने में पाँच मिनट हैं, तो मैं पाँच मिनट में भगवान् से मिलना चाहता हूँ, God से। कहता है–हाँ जी पाँच मिनट में मिलना चाहता हूँ, क्योंकि पाँच मिनट में मेरे कॉलेज का पीरियड लगने वाला है, मैंने कहा–बहुत अच्छी बात है। पर एक बात तो बतलाओ भाई ! किसी मामूली आदमी से भी मिलना हो तो पहले इन्टरव्यू लेना पड़ता है। मामूली Collector से भी मिलने जाओ, तो उसे भी पहले कहना पड़ता है कि पहले Collector Sahib हमें टाइम दें। किस वक्त आपसे मिलें ? तो भाई आप Controller of Maya, The Director and Controller of the universe, उस परम पिता परमात्मा, सर्वशक्तिमान से मिलना चाहते हो तो भाई उसके लिए भी तो टाइम माँगना पड़ेगा। पहले अपना पता भेजना पड़ेगा कि मैं फलां आदमी हूँ और मेरा यह पता है और मुझे मिलने की इजाज़त दें। तो भाई नौजवान, अगर तुम भगवान् से मिलना चाहते हो,

उस परमात्मा से मिलना चाहते हो, तो ऐसा करो कि एक चिट पर अपना address मुझे लिखकर दे दो और अपना पता लिखकर दे दो। वह पता God के पास, भगवान् के पास पहुँचा दूँगा। तुम्हारा जब address उसके पास पहुँचेगा तब मैं उससे तुम्हारा टाइम लेकर, interview का टाइम लेकर तुम्हें बतला दूँगा और भगवान् तुम्हें तुम्हारे घर में मिलने आ जायेगा। कहता है—क्या nonsense talk करते हो बाबा ? एक तो पहले बकवास करते हो कि ईश्वर है, फिर कहते हो कि ईश्वर मुझे घर में मिलने आ जायगा। मैंने कहा—भइया अपना address तो दे दे, अपना पता तो दे दे। तो कहने लगा कि लिखो—मोहनलाल कपूर, नमक मण्डी, अमृतसर। मैंने कहा—भइया मैं तेरा पता पूछ रहा हूँ तू यह किसका पता बता रहा है ? मैंने तो तेरा address पूछा है, तेरा पता, तू किसका पता बता रहा है ? मैंने तो तेरा पता पूछा है, तू अपना तेरा पता बता कि पता क्या है ? कहने लगा—मेरा पता यही है, मोहनलाल कपूर, नमक मण्डी, अमृतसर। मैंने कहा—तेरा नाम क्या है ? मोहनलाल, जब पैदा हुआ था तब क्या था तेरा नाम ? कहता है कुछ नहीं। मोहनलाल कब रखा गया ? छः महीने के बाद रखा। तो जब तू पैदा हुआ तो वह छः महीने भी तू तो था ना, तू क्या था ? कुछ समझ नहीं आई। कल को लोग कहेंगे कि मोहनलाल मर गया। शरीर वैसा पड़ा है। हाथ वैसे हैं, नाक वैसी है, टाँगें वैसी पड़ी हैं। तन वैसा है, सब वैसा है, कल लोग कहेंगे, मोहनलाल मर गया।

क्या मरा ? इसलिए कहा कि जिसके मन में विश्वास नहीं
वह निरश्वास नहीं तो क्या होगा ।
जो विष को अमृत समझा है वो नाश नहीं तो क्या
होगा ।
हो चन्द्र वदन और युवावस्था
भूषण वस्त्र से सजी हुई और रंग गुलाल पीतांबर पाल
एक साँस नहीं तो क्या होगा
हो जटा जूट गेरुआ वस्त्र और अंग विभूति रमाई हुई
नीचे मृगछाला करमाला अभ्यास नहीं तो क्या होगा
हो शाही महल रत्नजड़ित व कन्देव झाड़ फरनीचर भी
द्रष्टा से कहो देखे जाकर प्रकाश नहीं तो क्या होगा
इसी तरह मानव जन्म पाकर जो खुद को भूला है
प्रेमानन्द इस दुनिया में वह नाश नहीं तो क्या होगा ।
जिसके मन में विश्वास नहीं व निरश्वास नहीं तो क्या
होगा

तो इसलिए मैंने कहा—भाई मैं तुम्हारा पता पूछता हूँ कि तुम क्या हो भाई ? उसने कहा—ऐ महाराज, वतलाइये । फिर मैंने कहा—एक बात ध्यान देना कि किसी भी काम को करने के लिए हम एक formula बना लिया करते हैं, एक गुर बना लिया करते हैं। तो इसलिए यहाँ भी अपने-आपको समझने के लिए, अपने-आपको समझाने के लिए एक formula का ध्यान रखना, वह formula क्या है ? The thing which is mine cannot be me.

जो चीज मेरी है वह मैं नहीं । सीधी-सी बात है जो वस्तु

मेरी है वह मैं नहीं। अगर यह कहता हूँ कि यह रूमाल मेरा है तो मैं तो रूमाल से कोई अलग चीज हूँ। इसी प्रकार भाई, जब हम यह कहते हैं कि डॉक्टर साहब मेरा जिस्म आज बड़ा दर्द कर रहा है, आज मेरे शरीर में बड़ा दर्द है— Doctor, my whole body is paining today. The body is mine मेरा जिस्म है, मैं जिस्म नहीं। I am not the body but body is mine—मेरा जिस्म है मैं जिस्म नहीं। कहने लगे यह तो ठीक बात है। मैंने कहा इसके आगे चलो। हम कहते हैं कि आज महात्मा भाषण दे रहे थे लेकिन मेरा मन कहीं-कहीं भाग रहा था, तो मेरा मन My mind, I am not the mind. कहता है, मन मेरा है मैं मन भी नहीं। बात तो ठीक है भाई। कहता है, महाराज बुद्धि हो सकता हूँ। हम कहते हैं कि मेरी बुद्धि आज इस बात में नहीं लगती। My intellect does not grasp this problem. मेरी बुद्धि, मैं बुद्धि भी नहीं। बुद्धि से भी परे कोई चीज है। तो कहता है कि क्या महाराज मैं प्राण हो सकता हूँ? मैंने कहा, नहीं। तुमने कभी सुना होगा किसी दुखी आदमी को, वह कहता है—O God, take away my life. हे भगवान् मेरे प्राण कब निकलेंगे? तो मेरे प्राण, मैं प्राण भी नहीं। तो मन से परे, बुद्धि से परे, देह से परे, इन्द्रियों से परे, कुछ ऐसी चीज है जो मैं तो हूँ। कुछ तो हूँ मैं, जो सुबह से शाम तक कहता हूँ कि मैं हूँ, बच्चा कहता है कि मैं हूँ। पच्चीस बरस के बाद एक मित्र मिलता है और कहता है कि मैं तो वही हूँ। अरे भई तुम्हारा शरीर

बदल गया, तुम्हारा जिस्म बदल गया। आज साइंस सिद्ध करती है कि हर सात बरस के बाद जिस्म के अन्दर पुराने खून की एक बूँद भी बाकी नहीं रहती। तो तुम्हारा शरीर बदल गया, तुम्हारी सुन्दरता झुर्रियों में बदल गई। तुम्हारी देह बदल गई, देह के अन्दर नाड़ियाँ बदल गईं, नाड़ियों में बहने वाला खून बदल गया। लेकिन तुम तो कहते हो भई कि मैं तो नहीं बदला। जब दिन-भर इस संसार में खेलते हो जबकि शाम को इस संसार के स्वप्न में खेलते हो और फिर गहरी नींद में चले जाते हो और फिर सुबह उठते ही कह देते हो कि मैं रात को ऐसा सोया कि मुझे कुछ भी होश नहीं था। I slept such a sound sleep that I was completely unconscious of the whole world. लेकिन प्यारे who was conscious of your unconsciousness? वह कौन जाग रहा था जिसने सुबह उठते ही बतला दिया कि मैं रात को ऐसा सोया कि मुझे होश नहीं। तेरी बेहोशी का किसे होश था? एक अदालत के अन्दर एक गवाह पहुँचा—eye witness, मजिस्ट्रेट कहता है, तू गवाह है? हाँ मैं गवाह हूँ। अच्छा बयान दो। गवाह कहता है कि मैं भगवान् की कसम खाकर कहता हूँ कि रात को फलां जगह फलां समय पर कोई नहीं था। बहुत अच्छी बात है। I swear by the name of God that at such and such time and at such and such place no body was present. ठीक है। अब भई यह बतलाओ कि यह Eye witness हैं या hear say हैं। बात सुनी-

सुनाई कहते हो या देखी हुई कहते हो ? कहता है देखी हुई कहता हूँ। तो वह statement लिखता हूँ कि मैं यह आँखों देखी हुई बात गवाह के रूप में कहता है कि रात को इतने बजे फलां जगह पर कोई आदमी नहीं था। तो मजिस्ट्रेट बयान को हाथ में लेता है और कहता है कि My friend, your own statement contradicts your own statement. तुम्हारा अपना बयान तुम्हारे बयान को गलत साबित करता है क्योंकि तुम कह रहे हो कि रात को आँखों देखी हुई बात मैं कहता हूँ कि रात को दो बजे फलां जगह पर कोई नहीं था। इधर तुम यह कहते हो कि यह मेरी आँखों देखी बात है। प्यारे तू तो वहाँ देखने वाला था कि नहीं, तू देख रहा था या नहीं ? जिसने सुबह आकर अदालत में बतलाया कि मैं आँखों देखी यह बात कहता हूँ कि रात को दो बजे फलां जगह पर कोई न था।

उस वक्त भी तू तो मौजूद था और तू देख रहा था। इसीलिए ऐ इन्सान जब तेरा यह शरीर सो जाता है तब इन्द्रियाँ सो जाती हैं, यह मन सो जाता है, जब न स्वप्न की दुनिया रहती है न जागृत की अवस्था रहती है। वहाँ भी सुबह तू उठता है तो कह देता है कि मैं जाग रहा था। मैं ऐसा सोया कि मुझे होश नहीं था। तो तेरी बेहोशी का किसे होश था ? You are conscious of your unconsciousness.

उसी वक्त तुम्हें बेहोशी का भी होश था, तुम्हें उस अज्ञान का भी ज्ञान था। वह तुम क्या हो ? तुम ये इन्द्रियाँ नहीं इन्द्रियों के स्वामी हो, मन नहीं मन के स्वामी हो, देह

नहीं देह के स्वामी हो। लेकिन तुम देह के ठाकुर होकर देह की दासता कर रहे हो, मन के स्वामी होकर मन के दास बनकर भाग रहे हो। मन के दास होकर दर-दर की ठोकरें खाते हो इसका कारण यही है। तब तो आप अपने-आपको सुखी और दुखी मान रहे हो और तुम्हारी life, तुम्हारा जीवन जो प्रसन्नता का स्वरूप होना चाहिए, जहाँ तू आनन्द का सागर है। लेकिन तू आनन्द होते हुए भी—"जैसे जल में मीन प्यासी, मोहे देखत आवे हाँसी"—घर में खजाना होते हुए दर-दर की भीख माँग रहा है।

अन्दर तेरे भर्‌या खजाना चाबी संतन पास सखी।
लाये बिना नहीं खुलता ताला मिले न दौलत रास सखी।
मिलते हैं जितने प्रकाश जगत् में सबका वह प्रकाश सखी।
कहीं तो स्वामी बनकर बैठा कहीं तो भया है दास सखी।
आँखें उसको देख नहीं सकती है आँखों में निवास सखी।
कान तो उसको सुन नहीं सकते है कानों में निवास सखी।
अक्ल तो उसको समझ न सकती रहता अक्ल में खास सखी।
सबमें रहकर फिर भी न्यारा निर्मल ज्यूँ प्रकाश सखी।
और 'प्रेमानन्द' अन्दर ऐसे बसे ज्यूँ फूलन में बास सखी।

वह सबके अन्दर, इस तत्त्व को जानने की कोशिश करो और वह तत्त्व तुम हो। लेकिन यह कब तक तुम्हें मालूम न होगा—तुम अपने जीवन के अन्दर भोगों की वास्तविकता को छोड़कर, भोगों की वास्तविकता को समझकर जब तक इनके स्वामी बनकर संसार में नहीं रहोगे। ये भोग तुम्हारे लिये बनाये गए हैं, तुम इनके लिए नहीं बनाये गए हो। संसार

तुम्हारे लिए है, तुम संसार के लिए नहीं। ये इन्द्रियाँ तुम्हारे लिए हैं, तुम इनके लिए नहीं। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तुम्हारे लिए हैं .तुम इनके लिए नहीं। ये नहीं कि काम आया और नचा दिया, भोग आया और नचा दिया। ये नहीं कि रोग आया और रुला दिया।

Let thousand of rivers of misery come to me, let thousand of rivers of happiness come to me. I am no slave to happiness no slave to misery. दुखों के बादल उमड़कर आ जायँ और सुखों के लाखों बादल उमड़कर आ जायें, लेकिन न तुझे सुखों का दास बनना होगा और न दुखों का दास बनना होगा, क्योंकि सुख और दुख तेरे से परे कोई चीज हैं। तू इनका देखने वाला है, ये तुझ पर असर नहीं कर सकते। चारों तरफ घूमते हुए भी चारों तरफ दुखों के बादल उमड़ते रहे। लेकिन तू हँस सकता है, मुस्कराहट को छोड़ नहीं सकता, क्योंकि मुस्कराहट तेरा स्वरूप है क्योंकि You have to be happy be happy and happy.

ये दो लाइनें कहा करता हूँ—Duty for happiness and happiness for duty. तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम प्रसन्न रहो और तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम अपने कर्तव्य का पालन करते हुए खुश रहो। Duty for happiness and happiness in duty. जिस भी कर्म के लिए तुम रख दिये गए हो वह तुम्हारी acting है। तमाशा समझकर करते हुए चले जाओ। अज्ञानता के अन्धकार में जब तक तुम पड़े

हुए हो, जब तक अज्ञानता का अंधकार है, तब तक यह सिनेमा तुम्हें दिखाई देता है। सिनेमा हॉल में जाते ही केवल screen ही screen है, परदा-ही-परदा है। उस परदे को देखकर तुम देखते हो कि परदे पर कुछ नहीं। थोड़ी देर में सिनेमा वाले अन्धकार दिखा देते हैं, light off कर देते हैं। जब तक रोशनी रहती है तब तक सिनेमा दिखाई नहीं देता। जहाँ प्रकाश को भगा दिया जाता है, वहाँ अन्धकार छा जाता है। तब तुम देखते हो सामने सिनेमा के परदे के ऊपर गंगा जी बह रही है। गंगाजी के अन्दर लोग स्नान कर रहे हैं, गोते लगा रहे हैं। लोगों को ठंडक पहुँच रही है। लोग राम-नाम ले रहे हैं। लेकिन प्यारो ! यह बतलाओ कि क्या वह बहती हुई गंगा तुम्हें सुख पहुँचायेगी, तुम्हें ठंडक पहुँचायेगी ? इतनी देर में तुम देखते हो वहाँ हलवाई की दुकान है। पूड़ियाँ निकल रही हैं। पूड़ियों की हवा निकलती हुई तुम देख रहे हो। गरम-गरम हलवे में से तुम हवा निकलती हुई देख रहे हो। तुम्हारे मुँह में पानी आ जाता है। तुम भी अपनी भूख को मिटाना चाहते हो। तुम्हें भी भूख लग रही है। सिनेमा के अन्दर परदे के ऊपर तलती हुई पूड़ी, परदे पर बना हुआ हलवा जो है वह क्या तुम्हारी भूख को मिटा सकेगा ? लेकिन जरा light on कीजिए, जरा बल्ब को जला दीजिए। जरा रोशनी को ले आइए, जरा प्रकाश में आ जाइए। फिर देखिए, कहाँ जाता है वह आपका परदा, कहाँ है आपका वह हलवा, कहाँ गया वह हलवाई, कहाँ गई वह बहती हुई गंगा ? वहाँ केवल परदा-ही-परदा है। विलकुल

यही संसार की हालत है। जब तक तुम दोषों के अन्धकार में पड़े हुए हो तब तक तुम्हें शान्ति दिखाई दे रही है। तब तक ये रोना और हँसना तुम्हें दिखाई दे रहा है। जब तुम इनसे ऊपर उठोगे, जब तुम यह समझोगे कि सुख भी If pleasure comes it is transitory it must die. अगर खुशी आती है, यह भी बादल हैं, छँट जायँगे। दुःख आता है, ये भी बादल हैं, छँट जायँगे। गर्मी आती है, यह भी बादल है, छँट जायगा। क्योंकि

सुख ने संग न सदा निभाया।
दुःख भी आकर ठहर न पाया।

न सुख को है करार न दुख को करार है।
जो चीज है यहाँ पर सो वह बेकरार है।
इस घर में चार आये चार उठ खड़े हुए,
न जाने कब से यहाँ ये तार बरकरार है।
सब हैं यहाँ सवार किश्तीए उभरे रवां में,
आता है कोई वार तो जाता भी कोई पार है।
तख्ताए-हस्ती पर है चौसर बिछी हुई,
होती है कहीं जीत होती कहीं हार है।
इस गुलशने हस्ती में कहीं गुल हैं कहीं खार
बसती है कहीं खिजा कहीं पर बहार है।
रंजो अलम बेसूद है तेरा ये प्रेमानन्द,
कहता ये 'प्रेमानन्द' तू क्यों चिन्ता करता है,
होता है गम उन्हें जिन्हें खुशियों से प्यार है।

तो इसलिए भाई अपने जीवन को स्वच्छ बनाकर सुन्दर बनाने

की कोशिश करो। और यह देखिए कि अपनी मंजिल पर पहुँचने के लिए to have the drama of self-realization ये three act play हैं यहाँ—Self-purification, Self-illumination दूसरा असूल है, Self-realization यह तीसरा act है। Self-purification आत्मिक शुद्धि—आत्मिक शुद्धि नहीं कहना चाहिए बल्कि मानसिक शुद्धि—अपने मन के रोगों को शुद्ध करना। वह कहते हैं निर्मल बन जाओ। अरे भगवान् ढूँढने की जरूरत नहीं पड़ेगी, भगवान् के पीछे भागने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वह कहते हैं, कबीर साहब ने लकीर खींची थी—

"कबीर मन निर्मल भया ज्यों गंगा का नीर।
तो पाछे पाछे हर फिरे कहत कबीर कबीर॥"

ऐ इन्सान, तू इन्सान बन जा। ऐ इन्सान, तू अपनी सफाई कर ले। ऐ इन्सान, तू अपने जीवन को महान् बना ले। और अपने जीवन को जब महान् बना लेगा तो भगवान् का तो तू स्वरूप ही है। भगवान् तेरे से दूर नहीं। अरे "खुदा को ढूँढ़ रहा है यह कोई बड़ी बात है।" लोग कहते हैं कि भगवान् की खोज कर रहा हूँ। भगवान् की खोज करना कोई बड़ी बात नहीं, इन्सान बनना बड़ी मुश्किल की बात है। लेकिन आज इन्सान हैवानियत के रूप में है। senses के वस में होकर, इन्द्रियों के वशीभूत होकर अपने जीवन को बरबाद करता हुआ अपने जीवन के भोगों में, अपने जीवन को ऐश-परस्ती में बरबाद करता हुआ अपनी इन्सानियत को खो रहा है। लोभ के अन्दर फँसकर, क्रोध के अन्दर फँसकर, काम के अंदर

फँसकर इंसान अपनी इंसानियत को भूल चुका है, वह इसीलिए आज दुखी है। मैं इसीलिए कई बार कहा करता हूँ कि कभी इन्सान को भगवान् की खोज थी, आज भगवान् को इन्सान नहीं मिल रहा है। इन्सान उसे नहीं कहेंगे जो केवल सुन्दर कपड़े पहनता है। तन को तो वेश्या भी सजा लेती है। तन को तो एक सुन्दर भाट भी सजा लेता है। तन की तो बहुरूपिया भी सजावट कर लेता है। लेकिन इन्सान की सजावट तन से है मन से नहीं। इन्सान गुणों से पहचाना जाता है, शरीर से नहीं। इन्सान की कीमत उसके लिफाफे से नहीं। इसलिए कहा है कि—

> कभी सोचा है ऐ इन्सान तुझे दुनिया से जाना है।
> किये हैं कर्म जो तूने सिला कुछ उनका पाना है।
> अगर खुदा ने बख्शा है तुझे कुछ इज्जत और रुतबा,
> अमानत जान उसमें कुछ इज़ाफा कर दिखाना है।
> नुमाइश और दिखावा गरचे तेरे मन को भाता है।
> लिफाफा कुछ नहीं चिट्ठी का मज़मून देखा जाता है।

कीमत मज़मून की होती है, कीमत letter की होती है कि नहीं। कीमत चिट्ठी की होती है, लिफाफे की नहीं होती। envelope यह देह तो कल को खाक में मिल जायेगी। यह चिट्ठी तो कल को मिट्टी में मिल जायगी। मिट्टी को तो कोई दो कौड़ी में भी न खरीद पाएगा। लेकिन कीमत है तुम्हारे किये हुए कर्मों की, जीवन की। अपने जीवन को महान् बनाने की कोशिश करो। अपने जीवन को purify करके अपने दोषों को हटाने की कोशिश करो, क्योंकि इन्सान

को ज्यादा-से-ज्यादा दुखी करने वाली वस्तु होती है अपने किये हुए दोष। अपने किये हुए दोष इन्सान को दुखी करते हैं। आज इन्सान अपनी इन्सानियत को भूलकर, अपनी मानवता को भूलकर इस चरित्रहीनता के गढ़े में गिरता जा रहा है। आज इन्सान को जरूरत है कि वह देखे कि जिन्दगी क्या है ? अरे, यहाँ तो भाई ! एक बात को कहकर समाप्त करता हूँ कि Law of Karma. वह कहता है कि Law of Karma दो बातों को सिद्ध करता है। पहली बात, किसान बीज डालने में बिलकुल स्वतन्त्र है। जमीन किसान से चिल्लाकर नहीं कहती कि मेरे में चना नहीं गेहूँ बो दे, गेहूँ नहीं चना बो दे, जौ नहीं मक्का बो दे। किसान बिलकुल स्वतंन्त्र है जमीन में बीज डालने के लिए और बीज डालने के बाद वह जमीन का परतन्त्र हो जाता है। अगर चना डालने के बाद वह गेहूँ की आशा रखता है तो वह मूर्ख है। गेहूँ डालने के बाद मक्का की आशा रखता है तो वह मूर्ख है। मक्का डालने के बाद गेहूँ की आशा करता है तो वह भी मूर्ख है। उसकी आशा कभी पूरी नहीं हो सकती, उसकी आशा कभी पूर्ण नहीं होगी। दूसरी बात, जमीन के अन्दर गया हुआ बीज कभी अकेला वापस नहीं आता, अनेक बीज साथ में लेकर वापस आता है। एक बीज गया वह कई बीज वापस लेकर आता है। इसीलिए जिन्दगी के अन्दर जग में जो कुछ बोया जाता है वह कई गुणा बढ़कर आता है—

"जो सुख देता वह सुख पाता।
मानुष अपना भाग्य विधाता ॥"

कहता है—

"तुमको यदि विश्वास न हो तुम भी जी भरकर देख लो।
इस जग में कितना भी आजाद विचरकर देख लो।
तृप्ति न होगी कितना भी तुम इधर उधर देख लो।"

सो इसलिए जो कुछ करना चाहिए, बिलकुल आजाद होकर कोई तुम्हें रोक न सकेगा, कोई तुम्हारा हाथ न पकड़ेगा। लेकिन भाई इतना ख्याल रखना कि जब कुछ करने लगो तो यह सोच लेना कि कई गुणा बढ़कर तुम्हारे सामने आ जाय तो तुम्हें स्वीकार है ? क्या तुमको स्वीकार है ? कल को किसी की बुराई करने से पहले यह सोच लेना कि अनेक ज़बानें तुम्हारी बुराई करें तो तुमको स्वीकार है ? किसी को दुःख देने से पहले सोच लेना कि वह दुःख का बीज, दुःख के अनेक बीज तुम्हारे सामने आ जायँ, क्या तुमको स्वीकार है ? अगर स्वीकार है तो बड़े शौक से करो। तुम्हारे अपने हाथ का खेल है। You are your master and you are your servant. तुम अपने मित्र हो। You are your friend and you are your enemy. कोई दूसरा तुम्हारा मित्र नहीं, कोई दूसरा तुम्हारा शत्रु नहीं। तुम अपनी मित्रता, तुम अपने आपको धोखा दे रहे हो, किसी दूसरे को धोखा नहीं दे सकते। अपने आपसे बुराई कर रहे हो, किसी अन्य से बुराई नहीं कर सकते। तुम्हारी मज़ाल नहीं कि किसी का बुरा कर सको। तुम अपने-आपके लिए दुखों का बीज बो रहे हो। तो इसलिए ज्यादा न कहता हुआ जीवन के अन्दर इस वक्त को पहचानने की कोशिश करो। आप अपने जीवन

के अन्दर अपने स्वरूप को समझने की कोशिश करो कि तुम क्या हो। तुम क्या हो ? समझकर, यह शरीर अभी साढ़े पाँच साल का convent से पढ़कर जल्दी वापस आ गया। एक छोटी-सी बात कहता हूँ, convent से पढ़कर जल्दी आ गया, कुछ तबियत खराब थी। शरीर में कुछ बुखार था। जब convent से पढ़कर वापस आया, इतने में पिताजी भोजन करने के लिए आये तो आते ही मुझसे पूछा, What is the matter with you, boy ? तुम्हारे साथ आज क्या बात है ? तो मैंने हँसते हुए कहा—Daddy, I am feeling sick. डैडी, आज तबियत खराब है। उन्होंने आव देखा न ताव। मैं तो कई बार कहता हूँ कि बच्चा चार आने बीमार होता है तो माँ-बाप उसे बारह आने बीमार कर देते हैं। उसके ऊपर जो संस्कार डाले जाते हैं कि तू बीमार है, तू बीमार है—यह उसकी बीमारी का सबसे बड़ा कारण होता है। तो जब हमने कहा, Daddy I am feeling sick, तो उन्होंने आव देखा न ताव, जोर से थप्पड़ लगा दिया, जोर से slapping किया और कहा, Never say I am sick— Say the body is sick we, will get the medicine for it. तो उन्होंने कहा, खबरदार जो आज के बाद कहा मैं बीमार हूँ। कहो शरीर बीमार है। दवा ले आयेंगे, इलाज कर देंगे। मकान गिरता है, मरम्मत कर देंगे। अगर बहुत डरने लगे तो गिराकर नया बना लेंगे। लेकिन कहते हैं भाई कि यह मत कहो कि मैं बीमार हूँ, मैं तो मैं ही हूँ, मेरे में कोई विशेषता नहीं है। I am I। मैं यह हूँ यह नहीं हो सकता।

हाँ, यह तो हो सकता है कि यह भी मैं नहीं ? लेकिन मैं यह हूँ यह नहीं हो सकता। मैं तो मैं ही हूँ I am I। मेरे ऊपर कोई विशेषण नहीं, मेरे ऊपर कोई वस्तु नहीं। मैं तो मैं ही हूँ। उस मैं हूँ की पहचान कर और बाकी जितना कुछ है उसे पहचान। वह मेरा है अगर मकान गिरेगा, ऐसे अनेक मकान मैंने पहले गिरा दिये, अनेक फिर गिरा सकता हूँ, जन्म किसे कहते हैं ? मौत किसे कहते हैं ? जो पीछे न रहे। मैं पहले भी था, पीछे भी रहूँगा। इस देह से पहले भी था, इस देह से पीछे भी मैं रहने वाला हूँ। तो इसलिए मेरी मौत का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

तो इसलिए ऐ इन्सान तुझे मैं तेरी कीमत याद दिलाना चाहता हूँ। केवल तुझे याद दिलाना चाहता हूँ कि तू इन्सान है और इन्सान का फर्ज है कि इन्सान बनकर रहे। इन्सानियत को जरूरत है कि वह इन्सान बनकर रहे। और इन्सानियत तेरे से माँगती है कि तू इन्सान बनकर रह। आज देवता भी तरसते हैं, क्योंकि देवता भी भोग योनी हैं। और पशु भी भोग योनी हैं। पशु भी भोग भोगते हैं और देवता भी भोग भोगते हैं, लेकिन केवल मनुष्य ही ऐसा है जो अपने जीवन के अन्दर कर्म की ताकत रखता है, जो अपने जीवन में आत्मज्ञान का प्याला पी सकता है, जो अपने प्राणस्वरूप को पहचान सकता है, जो अपने स्वरूप को पहचान सकता है। केवल एक इन्सान इन्सान ही है, इसीलिए कहा हैं कि—

"इन्सान को नहीं है इन्सान की कदर
और फरिश्ते को हसरत है कि इन्सान बन जाए।"

देवता तरसते हैं कि हमें मनुष्य का चोला मिले। लेकिन इन्सान मानुष चोले को गंवा रहा है।

मानुषता क्या है ? मानुषता क्या demand करती है ? ऐ इन्सान, तू इन्सान बनकर जी। ग्रौर इन्सान कौन है, जो master of temple है, controller of desires है। One who rides the horses of desires and is not driven by them. जो इन्सान इच्छाग्रों के घोड़े पर सवार है, इच्छाग्रों के हाथों नाचता नहीं, वह इन्सान है। इच्छाग्रों के घोड़े पर सवारी करके देखो, फिर देखो कि जिन्दगी में क्या मस्ती ग्राती है, जिन्दगी में क्या ग्रानन्द ग्राता है ? वह कहते हैं—

"मालो दौलत से न वास्ता न गरज मुकामो कयाम से,
जिसे कोई निसबत खास हो उस शमा रूपी राम से।
मुझे गरज किसी से न वास्ता मुझे काम ग्रपने काम से,
तेरे जिक्र से तेरे फिक्र से तेरी याद से तेरे नाम से
दुनिया के विषय हैं क्या बला माया तुझे जो हो हौंसला
जरा ग्राके कर ले मुकाबिला मेरे एक मस्तीए-जाम से

तो उस मस्तीए-जाम के ग्रागे, उस वास्तविकता के ग्रागे दुनिया झुक जाती है, जिन्दगी जिन्दगी बन जाती है।

मौत को मौत ग्रा जाती है ग्रौर जिन्दगी को जिन्दगी मिल जाती है, ग्रौर इन्सान ग्रपनी इन्सानियत को पहचानता हुग्रा, निर्भय, निर्विकारी हो ग्रपने जीवन में चलता है।

निर्मलता उसके जीवन में ग्रा जाती है ग्रौर जहाँ निर्मलता ग्राती है इन्सान के पीछे भगवान् भागता है।

इन्सान को भगवान् के पीछे जाने की जरूरत नहीं।

तीन

तेरे ख्याल में यों दिल को लगाये रहता हूँ
न पाके भी तुझे मै दिल में पाये रहता हूँ।
कभी तो आओगे दिल में इसी ख्याल से
तेरी राह में आँखे बिछाये रहता हूँ
तेरी याद में मुझे कुछ याद नहीं रहता
कहाँ हूँ क्या हूँ मैं यह भी भुलाए रहता हूँ।
इतना बढ़ गया है जौकें बन्दगी मेरा
कि जहाँ भी हूँ मैं सिर को झुकाए रहता हूँ।

वास्तविकता में जैसा कि शास्त्रकारों ने कहा है माया को अनिर्वचनीय बताया गया है। माया का वास्तविक अर्थ है मा—या। जो है और नहीं है, जो है भी और नहीं भी। माया को कुछ लोग भ्रम समझ लेते हैं। माया को कुछ लोग illusion समझ लेते हैं। माया का जब कहीं भी जिकर कर दिया जाता है कि संसार एक माया

है, तो तुरन्त ही यह मान लिया जाता है कि इसका मतलब है कि संसार है नहीं। लेकिन वास्तविकता में माया का मतलब यह नहीं। माया is not illusion but statement of facts. माया illusion नहीं है, माया भ्रम नहीं है बल्कि माया किसी चीज को बयान करती है। माया कुछ कहती है। माया कहती है कि जो चीज जैसी दीखती है वैसी नहीं है। जो तुम समझते हो वैसा नहीं है। जिस प्रकार यह संसार तुम्हें नज़र आता है वैसा यह संसार नहीं है। किसी भी वस्तु को इस संसार के अन्दर सत्य माना जा सकता है या असत्य माना जा सकता है। सत्य वस्तु वह है जो हमेशा रहती है, असत्य वस्तु वह है जो कभी रहती नहीं। अगर संसार को देखा जाय तो संसार को न सत्य माना गया न असत्य माना गया। इसीलिए संसार को वेदान्त के अन्दर मिथ्या कहा गया, माया कहा गया। मिथ्या का अर्थ झूठ नहीं, मिथ्या का अर्थ असत्य नहीं। मिथ्या का अर्थ है जो सत्य भी है और असत्य भी। जो न होते हुए भी दीखता है और जो होते हुए भी नाश हो जाता है—उसको माया कहते हैं। मिथ्या है यह—वह सत्य भी नहीं, असत्य भी नहीं—क्योंकि अगर यह सत्य होता तो जिस समय हम सुषुप्ति के अन्दर चले जाते हैं, गहरी नींद के अन्दर चले जाते हैं, Sound sleep के अन्दर चले जाते हैं वहाँ हमें यह संसार नजर नहीं आता। आप जानते हैं कि मानव-जीवन की कई अवस्थाएँ होती हैं—जाग्रत अवस्था the wakfulness, स्वप्न

अवस्था the dreaming state और उसके बाद सुषुप्ति अवस्था the sound sleep। अब जाग्रत के अन्दर हमें जो संसार नजर आता है वह हमें स्वप्न के अन्दर नहीं आता, और स्वप्न के अन्दर जो संसार नजर आता है वह उसके अन्दर नजर नहीं आता जब हम गहरी नींद के अन्दर होते हैं। लेकिन इन सब अवस्थाओं के अन्दर एक चीज़ ऐसी होती है। एक ऐसी reality है जो कि उसमें भी जाग्रत रहती है, जो जाग्रत में भी जाग्रत रहती है, जो स्वप्न में भी रहती है और सुषुप्ति के अन्दर भी रहती है। जब कुछ भी नहीं रहता, जब शरीर भी सो रहा है, जब इन्द्रियाँ भी सो रही हैं, मन भी सो रहा है, उस वक्त एक ऐसी अवस्था होती है उस वक्त कोई ऐसी चीज़ जाग्रत रहती है जिससे इन्सान सुबह उठता है और कह देता है कि मैं रात ऐसा सोया कि दुनिया का कुछ होश न रहा, मुझे दुनिया का कुछ ख्याल नहीं रहा। I was so unconscious of the whole world. I had such a sound sleep. तो जब ऐसा मनुष्य कहता है तो भाई विचार करना पड़ता है कि किसने सुबह उठते ही यह कहा कि मैं रात को ऐसा सोया कि मुझे दुनिया का कुछ होश न रहा। तो आप सच बताइये कोई ऐसा था जो उस वक्त भी जाग रहा था, कोई ऐसी reality, कोई ऐसी शक्ति उस वक्त भी जाग रही थी जिसने उठते ही यह बतला दिया कि तू ऐसा सोया कि तुझे दुनिया का कुछ होश न रहा—दूसरे शब्दों में मुझे बेहोशी का भी होश था I was conscious of the

unconsciousness.

एक अदालत के अन्दर एक गवाह पहुँचता है, एक eye witness पहुँचता है और कहता है कि मैं खुदा की कसम खाकर, ईश्वर की कसम खाकर यह कहता हूँ कि रात को फलाँ जगह फलाँ चौक में रात को दो बजे कोई नहीं था। मजिस्ट्रेट पूछता है कि यह तुम आँखों देखी बात कहते हो या कानों सुनी ? Is it eyewitness or a heresay ? तो कहता है कि eyewitness। तो मजिस्ट्रेट कहता है कि लो अपनी statement लिखो। तो statement लिखता है कि I swear by the name of God that at such and such place and such and such time there nobody was present. मजिस्ट्रेट उसके हाथ से statement लेता है और कहता है कि my dear friend, your own statement contradicts your own statement. तुम्हारा अपना बयान ही तुम्हारी बात को गलत साबित करता है। तुम जब यह कहते हो कि फलाँ जगह पर रात को दो बजे कोई आदमी मौजूद न था। तो इसे लेकर तुम कहते हो कि मेरी आँखों देखी यह बात है। तो प्यारे इससे यह सिद्ध होता है कि तुम वहाँ खड़े थे और देख रहे थे—कोई नहीं का साक्षी भी कोई था, कोई नहीं का द्रष्टा भी कोई था—कोई नहीं का बयान करने वाला भी कोई-न-कोई था वह चीज़, वह वास्तविकता कोई-न-कोई थी जिसने तुम्हें सुबह उठते ही बतला दिया कि तू बेहोश था—नहीं तो बेहोशी का होश किसी को होता नहीं तो कुछ न होने का होश किसे होता—अगर कोई

reality ना होती, अगर वहाँ पर कोई मौजूद न होता तो कोई नहीं को साबित कौन करता ? कोई नहीं का गवाह कौन होता, कोई नहीं का द्रष्टा कौन होता ? कोई-न-कोई जाग रहा था जिसने सुबह उठते ही कह दिया कि कोई-न-कोई reality जरूर है । तो माया क्या है ? तो माया और भ्रम का वास्तविक अर्थ देखा जाय तो माया only is statement of facts । माया यह बयान करती है कि संसार जो है mixture of opposites है । यह सत्य भी है और असत्य भी है । सत्य भी दीखता है और असत्य भी नहीं है । यह केवल manifestation है । इसके अन्दर अच्छाइयां और बुराइयां, संयोग और वियोग, कोई इसको जुदा नहीं कर सकता । हर बुराई के अन्दर अच्छाई छिपी हुई है । वास्तविकता में देखा जाय तो बुराई और अच्छाई क्या है ? Evil is only less virtue. बुराई क्या है ? बुराई कम अच्छाई है । दुनिया के अन्दर कोई ऐसी अच्छाई बतला दो जो दुनिया के अन्दर बुराई के साथ न मिली हुई हो कोई ऐसी बुराई बतला दो जिसमें अच्छाई न छिपी हो, कोई ऐसा संयोग बतला दो जिसमें वियोग न हुआ हो, ऐसी रात्रि बतला दो जो प्रातः न लाती हो । वह कहते हैं—सुबह कहते हैं जिसे वह शाम का अफसाना है । यह evening is only the story of the morning । यह सुबह जिसे कहते हैं वह उस शाम या रात की कहानी ही तो बयान करती है । तो दुनिया के अन्दर कोई ऐसी जिन्दगी बतला दो जिसके साथ मौत न हो, कोई ऐसा फूल बतला दो जिसके साथ

काँटा न हो। ये सब चीज़ें मिली हुई हैं, इनको कोई जुदा नहीं कर सकता। इनको कोई अलग न कर सकेगा ? हर जीवन के साथ मौत मिली हुई है। हर संयोग के साथ वियोग मिला हुआ है। हर भोग के साथ रोग मिला हुआ है। हर अच्छाई के साथ बुराई मिली हुई है। इनको कभी seperate न किया जा सकेगा। इनको कभी अलग न किया जा सकेगा। दुनिया के अन्दर कोई ऐसा सुख ला दो जो दुख का वारंट न लाता हो। वह कहता है—

"जग में सुख आसक्त मानव चिरशान्ति कहीं भी पा न सके। और सारे विज्ञानी जन मिलकर सुख को दुखरहित बना न सके।"

Even the greatest scientist of the world could create, could invent a pleasure without pain. कोई ऐसा सुख दुनिया में बतला दो जिसके साथ दुख न मिला हो—बड़े-बड़े साइन्सदानों ने बड़े-बड़े आराम के सामान पैदा किये। बड़े-बड़े उपाय, बड़े-बड़े inventions किये जा रहे हैं। आला से आला चीज़ें तैयार की जा रही हैं। लेकिन आप बतला दो कि जितना सुख आ गया है क्या उतना ही दुख उसमें मिला हुआ नहीं है ? तो इसीलिए दुनिया-भर के वैज्ञानिक भी दुख को सुख से अलग न कर सके। दुनिया-भर के साइन्सदान भी मौत को जीवन से अलग न कर सके, बुराई को अच्छाई से अलग न कर सके, संयोग को वियोग से अलग न कर सके। इसलिए माया है—statement of facts। यह बतलाती है कि यह संसार

ऐसा-का-ऐसा ही रहेगा। इसको जो बदलने की इच्छा करता है वह गलती करता है। तू यह गलत समझता है कि दुनिया में एक ऐसा समय आएगा कि जब मैं अच्छाई-ही-अच्छाई पैदा कर सकूँगा। तू बहुत गलती पर है। वह कहते हैं भई—

"दुनिया वज़ाहर में बहुत हँसीं है
मगर हकीकत में देखो तो कुछ नहीं है
नज़र के जविये बदले हुए हैं।

दुनिया तो जहाँ पर थी वहीं पर है।" संसार कभी बदला नहीं करता। केवल उसके अन्दर reality को Vedanta यही कहता है कि इन्सान तुझे इन चीजों से ऊपर उठ जाना है नहीं तो कहते हैं—

In wealth there is fear of poverty
In knowledge that of ignorance
In beauty that of age
In fame that of back biters
In success that of jealousy
Even in body is the fear of death
All in this world is fraught with fears
Only he is fearless who is risen
Above these things,

संसार के अन्दर निर्भय कौन? जो इन चीजों से ऊपर उठ गया। संसार से ऊपर उठना है और reality में आकर खड़े होना है—ऐसी reality के अन्दर, जैसे कि संसार के अन्दर एक इस तत्व को पहचान लेना है, यही Vedanta का सबसे बड़ा सार है। जब तू reality को पहचानेगा तो यह माया

जो है तुझ पर असर नहीं करेगी—माया तुझ पर असर नहीं कर सकेगी। अर्जुन ने भी भगवान् कृष्ण से यही कहा कि यह माया मुझसे काबू नहीं होती। तो भगवान् कृष्ण कहते हैं, ओ अर्जुन, This Maya of Mine is divine. यही बात भगवान् से अर्जुन ने कही कि हे भगवान! यह माया मुझसे काबू नहीं होती, यह माया मुझसे सँभाली नहीं जाती, यह माया मुझ पर बहुत असर करती है। तो भगवान् कहते हैं, ओ अर्जुन! This Maya of Mine is divine. माया को यह नहीं कहा कि बुरी है। भगवान् ने माया को depriciate नहीं किया और कहा कि अर्जुन, This Maya of Mine is divine. यह माया मेरी है, You come unto me and thy shall be saved—हे अर्जुन, तू मेरी शरण में आ जा। दूसरे शब्दों में—हे अर्जुन, तू आत्म-तत्व में आ जा तू अपने स्वरूप को पहचान जा, तब तेरे लिए यह माया दुखदायी नहीं। वास्तव में यह सुख और दुःख तो आते ही रहेंगे, संयोग और वियोग आते ही रहेंगे, भोग और रोग आते ही रहेंगे, पर ये तुझ पर असर न कर सकेंगे। इसलिए यह माया क्या है? जिन्दगी के अन्दर वह reality, वह वास्तविकता क्या है, वह मैं क्या तत्त्व है, जो हर हालत में एक सम रहता है—जिसके ऊपर कोई असर नहीं होता, यही जिन्दगी का सबसे बड़ा सार है, वही एक ही reality है, जो हर हालत में, हर चीज में, हर तत्त्व में रहती है। और जिन्दगी के अन्दर वह reality क्या है? उसको पहचानने की कोशिश करिये। मैं अमृतसर कॉलेज से एक बार भाषण

देकर निकला। आकर कुटिया में बैठा ही था कि एक नौजवान मेरी कुटिया के पास आया। उसने अच्छा सूट-बूट पहना हुआ था और आते ही कहने लगा, अरे बाबा, यह क्या God God nonesense talk लगा रखी है? कहाँ है आपका ईश्वर? मैंने उससे कहा कि क्या ईश्वर से मिलना चाहते हो तो कहने लगा कि हाँ, मिलना चाहता हूँ। पर मेरे पास केवल पाँच मिनट बाकी हैं क्योंकि कॉलेज का period लगने ही वाला है। मैंने कहा, बहुत अच्छी बात है, भई तेरा कॉलेज का period लगने वाला है—तो पाँच मिनट में तुझे जाना है। वह कहने लगा, हाँ, पाँच मिनट में मुझे जाना है सो मुझे जल्दी भगवान् से मिला दो। मैंने कहा, बहुत अच्छी बात है, पर तुम्हें एक बात बतलाऊँ कि देखो एक मामूली Collector से भी मिलना होता है तो पहले उसको चिट भेजते हैं कि मुझे इतना टाइम चाहिए मिलने के लिए, This is my address I want to see you. मुझे time दिया जाय, मुझे appointment दी जाय। तो भाई तुम उस Director of the Universe और Controller of the Maya से मिलना चाहते हो। इतने भारी महान् आदमी से मिलने को कम-से-कम मुझे अपना address दे दो, अपना पता दे दो। मैं तुम्हारा पता भेज दूँगा और वह तुमको मिलने के लिए आ जायगा। कहने लगा, बाबा, क्या nonesense talk लगाते हो और कहते हो कि मुझे मिलने जायगा। मैंने कहा, At least give me your own address. तो कहने लगा, अच्छा लिखो मेरा address, मेरा पता है—मोहनलाल कपूर,

नमक मण्डी, अमृतसर। मैंने कहा, मैंने तो तेरा पता पूछा था, यह किसका पता बता रहा है—मैं तो तेरा पता पूछ रहा हूँ, तेरा address पूछ रहा हूँ, और तू यह किसका पता बता रहा है? कहता है कि यह मेरा पता है, मैं अपना ही पता बतला रहा हूँ। मैंने कहा, मैं तो तेरा पता पूछ रहा हूँ कि तेरा address क्या है? कहने लगा, क्या मतलब? मैंने कहा, सुनो भैया, जब तुम पैदा हुए तो तुम्हारा क्या नाम था? कहने लगा, कुछ नहीं। मैंने कहा, मोहनलाल कब रखा गया? कहने लगा, छः महीने बाद। मैंने कहा, किसने रखा? तो कहने लगा, माँ-बाप ने। मैंने कहा, बहुत अच्छी बात है, अगर मोहन लाल की जगह सोहनलाल रख दिया जाता तो? कहने लगा तो सोहनलाल होता। मैंने कहा कि जब तुम पैदा हुए और नाम रखा गया छः महीने के बाद, तो तुम क्या थे? तुम तो उन छः महीने भी कुछ थे। कल को लोग कहेंगे कि मोहनलाल मर गया। क्या मर गया? मरता क्या है? शरीर ऐसे पड़ा है, हाथ ऐसे पड़े हुए हैं, टाँग ऐसी पड़ी हैं, वैसी ही नाक—सब-कुछ वैसे ही पड़े हुए हैं और लोग कहते हैं मोहनलाल मर गया। क्या मर गया ध्यान देना—

"जिसके मन में विश्वास नहीं है निरआस नहीं तो क्या होगा।
जो विष को अमृत समझा है वह नाश नहीं तो क्या होगा।
हो चन्द्र वदन युवावस्था, भूषण वस्त्रों से सजी हुई।

(चाँदी-जैसा शरीर हो और जवानी की अवस्था तथा सुन्दर शृङ्गार पहने हुए हो)

हो चन्द्रवदन युवावस्था, भूषण वस्त्रों से सजी हुई

रंग गुलाल पीताम्बर पालिक इक साँस नहीं तो क्या होगा।
हो जटाजूट गेरुआ वस्त्र और रंग विभूति रमाई हुई
नीचे मृगछाला करमाला अभ्यास नहीं तो क्या होगा।
हो शाही महल रत्नजड़ित (कन्देल) झाड़ फरनीचर भी
द्रष्टा से कहो देखे जाकर प्रकाश नहीं तो क्या होगा।"

इसी प्रकार—

जो मानव जन्म पाकर खुद को भूला है
'प्रेमानन्द' इस दुनिया में वह नाश नहीं तो क्या होगा।
जिसके मन में विश्वास नहीं वह निरआस नहीं तो क्या होगा।

जिन्दगी के अन्दर, दरअसल हमारे अन्दर कोई मौत नहीं मानी गई। "खुद शनासी ही जिन्दगी है खुद फरामोशी मौत है।" अपने आपको जानना ही जीवन है, अपने-आपको भूल जाना ही मौत है। और कहीं मौत और जिन्दगी नहीं। क्योंकि जन्म किसे कहते हैं? ध्यान देना, एक शब्द के अन्दर अगर कह दूँ कि जन्म किसे कहते हैं? जन्म वह है जो पहले नहीं हो। मौत किसे कहते हैं? जो पीछे न हो। मैं इस जन्म में पहले भी था और हजारों देह फाड़ देने के बाद भी रहूँगा। मेरे जन्म का प्रश्न नहीं रहता, मेरी मौत का प्रश्न नहीं रहता Composition of certain elements is life and decomposition of same elements is death. कुछ तत्त्वों का मिल जाना ही जीवन है, उन्हीं तत्त्वों का बिखर जाना मौत है। जिन्दगी क्या है?—कुछ नअनासिर का जहूरे तरतीब। और मौत क्या है?—कुछ हिअजज़ा का परेशां होना। तो मानव-जीवन के अन्दर अगर हम पहचानते हैं तो मैं कह

रहा था कि वह क्या मर गया ? मैंने कहा, जरा बतलाना तो सही कि मेरा क्या-क्या खत्म हुआ ? मैं क्या हूँ। तो भई एक formula ख्याल में रखना—Thing which is mine cannot be me. जो चीज मेरी है वह मैं नहीं। यह शरीर मेरा है, यह मैं नहीं। हम डॉक्टर से कहते हैं, डॉक्टर साहब मेरा जिस्म दर्द कर रहा है, My body is paining. My body is mine I cannot be body. मेरा शरीर है, मैं शरीर नहीं, इन्द्रियाँ मेरी हैं मैं इन्द्रियाँ नहीं, मन मेरा है मैं मन नहीं, बुद्धि मेरी है मैं बुद्धि नहीं। अरे यहाँ तक कहते हैं—O God, take away my life. भगवान् मेरे प्राण कब निकलेंगे। प्राण मेरे हैं, मैं प्राण नहीं। लेकिन यह सब-कुछ होते हुए भी कोई ऐसी चीज है जो मेरा कहती है। जहाँ अकल नहीं, बुद्धि नहीं रहती, जहाँ मन नहीं रहता, जहाँ इन्द्रियाँ नहीं रहतीं, जहाँ कुछ नहीं रहता, जहाँ केवल मैं ही मैं रह जाता है—जो बचपन में भी कहता है मैं हूँ, जो रह जाता हूँ जो मैं हूँ तो मैं हूँ की reality को समझने की कोशिश कर। वह sun of life को समझने की कोशिश करो, वह जिन्दगी में जीवनता को समझने की कोशिश करो। तो भई मैं कह रहा था कि वह reality क्या है ? वह reality केवल मैं हूँ। और reality के तत्त्व को पहचानने की कोशिश करो। वेदान्त कहता है अपने-आपको पहचानो, जब तुम अपने-आपको पहचान जाओगे तो देखोगे कि संसार में तुम्हारे सिवा कोई नहीं।

न बाप-बेटा न दोस्त-दुश्मन न आशिक़ और सनम किसी के।
अजब तरह की हुई फ़रागत न कोई हमारा, न हम किसी के।
न कोई तालिब हुआ हमारा, न हमने दिल से किसीको चाहा।
न हमने देखीं खुशी की लहरें, न दर्दो ग़म से कभी कराहा।
अभी यह ढब था किसी से लड़िए, किसी के पाँओं पै जाके पड़िए।
किसी से हक़ पर फ़साद करिए, किसी से नाहक लड़ाई लड़िए।
अभी यह धुन थी दिल आपने में कहीं बिगड़िए, कहीं झगड़िए।
दुई का पर्दा उठते ही देखा कि अब जो लड़िए तो किससे लड़िए।

Reality को समझने के बाद कोई दूसरा नहीं रहता। वह reality यही बतलाती है कि उस एकता को पहचानने की कोशिश करो जो सब चीज़ों के अन्दर है। वह supreme manifested soul, उस आत्म-तत्त्व को पहचानो। तो कहने का सार क्या है ? मैंने उस नौजवान से कहा कि भैया देखो, पहचानो कि तुम शरीर नहीं हो, शरीर तुम्हारा नहीं है, मन तुम नहीं हो, यह सब nature का सम्बन्ध है। देखिए अब तो science ने भी कह दिया कि mind is nothing but matter, a finer form of matter Sun of life reflect होता है इसके ऊपर इसी प्रकार आप देखिए तीन bodies मानी गई हैं—seed body, suttle body and physical body। इसी प्रकार इसकी तीन मिसाल आप बड़े सुन्दर ढंग से देख सकते हैं, जैसा कि एक glacier के अन्दर, जैसा कि हिमालय के अन्दर जब कोई गया हो। मैं तो साल में चार महीने हिमालय पर रहता हूँ, फिर भी आप यह देखिए कि glaciers के अन्दर जब Sun reflect होता है, जब

glacier के अन्दर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो आप देखिए वह glacier seed body है। वही glacier जब हिमालय की चोटियों के नीचे पहुँचता है तो उसमें mud आती है। उसके साथ बहुत-सी गन्दगी आती है, उसके साथ बहुत-सा रेता बहकर आता है—उसमें सूर्य का reflection होता है और उसके बाद आप उसको गंगाजी में जाकर, कानपुर में जाकर देखिए, गंगाजी को हरिद्वार में जाकर देखिए कि कितना निर्मल पानी होता है, उसमें सूर्य का reflection पड़ता है। इसी प्रकार ये तीन शरीर हैं—कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर और यह देह शरीर। लेकिन इन तीनों के ऊपर केवल आत्मा का सूर्य चमक रहा है—reality केवल वह है और वही reality हरएक के अन्दर reflect हो रही है—केवल आप ध्यान करके देख लीजिये कि चारों तरफ संसार के अन्दर अगर कोई भी दूसरी चीज़ duality मानी जा सकती है तो फिर यह reality रह नहीं सकती। तो फिर यह duality नज़र क्यों आती है—इसी का नाम माया है, माया इसी को कहते हैं कि सब-कुछ होते हुए भी सब-कुछ माना जा रहा है। वह कहते हैं—वेदान्त कहता है कि भई जितने तुमने सुख माने हुए हैं, संसार में जितने दुख तुमने मान रखे हैं, ये सब तुम्हारे माने हुए हैं। संसार तुम्हारा माना हुआ है। ज़ब तक अज्ञानता का अन्धकार रहता हैं तब तक तुम यह सब मान रहे हो—अज्ञानता का भी तुम्हें अज्ञान है क्योंकि अज्ञान कभी था नहीं, केवल अज्ञान तुमने मान रखा है, केवल दुख मान रखा है, केवल संसार तुमने मान रखा है और मान

कर तुम दुखी हो रहे हो। आम मिसाल दी जाती है कि रस्सी के अन्दर साँप का भान हो जाना। रज्जु के अन्दर सर्प का भान हो जाता है। कमरे के अन्दर जाते ही तुम अन्धेरे में वहाँ पर पहुँचते हो तो एक रस्सी को साँप समझकर घबरा जाते हो। जरा ध्यान देना—जब रस्सी को साँप मानकर घबराते हो तो क्या रस्सी को असत् माना जायगा? उस वक्त असत् तो नहीं माना जायगा। पर क्या सत्य माना जायगा, क्योंकि वह रस्सी साँप नहीं है? पर जब दूसरे कमरे में जाते हो और कहते हो पिताजी-पिताजी, उस कमरे में साँप है। पिताजी पूछते हैं कि कहाँ साँप है बेटा? फलाँ कमरे में साँप है। पिताजी पूछते हैं, कितना लम्बा है? पिताजी, दो-चार गज लम्बा-चौड़ा है। कितना मोटा है? इतना मोटा है। जहाँ हमने किसी वस्तु को real माना वहाँ उसके नाम-रूप को भी create कर लिया। हमने साथ में यह सिद्ध कर दिया कि साँप इतना लम्बा है, साँप इतना मोटा है, साँप इतना चौड़ा है। ये बातें हमने साथ में कह दीं तो क्या उसको साथ में असत्य कह सकोगे? क्योंकि अगर असत्य होता तो आपको भय आना ही नहीं चाहिए था। आपको भय आया, आप डरे, अपने नाम-रूप create किया और आप दूसरे कमरे में आकर कहते हैं। लेकिन तुरन्त ही तुम्हारे पिताजी हाथ में टार्च लिये एक हाथ में लाठी लेते हैं, दूसरे कमरे में जाते हैं। ज्योंही टार्च लगाते हैं तो क्या देखते हैं कि वह तो साँप नहीं है, वह तो केवल रस्सी ही है—तो अब आप बतलाइए जहाँ रस्सी के

अन्दर आपको सर्प का भान हुआ, वहाँ उस सर्प के साथ ही उसके नाम-रूप का भी भान हो गया। इसी प्रकार यह संसार जो है यह एक प्रकार का खेल है, एक drama है। इस तत्त्व के अन्दर जब तक अज्ञानता का अन्धकार आपके साथ रहता है, उस समय तक आप इसे reality मानते हैं। लेकिन जहाँ अज्ञानता का अन्धकार गया वहाँ केवल screen ही screen, reality ही reality रह जाती है। आप देखिए, सिनेमा के अन्दर जाते हैं, सिनेमा के अन्दर जाते ही आप देखते हैं कि screen ही screen समाने है। केवल पर्दा ही सामने है और पर्दे के ऊपर कुछ नहीं है। कमरे में light है। थोड़ी देर के बाद सिनेमा वाले lights off करते हैं। किसी ने रोशनी में तमाशा देखा ? भाई नहीं, सिनेमा तो खुद अन्धकार में है। सिनेमा कब दिखाई देता है ? जब अन्धकार होता है, जब सिनेमा वाले lights off करते हैं। अब आप क्या देखते हैं ? सामने पर्दे के ऊपर गंगाजी बह रही है, गंगा में लोग स्नान कर रहे हैं। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही है, लोग कम्बल लपेटे हुए नजर आते हैं। गर्मी का मौसम है, आपको भी गर्मी लग रही है। भला आप बतलाइये, वह गंगा जो बह रही है उस पर्दे के ऊपर, उस screen के ऊपर, क्या वह गंगा आपको ठण्डक पहुँचा सकेगी ? थोड़ी देर में आपको ठण्डक पहुँच सकेगी। थोड़ी देर में आप क्या देखते हैं कि लोग स्नान करके दूसरी ओर बाज़ार में पहुँचे। वहाँ हलवाई हलवा बना रहा है। हलवा बनाने की हवा भी निकल रही है, पूड़ी भी निकाल रहा है। पूड़ी भी गर्म-

गर्में बन रही हैं। हलवा भी तैयार है। हलवे की हवा भी दिखाई दे रही है, लोग खा रहे हैं। आपके मुँह में भी पानी आ जाता है। अब आप कहिये कि क्या वह आपकी भूख मिटा सकेगा ? लेकिन तुरन्त interval होता है। lights on होती हैं। और आप देखते हैं—न तो वह गंगा है, न वह हलवा है, न वह पूड़ी है, केवल वह white screen ही बाकी है। इसी प्रकार भाई जब तक इस संसार के अन्दर तुम्हें अज्ञानता का अन्धकार दिखाई दे रहा है, संसार में यह सब नाम-रूप, संसार में यह सब खेल नजर आते रहेंगे। लेकिन जितनी देर तुम सिनेमा देख रहे थे उतनी देर तुम उसको सत् मान रहे थे। तुम यह कह रहे थे—फलाँ मर रहा है, फलाँ हँस रहा है, फलाँ खा रहा है, फलाँ सो रहा है, फलाँ आदमी जी रहा है। यह सब तुम देख रहे थे और देखते हुए मान भी रहे थे। इसी प्रकार जब तक संसार की reality को नहीं समझते, इसी को माया कहते हैं जो असत् नहीं है और सत् दिखाई दे रही है और जो सत्य मानी जा रही है —इसी का वास्तविक नाम माया है। आप ध्यान दीजिये, संसार में हम देखते हैं मरने वालों को, और फिर भी यह मानते हैं कि संसार में वास्तविक रूप से इस माया का रूप इस सुन्दर-सी छोटी मिसाल में कहा गया है। नारद ने एक बार भगवान् श्रीकृष्ण से पूछा कि माया किसे कहते हैं ? तो भगवान् ने कहा, चलो तुम्हें लेकर चलते हैं और माया बतायेंगे। माया बताने भगवान् नारद को लेकर चलते हैं। जिस दम नारद को लेकर चले तो रास्ते में चलते-चलते कहने लगे कि

भैया मेरे पेट में बहुत दर्द हो रहा है, प्यास बड़ी जबरदस्त लग रही है, यह पास में गाँव है वहाँ जाकर तुम मेरे लिए जल ले आओ। तो तुरन्त नारद जी वहाँ नदी के पार गए और वहाँ जाकर दरवाजा खटखटाया। एक सुन्दरी देवी बाहर को निकली। ज्योंही वह सुन्दरी नारद जी ने देखी तो वह वहीं मोहित हो गई। वहीं आसक्ति पैदा हो गई और वहीं पानी वाली बात तो भगवान् के लिए सब भूल गये। जब माया सामने आती है तो भगवान् को भूल जाता है। माया को देख तुरन्त नारद जी वहीं बैठ गए, उससे बातचीत करने लगे। इतने में सुन्दरी का, कन्या का पिता आया। नारदजी ने उससे बातचीत की और करते-करते वहाँ उसी से शादी कर ली। वहाँ भगवान् को तो भूल गए। इधर शादी करके उसके साथ ही व्यवहार किया और इस प्रकार दो पुत्र पैदा हुए। आखिर बारह वर्ष नदी पर बीत गये। जब बारह वर्ष बीत गये तो एक दिन क्या हुआ कि उस गाँव में बाढ़ आ गई तो सारी नदी Flood में हो गई। जब नदी बह रही थी तो गाँव नदी में बहने लगा। जब नदी बह रही थी तो लोग अपने-अपने घर छोड़कर निकले। नारद जी ने भी अपने दोनों बच्चों को कन्धों पर उठाया। एक हाथ में पत्नी का हाथ पकड़ा और दरिया के अन्दर कूद पड़े। चलते जा रहे थे कि बाढ़ की लहर तेजी से आई, और तेजी से जो आई तो एक बच्चा कन्धे से गिर गया। इतने में थोड़ा आगे बढ़े तो जोर से एक और लहर आई तो दूसरा बच्चा भी कन्धे से गिर गया। थोड़ा बढ़े तो इतनी

जोर से लहर थी कि पत्नी का हाथ भी छूट गया सारे परिवार को बहाकर जब वह वापिस इस किनारे पर पहुँचा तो भगवान किनारे पर लेटे हुए थे और कहते हैं नारद क्या हो गया ? आधा घण्टा हो गया और तू अभी मेरे लिए पानी नहीं लाया—गज़ब हो गया, यहाँ तो सारा परिवार खत्म हो गया और तुम कहते हो आधा घण्टा। भगवान कहते हैं इसी का नाम माया हैं। आप स्वप्न के अन्दर कितना संसार देख लीजिए, कितना संसार आप रच लेते हैं। कुछ क्षणों के अन्दर आप कितना भारी संसार देख लेते हैं। इसी प्रकार वह कहता है वेदान्त कहता है कि ऐ मानव, केवल तू dreamy state के अन्दर यह तेरी long dreaming state है। तू स्वप्न के अन्दर सो रहा है और स्वप्न के अन्दर तुझे यह सब दिखाई दे रहा है वास्तविकता में जब तू जाग जाता है। जब तू awake हो जाता है इसीलिए वेदान्त कहता हैं तुझे ज्ञान पाने के लिए कुछ नहीं करना। तुझे भगवान पाने के लिए कुछ नहीं करना। तुझे उसे समझने के लिए कुछ नही करना। केवल तुझे अज्ञानता को मिटा देना हैं। जब अज्ञानता का पर्दा नाश होगा तू देखेगा नहीं तो आप बताओ एक बादशाह सो रहा है। जहाँ चारों तरफ उसकी सेनाएँ खड़ी हैं, चारों तरफ उसके धन पड़ा है और वह भिखारी बन रहा है। रोता है, चीखता है, चिल्लाता है स्वप्न में। अब आप बतलाइए कि वह जो स्वप्न के अन्दर चिल्ला रहा है, चीख रहा है, उसकी गरीबी को दूर करने का कोई दूसरा उपाय है—उसके पास आप धन के ढेर लगा

दीजिए, क्या उससे उसकी गरीबी दूर हो सकेगी ? उसके पास सेनाएँ खड़ी कर दीजिए, क्या उसकी गरीबी दूर होगी ? उसका एक ही उपाय है कि राजा साहब, उठ जाओ, सुबह हो गई—केवल जगा देने से। इसीलिए वेदान्त कहता है—Rise and awake. उठो और जागो। तेरे सोने से संसार सो जाता है और तेरे जागने से संसार जाग जाता है। इस संसार में केवल तू ही reality है, क्योंकि जो यह सब बादल हैं छँट जाते हैं, केवल तू ही खड़ा है—

If misery comes I know
it is transitory it must die
If pleasure comes I know
it is transitory it must die
If pain comes I know
it is transitory it must die
If happiness comes I know
it is transitory it must die
If unhappiness comes I know
it is transitory it must die
They are all clouds shattered away
And I am the sun that shines away
And they are all changing one and in all
this ever changing world
I am the only changeless one.

इस बदलते हुए संसार में केवल एक ही वस्तु है जो बदलती नहीं। अच्छा अब वह वस्तु क्या है ? अब अगर यह कह दिया जाय कि वह वस्तु यह है तो उपाधि हो जाती है। सारे शास्त्रों में यही कहा है—Not this not this netineti.

चार

ऋषि-मुनि और सन्त-महात्मा हमेशा यह पुकारकर कहते चले आये कि ऐ इन्सान, तेरा जन्म बहुत अनमोल है। मानव अपने जीवन की कदर को पहचान ! इन्सान तेरी कीमत बहुत ज्यादा है। देख, कहीं जीवन की बाजी को हारकर न चले जाना। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें हाथ मलने पड़ जायँ— कहीं ऐसा न हो कि तुझे संसार से घाटा उठाकर जाना पड़े। आखिर कारण क्या है ? कौन सा ऐसा कारण है जिस कारण से इन्सान को इतना महान् मान लिया (गया) ? इन्सान की महानता किस कारण से मानी गई ? अगर विचार करके देखा जाय, अगर शरीर से इन्सान की कीमत मानी जाय, तो शरीर की तो कोई कीमत गिनी नहीं जाती। अब तो साइंस-दानों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि शरीर के अन्दर इतना चूना है कि दो कमरों की सफेदी हो जाय, इतना गंधक है कि सौ माचिसों की तीलियों का मसाला बन जाय, इतनी चरबी है कि साबुन की सात टिकियाँ बनें, इतना लोहा है कि दो इंच लम्बे दो कील बन जायँ। दो पाव अमोनिया

(Amonia), एक सेर नमक, तीन सेर पानी—यह शरीर की बनावट है। दूसरे शब्दों में इस शरीर को, जैसे कि एक पशु को हलाल किया जाता है, इस शरीर को भी साइन्स के द्वारा या किसी और प्रकार से हलाल किया जाय तो साइन्टिफिक वे (Scientific way) में, लेबौरेटरी (laboratory) में ले जाकर इसका हर तत्व अलग कर दिया जाय, एलीमेण्ट्ज (elements) अलग कर दिये जायँ और फिर इसको बेचा जाय तो सब कीमत और खर्चा लगा लेने के बाद इस शरीर की कीमत ५ रु० ५ आ० ६ पा० होनी चाहिए। अब भाई, जरा विचार करके देखो कि ५ रु० ५ आ० ६ पा० का यह शरीर और उसके ऊपर इन्सान का इतना अभिमान ? इन्सान को इतना गुमान ? इन्सान को इतनी मस्ती ? लेकिन भाई हमारे शास्त्रकारों ने, सन्तों और महात्माओं ने तो यहाँ तक पुकारकर कहा कि ऐ इन्सान, अगर तू अपने-आपको देह समझता है, अगर तू अपने-आपको जिस्म समझता है, अपने-आपको जिस्म का कैदी समझता है, अपने-आपको भोगों का कैदी समझता है, अपने-आपको विषयों का कैदी समझता है, तो तेरी कीमत ५ रु० ५ आ० ६ पा० तो बहुत दूर रही, हम दो कौड़ी रखने को भी तैयार नहीं। इसलिए भाई, फिर मानव-जीवन की अनमोलता किस कारण से है ? मानव-जीवन महान् क्यों है ? मानव-जीवन की महानता क्यों है ? उसका कारण केवल एकमात्र यह है कि मानव-जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिस जीवन में हमें कर्म की ताकत दे दी गई है। power of action हमारे हाथ में है, कर्म का विधान हमारे हाथ

में है, हम कर्म कर सकते हैं। बाकी सब योनियाँ ऐसी हैं, चाहे देव योनि हो या पशु योनि, वे सब भोग योनियाँ हैं। केवल एक मानव-योनि ही ऐसी है जो भोग भी करती है और कर्म भी करती है। अब ध्यान दीजिए, पशु कर्म नहीं कर सकता और देवता भी कर्म नहीं कर सकता। देवता भी भोगी है और पशु भी भोगी है, लेकिन इन्सान ही ऐसा है जो कर्म को कन्ट्रोल (control) करके योगी बन सकता है। जोकि भोग भोक्ता भी है और अपने जीवन का निर्माण भी करता है। जीवन के अन्दर उसको कर्म की ताकत भी दे दी गई है। तो कर्म का यह विधान (law of karma) ही इन्सान को इन्सान बनाता है, मानव को मानव बनाता है। इन्सान को अब दो चीज़े मिल जायँ, मानव का जन्म मिला हुआ हो, मानव का चोला मिला हुआ हो, और उसके साथ ही सत्संग। और यह दो चीज़ें मिल जाने के बाद भी इन्सान इस बात की शिकायत करे कि उस पर प्रभु की कृपा नहीं है, उस पर ईश्वर की कृपा नहीं है तो यह उसका बड़ा भारी दुर्भाग्य है। इससे बड़ा इन्सान का कोई बड़ा दुर्भाग्य नहीं होगा कि ये दो चीज़ें मिलने के बाद भी मानव चोला मिला हुआ हो।

नर तन तुम्हें निरोग मिला
सत्संगत का भी योग मिला
प्रभु की इतनी कृपा पा करके
भव सागर से जो तर न सके
फिर मत कहना कुछ कर न सके।

अगर यह दो चीज़ें मिल जाने के बाद भी इन्सान यह कहे कि कुछ कर न पाया; यह दोनों चीज़ें मिल जाने के बाद भी इन्सान यह कहे कि मै भव सागर को पार न कर पाया यदि इन दो चीज़ों के मिल जाने के बाद भी इन्सान यह कहे कि मै संसार सागर में डूब गया तो इससे अधिक इन्सान का दुर्भाग्य कोई न होगा। क्योंकि इन्सानी चोला मिले और साधनों के लिए भाई जिन्दगी के अन्दर जब भी आपको सत्संग मिले तो दो चीज़ों का ध्यान रखना, दो चीज़ों को समझने की कोशिश करना कि जीवन का लक्ष्य क्या है और इसलिए जीवन को पाने के लिए, प्राप्त साधनों का, मिले हुए साधनों का सदुपयोग कैसे हो सकता है ? जो कुछ मिला हुआ है, उसका सदुपयोग कैसे हो सकता है ? जीवन का लक्ष्य क्या है ? जीवन लक्ष्य है अपने-आपको पहचानना। आत्मा साक्षात् और आत्म-तत्त्व को जानना। दूसरे शब्दों में अपने-आपको पहिचानना और यदि और गहराई में जाइए तो कुछ होने से पहले, कुछ बनने से पहले, कुछ मानने से पहले जब उस मैं को मैं पहचान जाता हूँ। उस मैं में जब मैं पहुँच जाता हूँ और जब उस I-ness को realize करता हूँ जहाँ केवल I-ness ही रह जाती है। जहाँ यह कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह मैं हूँ। यह तो कहा जा सकता है कि मैं देह नहीं, मैं यह नहीं, मैं जिस्म नहीं, मै इन्द्रियाँ नहीं मैं मन नहीं, मै बुद्धि नहीं। लेकिन जहाँ यह नहीं कहा जा सकता कि मैं यह हूँ, मैं मैं ही रह जाती है। इस तत्व पर पहुँचना जीवन का लक्ष्य है। यही आत्म-साक्षात् है, यही

आत्म-तत्व को पहिचानना है। अब उसको पाने के लिए प्राप्त साधनों का सदुपयोग, जो मिले हुए साधन हैं, जो चीज़ हमें मिली हुई है उसका सदुपयोग कैसे हो सकता है? एक तो वस्तु होती है भई कि एक वस्तु मिलेगी और फिर हम उसका इस्तेमाल करेंगे। इन्सान का हमेशा से यही दुर्भाग्य चला आया है कि या तो वह उसकी चिन्ता करता है जोकि उसके पास से जा चुका है, या उसकी चिन्ता करता है जोकि उसके पास अभी आया नहीं और जो कुछ मिला हुआ है उसका दुरुपयोग किया जा रहा है। यही इन्सान का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है—मिले हुए का दुरुपयोग, खोई हुई वस्तु की चिन्ता, जो अभी मिला नहीं, ध्यान देना भई past is past, वह तुम्हारे हाथ में नहीं आने वाला। कल जो बीत गया वह तुम्हारे हाथ में नहीं आयेगा और no surity about tomorrow. कल आएगा या नहीं, इसका तुम्हें भी यकीन नहीं है। लेकिन इन्सान इन तत्वों को नहीं समझता। वह नहीं जानता कि संसार में न जाने वह कहाँ-कहाँ की चिन्ताएँ अपने ऊपर लादे हुए है। इन्सानी जीवन इसलिए नहीं भई, कि चिन्ताओं के लिए घुल-घुलकर मर जाए बल्कि इन्सानी जीवन इसलिए है कि इन्सान इन्सान बनता हुआ अपनी सब चीज़ों को, अपने सब बोझों को प्रभू पर डालते हुए, surrender करते हुए अपने जीवन को बनाने की कोशिश करे, जिन्दगी को जिन्दगी बनाने की कोशिश करे। Life में life डालने की कोशिश करे। आज इन्सान का जीवन क्या है? आप देखिए कभी चिन्ताओं में ग्रस्त हो

रहा है, कभी भोगों में लिप्त हो रहा है, कभी रोगों में पीड़ित हो रहा है और उन रोगों में पीड़ित होता हुआ कभी भोगों में आसक्त होता हुआ, सुखों का दास बनता हुआ, दुखों में बिलबिलाता हुआ, सुखों में अभिमान करता हुआ, यह इन्सान की क्या जिन्दगी रह जाती है जबकि हमारी जिन्दगी के अन्दर हम कभी भी यह नहीं कह सकते कि हम जी रहे हैं—जिसको वास्तविकता में जीना कहना चाहिए जिन्दगी क्या यही है कि जीवन के अन्दर कुछ चाँदी के टुकड़ों को इकट्ठा करे—जिन्दगी के कुछ सामान को इकट्ठा करे और जिन्दगी के उन सामानों को, और जिन्दगी के उन सुखों को, जिन्दगी के उन वैभवों को अपने पास इकट्ठा करके रखे और एक दिन ऐसा आ जाय कि कुछ तो वैभव हम छोड़कर चले जायँ और जिनको हम न छोड़ पाए वे हमें छोड़कर चले जायँ और हम भी आँसू बहाते हुए चले जायँ कि हम संसार में कुछ भी नहीं लेकर चले—तो क्या इसी को इन्सानी चोला कहा जायगा तो क्या इसी को इन्सानी जीवन कहा जायगा ? कि संसार में आए भी और जाते समय यही कहकर चले गए कि हमने इतना कुछ सामान इकट्ठां किया या इतना सामान पैदा किया, इतने जमाने के अन्दर पदार्थ पैदा किए, वैभव पैदा किये। इसलिए कहा है कि—

"तुझे अपने सफर की खबर खाक नहीं,
सफर सिर पर है सामने सफर खाक नहीं।"
माँ जानत है पूत मेरा दिन दिन बड़ा होत है,
न जाने कि दिन दिन और घटत है,

ओ गफिल तुझे घड़ियाल देता है मुनादी,
गर्दिशे गरदूने घड़ी उम्र की इक और घटा दी।

इसलिए ऐ इन्सान, इन भोगों के अन्दर इन भोगों की आसक्ति को छोड़ने की कोशिश कर। भोग छोड़ने की जरूरत नहीं, भोग की आसक्ति को छोड़ दे, सुखों की आसक्ति को छोड़ दे। फिर तू देखेगा कि यदि तू नहीं छोड़ेगा तो यह तुझे छोड़कर चले जायँगे। भोग कहता है—

"छोड़ने से पहले इनको छौड़ दे ए बेशहूर।
छोड़ना तुझे इनको एक दिन पड़ेगा जरूर।
ऐश के सामान सब यूँही पड़े रह जायँगे।
और यार तेरी लाश पर रोते खड़े रह जायँगे।"

ऐ इन्सान, जिन चीज़ों को तू नहीं छोड़गा वह तुझको छोड़ जायँगी। इसलिए इस तत्व का विचार करता हुआ कहता है कि मामूली इन्सान नहीं, संसार के अन्दर आने वाले व्यावहारिक जीवन को देखा जाय तो कौन संसार में रह पाया। जिस समय इन्सान पैदा हुआ साथ में मौत का warrant लेकर आया और मामूली आदमी नहीं। वह कहता है—

कैसा मान करे तू मूरख, आखिर सब कुछ झाड़ चले।
छोड़ छोड़ के चल दी संगली, साधु सन्त पुकार चले।
नाम तो जिनका जपती खलकत, राम-कृष्ण अवतार चले।
अर्जुन के तो बाण न दीखे, भीमसेन बलकार चले।
दस हजार हाथी की ताकत, अन्त दुशासन हार चले।

उठ दिये चलकर साँझ सवेरे, रोना सब परिवार चले।
आए भी खाली गए भी खाली झूठी कर तकरार चले।
... ...

दारा और सिकन्दर जैसे दुनिया के सरदार चले।
पीर पैगम्बर रहा न कोई, रुस्तम आखिरकार चले।
इक पल भी जो जुदा न होते, वो भी प्यारे यार चले।
नब्ज़ हकीम के हाथ में रह गई, प्यारे छोड़कर प्यार चले।
'प्रेमानन्द' से आखिर प्रेमी, अपना वक्त गुजार चले।

वह कहता है कि इतने-इतने महान् भी संसार के अन्दर जिसको हम रहना कहते हैं, वे रह न पाये। तो इन्सान संसार के अन्दर किस चीज का अभिमान करता है? तो कहने का मतलब क्या हैं? ये चीजें बुरी नहीं हैं। भाई इन चीजों को बुरा न समझ लेना। लेकिन साथ ही इन चीजों की दासता न मान लेना। इस संसार के अन्दर जो कुछ भी तुम कर रहे हो, जो कुछ भी तुम आज हो, तुम अपने ही खयालों की उपज हो। Man is the creation of his own thoughts and man today is the repetition of millions and millions of thoughts and actions.

इन्सान क्या है? जो विचार उसने जन्म-जन्मान्तर से एकत्र किये, और इसलिए इस कर्म के विधान को समझने की कोशिश करो। और कर्म का विधान कहता है कि ऐ इन्सान, जीवन तेरे हाथ में है। चाहे तू बना ले, चाहे तू इसे मिटा दे। कलम तेरे हाथ में है, जैसी कहानी तू चाहे अपनी लिख डाल। लेकिन संसार के अन्दर सम्भल कर रहना। भाई जो

कुछ भी बीज आज तू बोने वाला है, वह कल तेरे सामने ही आयेगा।

"यह कलियुग नहीं, यह करजुग है, इस हाथ दे, उस हाथ ले।
सौदा नक़द बेनकदी है, दिन को दे और रात को ले।"
दुनिया जिसे कहती है मियाँ, यह तो अजब तरह की बस्ती है।
यह महँगों को तो महँगी है, यह सस्तों को तो सस्ती है।
हर रोज यह झगड़े चलते हैं, और एक बड़ी अदालत बसती है।
जो पस्त करे तो पस्ती है, और मस्त करे तो मस्ती है।

और की तारीफ कर, तुझको सनख्वानी मिले।
कर मुश्किल आसां और की तुझको आसानी मिले।
और को मेहमान कर, तुझको भी मेहमानी मिले।
रोटी खिला रोटी मिले, पानी पिला पानी मिले।
काँटा किसी को मत लगा, किस बात पे फूला है तू।
मत और को डाल आग में, क्या घास का पूला है तू।
सुन रख नुक्ता बेखबर, किस बात पर भूला है तू।
यहाँ जहर दे जहर मिले, शकर में शक्कर देख ले।
नेकी को नेकी का मजा, मूजी को टक्कर देख ले।
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले।
फिर भी अगर माने नहीं, तो तू भी करके देख ले।

मानव-जीवन के अन्दर हमें इस तत्व का विचार करना है इस भेद को समझना है, कि जीवन के अन्दर रहते हुए भी अपने जीवन को कैसा बना सकते हैं। और यह हमारे हाथों में है। जिन्दगी मानव की यही नहीं है।

जिन्दगी के अन्दर आप देखिए—धनी भी दुखी हो रहा है, निर्धन भी जार-जार रो रहा है। घर में चले जाओ, हर इंसान सोचता है, बाहर से उसके ऊपर Fake smiles भी आती हैं, फीकी मुस्कराहट भी आती हैं। और बाहर से वह बनावट भी करता है। लेकिन जरा उसके हृदय की चाभी को घुमा लो। इन्सान दुखी नजर आता है। न जाने इन्सान ने अपने दुःखों का बन्धन क्यों बाँध लिया है। न जाने इन्सान अपने-आपको कितनी चिन्ताओं के अन्दर घेरे हुए रहता है। इन्सान ने अपनी जिन्दगी को इतनी दुखमय जिन्दगी बना लिया है कि आखिर वह तंग होकर कह बैठता है कि संसार दुःखालय है, संसार दुखों का घर है, संसार रहने की जगह नहीं। यह जीवन बड़ा दुखदायी है। भाई यह जीवन दुखदायी नहीं—

"दिल की ही बदौलत रंज भी है,
दिल की ही बदौलत राहत भी।
यह दुनिया जिसको कहते हैं,
यह दोज़ख भी और जन्नत भी।"

Hell and heaven are within your own selves. यहीं जिन्दगी के अन्दर स्वर्ग भी है, और नरक भी यदि चाहो तो जिन्दगी को स्वर्ग बना लो और चाहो तो नरक बना लो। खेल तुम्हारे हाथ में है। भैया, अगर जिन्दगी को स्वर्गमय बना लोगे तो जिन्दगी जिन्दगी बन जायगी, और अगर जिंदगी को नरकमय बना लोगे तो जिन्दगी के अन्दर रोते-रोते जिंदगी गुजर जायगी। हाँ भाई, इसलिए इन तत्वों पर विचार करते

हुए मानव-जीवन के इस चोले को समझने की कोशिश करो। क्योंकि केवल शारीरिक जीवन ही हमारा जीवन नहीं है। अगर शारीरिक जीवन ही हमारा जीवन होता, अगर हम केवल देह के लिए होते, तो भाई ध्यान दो, अगर देह के ही लिए हमारी जिन्दगी होती, तो जब वचपन के अंदर जवानी आई, जवानी के अन्दर बुढ़ापा आया और जिन्दगी के अंदर विचार करके देखो कि जिन्दगी में जो भी चीज एक बार हमारे हाथ से चली गई—

जो जाकर न आती देखी वह जवानी थी।
जो आकर न जाता देखा वह बुढ़ापा था।

इन चीजों के अन्दर, इस मानव-जीवन के अन्दर तत्व-विचार करते चले जाओ—इस मानव-जीवन में कितनी changes आईं, कितनी ही काया पल में बदलती चली गईं, लेकिन इंसान के अन्दर कोई एक ऐसी चीज रही, जो हमेंशा रही, जो कभी न बदली, जो हमेशा अपने-आपको पहचानती रही, जो हमेशा 'मैं हूँ' करती रही। कोई तो ऐसी चीज थी जो कभी भी नहीं बदली। जो बचपन में भी थी, जवानी में भी थी, बुढ़ापे में भी थी, और मौत के बाद भी रहती है, क्योंकि अगर जिसके रहने से मैं नहीं रहता, जिसके न रहने से मुझे लोग मुर्दा मान लेते हैं, उस 'मैं' को समझने की कोशिश करो। इसीलिए कई बार आपसे कहा कि मौत आपसे यह नहीं पूछती कि तुम्हारे पास क्या है? मौत पूछती है तुम क्या हो? जिन्दगी का यह प्रश्न नहीं कि मेरे पास क्या है? जिन्दगी पूछती है 'मैं' क्या हूँ? 'मैं' क्या हूँ? इस

'मैं' को पहचानने की कोशिश करो। जब तक इन्सान इस 'मैं हूँ' को नहीं जानता, तब तक अपने-आपको नहीं पहचानता। इसीलिए संसार के अंदर अपने-आपको न पहचानता हुआ, दुष्कर्मों में पड़ा हुआ, और जिन्दगी में केवल इस धन को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानकर बैठ गया। और इसके लिए फिर अनेक चिन्ताएँ और फिर चिन्ताएँ भी ऐसी जिनका कोई सार नहीं, जिनका कोई तत्व नहीं। अरे चिन्ता ही करनी है तो कहता है—

ऐ मन काहे सोच करो।
जाको तू सोचत है भोले वह तो आप भरो।
अरे बार बार समझाया तो को फिर न सोच तजो।
सोच सोच कोटिन जग में तू क्यों सोच मरो।
अरे काहे को यह जन्म लिया है वाको सोच करो।
अरे मन काहे सोच करो।

अरे अगर चिन्ता ही करनी है तो भाई किसी काम की चिन्ता करो—चिन्ता करनी है तो ऐसी चिन्ता जैसे कि एक सेठ ने मुनीम से पूछा, क्यों भाई अपने पास कितनी दौलत है? तो मुनीम ने कहा, कि सेठ साहब अपने पास इतनी दौलत है कि दस पीढ़ियाँ (10 generations) तक बड़े मज़े के साथ अपने जीवन को व्यतीत कर सकती हैं, बड़े आराम से खा सकती हैं। तो सेठ उदास होकर बैठ गया। मुनीम ने पूछा, क्या बात है? अपने पास इतनी दौलत है कि दस पीढ़ियाँ (10 generations) आराम से बैठकर खा सकती हैं। फिर आप उदास क्यों हो गए? सेठ कहने लगा "I am very much worried

that what will hapen to the 11th generation?"

मैं इस चिन्ता में पड़ गया हूँ कि ११वीं पीढ़ी का क्या होगा ? १० पीढ़ियों की तो दौलत मेरे पास है, पर ११वीं पीढ़ी क्या करेगी ? तब मुनीम जो था वह बड़ा सन्त प्रेमी था, सत्संग में आने वाला था। उसने कहा, सेठजी ऐसा करो, कल है एकादशो, तो कल एकादशी का व्रत रखो और इस एकादशी के दिन कुछ अन्न, चावल और दाल किसी ब्राह्मण को जाकर दान दे आना। फलाँ ब्राह्मण का पता (address) दे दिया कि हर एकादशी को आप इसी प्रकार दान देते रहना। जो हर एकादशी को दान देते रहेंगे वह आपकी ११वीं पीढ़ी के लिए जमा होता रहेगा। सेठजी ने दूसरे दिन उसी प्रकार कुछ अन्न उठाया—उसी तरह जो ब्राह्मण का पता (address) पर दिया हुआ था वहीं पर पहुँचे। वहाँ जिस समय उसके घर में पहूंचे उसी समय ब्राह्मण का दरवाज़ा खटखटाया। शहर के बड़े धनी आदमी थे, आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि जिसके पास १० पीढ़ियों 10 generations के लिए धन होगा वह कितना धनी होगा। तो जिस समय वहाँ पर पहुँचे सेठजी के साथ नौकर था। जब वहाँ पहुँचे तो दरवाज़ा खटखटाया गया। ब्राह्मण अन्दर से आया और कहने लगा, आओ सेठ साहब, आज आपका आना कैसे हो गया ? कहने लगे, यह कुछ अनाज लाया हूँ, कुछ आटा, चावल, दाल लाया हूँ। इसको आप सभाल कर रख लीजिए। ब्राह्मण कहता है, भगवन् थोड़ी देर ठहर जाओ, मैं अन्दर से पूछकर आता हूँ। सेठ हैरान हो गया कि इसमें पूछने की

क्या बात है भाई, ब्राह्मण अन्दर से बाहर आता है और आकर कहता है, सेठजी पत्नी कहती है कि आज रात का आटा हमारे घर में है इसलिए हमें जरूरत नहीं। सेठ को ठोकर लगी, कहता है। ब्राह्मण देवता आज का आटा घर में है तो कल इस्तमाल कर लेना। ब्राह्मण कहता है। महाराज जिसने आज की चिन्ता की है वह कल की भी करेगा। मैं क्यों कल के लिए संभाल कर रखूँ? इसलिए आप चिन्ता न कीजिए। आप अपने अनाज को वापस ले जाइए। उसको ठोकर लगी। मन में सोचता है अरे नादान, अरे मूर्ख, तेरी भी मूर्खता की हद नहीं। कहाँ तो इस साधु ब्राह्मण को देख कि जिसको कल की भो चिन्ता नहीं, कहाँ तुझे ११वीं पीढ़ी की चिन्ता हो रही है, 11th generation की चिन्ता हो रही है। तो भाई कहने का मतलब यह है कि बहुत-सी चिन्ताएँ इन्सान ने बेकार की अपने ऊपर बाँध रखी हैं। जिन चिन्ताओं का कोई भी सार नहीं, जिन चिन्ताओं के अन्दर कुछ भी तत्व नहीं। इसी तरह संसार के अन्दर आप देखिए, हर इन्सान कर रहा है अपने-अपने कर्मों से काम। एक हो चीज के अन्दर एक ही बाप के दो बेटे पैदा होते हैं। एक राजा बनता है, एक दर-दर का भिखारी बनता है। वह कहते हैं भई—

"एक बाप के दो बेटे किस्मत जुदा-जुदा है।
इक शाहे नामवर है इक दरबदर गदाह है।
दो गज के दो ही टुकड़े इक ही जगह से फाड़े।
इक नाज़नी के सिर पर, इक कफन पर पड़ा है।
इक बाप के दो बेटे क़िस्मत जुदा-जुदा है।

हर इन्सान अपने कर्मों का स्वयं निर्माण कर रहा है। दो गज के टुकड़े एक ही जगह से फाड़े। एक नाज़नी के लिए एक नाज़नी, एक सुन्दरी अपने सिर पर दो गज का दुपट्टा लेती है और दूसरा दो गज का टुकड़ा कफ़न पर पड़ता है।

दो गज के दो ही टुकड़े इक ही जगह से फाड़े।
इक नाज़नी के सिर पर इक कफ़न पर पड़ा है।
इक सीप में दो मोती इक ही जगह से निकले।
इक खरल में पिसा है इक ताज में जड़ा है।
इक बाप के दो बेटे किस्मत जुदा-जुदा है।
इक शाहे नामवर है इक दर वदर गदाह है।

तो जिन्दगी के अन्दर मानव जब इस तत्व को समझता है कि वह अपनी किस्मत का निर्माण करने वाला स्वयं है तो वे लोग अज्ञानी हैं जो किस्मत की तलाश करते हैं, जो किस्मत पर भरोसा रख के बैठ जाते हैं।

लगे मुकद्दर को हम रोने कहा दिल ने कि चुप रह
कि किस्मत अपने हाथों से ही हम बनाया करते हैं
किस्मत को जब हम रोने लगे तकदीर का नाम लेकर।

तकदीर के सहारे रोने लगे कि हमारी तकदीर खराब हो गई तो अन्दर से आवाज़ आई कि खबरदार अगर तकदीर का नाम लिया। ऐ इन्सान "तकदीर तेरी तेरी तदबीर से ही तो बनी है।" ऐ इन्सान तेरा मुकद्दर तेरे कर्मों से ही तो निर्माण हुआ था। तू अपने मुकद्दर को क्यों रोता है? तेरे हाथ में कर्म की ताकत है।

Poverty and prison can bind you not
You cannot be free by means of lot.
By thoughts of bondage yourself you bind,
Of course you are free when free from the mind,
You are your bondage and freedom of source.
The change of fate thus lies in you,
You can make it highest and the lowest too.
The stuff of fate is action and thought.
For making it better the power you have got.

संसार में, कहते हैं, कितनी ही गरीवी आपको बाँध नहीं सकती। अमीरी आपको आज़ाद नहीं कर सकती। अमीरी आपको धनी नहीं बना सकती, गरीवी आपको गरीब नहीं बना सकती। कहता है ? गरीवी किस में है, जरा ध्यान देना—

"सामान की हिरस असल गदाई है यह।"

यह भोगों की इच्छाएँ असल में तो गरीबी यही है।

"सामान की हिरस असल गदाई है यह।"
यह दौलत की हिरस असल गदाई है यह—
अरे "हाजित है कम तो तू है शहनशाह
और हाजित नहीं तो खुदाई है यह—

अगर इच्छाएं तेरी कम हैं, अगर हाजित है कम तो तू है शहनशाह और हाजित नहीं और अगर तेरी कोई इच्छा नहीं तो तू खुदा है, भगवान् है, ईश्वर है तू तो। इसलिए जिन्दगी के अन्दर, इन्सान के अन्दर ही यह हिम्मत है कि वह खुदा के दर्जे तक पहुँच सके। इन्सान के अन्दर ही यह हिम्मत है, क्योंकि man is the perfect reflec-

tion of God. मनुष्य जो है वह भगवान् का दूसरा स्वरूप है, प्रतिबिम्ब है। और इसीलिए मैं कहा करता हूँ कि जो असल चीज़ होती है उससे जो reflection होता है, जो प्रतिविम्व होता है वह ज्यादा, खुबसूरत होता है इसलिए इन्सान भगवान् से भी महान् है क्योंकि इन्सान भगवान् का अक्स है और अक्स असल से भी सुन्दर होता है इसलिए इन्सान जो है वह भगवान् से भी महान् है, क्योंकि यह इन्सान की ही महानता है कि भगवान् को सामने लाकर खड़ा कर देता है। यह इन्सान की महानता है कि भगवान् से अपने काम करवा लेता है। यह इन्सान की महानता है कि देवताओं को अपने सामने झुका लेता है—यह इन्सान की महानता है कि संसार के अन्दर विषय-भोगों का स्वामी, अपनी इच्छाओं का स्वामी बनकर जी सकता है। यह इन्सान की महानता है। लेकिन इन्सान अपनी ठकुराई को भूलकर, अपने स्वामित्व को भूलकर दासता और दीनता में चला जाता है इसलिए—

इन्सान अपनी कोमत को पहिचान।

तेरी कीमत तेरे अन्दर वहुत है और तेरी कीमत तेरे ही अन्दर है—

"तेरे घट में अमृतखान प्रेमी तू बाहर कहाँ जाता है।
तेरे घट में अमृत खान।
मूर्ख वाको भेद न जाने जाने सन्त सुजान।
प्रेमी तेरे घट में अमृतखान।
काशी, मक्का भटकत, डोलत खोया सगरो ज्ञान।

घट के अन्दर मूल न धाया अरे जहाँ है खुद भगवान् ।
तेरे घट में अमृत खान ।
सारे वेद कते भए अन्दर काहे भयो नादान ।
बिना प्रेम नहीं किसी ने पाया मन को प्रेम में सान ।
'प्रेमानन्द' जो अंहम न मारे तो नहीं होवे कल्यान ।
तेरे घट में अमृत खान ।

ऐ इन्सान तू कहाँ भाग रहा है ? तू भगवान् को ढूँढ़ता है ।
"तो भगवान को ढूँढ़ रहा है यह कोई बड़ी बात है ।
तू खुदा तू खुदा है तू खुदा की जात है ।"

ईश्वर को तो ढूँढ़ना बड़ी बात नहीं, इन्सान बनना बड़ी बात है । इन्सान जब बन जाता है तव बड़ी बात है । इन्सान जब बन जाता है तो भगवान् स्वयं मिल जाता है । कबीर साहब ने कह दिया है कि जब मेरेजीवन में निर्मलता आ गई तो भगवान् स्वयं आ गये, The kingdom of heaven is within thee. वह वास्तविकता में तुम्हारे ही अन्दर है । वह स्वर्ग की हकूमत तुम्हारे ही अन्दर केवल उसके अन्दर पवित्रता लाने की कोशिश करो । जीवन को शुद्ध बनाने की कोशिश करो, क्योंकि जीवन के अन्दर दुख देने वाली वस्तु, केवल चिन्ता देने वाली वस्तु अपने ही दोष, अपने ही किये हुए पाप इन्सान को सताते हैं । और कौन लोग कहते हैं कि इन्सान जब मरता है तो उस समय लोग कहते हैं कि अपने पुत्रों के लिए रो रहा है, या इन्सान अपने भाइयों के लिए रो रहा है, या अपनी दौलत

के लिए रो रहा हैं। नहीं भाई नहीं, जरा ध्यान देना इन्सान के कर्म का विधान इस बात को साबित करता है कि जिस समय इन्सान की मृत्यु होने लगती है तो उस समय उसके सामने उसकी लिखी हुई किताब आ जाती है, वह किताब के एक-एक सफ़े को पढ़ता है। वह किताब के एक-एक सफ़े (page) को खोलता है तो सारी किताब उसके सामने आती है और उस सारी किताब के सफों को पढ़कर वह आँसू बहाता है और रो-रोकर चिल्लाता है कि हाय मैंने जीवन में यह क्या किया। तो इसलिए उन पेजों को अथवा सफों को तुझे स्वयं पढ़ना पड़ेगा। इसलिए अपनी किताब को अच्छा लिखने की कोशिश करो कि जिन्दगी के अन्दर—

"एक दिन बन्दे जाना होगा साहिब की सरकार में।
हिसाब तुझे देना होगा मालिक के दरबार में।"

ऐ इन्सान एक दिन तुझे वहाँ अपने जीवन का account करना होगा। अरे वहाँ न करना होगा तो अपने सामने तो करना ही होगा। हर कर्म तेरा reaction ला रहा है तो हर चीज़ तेरी, इक दिन तुझको जाना होगा।

पूछताछ सब होगी बन्दे तेरे इन ईमानों की
बुरा भला जो भी करके आया है तू संसार में
कर ले बन्दे नेक कमाई अपनी इस जिन्दगानी में
ताकि तेरे नाम की धुन हो दुनिया के नर-नार में
तू सोच समझ के कदम बढ़ाना, देख कहीं तू फंस न जाना
काम-क्रोध और लोभ-मोह का जाल बिछा है संसार में

अरे "तुझको जाना दूर मुसाफिर, कदम बढ़ा मजबून मुसाफिर
देख : 'प्रेमानन्द' पहुँचेगा कैसे इस ढीली रफ़्तार में"
तुझको बन्दे आना होगा साहिब की सरकार में
हिसाब तुझको देना होगा मालिक के दरबार में।

तो इसलिए जिन्दगी में इतना चलते हुए तुझे अपने सफर में पहुँचना है भाई। कहीं ऐसा न हो कि इन्सानी जीवन पीछे रह जाय। भाई, इन्सानी जीवन इसलिए है कि तुम जिन्दगी में आये हो तो कुछ कर जाओ, कुछ साथ लेकर जाओ। कुछ यहाँ से लेकर जाना भई, कहीं ऐसा न हो कि पीछे आँसू बहाना पड़े। संसार के बाजार में ऐसा सौदा करना कि कहीं पीछे घाटा न खाना पड़े, कहीं पीछे आँसू न बहाना पड़ें, कहीं यह न कहना पड़े कि मैंने जिन्दगी को यों ही वरबाद कर दिया। क्योंकि हर जिन्दगी में जल्दी समय आ जाय या बाद में आये, लेकिन हर जिन्दगी में एक-न-एक समय ऐसा आता है कि वह सोचने लगता है कि आखिर जिन्दगी है क्या? आखिर जिन्दगी क्या है? जिन्दगी में आया, कुछ कमाया, कुछ खाया, कुछ पिया, कुछ माया इकट्ठी की, कुछ कीड़े-मकोड़ों को इकट्ठा किया, कुछ वैभव व सामान इकट्ठे किये और फिर संसार से चलते बने। क्या इसी को जिन्दगी कह देंगे? क्या जिन्दगी का खेल यहीं खतम हो जाता है? नहीं, जिन्दगी का खेल यहाँ खतम नहीं होता। ये तो जिन्दगी के उपलक्ष्य नहीं हैं, ये तो जिन्दगी के खेल हैं। ये तो जिन्दगी के बाग हैं। लेकिन जिन्दगी के अंदर, जिन्दगी की इन चीजों के बहुत ऊपर पहुँचने के लिए, जहाँ जाकर ये संसार के और पदार्थ दिव्य रूप

से नजर आने लगते हैं, उस रंग में रँगे नजर आने लगते हैं, जिस रंग का यह सब खेल संसार में हो रहा है। तो इसीलिए प्यारे मानव, तू अपनी नींद से जाग। अपनी नींद से जाग जा, कहीं ऐसा न हो कि नींद में तू सोया रहे और तेरे मानव-जीवन का सुहाग लुट जाय, तेरे मानव-जीवन की माँग उजड़ जाय। कहीं ऐसा न हो कि मानव-जीवन का सहारा, क्योंकि तेरे सोने से संसार सो जाता है, तेरे सोने से जहान को नींद आ जाती है, तेरे जागने से संसार जागता है। इसलिए ऐ मानव, तेरे सो जाने से तेरा भाग्य न उजड़ जाये, कहीं ऐसा न हो जाय कि तेरे भाग्य में दीमक लग जाय। इसीलिए ऐ इन्सान—

उठ जाग प्यारे नींद से जाग।
देख ले अब तो घर में तेरे काम-क्रोध की लगी है आग।
जाग प्यारे नींद से जाग।
जीवन को तू मस्त बना ले,
सद्गुण जीवन में तू अपना ले,
जब प्यारे की शरण में आया,
जाग जाय फिर तेरे भाग।
जाग प्यारे नींद से जाग।

देख ले अब तो तेरे घर में काम-क्रोध की लगी है आग। इसलिए ऐ मानव ! अपनी जिन्दगी के अंदर विचार करने की कोशिश कर। कहीं ऐसा न हो कि अगर जीवन बेकार चला गया तो यह जीवन बार-बार हाथ नहीं आयेगा। इन्सानी चोला, और ध्यान देना भाई, सबसे बड़ी बात तो यह है कि

इंन्सानी चोले के अंदर आज तुम सुखी हो, शायद तुम्हें इस बात का ध्यान न आता हो। लेकिन मैं तो बार-बार इस बात को दोहराऊँगा, ऐ इंसान, ऐ सुखी इंसान, तू जागने की कोशिश कर, दुःखी इन्सानों को देख ले। आज जो निर्धन, आज जो भिखारी नज़र आते हैं, कभी ये भी सुखी थे। लेकिन इन्होंने अपनी जिन्दगी का सदुपयोग न किया, इन्होंने धन का सदुपयोग न किया, इसलिए आज धन के लिए चिल्ला रहे हैं। इन्होंने देह का सदुपयोग न किया इसलिए आज देह के लिए चिल्ला रहे हैं। इन्होंने हाथों का सदुपयोग न किया इसलिए ये आज हाथों के लिए चिल्ला रहे हैं। ये लूले और लंगड़े भी कभी तुम्हारी तरह अच्छे इंसान थे, मगर आज ये क्यों रो रहे हैं ? क्योंकि इन्होंने अपनी मिली हुई चीज का सदुपयोग न किया। इंसान को हालत में एक ऐसा समय आ सकता है कि वह माँगे और खाने को उसे कोई टुकड़ा न दे। हर इंसान के जीवन में ऐसी हालत भी आ सकती है। कौन जानता है कि कल तू हाथ फैलाए और तुझे कोई खाने को न दे। शाहजहाँ हिन्दुस्तान का बादशाह, हिन्दुस्तान का शहनशाह, तख्त पर बैठा हुआ है। एक फकीर आकर कहता है कि ओ बादशाह ! होश में आ। एक दिन ऐसा तेरे जीवन में आयेगा कि तू हाथ फैलायेगा और तुझे खाने को कोई न देगा। शाहजहाँ को गुस्सा आ गया। फकीर बकवास करता है। भाई, सुख में इन्सान को होश नहीं आया करता।

तुझे इस दारे फानी से, सफर दर पेश आना है,
कि जिसके वास्ते न कोई हीला है, न बहाना है।

चमन जो फूला है आज इक दिन खिज़ा बरबाद कर देगी
घर बार मुल्क सब छूटेंगे, बना जिसका दीवाना है।
अरे इस जहान में चन्द दिन रहकर कुछ कर ले
किया था जो सो पाया है करेगा जो वह पाना है।
खुदी को छोड़ और राज़ी पर रज़ा हो तू
खुदी का हाथ से धोना खुदा का हाथ आना है।
इस समय तुझे मेरी बातों का यकीन आना तो मुश्किल है
करेगा इक दिन याद जो तू मरदे दाना हैं।
मेरी बातें तुझे इक दिन सागर से उभारेंगी,
फिक्र क्या आज भूला है तो कल को होश आना हैं।
'प्रेमानन्द' कर ले खुशी जीने पै आज मरने की,
तू खाक का पुतला है और खाक ही आखिर ठिकाना है।

तो शाहजहाँ के सामने वह फकीर कहता है कि ऐ शाहजहाँ तुझे मैं फिर चेतावनी देता हूँ कि कहीं ऐसा समय तुझ पर न आ जाय कि तू हाथ फैलाये और तुझे खाने को न मिले। शाहजहाँ बादशाह कहता है, फकीर बकवास बंद करो। अव्वल तो मैं हिन्दुस्तान का बादशाह, मुझ पर ऐसा समय आ ही नहीं सकता। और कभी ऐसी हालत हो कि मैं ताज को छोड़ दूँ तो मुझे खाने की कमी कहाँ हो सकती है। खजाने मेरे भरपूर पड़े हैं। फकीर ने फिर तीसरी बार कहा कि शाहजहाँ अभिमान मत कर, अभिमान मत कर। वह नहीं माना। हुक्म किया, फकीर को जेल में डाल दो।

लेकिन भाई कई बार आपके सामने कहा कि—

"सदा दिन नहीं बराबर जान
कभी तो बैठे शाह तखत पर सिर पर छतन झुलान।
कभी तो गल बिच पा के कफनी दर दर भीख मंगान।
सदा दिन नहीं बराबर जान।
कभी तो रानियाँ रंगमहल में, सब पर हुकम चलान,
और कभी तो सिर में खाक डालकर, जुल्फ़ाँ गल लटकान।
सदा दिन...
कभी तो तोते बागाँ अंदर चुन चुन मेवे खान,
और कभी तो अंधे होंय आप ही बिच फाई फसजान।
सदा दिन...
कभी तो रामचन्द्र की जय जय, तख्त तैयारो जान
कभी तो राम, सिया और लक्ष्मण, बन जंगल भरमान।
सदा दिन...
कभी तो राम स्वामी प्यारे, प्रोफेसर कहलान,
और कभी तो जंगल नंगे फिरदे पत्ते खाय करे गुजरान।
सदा दिन...
मुरदे होन पलां बिच जिन्दे, जिन्दे झट मर जान,
ऐथे पेश न जाय किसी दी, भावी है बलवान।
सदा दिन..."

दुनिया में किसी के दिन एक समान रहते, संसार में नहीं देखे गये। Time is greatest revenger. कई बार आपके सामने कहा, समय बड़ा बलवान है। जो इंसान मिली हुई चीज का सदुपयोग नहीं करता, एक दिन समय उसको खून के आँसू रुलाता है। मिले हुए को खोने वाले उस हीरे के

लिये सिर धुन के रोया करते हैं, जब वह हीरा हाथों से चला जाता है। इसलिए जिन्दगी के अन्दर, अपने जीवन के अन्दर जीवन को संभालने की कोशिश करो। इसलिए जिन्दगी के अन्दर, अपने जीवन के अन्दर, संसार की इस गड़गड़ाहट में, इस संसार की चिलचिलाहट में अपने जीवन को संभालने की कोशिश करो। खैर बात अपने प्रसंग की ओर आती है। शाहजहाँ ने उसे कैद में डाल दिया। समय गुजर गया। और जब शाहजहाँ को तख्त से उतारा, औरंगजेब उसका पुत्र था, लेकिन बाप को गद्दी से उतार कर जेल में डाल दिया गया और जेल में उसे कई दिन भूखा रखा जाता। खाने को रोटी तक नहीं दी जाती और उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। एक दिन मुमताज महल उसकी रानी की बरसी थी, शाहजहाँ ने एक अरजी लिख भेजी। औरंगजेब के नाम एक अरजी लिखकर भेजता है, शाहजहाँन कि ऐ बादशाह। ऐ बादशाहे औरंगजेब तेरी माँ की कबर पर फ़ूल चढ़ाना चाहता हूँ, मुझे इज़ाज़त दी जाय। इज़ाज़त दे दी गई, लेकिन साथ में यह भी ऐलान कर दिया गया, साथ में यह घोषणा कर दी गई कि आज शाहजहाँ किश्ती में सवार होकर फूल चढ़ाने के लिए जायगा। लेकिन आज किसी ने भी उसे सलाम तक की, पानी तक भी पूछा। तो उसको परिवार सहित कोल्हू में पिसवा दिया जायगा। शाहजहाँ नाव में सवार होकर जा रहा है—दोपहर का समय हो गया है रास्ते में मल्लाह लोग, केवट लोग रोटियाँ खाने के लिए बाहर निकालते हैं। जिस समय

रोटियाँ बाहर निकालीं, और दो-दो रोटियाँ खाने लगे। शाहजहाँ भी कई दिनों से भूखा था, मन में सोचा कि मल्लाहों से रोटी माँगकर खा लूँ। उसी समय एक मल्लाह से कहता है, ऐ भैया क्या रोटी, दो रोटी हमको भी मिल जायगी ? मल्लाह ने सोचा और उसकी आँखों में पानी आ गया। मन में विचार करता है, यह भी कभी हमारा बादशाह था और इसके पास तक हम नहीं पहुँच सकते थे। आज यह हमसे हाथ फैलाकर माँग रहा है, दे दो इसको दो रोटी, कर लो इसका ख्याल। दो रोटियाँ उसने आगे बढ़ाईं। इतने में पीछे से एक मल्लाह कहता है, ऐ भैया क्या तुमने बादशाहे वक्त की, आज के शहनशाह की घोषणा नहीं सुनी। औरंगजेब ने यह announcement करवाया है कि यदि किसी ने इसको पानी तक भी पूछा तो उसे परिवार सहित कोल्हू में पिसवा दिया जायगा। मल्लाह ने दो रोटियाँ आगे बढ़ा रखी हैं। शाहजहाँ ने हाथ आगे फैला रखा है रोटियाँ लेने के लिए। शाहजहाँ का हाथ आगे रोटियों तक पहुँचा ही था कि मल्लाह ने रोटियाँ वापस खींच लीं। कहता है, मैं तुझे रोटियाँ नहीं देता—

किस्मत की खूबी देखिए, टूटी कहाँ कमन्द,
जब़ कि लबे बाम, दो दो हाथ रह गये।

जब ज़िन्दगी मंजिल पर पहुँचने वाली थी जिन्दगी खतम हो गई। हाथ रोटियों तक पहुँचा था कि रोटियाँ वापस ले लीं। अब तो शाहजहाँ की आँखों में आँसू आ जाते हैं। चिल्लाकर कहता है, ऐ फकीर तूने सच कहा था, तेरी वाणी

को मैंने झूठ समझा था। लेकिन तेरी जो वाणी थी वह सत्यवाणी है, क्योंकि फकीर की आवाज़ खुदा की आवाज़ होती है। फ़क़ीर कहता है, ध्यान देना भाई, शाहजहाँ अपनी किताब में लिखता है कि फकीर सच कहता है। "फ़क़ीर रास्तमय गोई।" वह सच कहता था कि ऐ शाहजहाँ मेरे जैसे हिन्दुस्तान के बादशाह पर भी एक दिन ऐसा समय आ सकता है कि मैं हाथ फैलाऊँ और मुझे खाने को रोटी न मिले तो—

इन्सान फिर किस चीज़ का अभिमान।
इन्सान किस चीज़ का अभिमान ?
कैसा तेरा सम्मान ? और क्यों है तुमको यह मान ?
ओ पगले अगर तू चाहता जीवन का कल्याण।
वन जा तू इन्सान, तो आन मिलेगा तुझको भगवान।
जिन्दगी में होगी तेरी शान, और जिन्दगी में बढ़ेगा तेरा ज्ञान।
यही है इन्सानियत की पहचान।

तो इसलिए मेरे कहने का मतलब यह है कि जिन्दगी में हमें उस मंजिल तक पहुँचना है जहाँ से बड़ा-से-बड़ा दुःख भी हमें गिरा न सके और बड़ा-से-बड़ा सुख भी हमें अभिमानी न बना सके। मानव-जिन्दगी का यही सार है कि मानव लाखों दुःखों के बादलों में घबराये नहीं और लाखों सुखों के बादलों में भी इन्सान इतराये नहीं—यही इंसानी जिन्दगी का सार है। नहीं तो क्या लाभ है ? मेरे कहने का मतलब यह है कि जिन्दगी के अन्दर सुखों का निरादर मत करो लेकिन दुखों का भी निरादर मत करो। ध्यान करो। सुख और दुख

जिन्दगी में आते रहेंगे, लेकिन तुझे तत्व पहचानना होगा कि सुख और दुखों के अन्दर तू ऐसा एक बराबर रह सके। सुख और दुख के अन्दर तेरे मन की अवस्था, तेरे mind का equilibrium रह सके और तू संसार के सुखों और दुखों में सम रहता हुआ आगे बढ़ता चला जाय अपनी जिन्दगी के अन्दर क्योंकि नहीं तो'

In wealth the fear of poverty,
In knowledge that of ignorance
In beauty that of age,
In fame that of backbiters,
In success that of jealousy,
Even in body is thc fear of death.

Everything in this world is fraught with fears Only he is fearless who is above these things. ऐ इन्सान, तू संसार में सब चीजें देखता चला जा। सुख भी आये, दुख भी आये, भोग भी आये, रोग भी आये। तुझे कोई गाली दे. तेरी कोई पूजा करे और तेरी कोई प्रशंसा करे— इन सब चीजों को तू देखता चला जा। एक संत और एक शिष्य बाजार में से गुजर रहे थे। रास्ते में कुछ लोग एक जगह बातें कर रहे थे। यह संत क्या गजब का है! क्या कमाल का संत है! क्या इसकी महानता है! यह कितना गज़ब का बोलता है! अरे वाह, इसकी हद हो गई है! यह शिष्य ने सुना। थोड़ा आगे चला तो दो-चार लोग और खड़े हो गए, और कहने लगे, अरे, क्या पाखण्डी है? क्या बदमाश है? यह तो ऐसा है, यह तो वैसा है। शिष्य ने उनकी भी बातें सुनीं।

उस संत के चेहरे पर कोई भी फरक नहीं पड़ा। थोड़ा आगे वढ़ने पर शिष्य ने पूछा, 'गुरु महाराज, जरा बतलाओ तो सही कि इतने रास्ते में किसी ने आपकी तारीफ की आप जरा भी फ़ूले नहीं। और किसी ने आपकी कितनी ही बदनामी की, कितनी दी बुराई की, लेकिन आपको दुःख नहीं हुआ। क्या बात है ?' संत ने कहा, 'भैया, यह देखते हो कि हम बाजार से गुजर रहे हैं। शिष्य कहता है, जी महाराज। आप देखते हो दुकानों में showroom बने हुए हैं, और आप जानते हो show-room में कितना सामान पड़ा हुआ है। जी महाराज, संत ने कहा, तो भाई, यह showroom में जो सामान पड़ा है मैं अगर इनको खरीद ने जाऊँ तो यह किसका होगा ? कहता है, 'जिसका showroom है जिस दुकान का माल है। संत कहते हैं, भाई, यह भी लोगों का माल है। किसी के पास प्रशंसा है, किसी के पास गाली है, किसी के पास अच्छाई है तो किसी के पास बुराई है। ये इनके अपने-अपने show-room हैं। सामान रखा हुआ है। ये अपनी-अपनी अच्छाई-बुराई दिखाते हैं। मैं उनका खरीदार नहीं बनता, न मुझे उनकी प्रशंसा चाहिए, न मुझे उनकी गाली चाहिए। ये अपना-अपना सामान मुझे दिखाते रहे। मैं इनके shawrooms में इनका सामान देखकर, यह मेरी तारीफ कर रहा है यह भी मैं जानता हूँ, और कैसी तारीफ कर रहा है यह भी मैं जानता हूँ और यह भी मैं जानता हूँ कि यह भी मेरी बुराई कर रहा है, मै उनको देखता हूँ लेकिन खरीदार नहीं बनता। तो भाई, संसार के अंदर, इन पदार्थों में, इन बुराइयों और अच्छाइयों के

खरीदार मत बनो। इन भोगों के खरीदार मत बनो। यह तो संसार का showroom है, यह तो सारा संसार ही showroom है। इस showroom में अरे नुमाइश के अंदर जाते हो, तरह-तरह के पदार्थों को देखते हुए निकल जाओ, यही जिन्दगी का मज़ा है, यही जीवन का सार है। यही जिन्दगी की मंजिल है। और इसी तत्व को जब तुम पहचानोगे तो जिन्दगी का सार मिल जायगा और जिन्दगी में reality आ जायेगी। जिन्दगी मुस्कराहट बन जायगी और जिन्दगी के तत्व को पहचानोगे। भाई, इस तत्व को पहचानते हुए अपने जीवन को महान् बनाने की कोशिश करो। इंसानियत को पहचानो।

पाँच

कलियाँ बाग में जब खिलेंगी चुन लेंगे चुनने वाले। सुन लेंगे सुनने वाले।
तू अपनी धुन में गाता जा, तू अपनी धुन में गाता जा,
जब प्रेम प्याले आयेंगे पीने वाले पी लेंगे, जी लेंगे जीने वाले।
तू प्रेम प्याला पिलाता जा तू अपनी धुन में गाता जा,
जब प्रीतम प्यार हुआ पैदा तर जायें तरने वाले कर जाए करने वाले।
तू प्रभु से प्रीत लगाता जा,
प्रेमानन्द जो तू कहता है समझेंगे किस्मत वाले।
पायगे पाने वाले तू अपना फर्ज़ निभाता जा,
तू अपनी धुन में गाता जा, तू अपनी धुन में गाता जा।

जिन्दगी का प्रश्न भी अजीब प्रश्न है। जिन्दगी के अन्दर इस तत्त्व को विचार करें। जब हम गहराई से जाकर जिन्दगी को देखने लगते हैं तो हमें महसूस होने लगता है कि यह जिन्दगी कोई 30, 40, 50 वर्ष की नहीं बल्कि

जिन्दगी वह जिन्दगी है जो जन्म-जन्मान्तर से चली ग्रा रही है। जिन्दगी, जिन्दगी का सार जिन्दगी में ही मिल सकता है। हस्ती, हस्ती में ही पाई जा सकती है। कल बतला रहे थे कि इन्सान तेरे जितने भी दुख हैं, जितनी भी तुझे चिन्ताएँ हो रही हैं केवल तेरे मानने से हो रही हैं। संसार के दुख भी तेरे माने हुए हैं ग्रौर संसार के सुख भी तेरे माने हुए हैं ग्रौर इन माने हुए दुखों ग्रौर सुखों के ग्रन्दर इन्सान संसार के ग्रन्दर तब तक भटकता रहेगा जब तक कि वह संसार की वास्तविकता को, संसार की reality को, संसार की हकीकत को नहीं समझता। जब वह ग्रपने तत्त्व को नहीं समझता या संसार की वास्तविकता के साथ जब वह ग्रपने-ग्रापको नहीं समझता, जब वह ग्रपने तत्व को नहीं समझता कि मै क्या हूँ ग्रौर मेरा जीवन किसलिए है मेरा तत्व क्या है? मेरा स्वरूप क्या है? मुझे पहुँचना कहाँ है? यह संसार के दुःख ग्रौर सुख क्या हैं?

कहाँ तक मुझे ग्रसर कर सकते हैं? कहाँ तक यह मेरे साथ खेल सकते हैं? इन चीज़ों को जब इन्सान सोचता है जब इन तत्वों में ग्रा जाता है। जब इन्सान ग्रात्म-स्वरूप में लीन हो जाता है ग्रपने ग्राप ग्रात्म-स्वरूप में लीन हो जाता है तब यह लहरें उठती हैं। यह संसार, यह संसार सागर की लहरें कभी बन्द नहीं हुग्रा करती। इसमें लहरें उठा करती हैं, इसमें लहरें हमेशा टकराया करती हैं लेकिन इन्सान तुझे संसार में रहकर चट्टान बनकर इन लहरों का मुकाबिला करना पड़ेगा। सौ बार जिन्दगी के ग्रन्दर कोई भी

वस्तु दुनिया के अन्दर ऐसी नहीं जो इन्सान तुझे बाँध सके। जो इन्सान तुझे दास बना सके।

इश्क का तूफाँ बपा है हाजते मयखाना नेस्त।
खूँ शराबो दिलकबाबो फुरस्ते पैमाना नैस्त॥

(कहता है) यहाँ क्या कहे यहाँ तो इश्क का तूफान बपा है यहाँ तो मुहब्वत का दरिया उमड़ रहा है। मुहब्बत के दरिया में बहते जा रहे है हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम शराबखाने में जाकर बैठें। शराब पीने के लिए शराबखाने में जाय। कहता है—

पस्त है आलम नज़र में वहशते दीवाना नेस्त।

हमारे पर वह मस्ती छाई हुई है कि सारा संसार तुच्छ नज़र आता है कि संसार की वास्तविकता हमें हेच नज़र आती है। इसलिए कहा—

सख़्त मख़मूरी है तारी ख्वाह कोई क्या कुछ कहै।
पस्त है आलम नज़र में वहशते दीवाना नेस्त॥
अलविदा ऐ मर्ज़ें दुनिया, अलविदा ऐ जिस्मो जाँ।
ऐ अतश, ऐ जू चलो ईं जा कबूतर खाना नेस्त॥
क्या तजल्ली है यह नारे हुस्न शोलाख़ेज़ है।
मारले पर ही यहाँ पर ताक़ते परवाना नेस्त॥
मेह हो मह हो दबिस्ताँ हो गुलिस्ताँ कोहसार।
मौजज़न अपनी है खूबी, सूरते बेगाना नेस्त॥
लोग बोले गहन ने पकड़ा है सूरज को ग़लत।
खुद है तारीकी में बरमन साया महजूबाना नेस्त।

"उठ मेरी जाँ ! जिस्म से हो गर्क़ जाते राम में ।।
जिस्म बदरीश्वर की मूरत हरक़ते फ़रज़ाना नेस्त ।"

कहता है इन्सान यह जिन्दगी एक लिविंग टैम्पल है। यह मानव-जीवन जो है, यह मानव देह जो है, तू इस देह का ठाकुर है तो देह तेरा मन्दिर है। ऐ मानव तू इस जीवन के अन्दर इस तत्व का विचार कर, इस भेद को समझ और इस भेद को जानते हुए केवल इस देह की पूजा में मत लगा रह। केवल देह का पुजारी न बन जा। केवल जिस्म की कैद में अपने को कैद मत कर डाल, जिस्म को अपना सुख मत मान। देह के सुख दुःख को अपना सुख दुःख न मान, बल्कि देह के सुख दुःख को अपना सुख दुःख न मानकर तू अपने स्वरूप में लीन रह। दुनिया में तुझे बड़े-से-बड़ा दुःख भी आयगा। बड़ी-से-बड़ी कठिनाई भी आयगी। तू तो इनको बड़ी आसानी से पार कर सकेगा। इस जीवन के अन्दर भी अनेकों समय आए होंगे। जबकि पाँव में छाले पड़ रहे थे। चलने की हिम्मत न थी, पेड़ के नीचे जान छोड़कर पड़ जाता था और विचार यह होता था कि कई दिनों से बार-बार दिल में हाल यह होता था कि कई दिनों की भूख से पेट की आतड़ियाँ सूखती, उस समय पेड़ के नीचे पड़ा हुआ आगे चलने की एक कदम भी हिम्मत न होती थी। तो अन्दर से विचार आता था कि अरे तुझे भूख लग सकती है क्या ? तुझे संसार सता सकता है क्या ? यह प्यास तुझे अपना दास बना सकती है क्या ? अरे नहीं-नहीं यह सारी प्रकृति तेरी सेवा के लिए पैदा की गई है। ऐ

इन्सान nature is created for your service प्रकृति तेरी सेवा के लिए है, कुदरत तेरी सेवा के लिए खड़ी है, तुझे भूख और प्यास अपना दास नहीं बना सकती। तुझे सर्दी और गर्मी अपना दास नहीं बना सकती। ऐ इन्सान! अपनी कीमत को पहचान, उठ और आगे बढ़। ज्योंही यह विचार मन में आता था त्योंही भूख और प्यास खत्म हो जाती थी। जिस्म में एक नई लहर दौड़ आती थी, बल्कि एक नई शक्ति दौड़ उठती थी। जिस्म फिर आगे चलने लगता था।

जिन्दगी में कहने का मेरा मतलब क्या है? मानव-जीवन के अन्दर इसी चीज़ को हमें देखना है। अब इस तत्व के अन्दर विचार करके तो देखिए, विचार के आने से ही इन्सान के अन्दर कितनी शक्ति और कितना बल पैदा हो जाता है कि मैं देह से परे हूँ, मैं देह नहीं, मेरी देह के सुख दुख मेरे सुख दुख नहीं, जिस्म की कैद मुझे नहीं सता सकती। जब ऐसा इन्सान के अन्दर विचार आता है, जब इन्सानी जिन्दगी के अन्दर ऐसा सफर आता है, जब इन्सानी जिन्दगी को ऐसा ख्याल आता है तब उसे महसूस होता है कि जिस चीज़ को वह दुख मान रहा है वह वास्तविकता में दुख नहीं है। जिसको वह सुख मान रहा है वह सुख नहीं है। और वह सुख और दुख से परे खड़ा होकर इस तमाशे को देखता है। अपने जीवन के सुखों को भी देखता है और अपने जीवन के दुखों को भी देखता है—यही पिछले कई दिनों में हमने विचार किया कि कर्म के द्वारा, शरणागति के द्वारा इन्सान को एक दिन ऐसी अवस्था में पहुँचना है,

एक दिन इन्सान को सीढ़ी की ऐसी छत पर पहुँचना है जहाँ पर पहुँचने के बाद संसार में दुनिया की कोई भी वस्तु उसे गिरा नहीं सकती। जहाँ पर पहुँचने के बाद वह कहते हैं—

"अजब प्याला है बहदत का जो साकी ने पिलाया है।
अजब मस्ती अजायब रंगत अजब नशा आया है।
नशा इक बूँद या काफी लबालब जाम जब पिया।
शफ़क में डूब गई आँखें तो दुनिया को भुलाया है।

उस समय इन्सान इस तत्व को सोचने लगता है। इस तत्व को जानने लगता है। लेकिन भाई और जिन्दगी का यह प्याला इस जीवन के अन्दर हमें उस मंजिल तक पहुँचना है जबकि सुख और दुख हमें सता न सके और इनका दास बनकर संसार की ठोकरें न खाते रहे। तो यह तभी हो सकेगा जब हम मानने को छोड़कर जानने की कोशिश करेंगे। और जानेंगे इस संसार की हकीकत को कि यह संसार में कौन से सुख से अपने को बाँधे रहे। ऐसा कौन-सा पदार्थ है संसार में जो हमें सदा सुखी रख सकेगा। कौन-सी ऐसी वस्तु है संसार के अन्दर जो हमेशा हमें सुख दे सकेगी। जरा ध्यान दीजिये। कोई भी ऐसी वस्तु लीजिये जो हमें सदा सुख दे सकती है। लेकिन भाई जब तक संसार की कामनाओं को न छोड़ोगे तब तक संसार की कामनाओं को कन्ट्रोल न करोगे। वह कहते हैं—

पहुँचना है असली घर को तज दे नकली धाम को।
बेनिशा का बानिशा कोई पता पाता नहीं।

कहता है जिन्दगी के अन्दर तू अपने घर को पहुँचना चाहता है। अपने असली धाम को पहुँचना चाहता है तो इस नकली घर को छोड़ने की कोशिश कर अपने घर भोगों की तरफ से वापस उल्ट जा और अपने तत्व की ओर आ और जब तू अपने तत्व की ओर आकर देखेगा। तू अपनी मंजिल की ओर आकर पहचानेगा कि तेरी जिन्दगी कितनी महान् है, तेरी कीमत कितनी महान् और तू कितनी महानता के लिए मानव कहलाया गया कि अगर तू अपने-आपको दीन और नीच मान रहा है तो यह तेरी गलती है और इसलिए इन्सान तू इन चीज़ों का ध्यान छोड़कर आगे बढ़ और देख तेरे सामने प्रकाश है, हो सकता तुझे ठीकरें मिलें, हो सकता है तू रास्ते की गिरावट में आ जाय। लेकिन एक-न-एक दिन तेरे पास प्रकाश जरूर आयगा। कोई हर्ज़ नहीं। अनेकों बार जिन्दगी के अन्दर तू गिर जाय। लेकिन गिरने में इतना भेद नहीं। लेकिन गिरकर न उठना गलती है। गिरना तो इन्सान में होता ही है—

गिरते हैं शाह सवार ही मैदाने जंग में।
वह तिफ़ल क्या करे जो घुटनों के बल चले।

जो घुटनों के बल चले वह बच्चा क्या गिरेगा। गिरता वही है। जो घुड़ सवार होकर मैदाने जंग में जाता है उसे गिरने का भय नहीं। इन्सान लेकिन गिरते हुए जिन्दगी के अन्दर क्योंकि life is infinite, time is infinite लेकिन इस तत्व का विचार करते हुए तू भी आगे बढ़ और पल-पल तुझे कदम आगे बढ़ाना

होगा। पल-पल के अन्दर जिन्दगी को समझना होगा। और क्षण-क्षण के अन्दर जिन्दगी की खोज करनी होगी। लेकिन उसके लिए सबसे जरूरी बात यह हैं कि तू अपने जीवन पर निगाह रखे। अपनी जिन्दगी पर नज़र रखे और माने हुए पदार्थों में जहाँ-जहाँ तुमने सुख बाँध रखा है उस सुख को छोड़कर उस वास्तविक सुख की ओर बढ़। उस वास्तविक घर की ओर बढ़ जिस घर से बिछड़कर तू दुखी हो रहा है। जिस घर से बिछड़कर तुझे परेशानियाँ हो रही हैं और वह घर तेरा कहाँ है ? और वह घर तेरा कहीं दूर नहीं और अपने घर में आने को मना भी कौन करता है। अपने घर में आने के लिए किसको रुकावट होती है। हमें संसार के भोगों को पाने में रुकावट हो सकती है। संसार के अंदर हमें पदार्थ पाने में रुकावट हो सकती है। लेकिन भाई ध्यान रखना संसार में एक बात को हमेशा याद रखना कि संसार में सुख पाने में कभी भी स्वतन्त्र न हो सकोगे, लेकिन दुःख मिटाने में पूरे आज़ाद हो। चाहो तो आज ही दुखों का अन्त कर डालो। देख लो, संसार में अगर तुमने सुख को कहीं भी बाँधा है तो क्या सुख पाने में स्वतन्त्र हो ? क्या किसी के वियोग को रोक सकोगे ? क्या किसी की मौत को रोक सकोगे ?—नहीं न ? अगर तुम्हारा सुख उसके जीने में है तो वह सुख रह सकेगा ? नहीं। लेकिन विचार और विवेक के द्वारा, विचार और विवेक के सहारे तुम उस दुःख का तो नाश कर सकते हो न। उस दुःख का तो नाश कर सकते हो जिस दुःख से तुम दुःखी हो रहे हो। दुःख तो मामूली होता है भाई। पर उस दुखका :

दुःख बहुत ज्यादा होता है। जिन्दगी के अंदर जब तक इन चिंताओं से ऊपर न उठेंगे, जब तक वासनाओं से ऊपर न उठेंगे। जब तक ये कामनाएँ एक mirage तक मामूली, जैसे कि पहाड़ की चोटी पर चढ़े हुए इन्सान को नीचे की सब वस्तुएँ खिलौने की तरह दिखाई देती हैं, उसी प्रकार जब संसार के भोग, संसार की वासनाएँ, संसार की कामनाएँ खिलौनों की तरह दिखाई न देंगी। तो तब तक तुम अपनी मंजिल तक न पहुँच सकोगे। इसलिए भाई उस चोटी पर पहुँचकर, उस मस्ती की चोटी पर पहुँचो, उस रुहानियत की चोटी पर पहुँचो, ऊस divinity की हाइट पर पहुँचो, जहाँ संसार के भोग, संसार की वासनाएँ, संसार की कामनाएँ एक mirage की तरह दिखाई देने लगें। और इन्हें खिलौने समझकर इनमें आसक्ति न करो। खिलौने हैं, खिलौने एक दिन नष्ट हो जायँगे। संसार में रहकर भी संसार के पदार्थों से विरक्त होकर रह सकते हो, और यही तो जिन्दगी का सार हैं। यही तो जीवन की मंजिल है। मानव-जीवन की मंजिल इसी में है। मानव की मानवता की perfection इसी में है। मानवता की पूर्णता इसी में है कि वह अपने जीवन के अंदर हर चीज़ में एक समान रहता हुआ आगे बढ़ सके। और चीज के अंदर हर लहर के साथ वह टकरा सके। हर खेल के साथ वह खेल सके और हर खेल को खेलता हुआ भी अपने स्वरूप को न भूले। अपने-आपको न भूले। केवल देह का पुजारी न बनता हुआ ठीक है। भाई, देह को सजाओ, देह की सजावट करो, तुम्हें कौन मना करता है। लेकिन भाई ध्यान देना, केवल देह की सजावट ही

सजावट नहीं, देह की सजावट तो तुम्हें दुनिया के सामने अच्छा बना सकती है, लेकिन मन की सजावट तो तुम्हें भगवान् के दरबार में अच्छा बना सकती है। इसलिए जिंदगी के अंदर कहा गया, बार-बार दुनिया तुझे अच्छा कहे और तू बुरा हो, इस बात से यह बात लाख दरजे अच्छी है कि दुनिया तुझे भले ही बुरा कहती रहे पर तू अच्छा हो। क्यों भाई जिंदगी के अंदर ध्यान देना, जिंदगी क्या है ? अगर जिंदगी के अंदर लक्ष्य को न पा सके। और वह सुबह ही क्या हैं जिस रात में दीदार न हो सका। जैसा कि कहा—

पाया न शब में यार को हमको सुबह से काम क्या।
अरे मुर्दा कबरें तार को आबेगियाह से काम क्या ॥
अरे कोई बड़ा भला कहे ख्वाह बुरा कहे,
पल्ला छुटा जो जिस्म से बीमो रजा से काम क्या।
व जिस्म का नाता ही टूट गया जब देह का नाता ही
टूट गया पल्ला छुटा जो जिस्म से बीमो रजा से काम क्या
कहता है नेकी बदी खुशी ग़मी ज़ीना थी बामे यार का।
यह तो भगवांन तक पहुँचने की सीढ़ी थी किसी के साथ
भलाई करना किसी के साथ बुराई करना नेकी करना ज़ीना
जिलादा अब यहा पायीं बिया से कार क्या
अरे पल्ला…
तेरा लिहाज कर लिया दुनियां जरा परे भी हट
नाचूँ साथ राम के शर्मो हया से कार क्या
'प्रेमानन्द' ने जिंदगी का राज़ मौत में है पा लिया।
अब फिक्र नहीं होश नहीं आग़ाज क्या अन्ज़ाम क्या

पाया न शब में यार को नूरे ज़िया से क़ार क्या।
मुर्दें की कब्रें तार को आबो गियाह से काम क्या।
अरे मुर्दा कबर में डाल दिया जाय तो उसे क्या।

गर्ज़ है जब चाहे मिट्टी डालो, घास डालो, मुरदे को इससे क्या मतलब, जब मुरदे को कब्र में डाल दिया। लेकिन जब इसी तत्व को तुमने समझा, जब तुमने इसी भेद को जिन्दगी के अंदर जाना, ज़िंदगी के अंदर इस तत्व को जानकर मंजिल की ओर बढ़े और ज़िंदगी में अपने-आपको पहचानने की कोशिश की कि ज़िंदगी क्या है ? क्या तत्व है ज़िंदगी का ? तो तुम देखोगे कि जहाँ प्रेमी और प्रीतम का मिलाप हो गया वहाँ प्यार का मिलाप हो गया, उसका दीदार हो गया। वहाँ ज़िंदगी के अंदर वह मस्ती आ गई, वह तत्व आ गया जैसा कि कहा गया—

हर आन हँसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा
हैं आशिक़ और माशूक जहाँ, वहाँ शाह वज़ीरी है बाबा
है चाह फ़क़त इस दिलवर की फिर और किसी की चाह नहीं
इक राह उसी से रखते हैं फिर और किसी से राह नहीं
यहाँ जितना रंज तरददुद हैं हम एक से भी आगाह नहीं
कुछ मरने का संदेह नहीं कुछ जीने की परवाह नहीं
कुछ ज़ुल्म नहीं कुछ ज़ोर नहीं कुछ दाद नहीं फरियाद नहीं
कुछ क़ैद नहीं कुछ बंद नहीं, कुछ जब्र नहीं, आज़ाद नहीं
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं
हैं जितनी बातें दुनिया की सब भूल गए कुछ याद नहीं

जिस सिम्त नज़र भर देखे हैं उस दिलबर की फुलवारी है
कहीं सब्ज़े को हरियाली है, कहीं फूलों की गुलक़ारी हैं
दिन रात मगन खुश बैठे हैं और आस उसी की भारी हैं
जब आप ही वह दातारी हैं और आप ही वह भण्डारी है
हैं तन तो गुल के रंग बना, और मुँह पर हरदम लाली है
जुज़ ऐशोतरब कुछ और नहीं, जिस दिन से सुरत सँभाली हैं
होठों पर बाजे बजते हैं और गत पर बजती ताली हैं
हर रोज़ बसंत और होली है और हर इक रात दीवाली है

तुम्हारी तो साल में एक बार आती हैं न, हररोज़ बसंत और होली है हर रात दीवाली है।

हम प्रेमी जिस प्रीतम के हैं वह प्रीतम सबसे आला है।
उसने हमको जी बख़्शा हैं, उसने ही हमको पाला है।
दिल अपना भोला-भाला हैं और प्रेम बड़ा मतवाला है।
क्या कहिये यहाँ 'प्रेमानन्द' आगे? यहाँ कौन समझने वाला हैं

जिंदगी का राज़, मानव-जन्म का राज, मानव-जन्म का तत्व इस तत्व में मिल जाता है—मानव-जीवन का खेल इस खेल में नजर आने लगता है। और इंसान वही है जिंदगी में जो इन सब खेलों को खेलता हुआ भी अपने तत्व में लीन रहता है और वह तभी रह सकता हैं जब वह अपने आत्म-तत्व को भी पहचाने। और यह भी समझे कि संसार में रहता हुआ वह आत्मिक जीवन व्यतीत करता हुआ संसार के दुःखों से बाँधा नहीं जाता और संसार के सुखों से अभिमानी नहीं होता तो वह संसार के दुःखों से अज्ञानी नहीं होता तो प्यारे यह तेरा मानव-जीवन, यह तेरा मानव-जन्म का खेल तेरे हाथ

में है। तू अपने हाथों से इस खेल को बनाने वाला हैं। प्यारे, ऐसा जिंदगी का खेल खेल, जिंदगी अपनी ऐसी बना, अपना जीवन ऐसा बना ले कि जिसको देखकर मौत भी नाज़ करने लगे। जिस जीवन को देखकर जिंदगी भी नाज़ करने लगे और ऐसी मौत पर जी जिस पर मौत भी रश्क करने लगे, और ऐसी मौत मरने के बाद मौत भी ईर्ष्या करने लगे कि मरा तो भाई यह मरा, और ज़िंदा रहा तो यह रहा—जीवन था तो इसका था, मौत थी तो उसकी थी।

जिन्दगी के अन्दर मरना भी सीखो जीना भी सीखो
जीना भी आसान नहीं और मरना भी आसान नहीं

दुनिया जिसे मरना कहती है वह तो बहुत आसान है, मगर वास्तविकता में मर जाना कि जिन्दगी के अंदर कोई भी तत्व बाकी न रहे, जिन्दगी में अपना कोई अस्तित्व बाकी न रहे और मेरी कुछ भी इच्छा न रहकर, उसकी इच्छा में मेरी इच्छा समा जाए। तो दुनिया के अंदर जो भी प्यारे की तरफ से आये वह मुझे स्वीकार हो।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं।
हर काम में हर दाम में हर चाल में खुश हैं।
गर माल दिया यार ने तो माल में खुश हैं।
इफ़लास में अदबार में इक़बाल में खुश हैं।
मातम जो दिया तो उसी मातम में रहे खुश
मिला कम तो उसी कम में खुश हैं।
जिस तरह रखा उसने उस आलम में रहो खुश
दुख-दर्द और आफ़ात में जंजाल में खुश हैं।

हर काम में हर दाम में हर चाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं।
अगर यार की मर्ज़ी हुई सिर जोड़ के बैठे,
(लावा फेरे होते हैं)
और घरबार छुड़ाया तो वहीं छोड़ के बैठे,
और गुदड़ी जो सिलाई तो वही ओढ़ के बैठे,
और शाल जो उढ़ाई उसी शाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं।
हर काम में हर दाम में हर चाल में खुश हैं।

जिन्दगी वही है, भाई जहाँ जिस हाल में चारों तरफ प्यारा रख डाले। जिस हाल में भी उस यार की मर्जी हो, जिस भी हाल में जिस तत्व में उसकी इच्छा हो उसमें रह जाना जिन्दगी का सबसे बड़ा सार है। जिसने जिन्दगी के अन्दर इस प्रकार रहना सीख लिया समझो कि उसने जिन्दगी का राज़ पा लिया। लेकिन जिन्दगी का राज़, जिन्दगी का वास्तविक तत्व कितनी गहरा है। यह जिन्दगी का यह तत्व कि भाई प्यारे! अपने तत्व के अन्दर पहचानने की कोशिश कर जब-जब भी मानव जीवन के अन्दर इस प्रेम की पराकाष्ठा हो गई। जब-जब भी मानव-जीवन में यह प्रेम का प्रकाश पैदा हो गया तो फिर भला कहाँ राग हो सकता है? कहाँ द्वेष हो सकता है? कहाँ नफ़रत होती है? किससे नफ़रत की जा सकती है? एक संत दरिया के किनारे पहुँचे। शायद यह मिसाल मैंने पहले भी सुनाई है। सिर उन्होंने उस दिन घोंट कर मुडवाया हुआ था। अच्छी तरह सिर पर कुछ तेल की

भी मालिश की गई थी, सिर की खोपड़ी वहुत सुन्दर चमक रही थी। चाँदनी रात थी जब दरिया के किनारे पहुँचे हैं सन्त, सन्त जब दरिया के किनारे पहुँचे तो एक नाव वाले से कहा, कि पार चलना है, भाई ! ले चलोगे क्या ? नाव वाले ने कहा सन्त-महात्मा बैठो, अभी कुछ समय में दूसरी सवारियाँ आती है तो तुमको भी ले चलूँगा। इतने में १०-२० कॉलेज के नौजवान वहाँ पहुँचे। वे भी इस नाव से पार जाना चाहते थे, तो वहाँ १५-२० नौजवान उसमें बैठ गये। संत एक किनारे बैठे थे, खोपड़ी के ऊपर चाँद की चाँदनी पड़ रही थी और खोपड़ी पर चाँद की चाँदनी पड़ने से खोपड़ी खूब चमक रही थी। बड़ी सुन्दर चमक रही थी, इधर १०-१५ नौजवान आपस में बातें करने लगे। बात करते हैं कि घड़ा तो बहुत सुन्दर नज़र आता है, लेकिन पक्का है या कच्चा जरा परीक्षा करनी चाहिए। अब सन्त के मन में बड़ी खुशी हुई, सन्त हँसने लगा और कहने लगा कि प्यारे ! आज तक किसी ने तेरा test नहीं किया। अब तेरी परीक्षा होने वाली है, उसने कहा बहुत अच्छी बात है। इतने में क्या हुआ एक नौजवान उठा, उसने जाकर जहाँ वह सन्त बैठे थे आँखें बन्द करके प्यारे की याद में उसने जाकर सन्त की खोपड़ी पर दो टिक किया। जोर से टिक मारा उँगली के साथ। इतने में यह करके वापस आ गया। दूसरा उठा, तीसरा उठा, चौथा उठा और इसी तरह जितने भी हैं जाते हैं, और बारी-बारी टिक करके वापस आ जाते हैं। जब वापस आ गये तो १०-१५ आपस में बातें करने लगे कि भई घड़ा तो बहुत पक्का

है। इतना ठोका फिर भी बोला नहीं। इतने में नाव मझदार तक पहुँच चुकी थी। नाव भँवर में पहुँच चुकी थी। आवाज़ होती है, आकाशवाणी होती है, ऐ सन्त! तेरा अपमान हुआ, तेरा निरादर हुआ है। तेरा अपमान किया गया है—

"प्रेम के वश में होकर हमने प्रभु को नियम बदलते देखा,
अपना मान टले टल जाए, पर भक्त का मान न
टलते देखा।"

अरे जिसकी एक दृष्टि से संसार का पालन होता है उस जगदीश्वर का इस दूध के लिए यशोदा के आँगन में मचलते देखा। कहता है कि भई जिन्दगी के अन्दर क्या अजीब बात है—

अपना मान टले टल जाए, पर भक्त का मान न टलते देखा।

आवाज़ आती है, सन्त तेरा अपमान हुआ है। तेरा निरादर किया गया है। अगर तू चाहे तो मैं तुझे बाहर निकाल दूँ। लेकिन सन्त की तो हालत ही अजीब होती है। भाई! कबीर के बारे में कहते हैं कि उसके सामने ही एक वेश्या का मकान था। एक दिन कबीर के यहाँ सन्त मण्डली आई हुई है। राम नाम का कीर्तन चल रहा है। भजन हो रहा था तो उस वेश्या के यहाँ एक बड़ा भारी सज्जन आया था कोई धनाढ्य धनी पहुँचा हुआ था। उस समय उसके भोग में बाधा आई। कीर्तन से उठकर उसने वेश्या से कहा कि ये क्या मुसीबत है। उसने कहा कि यह कीर्तन हो रहा है। उस धनाढ्य को गुस्सा चढ़ा, उसने तुरन्त एक जलती हुई माचिस से अग्नि जलाकर कुटिया की ओर

फ़ेंक दी। कुटिया जोर से जली पर वह मालिक, वह परवर-दिगार देख रहा था। उसने देखा कबीर साहब की कुटिया जल रही है। कबीर साहब साधुओं के साथ मस्त होकर कीर्तन कर रहे हैं। इतने में जोर से हवा चली और हवा से जलते हुए तिनके उठे—जाकर वेश्या के मकान पर गिरे और उसके मकान को आग लग गई। वेश्या का मकान आग की लपटों में जलने लगा। वेश्या को होश आया। अरे मेरा मकान भी जल गया। मेरा सर्वनाश हो गया। भागी-भागी गई और कबीर साहब के चरणों पर पड़ी। कबीर साहब के चरणों में पड़कर रोने लगी, जोर-जोर से आँसू बहाने लगी। महा-राज क्षमा कर दो। दया कर दो। आँसुओ से पाँव धोती चली जा रही है। बालों से पोंछती जा रही है—कबीर साहब क्षमा कर दो। कबीर साहब कहते हैं—अरी पगली उठ राम का नाम ले मेरा तेरा क्या झगड़ा है ? यहाँ तो यार-यार का झगड़ा है। तेरे यार ने चलकर मेरे मकान पर आग लगा दी। मेरे यार ने चलकर तेरे मकान को, आग लगा दी। इसमें मेरा और तेरा क्या कसूर है। यह तो यार-यार का झगड़ा है उनको लड़ने दे। तो भाई बात यह है कि प्रेम की पराकाष्ठा तो इसको कहते हैं—सन्त, आकाशवाणी होती है ऊपर से—सन्त ! अगर तू कहे तो मैं नदी में नाव को डूबो दूँ और तुझको उठाकर पार ले जाऊँ। सन्त जो बड़ा खुश था आज—उसको पास होने की डिग्री मिल गई है। लेकिन सन्त ने जब ये आकाशवाणी सुनी तो आँखों में आँसू आ गये। आँखों में आँसू भरकर—हाथ जोड़े और

चिल्लाकर कहता है ओ प्रभु ! प्रभु यह तूने क्या कहा— क्या तू मेरे हृदय को नहीं समझ सका ? क्या तू मेरी पुकार को नहीं सुन सका ? मेरे दिल में संसार के लिए कितना दर्द है—मेरे दिल में जहांन के लिए कितना दर्द है ?

भगवान् तूने क्या कहा ? कहीं ऐसा न कर बैठना। मैं इतना दुष्ट और नीच नहीं बनना चाहता कि मेरे साथ नांव में बैठे हुए साथी डूब जायँ। कल को लोग कहेंगे कि संत नाव में बैठा था और नाव डूब गई। भगवान् कहीं ऐसा न हो जाय ? कहीं ऐसा न हो जाय मेरे साथ कि नाव में बैठने वाले डूब जायँ। भगवान् मैं इतना दुष्ट और नीच नहीं बनना चाहता। कहीं तुम ऐसा न करना—भई बात यह है कि भगवान् का हृदय तो भक्त जानता है। पर भक्त का हृदय भगवान् भी नहीं जानता। संत के हृदय की गहराई को भगवान भी नहीं समझ सकता। भगवान् के अंदर इतनी ताकत नहीं कि वह संत की गहराई को समझ सके। अगर वह संत है तो। क्योंकि संत तो संत ही हैं न ! संत की कोई व्याख्या नहीं होती। संत देवता, संत अग्नि—यह सब नहीं है—क्योंकि देवता भी भेंट लेने पर खुश होता है, न मिलने पर नाराज़ होता है, वरदान देता है, श्राप देता है। लेकिन भाई संत तो संत ही है। उसकी कोई व्याख्या नहीं की जा सकती। जैसे कि मैंने कल कहा था कि मैं तो मै ही हूँ। मेरे में कोई दूसरी बात नहीं हो सकती। यह तो हो सकता है कि यह मैं नहीं, यह मैं नहीं। लेकिन यह नहीं हो सकता कि यह मैं हूँ। मैं में कोई विशेषण नहीं है। इसलिए संत में कोई विशेषण नहीं है। संत तो संत ही है।

अगर वह सन्त है तो इस प्रेम की पराकाष्ठा में जब इंमान देखता है, जब इंसान समझता है इस राज़ को, इन्सान जब इस भेद को जानता है और जब तक प्रेम की पराकाष्ठा नहीं होती जब तक मुहव्बत का दरिया नहीं उमड़ता, तब तक यह वास्तविकता इन्सान के जीवन में नहीं आती, तब तक इन्सान संसार में ठोकरें खाता है, तब तक इन्सान सुख-दुखों के अंदर घबरा जाता है। लेकिन जब वह यह समझता है कि प्यारे की तरफ से मिली हर चीज मुझे प्यारी है। प्यारे की तरफ से इस बात को जब वह समझ लेता है, हर चीज मुझे प्यारी हैं, तो जिंदगीं का सार मिल जाता है। जिंदगी की मंजिल मिल जाती है, जिंदगी के अन्दर महान्-से-महान् दुखों में भो और महान्-से-महान् सुखों में भी उसके अन्दर अभिमान नहीं आता, क्योंकि वह भी प्यारे की वस्तु हैं इसलिए मैंने आपसे बार-बार कहा कि ऐ इन्सान! संसार में माली बनकर जी, मालिक नहीं। अपनी देह का मालिक बन-कर अपनी इन्द्रियों का मालिक बन। मालिक तू भोगों का बन, और माली बन इस संसार का। फूलों की सजावट कर ले। फूलों को सजा के फूलों को उगा ले। फूलों को रोज सींच। लेकिन सब-कुछ करते हुए भी संसार के बाग के अन्दर फूलों से प्यार करते हुए भी कई बार लोग पूछते हैं, महाराज! संसार में रहते हुए अगर संसार से डरे तो संसार से नफरत करे। देखो, माली फूलों से कितना प्यार करता हैं, माली फूलों से किना उन्स रखता है। माली फूलों का कितना ख्याल रखता हैं। लेकिन यह सब-कुछ रखते हुए भी वह जानता है कि फूल

उसके लिए नहीं, फूल मालिक के लिए हैं। न जाने किस समय वह मालिक उसे फूल तोड़ने का आर्डर दे दे। और वे फूल उसे तोड़कर वापस दे देने पड़ें। इसलिए प्यारे! जिंदगी का सार समझने की कोशिश करो। जिंदगी का सार यही है, इन्सान और जिंदगी का सार यही है कि तू जिंदगी के अन्दर ऐसी अवस्था में पहुँच जाय कि संसार के अन्दर लहरों से टकरा सके और हर लहर से खेल सके और हर मंजिल में, और मंजिल के हर कदम में भी तेरा ज़सबाए इतना कामिल हो जाय। ज़सबा भी इतना काबिल ही जाय। वह कहता है कि—

"या रब मुझको ऐसा ज़सबाए कामिल हो जाय
एक कदम में आगे बढ़ूँ तो मंजिल मुकाबिल हो जाय।"

काश मेरे दिल में वह ज़सबाए कामिल हो जाए—ज़सबाए कामिल वह भावना की पूर्णता। इतनी भावना की पूर्णता होनी चाहिए। जिंदगी के अंदर इतनी दृढ़ता हो तो यही जिंदगी का रास्ता है। भाई, अरे जिंदगी में जिन्होंने सांसारिक मुहब्बत की, संसार के अंदर भी इस तत्व को पहचाना, इस चीज़ को जाना। अरे जानते हो मिसाल तो ऐसी ही है लेकिन कितनी अजब मिसाल है। कितना अजीब तत्व है। कितनी इश्क की दृढ़ता हैं। कहते हैं—जिस समय मजनू को खुदा के सामने पेश किया गया तो खुदा ने मजनू से कहा, 'ओ मजनू, जितना प्यार तू लैला से करता था। जितना प्यार तुझे लैला से था। अगर तू इतना प्यार मुझसे करता। अगर तू इतनी मुहब्बत मेरे से करता तो मैं तुझे बैकुण्ठधाम में स्थान देता। मै तुझे

बैकुण्ठ में स्थान देता। लेकिन मजनू तूने यह क्या किया। तो मजनू कहता है कि ए खुदा, अगर तुझे इतनी ही चाहना थी। अगर तू इतना ही तड़प रहा था कि मैं तुझसे प्यार करूँ तो तू लैला बनकर मेरे सामने क्यों नहीं आया। मेरे कहने का सार है कि जिंदगी के अंदर हमारी उस दृढ़ता का इतना सार होना चाहिए। हमारी एकाग्रता का सार होना चाहिए, हमारे तत्व का सार होना चाहिए और जब हमारे तत्व में एकाग्रता होती हैं। जब हमारी मंजिल में एकाग्रता होती है, तो भाई! जिंदगी में सोचो, ओ कृष्ण के पुजारी आज सोचो, आज हम कृष्ण का नाम ले-लेकर जिंदगी में काम करते हैं, कृष्ण का नाम ले-लेकर चिल्लाते हैं, लेकिन आज कहाँ हैं कृष्ण को वास्तविकता में मानने वाले, कृष्ण की गीता में पूर्ण विश्वास करने वाले। कहाँ हैं राम के पुजारी, जो वास्तव में राम को मान रहे हैं, कहाँ हैं। हमारे अंदर, आज वह तड़प कहाँ हैं। आज हमारे अंदर वह दृढ़ता कहाँ है, आज वह हमारे अंदर वास्तविकता कहाँ है। हमने केवल skeletons को ले लिया है। केवल हमने जिस्म को ले लिया हैं, आत्मा को भूले हुए हैं। एक सन्त एक जगह पर बैठे हुए थे। एक दम उदास हो गए और चिल्लाकर कहने लगे, प्यारो, क्या कहूँ, गंगा नाव में डूब गई, गंगा नाव में डूब गई। लोगों ने एक बार सोचा, शायद महाराज के शब्दों में गलती हो गई है। लोगों ने पूछा, महाराज आप क्या कहते हैं। अरे महाराज कहते हैं अनर्थ हो गया। गंगा नाव में डूब गई। महाराज समझे नहीं, नाव गंगा में डूबती हुई देखी है, पर गंगा नाव में डूबती हुई नहीं देखी।

वे कहते हैं, नहीं-नहीं प्यारो, गंगा नाव में डूबी जा रही है। लोगों ने कहा, क्यों ? महाराज बोले, इस देह रूपी नाव को इस आत्मा रूपी गंगा में डूबते हुए तो देखा था पर आज आत्मा रूपी गंगा को देह रूपी नाव में डुबाया जा रहा है। चाहिए तो यह था कि आत्मतत्व में इतना लीन हो जाता कि जिस्म का तुझे बिलकुल होश न रहता। लेकिन आज तुझे जिस्म का इतना होश है कि आत्मा की ओर से बिलकुल बेहोश हैं। गरीब गंगा नाव में डूबी जा रही है। आत्मा का ध्यान नहीं, अपने-आपका ध्यान नहीं। की जा रही है पूजा इस देह की। की जा रही हैं देह की सेवा। की जा रही है इस देह की सजावट। किया जा रहा है देह के भोगों का ख्याल। देह के भोगों से सुखी हो रहे हैं। देह के भोगों से दुखी हो रहे हैं और देह के भोगों के लिए भोगी हो रहे हैं और देह के रोगों से रोगी हो रहे हैं। हालाँकि यह जानते नहीं कि वह रोगों से परे, वह भोगों से परे है, वह सुखों से परे हैं, वह दुखों से परे हैं। उनसे परे भी कोई चीज़ है जो वास्तविक लक्ष्य है। इसलिए ऐ इन्सान अपनी इस मंजिल को पहचान ! अपने इस तत्व को समझ ले और फिर तू देखेगा कि तेरी जिन्दगी जिन्दगी बन जाती है और जीवन में कितनी मस्ती आती है ? तू संसार के अन्दर रहेगा, तू संसार के खेलों से फिर भी खेलेगा, तू संसार की वास्तविकता को फिर भी समझेगा लेकिन तुझे इससे दुख न हो सकेगा, तुझे यह माया सता न सकेगी। तुझे यह भोग सता न सकेंगे। तुझे यह रोग पीड़ित न कर सकेंगे।

आते रहेंगे अपनी जगह के ऊपर, आते रहेंगे अपने-अपने खेलों के ऊपर लेकिन let thousand of rivers of misery come to me. Let millions of rivers of happiness come to me. I am no slave to happiness and no slave to misery. दुख भी आते हैं, सुख भी आते हैं, हँसी भी आती है रोना भी आता है लेकिन हँसी का भी दास नहीं, रोने का भी दास नहीं, खुशी का भी दास नहीं, ग़मी का भी दास नहीं। जब इन्सान अपने इस स्वरूप में लीन रहता है तो देखना सारे संसार को उसके अन्दर मानता हैं। सारे संसार के दर्द से वह पीड़ित हो उठता है लेकिन उसके साथ ही जब वह अपने स्वरूप में होता है तो वह सारे संसार को विश्व रूप में देखता हैं। वह सारे संसार को अपने तत्व में देखता है और यह कहता हैं—

दुनिया हैं एक पुतली और मैं नचा रहा हूँ।
खुद कर रहा हूँ करतब और सबको दिखा रहा हूँ।
दोनों जहाँ अपने और है सैरगाह अपनी।
खुद कर रहा हूँ सैर तुमको करा रहा हूँ।
सिर फट गया है गम का खा-खाकर मुझसे टक्कर।
अब गाढ़ने को इसके तुर्बत बना रहा हूँ।

कहता हैं जिन्दगी के अन्दर तुझे सोचना और विचार करना है। जिन्दगी में ध्यान देना, कितने विचार की बात हैं कि जिन्दगी के अन्दर तुझे अब यह दिखाई देने लगे कि यह संसार तुम्हारे अपने ख्याली खेल हैं। तुम्हारे अपने ख्याल से आँख के बन्द हो जाने से यह संसार बंद हो जाता

हैं और तुम्हारी आँख के मिट जाने से तुम्हारा संसार मिट जाता है और तुम्हारी आँख के खुल जाने से तुम्हारा संसार खुलता है। यह चमकता हुआ सूरज, यह चमकता हुआ चाँद, यह चमकती हुई धूप और यह शीतलता देती हुई चाँदनी। यह केवल मेरी आँखों से ही साबित होते हैं। आप बतला दीजिये कि यह आँखों से ही तो साबित होती है। क्योंकि मैं कहता हूँ इसलिए यह दिखाई देते हैं। अगर मैं इनसे इन्कार कर दूँ। अगर मेरी आँखों में कोई दोष हो जाता है तो मेरे लिये इनकी कोई कीमत नहीं होती। इसी प्रकार प्यारो ! एक बात पर और ध्यान दे देना। संसार में जितने भी पदार्थ हैं। संसार के जितने भी वैभव तुम्हारे पास है। वह सब दुख का कारण बन जाते हैं। अगर तुम्हारे पास ज्ञान का प्रकाश न हो तो अब ध्यान दें। एक बड़ा सुन्दर महल हो और सजावट अच्छी की हो Drawing room के अन्दर (बैठने के कमरे में) बढ़िया-बढ़िया Furniture पड़ा हुआ हो लेकिन उस कमरे में प्रकाश न हो। शाम को उस मकान का मालिक उस कमरे में दाखिल होता है। अन्धकार है चारों तरफ अन्दर आला-से-आला Sofa set रखे हुए हैं। बढ़िया-से-बढ़िया पंखे रखे हुए हैं। आला-से-आला समान रखा है सजावट का ? लेकिन सच बतलाओ कि क्या वही सामान ठोकरें नहीं देगा। उस इन्सान को क्या इससे ठोकर नहीं लगेगी। अगर उस कमरे में प्रकाश नहीं है तो प्रकाश के न होने से वही सामान जो उसके सुख का कारण होना चाहिए था। वह उसकी ठोकरों का कारण है। केवल प्रकाश न होने से शाम को उस अँधेरे कमरे में

जिसमें कीमती-से-कीमती समान पड़ा हुआ हो, अगर दाखिल हो जाए बगैर प्रकाश लिये, वगैर लाइट लिये, तो वही कमरा तुम्हारे लिए दुखों का कारण बन जाता है। वही ठोकरों का कारण बन जाता है। अगर उस कमरे में प्रकाश नहीं होता तो वही सारे सामान तुम्हारे लिए दुख का कारण बनते हैं। अगर वहाँ प्रकाश होगा तो वही सारे सामान वहाँ तुम्हें वास्तविकता में दिखाई दे रहे होंगे। तो वही सामान तुम्हारे लिए दुख का कारण है। अगर वहाँ अन्धकार हुआ तो इसी प्रकार यह संसार, यह परिवार, यह संसार के सारे वैभव जो हैं सब तुम्हारे लिए दुख के कारण बन जायँगे। अगर तुम्हारे अन्दर अज्ञान का अन्धकार है तो यही सब पदार्थ सुख का कारण बन जायगा। अगर तुम्हारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश हुआ तो—इसलिए इस संसार के सारे पदार्थ सुख का कारण नहीं क्योंकि प्रकाश के आने-जाने से यही सुखदाई महसूस होने लगते हैं। संसार के सारे पदार्थ जो हैं वह केवल दुखों का कारण नहीं। दुखों का कारण अज्ञानता का अन्धकार है। दोषों का अन्धकार है। उस अन्धकार को मिटाने की कोशिश करो और जब वह अन्धकार मिट जाता है। जब उस अन्धकार का नाश हो जाता है और अज्ञानता का नाश हो जाता है। ज्ञान के प्रकाश में संसार के पदार्थों को देखकर जो चलता है तो उसे संसार में दुःख नहीं होता। संसार के पदार्थ उसे गिरा नहीं पाते। संसार की चीज़ें फिर हटा नहीं पाती हैं। उसे अपनी मंजिल से और मंजिल पर चलने वाले वैसे

हटा भी नहीं करते। जो सत्य के वास्तविकता में होते हैं। वह हटा भी नहीं करते। जो सत्य के शैदाई होते हैं। वह हटा भी नहीं करते। जिन्दगी के अन्दर जब-जब जिसको इस चीज़ की कीमत महसूस हो गई। जिस-जिसने इसकी value को जाना, जिस जिसने इसके मूल्य को realize किया लेकिन जिन्दगी के अन्दर इन्सान कीमत नहीं देना चाहता। इन्सान किसी वस्तु की कीमत नहीं देना चाहता, केवल चीज़ लेना चाहता है।कीमत नहीं देना चाहता। वह कहते हैं एक पहलवान था बड़ा भारी बलवान और पहलवान सिंह राशि में पैदा हुआ था और था बड़ा पहलवान। सोचने लगा कि मै क्या करूँ। मै जगह-जगह के ऊपर शेर की तस्वीर खुदवा लूँ ताकि जो भी देखने वाला है वह मुझे शेर माने, शेर। क्योंकि शेर जैसा मेरा जिस्म तो है ही लेकिन जिस्म के शेर होने से क्या होता है। अगर दिल गीदड़ का हो तो कैसे काम चलेगा। हाँ, अगर दिल शेर का हो और जिस्म गीदड़ का तो काम चल सकता है। इसलिए कहा है कि—

To base ones happiness, to depend ones happiness on the health of the body is to put matter before mind, science before spirit. It is a devil's dance of devastation.

जिन्दगी के अन्दर यह समझ लेना कि देह मुझे अपना दास बना सकती है। यह तो ऐसा ही है जैसा कि कह दिया जाय। विज्ञान ज्ञान के बिना रह सकता है। यही कि ज्ञान के बिना विज्ञान चल सकता है या यही atom bomb, यही

atom energy, यही sputnic की शक्तियाँ इन्सान के लिए विनाश का कारण बन सकती हैं। यही इन्सान के लिए प्रकाश का कारण बन सकती हैं। लेकिन अगर विज्ञान में ज्ञान मिला, science में spirit मिला दिया जाय तो यह ज्ञान और विज्ञान के मिल जाने से प्रकाश देती है और नहीं तो यही विनाश का कारण बन जाती है। तो उस पहलवान ने सोचा कि अपने शरीर के ऊपर जगह-जगह पर शेर खुदवा दूँ। और एक दुकानदार के पास पहुँचा जो कि इस मशीन से, आप जानते हैं, कि हाथों पर नाम खोदते हैं, वह इसी दूकानदार के पास पहुँचा और कहा कि मेरे जिस्म पर दो-तीन शेर की मूर्तियाँ बना दो ताकि देखने वाला यह कह सके कि मैं शेर हूँ। उसने कहा कि बहुत अच्छी बात है। उसने सुई लेकर तुरन्त ही वहाँ रखी। जैसे ही सुई रखी जिस्म के ऊपर जोर से दर्द हुआ तो चिल्लाया। पहलवान ने कहा, ऐ! क्या करता है तुम? तो उसने कहा कि अभी तो शेर की दुम बनाता हूँ, (tail) बनाता हूँ, अरे मूर्ख तू जानता है कि आजकल लोग कुत्तों की पूँछ काट देते हैं और कटी पूँछ वाले कुत्ते की कीमत ज्यादा होती है। इसलिए पूँछ बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। तू पूँछ के बगैर ही शेर बना। उसने कहा बहुत अच्छी बात है। उसने फिर सुई उठाई और दूसरी जगह पर रखी। जब फिर दर्द (pricking) हुआ तो जोर से जब दर्द हुआ तो वह फिर चिल्लाया और कहने लगा कि अरे यह क्या करता है तो वह कहने लगा कि मैं तो शेर के कान बना रहा हूँ। अरे मूर्ख! गधा कहीं

का, तुझे पता नहीं कि आजकल कुत्तों के कान काट दिये जाने हैं और कान के कटे हुए कुत्ते तो बहुत अच्छी कीमत देते हैं। उसने कहा अच्छा कान बनाने की जरूरत नहीं। उसने फिर सुई उठाई और उठाकर तीसरी जगह पर रखी। जोर से फिर दर्द हुआ और चिल्लाया कि अरे यह क्या कर रहा है ? उसने कहा कि मैं शेर की कमर बना रहा हूँ। उसने कहा, अरे। मूर्ख तूने यह अभी तक नहीं सुना, अरे। तू तो बिलकुल अनपढ़ नजर आता है। अरे तूने शायरों की शायरी नहीं सुनी कि जितनी पतली कमर होती है उतनी ज्यादा सुन्दरता मानी जाती है। मूर्ख कहीं का, यह क्या तू सोचता है अरे, यह तू क्या कर रहा है ? उसने कहा कमर बनाने की जरूरत नहीं तो उसे गुस्सा आ गया, वह दुकानदार कहता है। जा, चला जा यहाँ से तू शेर बनने के काबिल नहीं। वनना तो चाहता है शेर पर सुई के दर्द को सहने से इन्कार करता है। तो भाई, उस मार्ग पर चलने वाले, उस प्रभु के मार्ग पर चलने वाले, सत्य के सिपाही लोग चाहते हैं। कि उसका रास्ता मिल जाय। पहले तो हमें यह सोचना पड़ेगा कि हम उसे चाहते भी हैं या नहीं। तुम जितने यहाँ बैठे हो सब ईश्वर को चाहते हो। कह तो दोगे बड़ी आसानी से कि हम चाहते हैं। महाराज चाहते नहीं तो काहे को इन्दौर की ठण्ड में आपका भाषण सुनने को आते। कोई टैक्सी में आया, कोई पैदल, कोई साईकिल पर आया, महाराज इतनी दूर से चलकर आये। अगर चाहते नहीं तो काहे को आ जाते। इतनी दूर से क्या करना था हमें यहाँ आकर।

भाई, कहते तो ठीक हो पर क्या इतने से ही सिद्ध हो जाता है कि ईश्वर को तुम चाहते हो। चाहने की निशानी जानते हो किसे कहते हैं ? चाहने की निशानी जानते हो क्या होती है, ध्यान देना ? किसको चाहते हैं हम ? जिसका त्याग नहीं कर सकते। ग्रौर जिसको चाहते नहीं क्या उसको त्याग करने में कोई दिक्कत होती है। अब ग्राप वतलाइए। ग्रब ग्राप फैसला कीजिए कि ग्राप किसका त्याग कर पाते हैं। भोगों का या ईश्वर का। दिन में कितनी बार ईश्वर का त्याग होता है, भाई। भोगों को ग्रपनाते हो ग्रौर ईश्वर का त्याग करते हो तो भाई, तुम्हीं वतलाग्रो कि जिसका त्याग कर पाते हो उसको चाहते हो कि जिसका त्याग नहीं कर पाते उसको चाहते हो। तो यहाँ यह कहना पड़ेगा कि चाहते हो भोगों को। कहते ईश्वर को हो। तुम्हारे हृदय की वासनाएँ ग्रौर कामनाएँ भोगों की तरफ वासनाग्रों की तरफ भागती है, ईश्वर की तरफ नहीं। जिस दिन ईश्वर की तरफ भागेगीं उस दिन तुमको वह वासनाएँ। ग्रौर कामनाएँ छोड़ते एक सैकण्ड भी नहीं लगेगा। जो लोग यह कहा करते हैं। कई बार लोग ग्राते हैं। महाराज ईश्वर को चाहते तो हैं पर यह संसार छूटता नहीं हमसे ग्ररे भाई ! ग्रभी तू ईश्वर को चाहता नहीं, ग्रभी तुझे उसकी ज़रूरत महसूस नहीं हुई। ग्रब इसकी ज़रूरत महसूस होगी ग्रौर जरूरत भी बड़ी सख्त। मामूली ज़रूरत से वह काबू भी नहीं ग्राता। इतनी सख्त ज़रूरत ध्यान देना जिस मिनिट में वह कहते हैं कि कितनी ज़रूरत हो उसकी एक मिसाल दी कि कितनी तड़प होनी

चाहिए उसको मिलने के लिए कि जेठ ग्राषाढ़ का महीना हो, रेगिस्तान का इलाका (desert) हो ग्रौर दोपहर के बारह बजे का समय हो, जलता हुग्रा सूरज ऊपर से ग्रपनी गर्मी फेंक रहा हो, जलती हुई रेत नीचे से ऊबल रही हो ग्रौर उस रेत के ऊपर जलती हुई गर्मी में एक इन्सान नंगा तीन दिन से पानी की बूँद के बिना पड़ा हुग्रा हो ग्रौर पानी की बूँद के लिए उसके प्राण निकल रहे हों, चिल्ला रहा हो वह ग्रौर उस समय ग्राप उसके सामने दो-चार लाख का चैक काटकर रख दीजिए। है उसके सामने कीमत उसकी कोई ले जाइए उसके सामने संसार की हूर ग्रौर परियों को है कीमत उसके सामने ? उसको क्या चाहिए एक पानी की बूँद, एक पानी की बूँद, एक पानी की बूँद। उसके सिवा कुछ नहीं चाहिए। कहते हैं जिस दम तेरे दिल में इतनी तड़प होगी। जिस समय इतनी तड़प होगी, ऐ प्यारे, केवल एक बूँद के लिए, उसके एक दीदार के लिए, तेरे प्राण निकलने लगेंगे। जिस मिनिट में तुमने यह सोचा कि उसके बिना मेरे प्राण निकल जायँगे, उस मिनिट में वह मिलेगा उससे पहले नहीं, इसलिए कहा कि हम ग्रपने प्रेमी को पहले खूब ग्राज़माते हैं।

सताते हैं, जलाते हैं, रुलाते हैं, मिटाते हैं।
ध्यान में उसे पूरा जो उसे हम पाते हैं।
तो उसी से ग्राकर मिलते हैं उसी में खुद समाते हैं।

जब जिन्दगी के ग्रन्दर इन्सान में इतनी तड़प पैदा हो तो जीवन में हमें सोचना है कि हम चाहते भी हैं या नहीं। तो

चाहना को हमें बढ़ाना होगा, उस तड़प को हमें बढ़ाना होगा तो इसीलिए भाई, अगर हम ईश्वर को चाहते हैं तो उसकी निशानी यह होनी चाहिए कि हम भोगों का त्याग कर रहे हैं। और अगर हम भोगों का त्याग नहीं कर सकते तो निश्चित रूप में यह कहना पड़ेगा कि अभी हमारे लिए हमारे हृदयों में ईश्वर की चाहना पूरी नहीं हुई, ईश्वर की चाह-तड़प पूरी नहीं हुई। अभी हमारे हृदय में, अन्तःकरण में कहीं-न-कहीं भोग वासनाएँ छिपी हुई हैं। अब आप बोलिए, जिन्दगी के इस भेद को, इस तत्व को जानकर समझिए कि आप चाहते क्या हैं। क्योंकि भाई, जब जिन्दगी में इस तत्व को लाना चाहोगे pricking होगा। pricking जिस प्रकार शेर की तसवीर बनवाने के लिए, शेर बनने के लिए सुई का दर्द सहना पड़ता है या इसी प्रकार तुम्हारे भोगों के अन्दर, तुम्हारे दोषों के अन्दर सुइयाँ छेदी जायँगी और उस समय तुम्हें उनका दर्द सहना पड़ेगा। जब तक उस दर्द को सहन न कर सकोगे, अपनी मंजिल को न पा सकोगे। आखिर तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के दोष किस रूप में बाहर निकलेंगे। किस चीज से बाहर निकलेंगे। एक तो छेदना पड़ेगा, operation होगा, prikcing होगा। इस जीवन के अन्दर काँटों से चुभाया जायगा। और जिन्दगी में बार-बार ऐसा करते हुए एक दिन इन्सान को अपनी मंजिल को साफ करना होगा। लेकिन अगर तुम इन चीजों से बचना चाहते हो तो हृदय से कभी भी गंदगी न निकल सकेगी, हृदय से कभी दोष न निकल सकेंगे, दिल से कभी बुराई न निकल सकेगी। दोषों

के निकलने का एक ही रास्ता है कि वे कष्टों के रूप में बनकर बाहर निकलें। दोषों के निकलने का एक ही रास्ता है Heaven chastises those whom he wants to make pure.

महान्-से-महान् कष्ट उसको आते हैं जिसको भगवान् ने महान् बनाना होता है। जिसको उसे महान् बनाना होता है उसके ऊपर महान् पहाड़ गिराये जाते हैं। इसलिए दुखों से घबराना नहीं। दुःख तो जिन्दगी का सार दिला देते हैं। भाई, दुःख तो जिन्दगी की मंजिल मिला देते हैं। भाई सुख क्या है? सुख तो पुण्यों का खर्चा ही है। सुख क्या है? सुख तो खर्चा ही है। जो इन्सान दुःखों को ईश्वर का ज़ुल्म समझता है—तो समझना, उसने अभी ईश्वर के विधान को न समझा, ईश्वर की कृपा को नहीं समझा। क्योंकि भाई जिन्दगी में जगाने के लिए दुःख बड़ा भारी काम देते हैं। दुःख तो वह साथ है, दुःख तो वह मित्र है, दुःख तो वह प्यारा है जो अपना नाश कर लेता है, लेकिन हमें प्रकाश दिखा देता है। बात समझने की है जरा समझ लेना। एक इन्सान सुखों में फूल गया, अभिमानी बन गया, अज्ञानी बन गया, जीवन में दर-दर भटकने लगा। आखिर जब भगवान् ने देखा, जब उस तत्व ने देखा, जब उस परमपिता ने देखा कि यह इन्सान अभिमानी होता जा रहा है, तो उसको ठोकर लगाई, उसको दुःख दिया। जैसा कि आप जानते हैं, नरसी भगत का वास्तविक इतिहास अगर आपने सुना होगा, नरसी भक्त के वास्तविक इतिहास को यदि आपने पढ़ा है, तो आप जानते होंगे कि जो नरसी बहुत

बड़ा भक्त था वह पहले बड़ा भारी धनाढ्य और शहर का बड़ा भारी माना हुआ सेठ, और उसके पास लाखों की दौलत थी। पर महाकंजूस और संसार में जरा भी उपकार न करने वाला। परमपिता परमात्मा ने देखा कि यह इंसान अपने-आपको भूला हुआ है। इसको भेजा था संसार में कुछ काम करने के लिए। लेकिन यह दूसरी ओर जा रहा है और अपने-आपको भूला हुआ है। तो एक दिन सुबह को जिस समय नरसी सेठ जंगल-पानी करने के लिए गया हुआ था, तो भगवान् ने नरसी का रूप धारण किया। बिलकुल वही रूप धारण करके नरसी की कोठी पर पहुँचे। नरसी की कोठी पर पहुँचकर बाहर चौकीदार से कह दिया, (क्योंकि अमीर आदमी की कोठी पर बाहर चौकीदार खड़े रहते थे) कि भाई ध्यान रखना आज मेरा ही रूप धारण किये कोई बाजार में फिर रहा है। ऐसा न हो कि वह यहाँ आये। अगर ऐसा कोई मेरा रूप धारण करके आये तो उसे ठोकरें मारकर यहाँ से बाहर निकाल देना। अब भगवान् नरसी का रूप धारण किये हुए अंदर आ गये। अंदर आकर विराजमान हुए। किसी को शक न हो सका कि भगवान् नरसी नरसी नहीं हैं। क्योंकि वह तो पूर्ण हैं और पूर्ण का हर काम पूर्ण होता है भाई। वह तो पूर्ण थे ही तो वह विराजमान हुए। थोड़ी देर बाद नरसी जंगल से वापस लौटा तो चौकीदार ने पहले से ही कमीज पकड़कर कहा कि चल, बाहर निकल। नरसी ने कहा कि अरे यह क्या मुसीबत हो गई आज ? अपने घर में ही मुझे रोका जा रहा है। क्या है ? हटता नहीं ? चौकीदार को हटाने की कोशिश

की। पर चौकीदार ने कहा कि हट जा-जा, हमारा सेठ तो अन्दर बैठा है। तुम बहुरूपिया हमारे सेठ को ठगने आया है। नरसी बहुत रोया चिल्लाया। अंदर से वह भी जो भगवान् नरसी का रूप धारण किये हुए थे बाहर आ गये। इतने में लोग भी आसपास से जमा हो गये। और बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई। लोग कहने लगे, यह क्या बात है ? दोनों को देखते हैं दोनों की एक-जैसी शक्ल सूरत है। कोई पहचान नहीं पाता। भगवान कहते हैं, जो नरसी के रूप में बने हुए थे, कि यह तो बहुरूपिया है इसको निकाल डालो। आखिर बाहर से लोगों ने कहा कि यह क्या मामला है ? इसको कैसे तय किया जाय। कुछ सयाने लोगों ने आपस में कहा कि असली जो होगा उसके पास बहीखाते होते हैं तो उसको पता होगा कि उसमें कितना धन है, कितनी दौलत है। तुम तो जानते हो कि सेठ को तो कुछ भी पता नहीं होता कि बहीखातों में कितना है। सब-कुछ मुनीम को ही पता होता है। तो नरसी सेठ से पूछा गया कि भाई तुझे पता है, बहीखातों में कितना किससे लेना है और कितना किसको देना है। नरसी सेठ को तो बहुत कम मालूम था। कुछ थोड़ा-थोड़ा बतलाया। अब इधर पूछा, भगवान् से जो नरसी बने हुए थे, तुमको कितना लेना है ? वह तो ठहरे पूर्ण और पूर्ण का हर काम पूर्ण होता है, तो उन्होंने झट बतला दिया कि फलाँ से इतना और बाप-दादा से इतना अब जिस समय सारा बतला दिया गया, सब बता दिया गया, तो उस समय लोगों ने सिद्ध कर दिया कि असली नरसी यही

है। असली नरसी को निकाल दिया गया। इतने में सात दिन के अन्दर भगवान् नरसी ने सारी दौलत को लुटाया और सारी दौलत खाली कर दी। यहाँ तक कि कोठी भी बेचकर खैरात में दे डाली। सात दिन तक नरसी एक मन्दिर में रोता है, चिल्लाता है। सात दिन से भोजन नहीं मिला। ठोकरें खा रहा है। भगवान्! तूने यह क्या किया। सातवें दिन भगवान् इधर से उसकी सारी दौलत लुटाकर दर्शन देते हैं। और कहते हैं कि नरसी मैं आ गया। मैंने तेरा सब-कुछ छीन लिया है। तू जा सकता है अपने घर के अन्दर। तू जा सकता है अपनी मंजिल की ओर। कभी-कभी भगवान् को अपनी याद दिलाने के लिए, अपने रास्ते पर लाने के लिए सब-कुछ छीन भी लेना पड़ता है। इसलिए दुःखों के अन्दर घबराना नहीं। जिन्दगी के अन्दर सुखों में फ़ूल मत जाना। और दुःख और सुख के अन्दर जिन्दगी के इस सार को समझते हुए, जिन्दगी की इस मंजिल को समझते हुए, जिन्दगी के इस तार को समझते हुए तार से तार मिला लेना, उस दिलवर से दिलवरी मिला लेना और अपने तत्व-से-तत्व समझ लेना कि जिन्दगी इस तत्व के पाने के लिए हैं। यही आपको पिछले कई दिनों में बताया कि जिन्दगी अपनी मंजिल को पहुँचने के लिए है और हर इन्सान की मंजिल अपने आत्म-तत्व को पहचानना है। अपने-आपको जानना है। अपने लक्ष्य तक पहुँचना है। फिर जब तक इंसान उस लक्ष्य तक नहीं पहुँचता तब तक उसे शान्ति नहीं मिलती, तब तक उसे चैन नहीं नसीब होता, तब तक उसकी मंजिल

बहुत दूर रहती है। इसलिए जिन्दगी के अन्दर इस चीज़ को पहचानकर जब तक अपनी मंजिल की ओर न बढ़ोगे, अपने लक्ष्य की ओर न बढ़ोगे, तब तक शान्ति नहीं। तब तक दुनिया के सारे सुख, दुनिया के सारे वैभव, दुनिया के सारे पदार्थ बेकार होते हैं।

छः

राम के दीवानों को जग के सुखों की चाह नहीं।
मुसीबतों के पहाड़ टूटे, मुँह से निकलती आह नहीं।
लुटा के अपना तन और प्राण जला के अपना जिस्मोजाँन।
रहते फकीरी भेष में पर उनसा कोई शाह नहीं।
क्या आरज़ू दुनिया को हो क्या जुस्तजु भला उसकी हो।
आरज़ू है नहीं जुस्तजू है नहीं।
और दुख की कुछ परवाह नहीं मुसीबतों के पहाड़ टूटे...
मुह से............

जीवन के अन्दर जब भी मानव ने इस बात का अनुभव कर लिया। जब भी इस बात को महसूस किया कि मानव जीवन जो है उस मंजिल तक पहुँचने के लिए उस आत्म, लक्ष्य तक पहुँचने के लिए है। इस आत्म-तत्व को जानने के लिए है। जिसको जानने के बाद कुछ जानना नहीं रहता। जिसको पा लेने के बाद कुछ पा लेना नहीं रहता। जिसके अन्दर बेहोश होने के बाद होश नहीं रहता, जिसकी बेहोशी पर होश भी फड़क जाते हैं। जिसकी मस्ती पर मस्ती भी

नाज़ करने लगती है और जिस जीवन पर जीवन भी इतराने लगता है और जिस मौत पर मौत भी घबराने लगती है। मानव-जीवन के अन्दर जब-जब भी मानव ने इस तत्व को जाना। जब-जब भी इस सार को समझा और इस सार को भला समझा कहाँ ? केवल सत्संग के दरिया में, जब सत्संग की लहरों में गोते लगाता हुआ जब मानव अपने जीवन के अन्दर अपने दोषों को देख पाया, अपने अन्धकारमय जीवन को देख पाया और जब अन्धकार रूपी जीवन को ज्ञान रूपी प्रकाश से उसने दूर किया। मानव-जीवन के अन्दर सत्संग का सबसे पहला लाभ यह होता है कि मानव को निज दोषों का दर्शन हो जाता है। क्योंकि जब दोषों का ज्ञान ही नहीं होता, जब तक दोषों का भान ही नहीं होता तब तक मानव-जीदन के अन्दर उन दोषों को दूर करने का ख्याल तक भी नहों पैदा होता। आप ध्यान दीजिए कि हम जीवन के अन्दर एक बार भी अपने दोषों का दर्शन कर लेवें कि हमारे जीवन के अन्दर दोष समाये हुए हैं। जब उन दोषों की सफाई करते हैं तब जीवन के अन्दर शान्ति होती है। जब तक वह दोषों का पर्दा वहाँ रहता है, जब तक अन्धकार वहाँ रहता है तब तक मानव-जीवन के अन्दर शान्ति नहीं आ सकती। क्योंकि आप ध्यान दीजिए कि अगर आप साईकल के अन्दर चार-पाँच बार हवा भरते हैं और वह हवा नहीं ठहरती तो आप यह जान लेते हैं, आपको तुरन्त यह ख्याल हो उठता है कि साईकिलों में जरूर कहीं-न-कहीं पन्चर है। जरूर साईकिल में कहीं-न-कहीं छेद हैं। अगर

चार या पाँच बार भी हवा भरने के बाद हवा नहीं ठहरती तो हम यह निश्चय कर लेते हैं कि यहाँ पन्चर है। इसके अन्दर कोई-न-कोई छेद है। इसलिए ध्यान देना भाई, कभी यह भी बैठकर सोचा कि अनेकों बरस हो गए प्रभु के नाम की हवा भरते हुए। कितने बरस हो गए अपने हृदय में इस प्रभु की हवा भरते हुए। सत्संग की हवा भरते हुए, पर पता नहीं ईश्वर क्यों नहीं मेरे हृदय में ठहर पाया ? अनेकों जन्म हो गये राम-राम कहते पर हृदय में राम क्यों न ठहर पाया ? क्यों अनेकों जन्म हो गए कृष्ण-कृष्ण कहते हुए, पर क्यों कृष्ण मेरे हृदय में न ठहर पाया ? जीवन के अन्दर क्या ऐसा दोष है, मेरे हृदय में कहीं-न-कहीं तो ऐसा पन्चर नज़र आता है। हृदय के अन्दर जब तक दोषों का छेद रहता है, तब तक हृदय के अन्दर कभी भी शान्ति का संचार नहीं हो सकता। क्योंकि आप ध्यान दीजिए कि एक मामूली-सा छेद भी होता है और अगर वह छेद बीच में रह जाता है तो हवा वहाँ ठहर नहीं सकती। न जाने इस हृदय के अन्दर कितने दोषों के छेद हो रहे हैं। तो भला आप बतलाइए जब तक उन छेदों का ध्यान न होगा, जब तक छेदों को बन्द न किया जायगा तब तक भगवान् नाम की हवा, प्रभु नाम की हवा हृदय में कैसे ठहर सकेगी। जिस तरह कितना भी सुन्दर जल क्यों न हो। अमृतमय दूध क्यों न हो। लेकिन अगर घड़े में छेद होता है तो वह कुछ क्षणों में ही खाली हो जाता है। इसी प्रकार कितनी भी ऊँची वाणी सन्तों की आपके सामने क्यों न आए। कितनी भी अमृत की

धारा भी आपकी ओर बहती रहे। लेकिन अगर आपके अन्दर दोषों का छेद हो रहा है। तो आप वैसे खाली के खाली रहेंगे जैसे पहले थे, क्योंकि १० साल पहले भी आपने सन्तों की वाणी सुनी, अनेकों बार उनका नाम सुना, अनेकों बार जीवन के अन्दर इस तत्व को पाने की कोशिश की। लेकिन आप देखते हैं अगर विचार कर देखा जाय कि कभी यह भी बैठकर आपने विचार करने की कोशिश कि इतने बरस हो गए मुझे सत्संग में आते हुए और इतने बरस हो गए मुझे, इस चीज़ का लाभ उठाते हुए लेकिन क्या मेरे हृदय में राम का निवास हुआ। क्या कृष्ण आकर मेरे हृदय में बैठा। लेकिन जब मैं एकान्त में होकर बैठता हूँ तो क्या देखता हूँ कि न तो मेरे हृदय में कृष्ण का निवास है न राम का निवास है। वहाँ अभी तक भोग वासनाएँ, वहाँ अभी तक इच्छाएँ, वहाँ अभी तक तृष्णाएँ हो रही हैं, ऐसा क्यों? ऐसा क्यों? कभी ऐसा सोचा जाय। एक लड़का आकर कहता है कि महाराज मुझे विद्या से बड़ा प्यार है। अच्छा भाई तुझे प्यार है, तुझे किस तरह प्यार है? महाराज मुझे १० साल हुए स्कूल में जाते हुए। अरे भाई, १० वर्ष हो गए स्कूल में जाते, मैं उससे पूछता हूँ कि कितनी क्लास पास करली। तो वह कहता है कि मैं पहली जमात में हूँ। अब आप ही सोचिए। आप ध्यान दीजिए कि क्या उसको कहा जायगा कि वह विद्यार्थी है? क्या उसे विद्या से प्यार है? जिसे १० वर्ष हो गए स्कूल में जाते हुए और वह पहली क्लास में बैठा हुआ है। सत्संग का केवल यह लाभ नहीं कि वर्षों आप सत्संग में

आते रहें। बेशक लाभ होता है। क्योंकि न जाने कौन से समय जिन्दगी के अन्दर वह ठोकर लग जाय। लेकिन फिर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। यह जिन्दगी का बड़ा संजीदा मामला है। serious problem है जिन्दगी का। अनेकों बरस हो गए हमें जीवन में सत्संग करते हुए, पर अभी तक क्या कारण है कि हमारे हृदय में दोषों की सफाई नहीं हुई। क्या कारण है कि अभी तक शान्ति से अभी भी उस भगवान् से, अभी भी उस प्यारे से इतने दूर है। जितने कि पहले थे। क्या यह सोचने की बातें नहीं हैं कि बरसों स्कूल जाने के बाद भी अगर लड़का पास नहीं होता तो यह कितने सोचने की बात हो जाती है। कितनी माता-पिता को चिन्ता होती है और कितनी उसके मन को मलामत होती है। लेकिन इन्सान कभी तूने भी बैठकर अपने मन को लानत दी कि अरे पगले अनेकों वर्ष हो गए कदम उठाते-उठाते। अनेकों वर्ष हो गए कर्म करते-करते। लेकिन फिर भी तू वहीं है जहाँ से चला था। अनेकों जन्म हो गए कर्म करते-करते पर अभी तक कोई भी कर्म करने न पाया। अनेकों जन्म हो गए तुझे आगे बढ़ते-बढ़ते पर एक भी कदम आगे बढ़ने न पाया। तब अनेकों जन्म के बाद, अनेकों बरसों के बाद भी वहीं पर खड़ा है जहाँ से चला था। बल्कि अगर ज्यादा स्पष्ट से कह दिया जाय तो हो सकता है कि बहुत से लोग उस कदम को बढ़ाते सोच रहे हो कि वह आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन बढ़ते हुए भी जब वह कुछ समय के बाद देखते हैं कि आज से १० वर्ष पहले वह भगवान् के कुछ ज्यादा नजदीक थे। आज से १० वर्ष पहले

शायद उनके मन में कुछ शान्ति थी, पर आज उनकी शान्ति ज्यादा अशान्ति में बदल चुकी है। आज उनके अन्दर चिन्ताएँ बहुत हो चुकी है। हालाँकि होना चाहिए था कि मार्ग पर बढ़ते हुए हमारी कुछ तो मंजिल कट जाती। कुछ तो हम उसके नजदीक पहुँच जाते। अगर इतना हो जाता तो चिन्ता की कुछ आवश्यकता नहीं थी। अगर इन्सान आगे बढ़ता जाय तो कोई हर्ज नहीं होता। इन्सान आगे बढ़ता जाए तो कोई चिन्ता ही नहीं। चाहे एक-एक क़दम भी बढ़ता जाए। लेकिन आगे बढ़ना चाहिए। ठहरो नहीं, उठना और आगे बढ़ना। ठहरें से काम न चलेगा। अगर एक-एक क़दम भी एक-एक जन्म में चलोगे तो काफी हैं। लेकिन चलना जरूर होगा। सोचने की आवश्यकता हैं, कभी बैठकर सोचो तो कि तुम आगे बढ़ रहे हो या नहीं। बढ़ रहे हो क्योंकि जिन्दगी के अन्दर आगे बढ़ने का विचार करना होगा। देखना होगा कि कहाँ तक तुम जाग चुके हो। दुनिया के अन्दर कहाँ तक तुम्हारे मन में तृष्णाएँ भाग रही है। कहाँ तक तुम्हारा मन प्रभु के चरणों में लीन होता है। कितनी मस्ती उसके नाम से आती है। कितने आँसू उसका नाम सुनकर आते हैं। तुम्हारी आँखों में राम कृष्ण प्रभु का नाम सुनकर, जिसे उस प्यारे का नाम सुनकर, जिसकी आँखों में आँसू नहीं आता उसकी तो अभी मैल भी धुलनी शुरू नहीं हुई। उसको तो मैल अभी वैसी-की-वैसी जमा है, क्योंकि उसका हृदय तो अभी तक दोषों से भरा हुआ है। अभी तो वहाँ अन्धकार है, अभी तो वहाँ पानी बहना शुरू ही नहीं हुआ। नदी का

प्रवाह चलेगा तो मैल धुलेगी। इस तत्व को विचार करने की ग्रावश्यकता इस जीवन के ग्रन्दर हमें जन्म-जन्मान्तर गुज़र जाते हैं। इसी प्रकार ग्रौर हम यह सोचते रहते हैं कि हम वहुत कुछ किए जा रहे हैं। लेकिन हम ग्रक्सर क्या देखते हैं कि जहाँ से चले थे वहीं पर खड़े हैं। हमारी मजिल जरा भी ग्रागे नहीं वढ़ी ग्रौर हम जरा भी मंजिल की तरफ पहुँच नहीं पाए, वल्कि मंजिल से दूर-ही-दूर होते जा रहे हैं। ग्रौर शान्ति से दूर-ही-दूर होते जा रहे हैं। वचपन से जवानी में ग्राए तो चिन्ता कम हुई। फिर मध्य ग्रवस्था में ग्राए जहाँ हमारी चिन्ताएँ ग्रौर भी बढ़ गई। हालाँकि ज्यों-ज्यों हमें जीवन का सफर करना चाहिए त्यों-त्यों जीवन की चिन्ताग्रों को कम होनी चाहिए था। लेकिन इधर चिन्ताएँ वढ़ती चली गई ग्रौर एक दिन बुढ़ापे ने ग्रा घेरा ग्रौर दुनिया के ग्रन्दर जरा ध्यान देना, "जो जाकर वापिस ग्राती न देखी, नह जवानी देखी, जो ग्राकर वापस न जाता देखा वह बुढ़ापा देखा।" मानव-जीवन के ग्रन्दर एक दिन वचपन से जवानी देखी, जवानी से बुढ़ापा हुग्रा ग्रौर ग्राखिर एक दिन समय ग्राया जव जीवन की मंजिल जव जीवन की सफर खत्म होने लगा तो देखा कि जीवन का सफर एक कदम भी नहीं चला। जीवन का सफर तो वहुत दूर जा पड़ा है, तृष्णा ग्रौर वासनाएँ इतनी जबरदस्त ग्रस्त कर चुकी हैं कि उनके लिए निकलना वहुत कठिन हो गया है। इसलिए ऐ मानव जव तेरे पास ग्रभी तन सुन्दर है, तेरे पास शक्ति हैं, तेरे पास ग्रभी समय है, तू इस चीज़ का लाभ उठाने की

कोशिश कर और कभी-कभी यह बैठकर सोच लिया कर, कभी-कभी इस बात का ध्यान किया कर कि तू कितना आगे बढ़ रहा है, कितने तेरे दोषों में सफाई हुई है, भैया जरा सोच लेना। जब तक दोषों का दर्शन न करोगे जब तक दोषों की सफाई न करोगे तब तक जीवन में शान्ति का संचार नहीं हो सकेगा, क्योंकि भयभीत करने वाली वस्तु केवल दोष ही होते हैं। इसलिए भाई सत्संग में आते-आते तुम इतना सोचते रहना। कभी-कभी जरा सोचो तो सही तुम व्यापार करते हो। साल भर और साल भर के बाद यह सोचते हो कि कितना घाटा हुआ, कितना नफा हुआ। लेकिन क्या यह जीवन का व्यापार इसके अन्दर कभी सोचने की आवश्यकता पड़ी, कि यह भी बैठकर सोचा, कि यह जीवन का व्यापार कितना बड़ा व्यापार है और इस व्यापार के अन्दर हमें भी कुछ करना है। हमें भी कहीं ऐसा न हो जाय कि घाटा-ही-घाटा हो जाय और एक दिन ऐसी हालत हो जिससे ज़िन्दगी के अन्दर चलना भी मुश्किल हो जाय, कि जिन्दगी के अन्दर आगे बढ़ना भी मुश्किल हो जाय। एक जगह पर एक फकीर जंगल में बैठा हुआ भोजन बना रहा था। वह क्या करे; कि एक रोटी बनाए और एक रोटी खा ले और फिर दूसरी रोटी तब दुबारा बनाए। कुछ वहाँ जंगल के लड़के इकट्ठे हो गए उन्होंने पूछा कि महात्मा जी यह क्या करते हो। क्या दिमाग खराब है, पहले पाँच-छः रोटी बना लो और फिर इकट्ठी रोटी खा लेना। एक रोटी बनाते हो और फिर खा लेते हो और फिर दूसरी बना लेते हो, तो

वह कहता कि भाई क्या जाने कि दूसरी रोटी बनाने का समय मिले या न मिले। इसलिए सोचता हूँ कि जो मिली हुई है उस एक रोटी को खा लूँ और फिर अगली रोटी देखूँगा। अगर दम-में-दम हुआ और साँस-में-साँस हुआ तो इस चीज़ पर आगे विचार करूँगा। लेकिन मुझे मालूम नहीं मुझे अगली रोटी बनानें का समय मिलेगा भी या नहीं, इसलिए मैं इकट्ठी करके रखना नहीं चाहता। कहने का मतलब क्या है, इन्सान जो है वह अपनी वासना और तृष्णाओं को बहुत जमा करके रखना चाहता है और अपने जीवन के अन्दर यह सोचता है कि यह भी इकट्ठा करूँ और यह भी इकट्ठा कर लूँ। यह मुझे मिल जाय और वह मिल जाय, लेकिन जो मिला हुआ है उसका ध्यान नहीं करता। मिले हुए का दुरुपयोग करता जाता है और इसका परिणाम यह होता है कि जीवन के अन्दर सब कुछ पा लेने के बाद भी उसे दिखता है कि वह कुछ नहीं कर पाता। सब कुछ कर लेने के बाद भी वह यह देखता है कि वह कुछ नहीं कर पाया। इसलिए जिन्दगी के अन्दर इस तत्व को पाने की कोशिश करो। इस भेद को समझने की कोशिश करो कि ऐ प्यारे तू संसार में आया है अपनी मंजिल की ओर बढ़नें के लिए और मंजिल का तुम्हें ध्यान हर समय रखना होगा। मंजिल की तरफ ध्यान रखतें हुए एक-एक कदम आगे बढ़ना होगा। Time is infinite Life is infinite कोई हर्ज नहीं अगर तू अनेकों बार गिर जायगा। इसमें जिन्दगी के अन्दर अनेकों बार गिरना कठिन नहीं, लेकिन गिरना बड़ी

बात नहीं, लेकिन गिरकर न चलना बड़ी बात है। भूल करना गुनाह नहीं लेकिन भूल का न जानना बड़ा गुनाह होता है। भूल करना गुनाह नहीं, भूल करके न जानना, भूल करके उसको न सोचना यह सबसे बड़ा गुनाह होता। जिसको दोष करने के बाद अपने दोषों का ज्ञान नहीं हो पाता वह इन्सान कभी भी सुधार की ओर नहीं बढ़ सकता। लेकिन जिस इन्सान ने सत्संग में आकर अपने दोषों का ध्यान रखना शुरू कर दिया जैसा कि कई बार कहा कि—

दुई का पर्दा जो दिया हमने उठा
वह जो पर्दा-सा बीच में था, न रहा।
पर्दे में रहे अब न, पर्दा नशीं
कोई दूसरा, उसके सिवा न रहा।
न थी हाल की जब हमें अपनी खबर
रहे देखते औरों के, ऐबो-हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा।

जरा ध्यान देना, जब तक इन्सान दूसरों को देखता है तब तक अपने-आपको नहीं देख सकता। और जब अपने-आपको देख लेता है तो कोई दूसरा रहता ही नहीं। ध्यान देना, जब तक दूसरों को देखता है तब तक अपने को नहीं देख सकता। और जब एक बार अपने को देख लेता है तो दूसरा कोई रहता ही नहीं। जब तक वह दूसरों के दोषों को देखने पर लगा हुआ है, जब तक उसकी दृष्टि दूसरों को देखने पर लगी हुई है। दूसरों को बीनने के लिए लगी रहती है तब तक वह

अपने-आपको देख नहीं पाता और जब एक बार अपने को देख पाता है तो दूसरा कोई रहता ही नहीं। तो इसलिए अपने-आपको देखने की कोशिश करो। अपने-आपको जानने की कोशिश करो। अपने तत्व को पहचानने की कोशिश करो, तो देखोगे कि आप संसार में जब तक दूसरों को देखते चले जाओगे तो अपने-आपको न देख पाओगे। जब तक दूसरों के दोष देखते चले जाओगे तब तक वह दोष तुम्हारे अन्दर आते चले आयेंगे और जब अपने दोषों को देखने लगोगे तो तुम्हारे दोषों का सुधार हो जायेगा। इसलिए कहते हैं कि निन्दक-जैसा उपकारी कोई नहीं होता।

ध्यान देना, जितना उपकारी निन्दक होता है उससे ज्यादा उपकार कोई नहीं कर सकता। इसलिए एक जगह पर कहा है कि—

"निन्दक मोको बहुत प्यारो, निन्दक मोरी महतारी। निन्दक सखा, निन्दक पिता हमारो निन्दक मोरी सखी प्यारी। कहता है कि मुझे निन्दक बहुत प्यारा है क्यों ? क्यों प्यारा है भाई निन्दक ? आप ध्यान देना। जो आपसे प्यार करेगा, जो आपकी सेवा करेगा, वह तो कुछ-न-कुछ आपसे छीन लेगा आपकी दौलत को छीन लेगा। लेकिन जो आपकी निन्दा करता है कितना उपकार करता है ? निन्दक स्वयं तो अपने लिए नरक की तैयारी करता है, अपने लिए नरक का द्वार खोलता है और आपके दोषों को धो डालता है। क्योंकि जितनी ही कोई निन्दा करता है उतने ही उसके दोष धुलते हैं। वह आपकी तो सफाई करता है और अपने लिए नरक का

द्वार खोल लेता है। तो भाई, जो निन्दा करे वह उपकारी हुआ या नहीं ? कितना भारी उपकारी है कि वह जीवन के अन्दर मेरे bank balance को बढ़ाता है। मेरे धन को बढ़ाता है। जिन्दगी के अन्दर इसी तत्व पर विचार करने की कोशिश करो, इसी चीज को सोचने की कोशिश करो कि जीवन के अन्दर जीवन का सार यही है। जिन्दगी के अन्दर बढ़ते चले जाओ मंजिल की ओर, ठहरने का नाम न लो, और क्षण-क्षण में देखो कि कहीं दोष तुम्हें पकड़ तो नहीं रहे। और इन दोषों का पता कैसे लगता है ? भला पंचर को देखने से पता लगता है कि पंचर कहाँ है। भला life को देखते चले जाओ तो पता लगता है कि पंचर कहाँ है ? पंचर को देखने के लिए क्या करते हैं ? पानी की एक बाल्टी या पानी का एक बेसिन (basin) लेते हैं, और उसमें लेकर रखते हैं उस tube को, और उसमें ऊपर से भरते हैं जोर से हवा। जब हवा भरते हैं जहाँ बुलबुला उठा वहाँ समझते हैं कि यहाँ puncture है। जहाँ भी बुलबुला उठा वहीं पर पंचर समझ लिया जाता है, और वहाँ पर निशान लगा देते हैं कि यहाँ पर पंचर है। अब देखो, जब आपके हृदय में पंचर हो और जब आपके हृदय में भगवान् रूपी नाम की हवा न ठहरती हो। जब आपके हृदय में उसकी मस्ती का निवास न रहता हो। जब आपके हृदय में उसका नाम न ठहरता हो तो समझ लेना कि हृदय में कहीं-न-कहीं पंचर है। अब वह पंचर कहाँ है ? उसका पता कैसे लगेगा ? सत्संग के जल में, सत्संग के जल की बाल्टी में आकर बैठो और यहाँ सन्त लोग आपके

हृदय में राम-नाम की हवा भरेंगे। अब जब वह हवा भरे तो जिधर बुलबुला उठे, तब ध्यान देना, अब अगर सत्संग में बैठे हुए व्यापार का ख्याल आ गया, धन का विचार आ गया तो समझ लेना लोभ का पंचर लगा हुआ है। अगर तुम्हें सत्संग में बैठे हुए, सत्संग की हवा भरते हुए अगर आपको परिवार का ख्याल आ गया, तो समझ लेना कि आपके हृदय में ममता का पंचर लगा हुआ है। अगर सत्संग में बैठे हुए, सत्संग की हवा भरते हुए किसी के प्रति बुराई की भावना आ गई तो समझ लेना कि आपके हृदय में द्वेष का पंचर है, और अगर सत्संग में बैठे हुए किसी सुख का ख्याल आ गया, किसी सुख की याद आ गई तो समझो कि हृदय में राग का पंचर है। अगर तुम्हारे मन में अपने किसी अच्छे किये हुए कर्म का ख्याल आ गया है, कि मैंने यह कर दिया, मैंने वह कर दिया जब भी किसी अच्छे किये हुए का ख्याल आया तो समझ लो कि तुम्हारे हृदय में अभिमान का पंचर लगा हुआ है अब यह test है कि अभिमान का पंचर है लोभ का, मोह का, अहंकार या क्रोध का, यह तो तुम्हें सत्संग में बैठकर पता लगेगा जहाँ तुम्हारा मन भागे वहाँ समझ लो कि पंचर है। अब उसको क्या करोगे ?

अभिमान का पंचर है तो निर्मानिता से दूर करो।
अगर मोह का पंचर है तो प्यार से दूर करो।
अगर लोभ का पंचर है तो दान से दूर करो।
क्रोध का पंचर है, तो प्यार से दूर करो।

वह कहते हैं—

If you want to remove any evil think of the opposite virtue.

अगर आप किसी बुराई को दूर करना चाहते हो तो उसके उल्टे उसको अच्छाई का ध्यान करने की कोशिश करो, अच्छाई का चिन्तन करो। अगर आप चाहते हैं, कि आपका क्रोध छूट जाय तो यह मत सोचो कि मैं क्रोध नहीं करूँगा। मगर यह सोचो कि सबसे प्यार करूँगा। अगर आप यह सोचोगे कि कभी क्रोध नहीं करूँगा तो क्रोध कभी नहीं छोड़ पाओगे। अगर आप यह सोचोगे कि लोभ नहीं करूँगा तो लोभ कभी भी नहीं छोड़ पाओगे। अगर आप यह सोचो कि मोह नहीं करूँगा तो मोह कभी नहीं छोड़ पाओगे। हाँ यह सोचो कि सन्तोष करूँगा। हाँ यह सोचो कि प्यार करूँगा। हाँ यह सोचो कि असंग रहूँगा। हाँ यह सोचो कि निर्माण करूँगा। हाँ यह सोचो कि जीवन के अन्दर दानी बनकर रहूँगा। वास्तविकता में जब इस तत्व को समझोगे तो हृदय में जितने यह लगे हुए पंचर हैं वह सब दूर हो जायेंगे। और आप देखो कि पंचर लगाने के लिए करते क्या हैं? भला सबसे पहले क्या करते हैं? रेती से tube को अच्छी तरह रगड़ते हैं। जब तक tube को रगड़ा नहीं जाता तब तक उस पर पंचर ठहरता नहीं, दवाई ठहर नहीं सकती, solution ठहर नही सकता। इसी प्रकार हृदय के अन्दर जब पंचर का पता लग जाय तो उसे अच्छी तरह अभ्यास से रगड़ डालो। जब अभ्यास की रेती से रगड़ा जायगा तो उसके ऊपर भक्ति का

solution लगाकर ज्ञान का उसके ऊपर फोया रखने से ज्ञान का टुकड़ा patch रखकर उसको बन्द कर दोगे puncture से जीवन के अन्दर जो हवा हैं वह वहीं ठहर जायगी। इसीलिए कहा न कि जब तक ये माला के मनके बिखरे रहते हैं, कोई शोभा नहीं होती। लेकिन जब यही माला के मनके जब गले के अन्दर हार बनते हैं तो कितने शोभायमान होते हैं। इसीलिए भाई इन मन के मनकों को लेकर वैराग्य के जल से धो लो। इन मन के मनकों को लेकर अभ्यास की शिला पर रगड़ो और वैराग्य के जल से उज्ज्वल करो और फिर भक्ति की सुई से इसके अन्दर छेद करके ज्ञान का धागा डालकर जब गले के अन्दर डालोगे तो यह गले पर बहुत शोभायमान होगा जिन्दगी के अन्दर विश्वास के पत्थर पर रगड़कर वैराग्य के जल से धोकर अभ्यास की सुई से छेद करते हुए ज्ञान का जब धागा डालोगे तब जीवन के अन्दर तुम्हारे मन को बहुत शोभायमान देगा, जीवन को शोभायमान करेगा। और जिंदगी जो है, वह तो वास्तव में शोभायमान-ही-शोभायमान हो जायगी। तो इसलिए, विश्वास का पत्थर जीवन के अन्दर विश्वास ही सबसे पहली चीज हैं। और विश्वास ही जीवन में, संसार की नश्वरता पर विश्वास और अपनी अमरता पर विश्वास, संसार की असारता पर विश्वास, और प्रभु नाम की सारता पर विश्वास। जब ये दोनों मानव-जीवन में होते हैं, तो एक विश्वास से वैराग हो जाता है और एक विश्वास से अनुराग हो जाता है। तो विश्वास से, संसार की नश्वरता पर विश्वास करने से वैराग होता है और प्रभु के वास्तविक सार

पर विश्वास करने से उसके चरणों में अनुराग होता है। इधर वैराग होता है उधर अनुराग होता हैं। और एक दिन वैराग से भोगों का त्याग होता है। अनुराग से प्रभु चरणों में प्यार होता है। और एक दिन जीवन के अन्दर ऐसा होता है कि वैराग भोगों से पूर्ण होता है। और अनुराग प्रभु चरणों से पूर्ण होता है। मानव-जीवन का सार मिल जाता है। इस-लिए भाई, मानव-जीवन के अंदर जब आप आये और इस मानव चोले को पाया। तो इसलिए मानव चोले का पूरा लाभ उठाते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ने की कोशिश करो। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करो। चाहे कदम तुम्हारा कितना भी आहिस्ता क्यों न हो। कोई हर्ज़ नहीं। Let the step be slow, it must be steady and strong. It must continue it must not stop. ठहरना नहीं चाहिये चाहे आहिस्ता क्यों न हो? क्योंकि Life is infinite time is infinite. समय बहुत है जिंदगी के अंदर। आप विचार करके देख लो तत्व को। लेकिन ठहरने की कोशिश मत करो। आगे बढ़ते चले जाओ। मिले हुए समय का लाभ उठाने की कोशिश करो। क्योंकि जो मिले हुए समय का लाभ नहीं उठाता, समय उसे बहुंत रुलाता है। समय उसका बहुत बदला लेता है, समय बहुत ज़ालिम है। जो लाल की कदर नहीं करता वह एक दिन लाल के लिए आँसू बहाता है। जो मिले हुए सुखों की कदर नहीं करता, जो भोगों के अंदर वास्तविकता का विचार नहीं करता वह एक दिन भोगों से पीड़ित होकर चिल्लाता है। इसीलिए

भाई मिली हुई चीजों का, मिले हुए सत्संग का, मिले हुए मानव-जीवन का, मिले हुए बल का, मिले हुए धन का, पूरा उपयोग करते हुए जिन्दगी के अंदर हर चीज जो तुम्हें मिल चुकी है अगर वह दुःख है तो दुःख सही, और सुख है तो सुख सही, धन है तो धन सही निर्धनता है तो निर्धनता सही। इन सबका सदुपयोग करो। जब इनका सदुपयोग करोगे, जब इनकी सहउपयोगिता तुम्हारे जीवन में आ जायेगी मिले हुए साधनों की तो तुम देखोगे कि जिन्दगी के अन्दर यह सब कुछ भी तुम्हारे पास रहे तो भी कोई चिन्ता न रहेगी। अपने आत्म-तत्व को जानने के बाद ये संसार का वैभव जो हैं, ऐसी जिन्दगी बनालो कि संसार का सब कुछ रहे, लेकिन अगर पल भर में छोड़ने का विचार हो तो उसे एक पल भी उसके छोड़ने में न लगे। एक सन्त जंगल में बैठे हुए थे। एक बादशाह वहाँ पहुँचा। चरणों में सीस झुकाया और कहा, चलिए महाराज यहाँ से। आप तो यहाँ जंगल में बैठे हुए हैं। आपको यहाँ कष्ट होता होगा। आप चलिए, आप तो आत्म अनुभवी हैं, आत्मज्ञानी हैं। चलिए मैं आपको अपने राज्य में आधा देता हूँ। मेरी बड़ी भारी हुकूमत है, मै आपको आधा राज्य देता हूँ। फकीर कहता है, भाई तेरा आधा राज्य तो क्या त्रिलोकी का राज्य भी मेरे एक मस्ती के प्याले के आगे कोई कीमत नहीं रखता। क्योंकि कई बार कहा—

"न उसको मालो दौलत से वास्ता,
न गर्ज मकामों कयाम से
उसे कोई निस्बत ख़ास हो, शमा रूपी राम से

दे रहा है तसल्लियाँ वो हर एक ताज़ा पयाम से
कभी आके मंजिलेयाम पर, कभी हट के मंजिलेयाम से
कहूँ क्या रहा मुकाबला, मुसीबतों का क़दम पे क़दम
पार कर सब मंजिलें अब जा मिले हैं राम से
मुझे गर्ज किसी से न वास्ता, मुझे काम अपने काम से
तेरी फ़िक्र से, तेरे ज़िक्र से, तेरी याद से, तेरे नाम से
अरे दुनिया के विषय हैं क्या बला,
ये माया तुझे जो हो हौसला,
ज़रा कर ले आके मुकाबला,
मेरे एक मस्तिये जाम से

तो दुनिया के विषय वहाँ क्या ठहर सके हैं। वह फकीर कहता है, भाई तू सोच ले—

"ये अमीरी है तुझे चक्कर में लाने के लिए
ये फकीरी है मेरी आराम पाने के लिए।
इन्द्रियाँ प्रबल तेरी तुझको सताने के लिए
और इन्द्रियाँ प्रबल नहीं मेरे सताने के लिए।

कहता है—

शिद्दते गर्मी से तू हो रहा है निम्मो जां
और वृक्ष आदि हैं खड़े पंखा चलाने के लिए।
अच्छे से अच्छा वस्त्र भी तेरे तन पै सजता नहीं,
यहाँ एक धोती काफी है तन पै लगाने के लिए।
सोने और चाँदी के बरतन तेरे मन भाते नहीं,
एक कमण्डल काफी है सब काम आने के लिए।

कहता है—

जिन्दगी के अन्दर देखता फिरता है
तू मस्नूई थियेटर रातदिन,
और बुलबुलें काफी हैं यहाँ गाना सुनाने के लिए।

कहता है—

ए पास्ताँ बुलबुलें और नदियाँ भी हैं, मुझे गाना सुनाने के लिए।

The supreme painter reveals himself through every aspect of nature.

हर aspect से, हरएक प्राकृतिक रंग से फिर वह प्यारा ही नज़र आने लगता है। तो वह कहता है—

फकीर, ऐ शहनशाह तू क्या करने आया है—
अरे देखता फिरता है मस्नोई थेटर रात दिन,
बुलबुलें काफी हैं यहाँ गाना सुनाने के लिए।
मखमली गद्दों पै भी तुझे नींद आती तक नहीं,
कुदरती सब्ज़ा बिछा मेरे बिछौनें के लिए।

कहता है इतना कुछ तो तेरे पास है, और इतना मेरे पास है। लेकिन फिर भी कहता है, इतने पर भी—

माँगता है फिर ईश्वर से दुनिया भर का राज्य,
हाथ फैलाता नहीं मैं एक दाने के लिए।
ऐ शाह, अब बताओ कि तू धनी या मैं धनी,
जो आ गया मुझको आज़माने के लिए।

उसने कहा, नहीं महत्मा, मैं आज़माना नहीं चाहता। पर चाहता हूँ कि आप चलकर रहें। सन्त ने सोचा, चलो इसकी इच्छा है

तो चले चलते हैं। सन्त ने कहा कि चलो हम चलते हैं। चलकर वह वहाँ आ गये। वहाँ आधा राज उसको दे दिया गया और संत ने उसी तरह की पोशाक पहनी। इस प्रकार वह रहने लगे। आत्म-तत्वी थे, आत्मज्ञानी थे। इस प्रकार अपना राज्य चलाने लगा। न्याय के वक्त न्याय करते थे, दण्ड के वक्त अपराधियों को दण्ड देते थे। सब अच्छा चल रहा था। सुन्दर राज्य चल रहा था। आधा राज्य वह चला रहा था और आधा राज्य राजा सन्त चला रहे थे। बहुत समय गुज़र गया। पाँच-छः वर्ष के बाद एक दिन दोनों बैठे हुए थे। दोनों ने बढ़िया पोशाक पहने हुए हैं। दोनों के पास वैभव है। वे बैठे हुए भोजन कर रहे हैं। तो बादशाह कहता है, ऐ सन्त अब तो तेरे और मेरे बीच में कोई फ़र्क नहीं है। पहले तो मुझे तेरे सामने सिर झुकाना पड़ता था, अब तो तुझ में और मुझ में कोई फर्क नहीं, कोई भेद नहीं। दोनों एक-जैसे महलों में रहते हैं। दोनों एक-जैसी बादशाहत करते हैं। दोनों का एक-जैसा वैभव है। सन्त कहता है कि ऐ बादशाह तेरी मर्जी में और जो आये वह कह देना, पर यह कभी मत कहना कि तुझमें और मुझमें भेद नहीं है। कहता है कि क्या फ़र्क है? थोड़ी देर ठहर, चलते हैं और चलकर बतलाते हैं कि क्या फ़र्क है? उन्होंने पहले वाली कफ़नी सँभाल कर रखी हुई थी। सन्त महल में गये। तुरन्त अपने कमरे में जाकर, शाही लिबास उतारकर कफ़नी पहनी और कमण्डल हाथ में लिया। और बादशाह से आकर कहा, अच्छा बादशाह राम-राम।

अब हम चलते हैं। राजा ने कहा, अरे महाराज क्या बात है? अरे महाराज क्या कर रहे हो ? इतना वैभव आपके पास है, इतना धन आपके पास है, इतनी दौलत आपके पास है लेकिन यहाँ से जाते आपको दुःख नहीं हो रहा, इनको छोड़ते हुए आपको जरा भी चिन्ता नहीं हो रही। तो सन्त कहने लगे कि बस यही तो फ़र्क है तेरे और मेरे में। तेरे पास सब कुछ है और तू सबका दास बन रहा है। और मेरे पास सब कुछ है और मै किसी का दास नहीं। फ़र्क इतना ही है कि संसार के ज्ञानी और अज्ञानी में इतना ही भेद होता है। अकसर मैं कहा करता हूँ कि एक मकान है वही परिवार है। दोनों अच्छे परिवार के रहने वाले हैं। दोनों के पास अच्छी धन-दौलत है। दोनों की अच्छी इज्ज़त है। कुदरती ऐसा होता है कि दोनों के मकान को आग लग जाती है। दोनों का मकान जल जाता है। दोनों का सामान जल जाता है। दोनों का परिवार जल जाता है। एक अज्ञानी जो है वह गली में खड़ा होकर रो रहा है और जो ज्ञानी है वह हँस रहा है। तो एक सज्जन आकर पूछता हैं कि भाई क्या बात है ? लोग पूछते हैं क्या कारण है कि दोनों का सामान लुटा, दोनों का घर लुटा, दोनों का परिवार लुटा, लेकिन एक हँस रहा है और दूसरा रो रहा है। ज्ञानी कहता है कि भाई मैं तो भगवान् का बड़ा धन्यवाद करता हूँ कि भगवान् की बड़ी कृपा है उसने जितनी जिम्मेदारियाँ मेरे ऊपर डालीं थीं उन सबको वापस ले लिया है। और अब मस्त होकर अकेला रहूँगा। तो भाई बात यह

है कि एक लुटने पर भी नाचता है और एक न लुटने पर भी रोता है। फ़र्क इतना ही तो है भाई कि अपने जीवन के अन्दर सब-कुछ रहते हुए भी अपने आत्म-तत्व को जब समझोगे तो सब रहते हुए तुझे रुला न सकेगा। इतना ही ज़िन्दगी का सार है, इतनी ही जीवन की मंजिल है।

सात

दीपक जले जले परवाना जलती ज्वाला किसे बुलावे
झूमत-झामत खुद ही आवे प्रेम मिलन का यही ठिकाना
दीपक जले जले परवाना
कोई जलकर जल नहीं पाता बिना जले कोई जल जाता
कहीं तमाशा है जल जाना—दीपक जले जले परवाना
दीपक का तो प्यार यही है दीपक का संसार यही है
जलते जाना और जलाना—दीपक जले जले परवाना

इस महानता का हम विचार कर रहे हैं कि मानव के हाथ में कितनी महान् शक्ति है—मानव के हाथ में कितनी ताकत है—कि चाहे तो वह जीवन को महान् बना ले और चाहे तो जीवन के अन्दर ही पशुता और हैवानियत को ले आये। वास्तविकता में यह मानव का चोला ही एक ऐसा चोला है जिसके अन्दर ही हम अपने जीवन के स्वामी बन सकते हैं। अपने जीवन को जिस प्रकार चाहें बना सकते हैं। अपनी जिन्दगी को जिस साँचे में चाहें ढाल सकते हैं। यह साँचा बनाना हमारे ही हाथों के अन्दर है। और वह साँचा

बनता है हमारे किये हुए चिन्तनों से, वह साँचा बनता है हमारी अपनी भावना से, यह साँचा बनता है हमारे अपने विचारों से। क्योंकि Man today is the result of millions of repetitions of thoughts and actions. आज मनुष्य जो-कुछ भी है वह अनेकों ख्यालों का संगठन है। जैसे-जैसे उसके ख्याल बुलन्द होते जाते हैं, जैसे-जैसे उसकी भावना महान् होती चली जाती है वह भावनाओं की महानता से महान् बन जाता है और भावना की गिरावट से वह नीच बन जाता है। हमारे दुखों का कारण हमारी भावनाओं की गिरावट है, हमारे खयालों की गिरावट है। जब-जब हमारा ख्याल गिरा तब-तब हम गिर गये। और जैसे-जैसे हमारे ख्याल बढ़े वैसे-वैसे हमारा जीवन बन गया। और ख्याल किसका होता है? जिसका संग होता है। और संग किसका होता है? जिससे हमें प्यार होता है। और प्यार किससे होता है? जिसे हम चाहते हैं, जिसकी हमें चाहना होती हैं, उससे हम प्यार करते हैं। और प्यार के कारण उसका हमारा संग होता है। और उस संग के कारण हमारे अन्दर उसका चिन्तन होता है और उस चिन्तन के कारण हम एक दिन उसका रूप हो जाते हैं। वह कहता है—

"That become you must
God if you love God and dust if you love dust

जिससे तुम प्यार करते हो वही तुम बन जाओगे। जिससे भी तुम प्यार करते हो वही बन जाओगे। अगर खुदा से प्यार करते हो तो एक दिन खुदा बन जाओगे। और अगर खाक से

प्यार करते हो तो एक दिन खाक बन जाओगे। क्योंकि जिसका संग होगा उसका चिन्तन होगा। जिस चिन्तन में तुम लगे रहोगे वह तुम्हारे जीवन का निर्माण करेगा। स्वामी राम के पास एक नौकर रहा करता था, जिन दिनों वह प्रोफेसर थे। एक मामूली नौकर, एक १० रुपये में रोटी बनाने वाला, मामूली ज़माने में तो शायद दो रुपया ही लेता होगा। राम के यहाँ रोज वेदान्त का सत्संग होता था। और वह नौकर उस सत्संग में नित्यप्रति बैठता था, सुनता था। एक दिन छत के ऊपर घूम रहा था। और वह घूमते हुए चिल्लाया है कि मैं खुदा हूँ। उसके पास आसपास के पड़ोसी उठकर आ गये। इधर से दो-चार आदमी और आये। आकर उस नौकर को पकड़ लिया। उन्होंने कहा कि ऐ मूर्ख तू यह क्या कह रहा है कि मैं खुदा हूँ, मैं ईश्वर हूँ, I am God। उसने कहा हाँ मैं कहता हूँ कि मै ईश्वर हूँ। उन्होंने कहा कि क्या बात करते हो भाई। अगर तुम ईश्वर हो तो हमारी एक बात को मानो। हमारी बात को सिद्ध कर दो कि तुम ईश्वर हो। देखो यह छत है। इस छत से छलाँग लगा दो। अगर कूद जाने पर तुम्हें चोट न लगी तो हम तुम्हें ईश्वर मान लेंगे। वह कहने लगा, अच्छा तुम मुझे छत से कुदवाना चाहते हो, बहुत अच्छी बात है। अरे छत तो क्या मैं समुन्दर की गहराइयों में डुबकियाँ लगा सकता हूँ, पहाड़ों से कूद सकता हूँ। लेकिन भाई, एक बात मुझे बतलादो, छलाँग वहाँ लगाई जाती है जहाँ जगह खाली हो, जहाँ कोई न हो। किसी के ऊपर छलाँग नहीं लगाई जाती। जहाँ जगह खाली हो वहीं तो

छलाँग लगाई जाती है। लेकिन मैं तो ईश्वर हूँ, सर्वव्यापी हूँ, कण-कण में समाया हुआ हूँ। भला बताओ मैं अपने ऊपर ही कैसे छलाँग लगा दूँ। और जब तुम कहते हो कि मैं छत से नीचे छलाँग लगाऊँ तो वहाँ भी तो मैं ही बैठा हुआ हूँ। वहाँ भी तो मेरा ही रूप है। वहाँ भी मैं ही समाया हुआ हूँ। जब भिन्नता है ही नहीं, जब द्वैत कोई है ही नहीं, दूसरा कोई है ही नहीं तो मैं किसके ऊपर छलाँग मारूँ। कहने का मतलब क्या है ? भावना की सिद्धता है, भावनाओं का तत्व है। संग का प्रभाव है, संग का असर है कि संग के साथ जिसकी हमें चाहना होती है। और हम चाहते किसे हैं भाई ?

हम चाहते किसे हैं ? हमें देखना होगा कि हम किसे चाहते हैं ? हमारे यहाँ चाहना किसकी है ? अगर आप सबसे यह पूछा जाय, क्यों भाई तुम ईश्वर को चाहते हो तो सभी हाथ उठाकर हाँ कर देंगे कि हाँ महाराज, ईश्वर को चाहते हैं। हम बिलकुल ईश्वर को चाहते हैं। ईश्वर को न चाहते तो यहाँ क्यों आते। हाँ सत्संग में आने की हमें क्या जरूरत थी। इतनी दूर अपने घरों के कारोबार को छोड़कर, अपनी कोठी छोड़कर यहाँ आकर क्यों बैठते ? क्यों यहाँ आपका सत्संग सुनते ? यहाँ क्यों आते ? अगर हमें इच्छा न होती। लेकिन भाई, क्या इतनी-सी बात सिद्ध कर देती है कि हमें ईश्वर की चाहना है। हम किसको चाहते हैं जिसका हम त्याग नहीं करते ? चाहते किसको हैं जिसको त्याग नहीं सकते। जिसको हम त्याग नहीं सकते उसको हम चाहते हैं। और जिसको हम क्षण-भर के लिए भी त्याग सकते, एक पल के लिए भी जिसे

त्याग सकते हैं तो समझो अभी उसकी चाहना पूरी नहीं हुई। अभी हम उसको चाह नहीं पाये। अभी हमारे अन्दर वह चाहना, वह तड़प पैदा नहीं हुई, वह चाहना अभी उसकी नहीं हुई और जिसकी हमें चाहना है वही तो हमें मिलेगा। आप ध्यान दो, संसार में जब-जब भी तुमने कुछ चाहा और उसके लिए तुमने कर्म किया तो तुम्हें कभी भी मायूसी न हुई, निराशा होती रही, ठोकरें जीवन में मिलती रहीं, पर चाहना फिर भी कभी-न-कभी पूरी होती रही। लेकिन चाहते किसे हो ? अगर ईश्वर को चाहते हो तो उसका परिणाम, उसका अनुभव ये दोनों चाहिए कि क्षण भर के लिए भी हम उसका त्याग नहीं कर सके, क्षण भर भी अगर हम उसको छोड़ नहीं पाते, क्षण-भर के लिए भी अगर हमारे दिल से उसका चिंतन नहीं जाता तो क्षण-भर के लिए भी हम उसका त्याग नहीं करते, तब तो हम उसको चाहते हैं। लेकिन अगर ईश्वर कहते और हमारी प्रवृत्ति भोगों में जाती है तो यह कहना पड़ेगा कि हम कहते ईश्वर को हैं लेकिन चाहते भोगों को हैं। ध्यान दीजिए क्या हम भोगों को छोड़ पाते है ? अगर भोगों को छोड़ पाते हैं तो तब आप भोगों को नहीं चाहते। लेकिन अगर आप भोगों को अभी तक नहीं छोड़ पाये, अगर आपकी भोगों से अभी तक त्याग की भावना नहीं हुई, अगर भोगों की वास्तविकता से ऊपर अपने दामन को नहीं उठाया तो वह कहते हैं—

ऐ मुसाफिर तुझे अपने सफर की खबर ख़ाक नहीं
सफ़र सिर पर है और सामाने सफ़र खाक नहीं

ऐ इन्सान इन भोगों को छोड़ने से पहले, क्योंकि जितने भी तुझे सुख मिले हुए हैं, जितने भी भोग मिले हुए हैं, अगर तुम इन भोगों को नहीं छोड़ोगे तो ये भोग तुम्हें छोड़ जायँगे और जिन भोगों को नहीं छोड़ोगे वे तुमसे रह जायेंगे, कुछ भोग तो तुम्हें भी छोड़ जायेंगे। जीवन के अन्दर और जो भोग तुमको न छोड़ पाये उनको तुम छोड़कर चले जाओगे। तो इसलिए कहता है कि भोगों की चाहना, भोगों की कामना का त्याग कर दे—अरे

छोड़ने से पहले इनको छोड़ दे ओ बेशहूर
छोड़ना तुझको पड़ेगा एक दिन इनको जरूर
ऐश के सामान सब यों ही पड़े रह जायेंगे
और यार तेरी लाश पर रोते खड़े रह जायेंगे

इन चीजों के तत्व को समझने की कोशिश कर। कहने का मतलब है कि संसार के अन्दर जिसको चाहता है उसको तू पा सकेगा। क्योंकि ख्याल की बुलन्दी ही तुझे सुखी कर सकती है। भावना की बुलन्दी ही, भावना की ऊँचाई ही तुझे महान् बना सकती है।

Poverty and Prison can bind you not
You cannot be free by means of lot
By thoughts of bondage yourself you bind
Of course you are free when free from mind
You are your master and servant of course
You are your bondage and freedom source.

गरीबी तुम्हें बन्धन में नहीं डाल सकती और अमीरी

तुम्हारा बन्धन नहीं छुड़ा सकती। अमीरी तुम्हारा बन्धन नहीं छुड़ा सकती और गरीबी तुम्हें बन्धनों में नहीं बाँध सकती। बन्धन में तुम्हें बाँधने वाली तुम्हारी भावनायें हैं। और यही भावनायें जब ऊँची उठ जाती हैं। तो कहते हैं—

भावना अगर इन्सान की बलवान हो, आपके सामने कई बार कहा है। क्या ? इन्सान की बात छोड़ दो

भावना अगर तेरी बलवान हो
तो पल में यहाँ खड़ा भगवान् हो।

पल में एक पल की भी देर नहीं लगती। क्यों ? वह कहते हैं—

वह तेरे नहीं, मेरी भावना के दास हैं। कहता है मैं तो उनका हूँ, लेकिन वह मेरे दास नहीं बन सकते। हालाँकि भगवान् ने कहा कि—

"भक्त हमारे दास हैं, हम भक्तन के दास।"

लेकिन कहता है नहीं-नहीं, वह मेरे नहीं मेरी भावनाओं के दास हैं। जिस क्षण कहा चले आओ, वह चले आये। कहता है इसको कहते हैं भावना की महानता। जिस क्षण भी यह विचार कर लिया यह इन्सान की महानता है। इन्सान ही भावनाओं को इतना ऊँचा रख सकता है। मानव ही अपनी भावनाओं को इतना बलवान बना सकता है। जिस क्षण कहा चले आओ वह आ गये। तो कहा—

भावना अगर तेरी बलवान हो
तो पल में यहाँ खड़ा भगवान् हो।

कहता है—

गीत क्या है साँस की आवाज़ है
ज़िंदगी का बज रहा यह साज़ है।
मन तेरा लीन हो आवाज़ में,
प्रेम की गर इसमें बजती तान हो।
भावना तेरी अगर बलवान हो
तो पल में यहाँ खड़ा भगवान् हो।
काट दे जंजीर झूठे मान की
लेकर अब शरण उस शक्तिमान की।
तो देख लेना एक दिन प्यारा प्रभु,
घर में तेरे आ करके मेहमान हो।
भावना तेरी अगर बलवान हो
पल में यहाँ खड़ा भगवान् हो।
'प्रेमानन्द' की बात अगर तू मान ले
प्रेम के मार्ग में दिल को ठान ले।
तो निश्चय करके सुन ले मेरी बात
यह जिन्दगी मुस्कान ही मुस्कान हो।
भावना तेरी अगर बलवान हो
तो पल में यहाँ खड़ा भगवान् हो।

भावनाओं की बुलन्दी की जीत और भावनाओं की शुद्धता होती है संग से। जब तक संग सुन्दर न होगा तब तक भावना, क्योंकि जिससे हमें चाहना होगी, उससे हम प्यार रखेंगे, उससे मुहब्बत रखेंगे। जिससे हमें मुहबब्त होगी या होती रहेगी, उसका हमारा चिन्तन होता रहेगा। और जिसके प्रति हमारा

चिन्तन होता रहेगा उसी का हम रूप बनते चले जायेंगे। इसलिए प्यारो ! संसार का कर्म करते हुए भी, कर्म को विश्व पुजारी बनकर करो। मानवता से नफ़रत करने वाला प्रभु से प्यार नहीं कर सकता। मानवता से नफ़रत करने वाला, मानव से, इस जीते-जागते भगवान् के स्वरूप से नफ़रत करने वाला, राग-द्वेष रखने वाला, मोह और द्रोह रखने वाला कभी उस भगवान् को नहीं पा सकता। इसलिए ऐ इन्सान तू इन्सानियत के अन्दर उस भगवान् के दर्शन कर। हर फूल के अन्दर उसकी खुशबू सूँघने की कोशिश कर। हर रंग के अन्दर उसकी रंगत देखने की कोशिश कर। और फिर तू देखेगा कि जीवन के अन्दर कहीं भी भेद की बेड़ी बाकी न रहेगी। वह कहते हैं कि जिन्दगी के अन्दर कहीं भी भेद का तत्व बाकी न रहेगा—

"न कुछ आरजू है न कुछ जुस्तजू है
कि न वाहदत में साकी न सागर न बू है
गुलिस्ता में जाकर हर इक गुल को सूँघा
कि तेरी ही रंगत और तेरी ही बू है

तो इसलिए जब इस तत्व को तू समझेगा, जब इस भेद को तू समझेगा, जब इस विचार को तू जानेगा कि जीवन के अन्दर तू अपने आपकी हस्ती को इतना गँवा दे। ध्यान देना पहली stage में जब इन्सान गिरा होता है। उस समय वह कहता है, भगवान् ! सब-कुछ मेरी इच्छा से पूरा हो, मेरी ही इच्छा पूर्ण होती चली जाय। भगवान् के दरबार में भी जाकर अपनी इच्छाओं का ढेर लगा देता है। इच्छाओं का खेल

खेलता है। लेकिन भाई, इच्छाओं के गढ़े में पड़ा हुआ मानव भावों के अन्दर पड़ा हुआ मानव, संसार के अन्दर रहता हुआ मानव, भोगों को इस तरह अपने मन में बसाने वाला इन्सान क्या कभी भोगों से बच सकेगा ? क्या कभी रोगों से बच सकेगा ? क्या कभी वियोग से बच सकेगा ? वह कहते हैं कि—

इस जीवन में सन्तोष कहाँ, भोगों में रहकर होश कहाँ
क्या आग लगाकर पानी में आराम से कोई बैठा है ?

क्या पानी में आग लगाकर इन्सान आराम से बैठ सकता है ? इन्सान यह सोचता है कि मैं ऐसा कर दूँ, वैसा कर दूँ। लेकिन वह करते हुए, उन अभिमानों में फँसते हुए कभी भी माया के बन्धन से अलग नहीं हो सकता। जब भी वह सोचता है कि मैं हर दुःख को सुख में दबा लूँगा। लेकिन वह दुःख को दबा तो सकेगा पर दुःख को मिटा न सकेगा। हम जितनी भी कोशिश करते हैं दुनिया में दुःख को दबाने के लिए करते हैं, दुःख को मिटाने की नहीं करते। दुःखों की निवृत्ति के लिए नहीं कर पाते। हम दुःखों को दबाते चले जाते हैं। एक ज़ख्म हुआ उसके ऊपर पट्टी बाँधते हैं, दूसरा ज़ख्म हुआ उसके ऊपर पट्टी बाँधते हैं। जरा दुःख हुआ चले शराब पीने, जरा दुःख हुआ चले गये सिनेमा देखने, जानते हैं क्यों ? क्योंकि थोड़ी देर के लिए हम अपने दुःख को दबा सकें। थोड़ी देर के लिए दुःखों को दबा सकें। दुःखों को दबा तो पाते हैं, लेकिन मिटा नहीं पाते। और दुःख जब तक मिटता नहीं है तब तक वह जीवन के अन्दर न चाहने पर भी बार-

बार आता रहेगा। और सुख हमेशा चाहने पर भी हम उसे न रोक सकेंगे। सुख रोकने पर भी न रुक सकेगा। जैसा कि पहले कह रहे थे कि इन्सान लाख कोशिश करे जैसे कि कबूतर आँख बन्द कर लेने से बिल्ली के पंजे से न बच सकेगा। तो कबूतर को महाराज ने कहा कि तू दो चीजों से बच सकेगा। या तो वह ऊँची उड़ान पर पहुँच जाय जहाँ बिल्ली न पहुँच सके या नीची गहराई में डूब जाय जहाँ बिल्ली उसके ऊपर न आ सके। तो माया से बचने के लिए बाके ही दो उपाय हैं या तो ज्ञान की छत में इतना ऊपर बैठ जाय कि माया छू तक न पाय। वह चिल्लाकर कह दे कि—

दुनिया के विषय है क्या बला, तुझे ऐ माया जो हो हौसला
ज़रा कर ले आके मुकाबला मेरे एक मस्तीए जाम से

या तो वह ज्ञान की उस छत पर बैठा हो जहाँ माया पहुँच न सके। और या भक्ति की गहराई में इतना डूब जाय, उपासना की गहराई में इतना डूब जाय कि माया वहाँ पहुँचने न पाये। या तो वह ज्ञान की छत पर इतना ऊँचा पहुँच जाय कि वहाँ से ललकार कर कह सके या ऐसा कि—

उठे राम की मुहब्बत के दरिया
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।

या तो इतना उसकी उलफत में डूब जाय, या तो इतना उसकी मुहब्बत में डूब जाय, या तो इतना उसकी उपासना में डूब जाय कि अपनी हस्ती बाकी न रहे। या तो मैं का भेद इतना मिटा डाले कि तू ही तू रह जाय। या तू का भेद इतना मिटा दे कि मैं ही मैं रह जाय। लेकिन जो भी रहे सर्व रहे। तू और

मैं का झगड़ा खतम हो जाय। या मैं ही में मैं खत्म हो जाय, या तू ही में तू खत्म हो जाय। एक ही भावना खत्म हो जाय। ये जीवन के अन्दर वास्तविकता में जरूरत है कि ऐ इन्सान तू कर्म करता हुआ अपनी मैं की भावना को खत्म करके तू ही तू की भावना में लीन हो जा। जिस प्रकार कि गुरु नानक देव अपनी मस्ती के अन्दर लीन होते हैं। अपनी मस्ती में लीन होते हैं, तो होते-होते एक दो तीन चार गिनते गिनते जब तेरह (१३) पर आते हैं तो ऐसे भूल जाते हैं कि तेरा ही तेरा होता रहता है। और मेरा सब खत्म हो जाता है। ऐसा समर्पण हो जाय, ऐसा कर्मों का समर्पण हो जाय क्योंकि पहले इन्सान कहता हैं My will, मेरी इच्छा। लेकिन एक दिन ऐसा आता है जब वह अपने जीवन के इस समर्पण को करता है तो कहता है Thy will, तेरी इच्छा ही पूरी हो, Thy will be done तेरा भाना मीठा लागे जैसी तेरी भावना हो, जैसी तेरी भाना हो, वैसे मुझे मीठा लगेगा। मुझे हर बात स्वीकार है। फिर वह यह कह देता है कि—

न कोई इच्छा न कोई चाह है
हर हालत में वाह ही वाह है।
जो चाहे तो भीख मँगादे जो चाहे तो तख्त बिठा दे
जो चाहे तो माल बना दे जो चाहे कंगाल बना दे
न कोई इच्छा न कोई चाह है।
हर हालत में वाह ही वाह है।
हर हालत में वह ही तेरे हैं और तेरे ही रहेंगे
जो देवे तू हँसके सहेंगे, मुख से तो हम यही कहेंगे

कि न कोई इच्छा हैं न कोई चाह है,
हर हालत में वाह ही वाह है।
प्रेमी हैं सत्संग में जाते, तेरी शरण में शीश झुकाते
'प्रेमानन्द' यही राग सुनाते
कि न कोई इच्छा हैं न कोई चाह है,
हर हालत में वाह ही वाह है ।

जहाँ पूर्ण समर्पण हो वहाँ बिलकुल हर हालत में वाह ही वाह है। लेकिन एक उससे भी बढ़कर पहुँचना है कि Thy will be done तो हो गया। लेकिन भगवान् जब मेरी तो कोई इच्छाएँ हैं ही नहीं Thy will is my will and now mywill be done. ध्यान देना, मेरी इच्छा कुछ नहीं और तेरी इच्छा मेरी इच्छा बन गई। तेरा दिया हुआ दुःख मुझे प्यारा है। तेरी दी हुई कंगाली मुझे प्यारी है। तेरी दी हुई खुशहाली मुझे प्यारी हैं। तेरा दिया हुआ सुख मुझे प्यारा है। और तेरा दिया हुआ दुःख भी मुझे प्यारा है। तेरे फूल भी मुझे प्यारे हैं और तेरे दिये हुए काँटे भी मुझे प्यारे हैं। इन सब चीजों को सोचते हुए वह कहता हैं कि पहले तो मैं अपनी इच्छा पूर्ण करना चाहता था लेकिन अब मेरी कोई इच्छा नहीं रही। मैने हर बात तेरी इच्छा में समा दी। जब मेरी इच्छा तेरी इच्छा में समा दी। और तेरी इच्छा मेरी इच्छा हो गई तो अब तो मेरी ही इच्छा पूर्ण होती रहेगी। तेरी इच्छा का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। इसलिए जीवन के अन्दर अपने-आपको उस हस्ती में इतना लीन कर दो, अपने-आपको कर्म का इतना समर्पण कर दो कि संसार के अन्दर सब कर्म

करते हुए भी, क्योंकि तुम्हें दुःख कहाँ हो रहा है ? जहाँ तुम संसार की हर चीज को वास्तविकता मान रहे हो, जहाँ तुम्हें सुख है नहीं वहाँ तुम सुख मान रहे हो। दुःख का कारण क्या है ?

एक छोटी सी मिसाल देकर समाप्त करता हूँ। बड़ी अच्छी तरह समझ आ जायेगा। एक सेठ की कोठी के अन्दर एक किरायेदार सेठ रहता था। एक दिन उस सेठ की लाटरी निकल गई। और उस लाटरी में ५०,००० रु० आया। उसने सट्टा खेला था। वह ५०,००० रु० लेकर जब घर में आया तो सेठानी से कहा कि आज ५०,००० कमा कर लाया हूँ। सेठानी के मन में लोभ का तीर लगा। उसने कहा, पतिदेव अगर पचास हजार कमा लाये हो तो इसमें मेरा क्या हिस्सा है। सेठ ने कहा, सभी तुम्हारा है, इसमें मेरा क्या है भाई। मै तो जो कुछ कमा के लाता हूँ तेरे हाथ में रख देता हूँ। तू घर की रानी हैं, तू घर का खर्च करती है, मेरा उसमें क्या है। सेठानी ने कहा, नहीं-नहीं, मैं इसमें से एक हीरे का हार बनवाना चाहती हूँ। वह बोला, बहुत अच्छी बात है, हीरे का हार बनवा दिया जायगा। हीरों का हार दूसरे दिन बनकर आ गया। जब दस हजार रुपये का हार लेकर सेठ आया तो सेठानी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा, सेठानी की खुशी की हद न रही। उसे कोई कमी महसूस न होने लगी। और वह अपने-आपको बड़ा भाग्यवान समझने लगी। इन्सान सुख में फूल जाता है। मैंने पहले भी कहा कि सुखी इन्सान को भाग्यवान मान लेना बड़ी भारी गलती है। क्योंकि सुख तो

पुण्यों का खर्चा है। सुख तो केवल खर्चा-ही-खर्चा है कमाई नहीं। तव उस समय जिस समय उसने हार देखा, वैसे भी संसार के अन्दर, खासकर माताओं के अन्दर यह वृत्ति होती है कि कोई चीज मिली, पहले कोई देख ले। कोई साड़ी खरीदी जाय, कोई जेवर बनवाया जाय तो जब तक पड़ोसन को न दिखा दिया जाय शान्ति नहीं आती। खैर उसने हार को ले लिया तो मकान-मालिक की सेठानी को दिखाने गई। दूसरी को दिखाया, तीसरी को दिखाया। अब जो मकान-मालिक था वह भी अच्छा सेठ था। पर इतना रुपया उसके पास नहीं था। खैर रात को जब मालिक-मकान दूसरा सेठ घर आया तो सेठानी जो आग-बबूला हो चुकी थी, कहती है, क्या गज़ब हो गया ! मेरे घर में जो किरायेदारिन सेठानी रहती है वह तो दस हजार का हार पहन ले और मैं हार से वंचित रह जाऊँ। अब लोभ का तीर लग गया। वही घर जो स्वर्ग वना हुआ था नरकमय बन गया। घर में हँसने के बजाय क्लेश होने लगा। उस सेठ ने कहा, भई हमारे पास इतना रुपया नहीं है, हम कहाँ से तुम्हें हार बनवा दें ? यह सब पुराने बाप-दादाओं की कोठी बनी हुई है, जिसके अन्दर हम गुज़ारा कर रहे हैं। अब बोलो भाई, हमारे पास इतना पैसा कहाँ कि हम तुम्हें दस हजार का हार पहनवा दें। लेकिन वह तो घर-क्लेश का कारण बन गया। वहाँ दिन-रात क्लेश होने लगा। जब भी बात हो मुझे हार चाहिए। यह माताओं के बस में होता है, यह घर की रानी के बस में होता है कि चाहे तो घर को स्वर्ग वना डाले और चाहें तो नरक बना

डाले। अब उस समय जबकि रोज घर में क्लेश चलता रहा तो आखिर एक दिन सेठानी से रहा न गया। उसने यह कह दिया कि आज रात तक अगर मेरे हार का प्रवन्ध न हुआ तो मैं आज रात को ज़हर खाकर मर जाऊँगी। लेकिन भाई ज़रा ध्यान रखना, इन्सान क्रोध के अन्दर वहुत कुछ कह दिया करता है। केवल कहने के लिए मरने के लिए नहीं। वह एक बात बीच में आ जाती है। जैसा कि कई बार कहा—

ज्यों केले के पात में पात पात में पात।
त्यों संतन की बात में बात बात में बात।।

तो बात में बात आ गई। एक सेठानी को वहुत गुस्सा चढ़ गया और वह क्रोध के अन्दर बाज़ार में गई। दुकानदार से जाकर कहती है, ओ भाई, मुझे चार आने का संखिया दे दो। दुकानदार ने देखा कि माई को गुस्सा आया हुआ है। अगर इसको संखिया दे दिया तो वह घर जाते ही खा लेगी। उसने कोई और चीज पुड़िया में बाँधकर दे दी। घर में जाकर उसने वह संखिया खा लिया। उस समय तक तो क्रोध था। क्रोध में इन्सान अपने-आपको भूल जाता है। संखिया खाने से वह मरी नहीं। तो दो-चार घण्टे बाद उसका गुस्सा उतर गया। अब लगी सोचने, अरी पगली, तूने यह क्या किया? अरे संखिया खा लिया। अब मर जायगी। अब तेरे पुत्रों का क्या वनेगा? परिवार का क्या बनेगा? बड़ी चिन्ता में रोने लगी। रात गुज़र गई। सुबह उठके वह सोचने लगी, अरे संखिया खाया पर मरी नहीं। भगवान् की तो बड़ी कृपा हुई। लेकिन दुकान-दार ने तो यह मेरे साथ धोखा किया। कम-से-कम जाकर

भाई से चवन्नी तो वापिस ले आऊँ। वह दुकानदार के पास पहुँची और कहने लगी, ओ भाई, मेरी चवन्नी तो वापिस दे दे। तूने खामख्वाह मेरे साथ धोखा किया। तूने तो संखिया नहीं दिया। दुकानदार ने कहा, मैंने संखिया दिया। कहने लगी, मै तो मरी नहीं। उसने कहा, तुमने मरने वाला संखिया कब माँगा था? तुमने क्रोध उतारने का संखिया माँगा था, और वह मैंने तुझे दे दिया। तो भाई, कहने का मतलब है कि जब घर में क्लेश हो रहा था। उसने जब कहा कि मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। हम अपने प्रसंग की ओर आते हैं। लेकिन जब वह सेठ बहुत दुःखी होकर घर से गया तो रास्ते में उसका एक मित्र मिल गया। वह कहने लगा कि प्यारे इतने दुखी क्यों हो? सेठ ने कहा, बस पूछो नहीं, बुरी हालत है। घर पर आजकल नरक बन चुका है। अब तो पत्नी भी ज़हर खाने को तैयार है। उसने पूछा, क्या बात है? सेठ ने सब बात कह सुनाई। उसने कहा, अरे यह भी कोई बात है? मैं तुम्हें युक्ति बतलाता हूँ, मै तुम्हें रास्ता बतलाता हूँ। अरे बाज़ार से नकली हीरों के हार बहुत बढ़िया मिलते हैं। तुम्हारी पत्नी कोई जौहरी का काम तो जाननी नहीं। तुम बढ़िया नकली हार लेकर जाओ, जो उससे भी ज्यादा चम-कीला हो। दो-चार दिन में इसका सारा प्रबन्ध कर लेना। उसने सारी युक्ति बतादी। दफ्तर पहुँचते ही उसने घर टेलीफोन कर दिया कि मैंने तुम्हारे लिए हीरों के हार का बन्दोबस्त कर दिया है। आज हीरों के हार का आर्डर दे दिया है। कहीं तुम ज़हर न खा लेना क्योंकि मैंने तुम्हारी आज्ञा का

विचार करते हुए, तुम्हारा खयाल करते हुए ही हीरों के हार का आर्डर दे दिया है। तीन-चार दिन तक वह टालता रहा कि आज हार बनेगा, आज हार बनेगा। आखिर चार दिन बाद उसने कहा कि आज रात को मैं तुम्हारे लिए हीरों का हार लेकर आऊँगा। और अपने ड्राइंग रूम के अन्दर जान-बूझकर २०० पावर की लाइट जलाकर गया। वहाँ रात को देर से १० बजे हीरों का हार हाथ में लेकर घर आया। और जब घर पहुँचकर कमरे के अन्दर लाइट में हार खोला तो आँखें चौंधियाने लगीं। सेठानी ने पूछा, कि यह हार कितने का है ? सेठजी ने कहा, खयाल रखना, यह हार दस हजार रुपये का है। मैंने तुम्हारी एक बात मान ली सो अब तुम मेरी एक बात मान लो। वह बोली, क्या बात है तुम्हारी ? सेठजी कहने लगे कि यह हार अब सबको मत दिखाना। आजकल ज़माना खराब है। किसी का एतबार नहीं कि न जाने किस समय इसको कोई उठा ले जाय। तुम यह हारहर एक को मत दिखाती फिरना। वह बोली, अच्छी बात है। चिन्ता न करो मैं तुम्हारी बात को मानूँगी। जब कोई व्याह-शादी का मौका होगा तो पहनकर जाऊँगी। आखिर व्याह-शादी का मौका आया। दो-चार दिन के बाद कहीं शादी थी। उसने अपनी सहेलियों को टेलीफोन किया कि तुम चारों-पाँचों आ जाना। जिस समय बात हो रही थी उस समय नौकर खड़ा होकर ये सब बातें सुन रहा था। उसने सोचा, दस हजार रुपये का हार घर में आया, कोई मौका आये तो मैं इसको उड़ाकर ले जाऊँ। अब नौकर इस ताक में रहने लगा।

आखिर वह दिन आ गया जब सेठानी को शादी में जाना था। उसने चार बड़ी सहेलियों को बुलाया। उसने चार बजे बड़े चावसे वह हार निकाल dressing table के ऊपर खूँटी पर टाँग दिया और स्वयं स्नान करने को चली गई। जब वह स्नान करने गई उस समय तक सहेलियाँ पहुँची नहीं थीं। नौकर ने देखा कि मौका है। झट हार जेब में डाला और रफूचक्कर हो गया, जब सेठानी स्नान करके dressing room में मेज के पास ज्योंही आई तो देखा कि वहाँ पर हार नहीं है। परन्तु ऐसा जीवन के अन्दर जैसा कि अभी महाराज बतला रहे थे कि जिसमें हमारी ममता हो जाती है उसके वियोग की पीड़ा हमारे लिए असह्य हो जाती है। उसकी हार में इतनी ममता बन चुकी थी कि ज्योंही उसने हार को न देखा तुरन्त बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी। जब सहेलियों ने आकर देखा तो वे पानी-वानी मुख में डालकर पंखा झलने लगीं। पर वह ज्योंही उठती है फौरन बेहोश हो जाती हैं। सेठ को टेलीफोन किया गया। वह तुरन्त घर पहुँचा। जिस समय सेठ घर आया उस समय सेठानी बार-बार बेहोश हो रही थी। बेहोश होते-होते बुरी हालत हो रही थी। सेठ पंखा झलने लगा। अरे पगली क्यों दुःखी होती है। ऐसे हार तो मैं तुझे कई बनवाकर दे दूँ। चिन्ता क्यों करती है? अरे दस हजार की तो क्या बात है? कई दस हजार तेरे लिए भेट कर दूँगा। अब सेठ हँसता है। सेठानी बार-बार बेहोश होती है। अब ज़रा सोचिए कि सेठ को क्यों दुःख नहीं? और सेठानी को क्या दुःख है, क्यों दुःख है? क्योंकि सेठ तो हार की वास्तविकता

को, reality को जानता है और सेठानी हार को सत्य मान रही है। सेठ तो उस हार को. असत्य मान उसको मिथ्या मान रहा है। तो भाई जब तक तुम दुनिया के सुखों को सत्य मानते रहोगे तब तक ठोकरें खा-खाकर बेहोश होते रहोगे। और जब इसकी reality को समझ जाओगे तब यह तो नकली हीरे हैं, यह तो नकली सुख है। जब इसके तत्व को समझ जाओगे तब कोई चिन्ता की बात नहीं रह जायेगी। सेठ की तरह मजे से जी सकोगे।

आठ

रहें आजाद या जग में हमें दुनिया से यारी क्या ?
जो भूले सुधि तन मन की उसे पितु-मात-नारी क्या ?
जो तालिब हैं दुनिया के भटकते दर-ब-दर फिरते
हमारा राम हममें है हमको बेकरारी क्या ?
किया है प्रेम दीवाना प्रभु रग रग में व्यापक है
पिया बिछड़े न पल हमसे हमको इन्तज़ारी क्या ?
गलाया अपने आपको मिटाया प्रेम में जिसने
सकल संसार घर अपना किसी से रिश्तेदारी क्या ?
तेरे मेरे की रस्सी में बँधा बैठा ज़गत सारा
दुई को दूर जब कीना किसी से नातेदारी क्या ?
नहीं मतलब है भोगों से हमें जग में ये 'प्रेमानन्द'
कटी जंजीर जब दुई की हमारी क्या तुम्हारी क्या ?
रहें आजाद या जग में हमें दुनिया से यारी क्या ?

जीवन के अन्दर विचार चल रहा था कि मानव-जीवन की सफलता किस प्रकार हो सकती है ? मानव-जीवन पूर्ण कैसे हो सकता है ? और मानव-जीवन के अन्दर हम अपने

लक्ष्य तक कैसे पहुँच सकते हैं ? कल हमने विचार करके देखा था कि हमारी गिरावट का कारण हमारा मन होता है। हमारे दुःखों का कारण हमारा मन होता है और जब तक हम अपने मन के स्वामी नहीं बनते, जब तक अपनी देह के स्वामी नहीं बनते, जब तक हम अपनी इन्द्रियों के ठाकुर नहीं बनते उस समय तक हम संसार में ठोकरें खाते रहेंगे। मैंने कल बतलाया था कि जिन्दगी तुम्हारे लिए है, संसार के सारे पदार्थ तुम्हारे लिए बनाये गए। और संसार की हस्ती, अस्तित्व भी तुम्हारे लिए है। इसलिए एक जगह पर कहा कि ऐ प्यारे, जिन्दगी के अन्दर, अपने ही अन्दर उस चीज को खोजने की कोशिश कर, जिसको तू बाहर ढूँढ़ रहा है, जिसकी तलाश में तू मारा-मारा फिरना है। जिस आनन्द को तू बाहर पाना चाहता है, वह बाहर है नहीं। ध्यान देना—

"दिल की धड़कन में ही मस्ती ढूँढ़ ले
देख अपनी हस्ती में ही हस्ती ढूँढ़ ले
दिल की धड़कन में ही मस्ती ढूँढ़ ले
भेद अगर पाना है तुझको प्यार का
देखने की दिल की बस्ती ढूँढ़ ले

कहता है—

प्रेम को दीवानगी में है खुमार
बिन पिये की मय परस्ती ढूँढ़ ले
देखने को दिल की बस्ती ढूँढ़ ले
अपनी हस्ती में ही हस्ती ढूँढ़ ले
अपनी जिन्दगी के अन्दर ही तुझे जिन्दगी की खोज

करनी पड़ेगी। अपने जीवन के अन्दर ही अपने जीवन को बनाना पड़ेगा। अपनी जिन्दगी में ही तुझे अपनी जिन्दगी का ख्याल रखना पड़ेगा और इस जीवन के अन्दर ही तू पहचान सकेगा, उस जिन्दगी के अन्दर ही तू जान सकेगा कि तेरे हाथ में वह कला है, तेरे हाथ में वह ताकत है जिस ताकत से तू चाहे तो अपने जीवन को इतना महान् बना ले कि संसार तो क्या भगवान् भी तेरे आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो और चाहे तो अपने जीवन को इतना नीचे गिरा ले कि पशुता भी हैरान होने लगे, हैवानियत भी तुझसे शर्म खाने लगे। यह बार-बार मै आपके सामने इसलिए दोहराता हूँ क्योंकि इन्सान की यह महानता है। केवल मानव के हाथ ही यह ताकत है न कि देवताओं के हाथ में यह ताकत है, न पशुओं के हाथ में यह ताकत है। यह ताकत केवल इन्सान के हाथ में ही है। वह जीवन के अन्दर जो कुछ भी चाहे कर सकता है। और वह तभी कर सकता है जबकि वह अपनी भावनाओं को बलवान कर दे। अपनी भावनाओं को बलवान करता हुआ, जब उसकी भावना बलवान होती है, जब उसके ख्याल बलवान होते हैं क्योंकि इन्सान ख्यालों की उपज है। जब ख्यालों की एकाग्रता होती है, जब ख्यालों का तत्व होता है। आप देखिए संसार के अन्दर ज्यादा दुःख क्यों हैं? क्योंकि हमारे ख्याल गिर जाते हैं, क्योंकि हमारे ख्याल काबू में नहीं होते। लेकिन जब हमारे ख्याल हमारे काबू होते हैं, लोग कहते हैं मीरा ने जहर पी लिया और उसका असर न हुआ। क्या कारण है मीरा ने जहर पिया और उसका कुछ असर न हुआ। प्यारे ध्यान देना,

ख्याल की एकाग्रता का यह नमूना है, ख्याल की एकाग्रता का यह एक सबूत है। जब ख्याल एकाग्र होता है तो दुःख नहीं होता। लेकिन जब ख्याल गिर जाता है इसलिए कई बार कहा करता हूँ कि Weariness of comes not because lack of sleep but worry for sleep. थकावट कैसे होती है? नींद के न आने से थकावट नहीं होती। लेकिन नींद का ख्याल आने से थकावट आती है। आप ध्यान दीजिए किसी प्यारे की याद में, किसी प्यारे की लगन में सारी रात गुजर जाए और नींद न आती हो। लेकिन अगर प्रातःकाल यह ध्यान हो जाए कि रात को हम नहीं सोए तो उसी समय नींद आने लगती है। भूख भोजन को देखकर लगा करती है। इसलिए जिन्दगी के अन्दर विचार करने की कोशिश करे, देखने की कोशिश करे कि हमारे जितने भी ख्याल हैं, जब वे गिर जाते हैं, जब ख्यालात की अवनति होती है। इसीलिए तो एक जगह कहा है कि—

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है?"

ऐ इन्सान तू अपनी भावना को इतना महान् बना ले कि जब तेरी तकदीर बनने वाली हो, जब तेरी तकदीर लिखने को हो, जब भगवान् तेरी तकदीर लिखने को आये तो तेरे सामने तेरी तकदीर लिखी जाय, जब तेरा भाग्य लिखा जाय तो भगवान् कलम हाथ में लेकर तेरे सामने आये और कहे कि ऐ इन्सान, बतला तेरी तकदीर में क्या लिखूँ—

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर ने पहले,

खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है ?''
इन्सान की इतनी महानता बतला दी गई कि भगवान् इन्सान के सामने आ जाए। भगवान् इन्सान के सामने खड़ा होकर पूछे कि बतला तुझे क्या चाहिए और भक्त कह दे कि मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। इसी को तो कहते हैं महानता, इसी को तो कहते हैं दिव्यता, इसी को तो कहते हैं कि वह महान् है। यह इन्सान की महानता है कि वह इतना ऊँचा उठ सकता है कि देवता भी उसके आगे सर झुका दें। और इन्सान गिर भी सकता है। इन्सान का प्रवाह नदी की तरह चलता है अगर यह नदी अपने किनारों को छोड़ देती है तो सब कुछ बहाकर भी ले जाती है। बाड़े भी ले आती है और गाँव भी बरबाद कर देती है। इसलिए नदी, यही नदी power house के जरिये ऊपर चढ़ाई जाती है। और घरों के अन्दर प्रकाश करती है। शक्ति वही है, उसी शक्ति से आपके अन्दर प्रकाश हो रहा है। आपके घर-घर में current हो रही है। उसी शक्ति से जिससे प्रकाश होता है वह शक्ति अगर उसका ग़लत इस्तेमाल होने लगता है। वही शक्ति अगर नीचे की तरफ बहने लगती है तो यही शक्ति का दुरुपयोग हो जाता है। जहाँ शक्ति का दुरुपयोग हो जाता है वही शक्ति जो किसी समय प्रकाश का कारण थी विनाश का कारण बन जाती है। जिन्दगी के अन्दर इसी प्रकार अगर हम देखेंगे, इसी प्रकार अगर हम विचार करेंगे तो हम देखेंगे कि हर चीज़ अपनी मंजिल को बढ़ रही है, हर चीज अपनी source की ओर बढ़ रही है। कोई भी ऐसी चीज नहीं जो अपनी मंजिल

की ओर न जा रही हो। हर चीज बह रही है—

बह रहे हैं दरिया समुन्दर की तरफ दिन रात
जो प्रभु प्रीतम मिला दे वह प्रेम के जज़्बात है

दरियाओं को देखो कितनी बेचैनी हैं। नदियों को देखो कितनी बेचैनी में हैं। नदियों को देखो ये क्यों नहीं ठहरना जानतीं। बूँदों को देखो ये क्यों ठोकरें खाती हैं पहाड़ों पर क्योंकि अपने सागर से बिछुड़ चुकी हैं। हर चीज का प्रवाह अपनी source की तरफ जाता है। हर चीज का प्रवाह अपने बम्बा की ओर जाता है। इसलिए हो सकता है कि इन्सान कुछ समय के लिए भटक जाय, कुछ समय के लिए इधर-उधर घूम जाय। लेकिन भाई ज़िन्दगी वह है जो उसके समर्पण हो जाए। अगर दुनिया भर के सुख भी मिल जाएँ, दुनिया भर के पदार्थ भी मिल जाएँ लेकिन अगर उसका वास्तविक सार न मिला तो जिन्दगी का लाभ नहीं। इसलिए एक जगह पर कहा है ध्यान देना—

सुख सम्पदा लेकर क्या करूँ तेरे शरण आया न जो
मैं स्वर्ग में रह क्या करूँ तेरे चरण आया न जो

कहता है—भगवान्, स्वर्ग बहुत कम है। स्वर्ग भी इन्सानियत की बहुत कम कीमत है। क्योंकि स्वर्ग पुण्यों का खर्चा है। कुछ पुण्य किये तुम्हें महल मिल गया। महल में भोगों के सामान मिल गये। तुमने भोगों को भोगा और फिर नीचे गिरे। इसलिए भक्त कभी स्वर्ग नहीं माँगता।

सुख सम्पदा ले क्या करूँ तेरी शरण आया न जो

स्वर्ग में रह क्या करूँ तेरे चरण पाया न जो
क्या लाभ है गायक बनूँ विद्वान् कवि वक्ता बनूँ
रोमांच से गर दो-चार पल तेरा सुयश गाया न जो
क्या लाभ है आकाश के तारे समुन्दर के सभी मोती चुनूँ
क्या लाभ है तेरी शरण में गर दो सुमन लाया न जो

(अगर तेरे दरबार में दो मोती लेकर न आ सका तो क्या लाभ है ? आकाश के तारे, सारे समुन्दर के मोती चुनने से क्या लाभ हैं ?)

अरे कर इन्द्र सा शृङ्गार गर फिरता रहूँ तो क्या हुआ ।
इस देह पर गर प्राण धन तेरी पड़े छाया न जो ।
'प्रेमानन्द' वह हृदय किस काम का विषयन जगत के छोड़
दिन रात तेरे प्रेम में हे हरि लहराया न जो ।
सुख सम्पदा ले क्या करूँ तेरी शरण आया न जो
मैं स्वर्ग में रह क्या करूँ तेरे चरण पाया त जो ।

तो इसलिए जिन्दगी का सार इन चीजों में है क्योंकि हर चीज अपनी source की ओर बढ़ रही है । आप देखिए, एक पत्थर को उठाकर आप आसमान में फेंकिए । वह कभी भी आसमान में नहीं ठहरता हमेशा नीचे की ओर ही आता है । क्योंकि उसका source नीचे है, उसका बम्बा नीचे है । अग्नि को आप लाख नीचे दबाने की कोशिश करिए वह ऊपर उठती हैं । क्योंकि अग्नि सूर्य का रूप है । वास्तव में आप इन चीजों को देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि इन चीजों का सार है । तो जिन्दगी के अन्दर इन्सान कर्म करता है । और

अगर कर्म करते हुए जिन्दगी के अन्दर वह इन्सान उसका समर्पण करता चला जाता हैं तो एक दिन उसको पकड़ लेता है। क्योंकि मन पर काबू करने का सबसे पहला तरीका यही है। मैंने पहले दिन भी कहा था कि इस माया को काबू न किया जा सकेगा। माया कोई नाश होने वाली चीज नहीं है। माया को काबू का एक ही तरीका है। भाई, जैसा कि एक जगह पर कहा है—

हो जाओ तैयार ट्रेन जकशन पर आने वाली,
नारायण भज नारायण भज बनमाली

कहता है ध्यान देना—

है सत्संग बुकिंग आफिस और बुकिंग क्लर्क है सन्त कोई
श्रद्धा दान दो नाम टिकट लो नहीं है फिर कटने वाली।

कहता है, टिकट ले लो तो क्या करना—

मन के मनीबैग में रखना

मनीबैग जानते हो न वह हाथ में रखने वाला जिसे हाथ में लेकर चलते हो।

मन के मनीबैग में रखना टिकट बचाकर चोरों से
लगेंज पुण्य टिकट यह दोनों चीज हैं लुटने वाली।

कहता है ध्यान दे—

जीवन है जंकशन जगत के प्लेटफार्म पर ट्रेन रुकी
नरक स्वर्ग उपवर्ग की लाइन है यहाँ से फटने वाली।

जंकशन किसे कहते हैं? जहाँ से लाइन कटती है। कोई इधर-जाती है कोई उधर जाती है।

ज़रा का सिगनल झुका (बुढ़ापे का सिगनल झुका) कि
सीटी (हिचकी) देकर ट्रेन चली
टाइम में पाव मिनट भी फिर ट्रेन नहीं रुकने वाली।
चित्त का चैकर बुद्धि का ड्राइवर वृत्ति का हैंडल ठीक करो
'प्रेमानन्द' फिर परमधाम तक ट्रेन नहीं है रुकने वाली।

नौ

मुझे हर गम में मुस्कराने की आदत होती जाती है।
निगाहें हसरतें साहिल से जाकर कोई यों कह दे,
मुझे तूफानों से टकराने की आदत होती जाती हैं।
पिया है जाम भर भरकर कि मस्ती का क्या हाल कहूँ,
कि तूफानों व आँधी में लहराने की आदत होती जाती है।
मुझे तूफानों से टकराने की आदत होती जाती है।।

जो लोग यह कहें कि जब हालात हमारे माफ़िक बन जाय तब हम कुछ कर सकते हैं, वे बहुत ग़लती किया करते हैं। हालात का तकाज़ा करने वाला इन्सान, हालात के ऊपर निर्भर रहने वाला इन्सान जब यह कह देता है कि हालात ने मुझे बाँध रखा है और जब मेरे हालात सुधर जायेंगे तब कहीं मैं अपनी मंजिल की ओर बढ़ सकूँगा। तो वे लोग बहुत ग़लती पर हुआ करते हैं। क्योंकि आपके सामने पहले भी यह कहा था कि One who complains of the circumstances is yet to be a man.

जो इन्सान यह कहता है कि फलां वस्तु ने मुझे बाध कर

रखा है। जब मेरे हालात सुधर जायेंगे, क्योंकि अकसर लोग यह कहा करते हैं कि महाराज क्या करें हम चाहते तो हैं भजन करना, हम चाहते तो हैं भगवान् के रास्ते में बढ़ना, हम चाहते तो हैं आत्म-तत्व को जानना पर क्या करें महाराज संसार ने बाँध रखा है। महाराज बच्चों ने बाँध रखा है। फलाँ चीज ने बाँध रखा है। ऐ इन्सान, ये चीजें हमें बाँध सकती हैं? विचारकर अपनी शक्ति की ओर ध्यान दें तो यह सोच कि इन सब चीजों ने तुझे बाँध रखा है या तूने इन चीजों को पकड़ रखा है। क्या संसार तुझे बाँध सकता है? क्या परिवार तुझे बाँध सकता है? क्या दुनिया के पदार्थ तुझे बाँध सकते हैं? तूने ही इनको पकड़ रखा है। एक सन्त के पास एक रोज एक सज्जन आये और कहने लगे, महाराज, मुझे बड़ी जिज्ञासा है कि किसी प्रकार भगवान् के चरणों में लग जाऊँ। लेकिन महाराज, क्या करूँ बिलकुल बन्धन में हूँ। महाराज, हरएक मुझसे इतना प्यार करता है वह कहने लगा कि महाराज मैं सबके बन्धन में हूँ। बन्धन मुझे छोड़ता नहीं। बोलो महाराज क्या किया जाय? सन्त चुप कर रहे। बोले अब क्या कहें? अगर उसको कहें कि भई यह जो तेरा नाता है यह सब तेरा स्वार्थ है उसमें वास्तविकता का सम्बन्ध नहीं।

प्रभु बिन कौन है तेरौ जगत् में?

कहता है—

निज तन भी तेरो साथ न देवे और भला को जग में।
निज स्वार्थ की सबने बाँधी बेड़ी तुम्हारे पग में।

एक गुरु है मीत तुम्हारो राह बाट और डग में।
'प्रेमानन्द' यह निश्चित जानो स्वारथ है रग रग में।

तो मानव-जीवन के अन्दर जो यह विचार करते हैं। अब संत ने सोचा कि मै इनको कैसे कहूँ कि ये तुझे नहीं बाँध सकते। शायद यह ऐसा न माने। तो सन्त ने एक युक्ति सोची। दूसरे दिन जब उसे दूर से आते हुए देखा तो सन्त ने पेड़ की एक शाखा को जोर से पकड़ लिया और चिल्लाने लगे, आओ भाई आओ, मुझे जल्दी बचाओ, मुझे पेड़ ने पकड़ रखा है। यह मुझे छोड़ता नहीं, जल्दी आओ। भाई. वह सज्जन भागा आया। आकर देखा महाराज क्या कर रहे हो ? पेड़ को क्यों नहीं छोड़ते। वह बोले, मै तो छोड़ना चाहता हूँ, मेरी तो बहुत इच्छा हैं। मैं तो लटक रहा हूँ। लेकिन यह पेड़ नहीं छोड़ता। वह कहता है, यह तो महाराज, आपकी बुद्धि का भ्रम है। पेड़ तो जड़ वस्तु है महाराज, यह आपको कहाँ पकड़ सकती है। सन्त ने झट छलाँग मारी और कहने लगे, अरे मूर्ख, संसार भी तो जड़ है, यह प्रकृति जड़ है, ये इन्द्रियाँ जड़ हैं और मन जड़ है। अरे पगले, ये तुझे कहाँ पकड़ सकती हैं। तुमने इनको पकड़ रखा है। संसार के अन्दर संसार की कोई भी वस्तु इन्सान को नहीं पकड़ सकती। यह इन्सान की महानता है। लेकिन इन्सान केवल अपने विचारों से बँध जाता है, अपने ही विचारों के बन्धन में आया हुआ है। और यदि दूसरे शब्दों में मैं यह कह दूँ कि वह बन्धन में भी नहीं आया, बन्धन में आया हुआ मान रहा है। यह दुःखी नहीं है लेकिन दुखी हुआ मान रहा है। यह मर नहीं रहा लेकिन मरता हुआ

मान रहा है। और जब तक भई हमारे अन्दर यह बहुत बड़ी गलती रहती है, ध्यान देना जिसको हम जानते हैं उसको हम मानते नहीं, जिसको हम मानते हैं उसको हम जानते नहीं। जरा ध्यान रखना, जीवन के अन्दर जिस-जिसको मान रहे हैं उसको हम जानते नहीं और जिस-जिसको जान रहे हैं उस-उसको मानते नहीं। इस मानने और जानने के खेल के अन्दर माने हुए आ रहे हैं। बचपन से मानते चले जा रहे हैं और मानते-मानते जीवन बीत जाता है। और जानने की हम कोशिश नहीं करते। ध्यान दीजिए, इस बात पर आप इस सत्संग के अन्दर बैठे हुए हैं। जो मैं कह रहा हूँ वह आप मान रहे हैं न ? मान रहे हो कि नहीं, ईश्वर को मान रहे हो न ? और यहाँ पर यह भी मान रहे हो कि शान्ति संसार के भोगों में नहीं है, संसार के पदार्थों में नहीं है, संसार की वस्तुओं में नहीं है ? यह भी यहाँ पर मानते हो कि सब मर जायेंगे। जिसको दुनिया मौत कहती है अरे ये सब चीज़ें नाशवान हैं, यह भी सब मानते हो। यह भी मानते हो कि शान्ति ईश्वर को पहचानने में है, आत्म-तत्व में है, शरणागति में है। अगर आप सब यह मान रहे हों, बिलकुल पक्की बात है भाई, अगर आप यहाँ बैठे सब मान रहे हो तो क्या तुमको यहाँ बैठे हुए दुःख है। किसी को इस वक्त इस मिनट में, अगले मिनट की बात नहीं कहता, दुःख नहीं है न ? क्यों ? क्योंकि मान रहे हो न ? ध्यान देना, मेरी बात पर माने हुए ईश्वर की मानी हुई शान्ति का अनुभव कर रहे हो इस वक्त। लेकिन यहाँ से बाहर निकले, राजवाड़ा gate से बाहर निकले, माना हुआ

ईश्वर गया चूल्हे में और माना हुआ संसार सामने आ गया। आ गया कि नहीं आ गया ? जब माने हुए ईश्वर के साथ मानी हुई शान्ति का अनुभव किया तो माने हुए संसार के साथ माने हुए सुखों और दुःखों से बच सकोगे ? बात गहरी है ज़रा इस पर ध्यान देना। यहाँ बैठे हुए मान रहे हो ईश्वर को। और ईश्वर को मानकर ईश्वर की मानी हुई शान्ति भी अनुभव कर रहे हो। लेकिन ज्यों ही बाहर निकलते हो माना हुआ ईश्वर खत्म हो जाता है और माने हुए ईश्वर के खत्म होने पर माना हुआ संसार सामने आ जाता है। और माने हुए संसार के साथ संसार के माने हुए सुख और दुःख सामने आ जाते हैं—फलाँ आदमी बीमार पड़ा है, फलाँ व्यापार में घाटा है, फलाँ बात में चिन्ता। और जितनी चिन्ताएँ कीं। क्योंकि सत्संग में बैठे हुए हम ईश्वर की मानी हुई शान्ति का अनुभव करते रहे। वहाँ से बाहर निकलते ही भई, माने हुए संसार के माने हुए दुःख से हम दुखी हो गये। अब भई क्या करोगे ? अगर माने हुए संसार को जान लो। यदि माने हुए संसार को जानते तो शुरू से ही, बच्चा पैदा होता है तो हम मानना शुरू कर देते हैं। शुरू में बच्चे को माँ सिखाती है। कह, मेरी माँ; बेटा कह, मेरी माँ। जब बच्चा तोतली जबान में मेरी माँ को मेली माँ कह उठता है, तो बस उस दिन तो माँ की खुशी का ठिकाना न समझो। और जिस समय बच्चे ने एक बार कह दिया मेरी माँ, तो पहुँच गई सातवें स्वर्ग में कि मेरे जैसा तो कोई खुश नहीं। मगर किसी ने कह दिया है—

न माँ मेरी है न माँ तेरी है।
और वह तो अन्तभस्म की ढेरी है ॥

अन्त तो खाक की पुतली ही है, अन्त में तो खाक में ही जाना है। तो कहता है भाई, बच्चे ने कह दिया मेरी माँ, थोड़ा बड़ा हुआ तो माँ के साथ डैडी को भी पहचानने लगा। और अब पिता भी मानने लगा, यह मेरा पापा है, यह मेरा डैडी है। और उससे थोड़ा बड़ा हुआ तो उसने कहा यह तेरा चाचा है, यह मामा है, यह दादा है और सब सम्बन्धी बतलाने लगे। बड़ा होते-होते और बड़ा हुआ और सब मान रहा है, ध्यान देना, माने जा रहा है और बिलकुल माने जा रहा है। जाना नहीं उसने, माने जा रहा है। आखिर थोड़ा जवान हुआ दादा बिछड़ने लगा तो पोता पास में बैठा कहता है, कहाँ जाते हो। वह कहता है, बेटा, अब तो जाता हूँ संसार से। उसने कहा, दादा, तुम तो कहते थे मैं तुम्हारा दादा हूँ। वह कहता है मेरी बात नहीं मानते बेटा, क्या कहूँ। इस संसार में कोई भी बच नहीं सकता। कोई किसी का नहीं। देखिए, सारी उमर तो संसार में सिखलाते रहते हैं कि तू मेरा हैं। और मरते समय सब कहते जाते हैं कि कोई किसी का नहीं। इसलिए एक जगह कहा है—

सारी उमर तो झूठ बुलावे, सच्च के बोले गत बनावे।
और अन्त समय पर सच्च बतावे, रहे न सुनने वाले प्रेमी।

जब जिसको सारी उमर यह बताते रहे तू मेरा हैं। बेटा कहता आप मेरे पिता हैं। पत्नी कहती है कि आप मेरे पति हैं। बाप कहता है पुत्र तू मेरा है। और जिस समय उसी बाप

को, उसी पति को, उसी पिता की लाश को लेकर श्माशान में जाते हैं तो रास्ते में कहते हैं भाई, 'राम-नाम सत्य है—प्राणी तेरी गत है'। सारी उमर तो झूठ बुलवाया। उसको झूठ सिखलाते रहे। और जब विचारा सुनने वाला न रहा तो उसको सच्चा सुनाने लगे। फिर पिता के जाने की भी बारी आ गई। पत्नी आ गई। पण्डितों ने उसके व्यवहार का रसम पढ़ा। और रसम पढ़ने के बाद यह कह दिया कि यह तेरी पत्नी है। उसने मान लिया यह मेरा पति है। सब नाता चलने लगा। सब माने जा रहा है और जानने की किसी ने कोशिश नहीं की। और मानते-मानते फिर किसी ने किसी को पुत्र माना। संसार के सुख माने, संसार के दुःख माने। किसी चीज़ में सुख मान बैठा किसी चीज़ में दुःख मान बैठा। इससे मुझे सुख हो रहा है इससे मुझे दुःख हो रहा है। और सुख-दुःखों को मानता चला आया। कभी उसको जानने की कोशिश नहीं की। आखिर यह सुख कहाँ है? दुःख कहाँ है? सुख क्या है? दुःख क्या है? नाता क्या है? मेरा इससे सम्बन्ध क्या है? मैं किस लिए यहाँ पर आया हूँ? यह कभी जानने की कोशिश भी न की। माने चला जा रहा है। बाप को जाते हुए देखा। देख लिया बाप जा रहा है। लेकिन फिर भी मन में यह होश न आया। इसलिए तो गुरु नानकदेव ने कहा,

"इक बिनसे इक अस्थिर माने अचरज लखया न जाय"

कहता है मैं देख-देखकर हैरान होता हूँ कि जाने वाला जा रहा है। और देख रहे हैं जाने वाले को। और आने वाला मुट्ठी बाँधकर आता है अभिमान करता हुआ कि सारे संसार को

मुट्ठी में बन्द करके ले जाऊँगा और जाने वाला निर्माण होकर कहता जा रहा है कि वह खाली हाथ जा रहा है। जाने वाले को देख रहे हैं, आने वाले को देख रहे हैं और फिर भी हम यह सोचते हैं कि हम हमेशा रहने वाले हैं। बिलकुल ठीक है भाई। बात ठीक है यदि हम यह समझ जायँ कि हम हमेशा रहने वाले हैं तो भी रोना न पड़े। लेकिन जान तो जायँ कि हम हमेशा रहने वाले हैं। लेकिन वह भी हम मानें आ रहे हैं। इसलिए भाई मैं कह रहा हूँ कि इस संसार के माने हुए दुःखों को जान जाओ तो माने हुए दुःख खत्म हो जायेंगे। अगर इसी प्रकार इधर तो मान रहे थे न संसार को और उधर मान रहे हो ईश्वर को। तो अगर संसार को मान लोगे, अगर संसार को जान लोगे, माने हुए संसार को जान लो तो जितने माने हुए दुःख हैं वे सब खत्म हो जायेंगे। और अगर ईश्वर को, जिसे तुम मान रहे हो, उसको अगर जान लोगे, अरे मान नहीं पहचान लोगे तो जितनी तुम्हारी शान्ति है, वह परम शान्ति में बदल जायगी। उधर माने हुए दुःख खत्म हुए, इधर परम शक्ति प्राप्त हुई और परमानन्द की प्राप्ति हुई, जीवन का लक्ष्य पूरा हुआ, जिन्दगी अपनी मंज़िल पर पहुँच गई। तो इसलिए भाई, मानव-जीवन के अन्दर इस तत्व को विचार करने की कोशिश करो। कब से हम माने चले आ रहे हैं कि किसी ने युधिष्ठर से पूछा, What is the most wonderful thing in the world ? तो युधिष्ठर ने कहा कि We see every body dying daily and still we cling to life. हरएक को हम रोज़ मरते हुए देखते हैं

और फिर हम जिन्दगी से चिपट रहे हैं। तो भाई इसलिए इस तत्व को विचारने की कोशिश करो। मानो नहीं। मैं इसीलिए कई बार कहा करता हूँ कि भाई, मेरी बात माना मत करो। जानने की कोशिश करो मानकर मत जाओ। मानते-मानते तुमने जीवन व्यतीत कर लिया, मानते-मानते बरसों गुजर गये। जानने की कोशिश करो। और जब तक जानोगे नहीं, जानकर पहचानोगे नहीं तब तक जिन्दगी के अन्दर मंजिल न मिल सकेगी। भाई, हमने न जाने जीवन में क्या-क्या मान रखा है। अपने सुख को कहीं मान रखा है, अपने दुःख को कहीं मान रखा है। लेकिन जब तक इस तत्व को न पहचानोगे और पहचानना पड़ेगा इस संसार की गड़गड़ाहट के अन्दर, इस संसार की चनचनाहट के अन्दर, संसार की चिल्लाहट के अन्दर ही हमें पहचानना पड़ेगा। जो यह समझे कि संसार के दुःख खत्म हो जायेंगे तो मै भगवान् की ओर चल पड़ूँगा या संसार के झमेले ख़त्म हो जायेंगे। झमेलों के अन्दर ही कोशिश करनी पड़ेगी।

दस

ऐ साक़ी मुझे राम का दीवाना बना दे
दीवाना बना दे मस्ताना बना दे
आग़ाज़ की दुनिया है न अन्ज़ाम की दुनिया
ऐ शमाए हक़ीकी मुझे परवाना बना दे
ओ देखने वालो मुझे हँस हँस के न देखो
तुमको भी कहीं उल्फ़त मुझसा न बना दे
मैं दिल से पपीहे तेरी आवाज़ के सदके–
दो लफ़्ज़ों में मेरा भी अफ़साना बना दे
कुछ मुझसे ना पूछो मेरी दुनिया ही जुदा है
मयख़ाने को मेरे लिए पैमाना बना दे—
इन आँखों में जादू भी है मस्ती भी, अदा भी,
इन आँखों से कुल दुनिया का दीवाना बना दे
'प्रेमानन्द' हरगाम पे अब सज़दाए मस्ती
हर संग को तू दरे जानाना बना दे
दीवाना बना दे मुझे मस्ताना बना दे

यह प्रसंग चल रहा था कि जीवन जब किसी का हो जाता है, जब मानव-जीवन में शरण गति आ जाती है, मानव-जीवन में

समर्पण आ जाता है। तो जीवन समर्पण कर देने के बाद जीवन के सारे दुःख, जीवन के सारे सुख, जीवन की सब वासनाएँ और कामनाएँ, जीवन की सब इच्छाएँ ज्योंही सब उसके हवाले कर दी जाती हैं। क्योंकि जब किसी वस्तु को हवाले किया जाता है सब उस वस्तु के साथ सब सम्बन्धित वस्तुएँ भी हवाले कर दी जाती हैं। तो फिर उसका कुछ अपना बाकी नहीं रहता, उसका कुछ अपना ख्याल बाकी नहीं रहता। लेकिन जब उसका ख्याल बाकी नहीं रहता तो सारी दुनिया का ख्याल उसकी नज़रों में अपना हो जाता है—

अपने मज़े की खातिर गुल छोड़ ही दिए जब
रूहे ज़मीं के गुल्शन मेरे ही बन गए सब
निज की ग़रज़ से छोड़ा सुनने की आरज़ू को
दुनिया के राग बाजे मेरे ही बन गए सब
खुद के लिए जो मुझसे दीदों की दीद छूटी
खुद हुस्न के तमाशे मेरे ही बन गए सब
जब बेहतरी के अपनी फ़िक्रो ख़याल छूटे
फिक्रो ख्याले रंगी मेरे ही बन गए सब

जब अपना ख्याल छूट गया, जब अपनी बेहतरी का ख्याल छूट गया। तो जिन्दगी के अन्दर जब कुछ भी अपना नहीं रहता तो सब कुछ अपना हो जाता है। जब कुछ भी अपना रहता हैं, जब अपना कुछ भी बाकी रहता है तो अपना कुछ भी नहीं रह सकता। इसलिए जिन्दगी के अन्दर, जीवन के अन्दर जब हम गहराई से जाते हैं तो हमें मालूम होता है कि मानव-जीवन का कर्म जब शुद्ध हो जाता है, मानव-जीवन के कर्म में

जब पवित्रता आ जाती है और मानव आत्म-तत्व को, काम करते हुए, दुनिया का सब काम करते हुए भी अपने स्वरूप में लीन रहता है। वह जानता है मैं तो मैं ही हूँ। यह नहीं हो सकता कि यह मैं हूँ। मेरे में कोई विशेषता नहीं होती। जब इन्सान इस आत्म-तत्व को पहचान लेता है, जब इस आत्म-तत्व तक पहुँच जाता है, जब उस प्यारे की जात में समा लेने के बाद वह अपने आत्म-तत्व को पहचान लेता है। उसको जिसको वह जुदा समझता था

"ढूँढ़ता फिरता था जिसको आसमानों में ज़मीनों में
वह निकला मेरे ही के ज़ुल्मते खाना दिल केमकीनों में,
हकीकत अपनी आँखों में नुमाया हो गई जब,
मकाँ निकला अपनी ही खानाए दिल के मकीनों में।"

जिसकी खोज करता फिरता था जंगलों और वनों के अन्दर, जिसकी तलाश हो रही थी पहाड़ों, बाड़ियों और गुफाओं के अन्दर। जिसके लिए वह मारा-मारा फिर रहा था आखिर वह मिला तो कहाँ मिला? अपने ही घर के अन्दर, अपने ही घर के अंधेरे के अन्दर। क्योंकि अपने ही घर में अन्धेरा छाया हुआ था। घर में दोषों का अन्धकार था। घर में विषय-वासनाओं का अन्धकार था। घर में भोगों का अन्धकार था। घर में रोगों का अन्धकार था। उस अन्धकार में मुझे वह प्यारा, उस अन्धकार में मुझे वह दिलबर, उस अन्धकार में मुझे वह प्रीतम नज़र न आता था। लेकिन ज्योंही मैं उसका हो गया, ज्योंही मेरा उसके समर्पण हो गया, इतना समर्पण हो गया कि मेरी कोई ज़ाति बाकी न रही। तो कहता है

जिसको मैं बाहर ढूँढ़ रहा था वह मेरे ही अन्दर रहने लगा। वहाँ द्वैत का भेद ख़त्म हो गया कि मोह के अन्दर, in act of greed one wants to possess the object but in the act of possessing he finds that he is possessed by the object. क्योंकि इन्सान जो है वह मोही है। वह किसी को अपना दास बनाना चाहता है। लेकिन देखता है कि वह उसी का दास बनकर घूम रहा है। लेकिन प्रेम में तो दास बनने का प्रश्न यहाँ पैदा ही नहीं होता। यहाँ तो देना ही देना होता है In the act of surrenderance a beloved finds that the beloved and the Lord has become one. क्या देखता है कि प्रेमी और प्रीतम तो एक हो चुके हैं। इसलिए एक जगह पर कहा है कि—

"जब से मेरी उस प्रभु से आशनाई हो गई।

जब से मेरा उस प्रभु से प्यार हो गया, उस प्रभु से ममता हो गई तो—

बेवफाओं की भी मुझसे बावफाई हो गई।

वह इन्द्रिय भोग जो भागते फिरते हैं संसार के अन्दर जो दुनिया के विषयों में भागते थे।

कहता है—

बेवफाओं की भी मुझसे बावफाई हो गई।
शब कटी थी रोते धोते बेकरारी में मेरी।

अज्ञानता की रात, अज्ञानता के अन्धकार में मेरा जीवन रो-रोकर कटता है शब कटी थी।

सुबह होते ही शफ़क से रहनुमाई हो गई।

सुबह होते ही, प्रातः होते ही, ज्योंही जीवन का प्रात:काल हुआ तो अज्ञानता के बादल छटे और ज्ञान की लाली उत्पन्न हुई तो कहता है कि मुझे अपना मार्ग मिल गया। ध्यान देना देना क्या कहा है ?

आरज़ू थी दिल में मेरे पिया से मेरा मेल हो।

भक्त की यही आरज़ू रहती है कि किसी प्रकार पिया से मिलाप हो जाय।

आस पूरी हो गई उससे सगाई हो गई।

लेकिन सगाई से थोड़ा काम चलता है। तो कहता है—

वह मेरे सरताज मैं उनके चरण की खाक हूँ।
ना है प्रीतम की अपने मैं लुगाई हो गई।

कहता है अब क्या हुआ ? फिर—

मिट गई सब कुल्फतें मेरी पिया के दर्श से।

जितने भी कष्ट थे, जितनी भी मुसीवतें थीं, जितने भी दुःख थे मिट गये।

तेड़ा उसके दर्श से मेरी बिनायी हो गई।

मेरे जो अन्दर के दिव्य-चक्षु थे, आँखें थीं, वे उसके दर्शन से खुल गईं। फिर क्या हुआ ? कहता है—

दूर थे जब दो रहे अब दो मिलकर एक हुए,

यह भक्ति की अन्तिम अवस्था है। भक्ति की दो से पराकाष्ठा है।

दूर थे जब हो रहे ज्ञान से बस अज्ञान की दूरताई हो गई।

कहता है—

अब नहीं हैं हिरस बाकी दिल में गैरों के लिए

कहता है कि अब हमारे दिल में जगह नहीं है किसी दूसरे के लिए। इसीलिए एक जगह पर कहा है कि No real happi-hess exists in you to you devil darling a hund-red adieu. मैं माया को अक्सर devil darling कहा करता हूँ। प्यारी लगती है लेकिन आसुरी प्यारी। इसलिए No real happiness exists in you—to you devil darling a hundred adieu. कहता है मेरे दिल में अब किसी और के लिए जगह नहीं। मेरे दिल में क्यों जगह नहीं? कहता है कि He has sealed it for Him for ever. जिस मकान पर सरकारी मोहर लग जाय तो उसे भला कोई खोल सकता है। उस ताले को कोई नहीं तोड़ सकता। सर-कार कोई मकान खाली करवाती है यह evacucee प्रोपरटी के दिनों में कितने ही मकानों पर अपनी मोहर लगा देती थी फिर किसी की हिम्मत न होती थी कि उस ताले को तोड़कर अन्दर चला जाये। बड़े-बड़े धनाढ्य भी उस seal को देखकर घबरा जाते थे। क्योंकि वह जानते थे कि सील को तोड़ना अपराध है और अदालत के अन्दर हमें सज़ा मिल जायगी। इसी प्रकार जब मानव के हृदय में, भक्त के हृदय में प्रभु अपनी सील लगाये अपने हाथों से आकर तब सरकार की सील लगी हो तब ठीक है। जिस समय भी भगवान् की सील भक्त के हृदय पर इतनी सख़्त लग गई तब जितने भी दुनिया के भोग हैं, दुनिया की वासनाएँ हैं, दुनिया की तृष्णाएँ आती हैं। इसमे देखती हैं कि यहाँ तो सरकार की मोहर लगी है चलो भाई वापिस चलें, यह तो allotted मकान है। यह तो

सरकार की प्रापरटी है। इस पर किसी का कोई अख़्तियार नहीं, कोई इस पर कब्जा नहीं कर सकता। क्योंकि यहाँ तो सरकार ने मोहर लगा दी है। इसी प्रकार उसने कहा अब तुम्हारे लिए मेरे दिल में कोई जगह नहीं। क्योंकि He has sealed for Him for ever in thy net it will come never. ऐ माया, अब यह तेरे जाल में न आ सकेगा क्योंकि यहाँ अब किसी दूसरे के लिए जगह ही नहीं। तो जिन्दगी के अन्दर जब ऐसा मानव-तत्व को पहचान लेता है, भक्त का जब इतना समर्पण हो जायगा तो इसीलिए इस बात को कहा—

आपसे जब आप ही मेरी रसाई हो गई।
है हकूमत से भी बढ़कर दर्श की भिक्षा तेरी,
दर्श जिसको मिल गया बस शहनशाही मिल गई।
जब से मेरी उस प्रभु से आशनाई हो गई।
बेवफाओं की भी मुझसे बावफाई हो गई।

कृष्ण-लीला के अन्दर बड़ा सुन्दर वर्णन आता है। जो अकसर आपने सुना होगा। ध्यान देना, जिस समय श्री कृष्ण काली नाग को नथने जाते हैं। उसी समय काली नाग को नथने क्यों गये थे ? क्योंकि उसी समय उनका गेंद खेलते हुए जमुना में चला गया। और वह जब काली नाग को नथने के लिए वहाँ पहुँचे। तो वह काली नाग जिसके हजार फन हैं, उसकी नागनियाँ कृष्ण को डराती हैं। कृष्ण को धमकाती है, कृष्ण, भाग जा यहाँ से। नाग अगर उठ गया तो तेरा नाश कर डालेगा। तुझे फुङ्कार से मार देगा। ऐ कृष्ण, इसलिए

तू भाग जा यहाँ से जल्दी । लेकिन कृष्ण भागता नहीं । क्यों ? क्योंकि कृष्ण में दृढ़ता है, कृष्ण में आत्मविश्वास है । और वही नहीं, केवल हृदय ही नहीं, केवल आत्मविश्वास ही नहीं, उसके पास बाँसुरी भी है। वह बाँसुरी की मधुर तान से उसको मोहित करता है, उसको रिझा लेता है । साँप को, उस काली नाग को । और ज्योंही काली नाग उस स्वर से रीझता है तो उसी समय भगवान् उसको नथ लेते हैं । वह नाग और नागनियाँ जो पहले उसको फुङ्कार मारती थी, जो पहले उसको काटती थी, जो पहले उसको डराती थीं अब भगवान् कृष्ण की आरती उतारने लगी । पढ़ा है न भाई ? लेकिन अगर इसे अपने जीवन में ढाल लो तो भाई कितना फर्क पड़ेगा । जमुना क्या है ? शरीर रूपी जमुना । शरीर रूपी जमुना में आनन्द रूपी, शान्ति रूपी गद खो गया । सारी दुनिया आनन्द के लिए मारी-मारी फिर रही है । सारा संसार शान्ति के लिए मारा-मारा फिर रहा है न ? न जाने क्या-क्या ठोकरें खा रहा है । न जाने किधर जाता है । मिलता है या नहीं । लेकिन हर इन्सान भाग रहा है । देखते चले जाओ । आगे से पीछे, पीछे-से-पीछे देखते चले जाओ । एक-से-एक पीछे जा रहा है । हर इन्सान आगे-से-आगे बढ़ना चाहता है । भागा जा रहा है, जैसे कि किसी चीज की खोज में हो । हर इन्सान उस आनन्द की खोज में भागा चला जा रहा है । कभी कहीं जाता है । यदि वह भोगों में जाता है तो आनन्द के लिए, सुख के लिए । मिलता है या नहीं यह दूसरी बात है । सिनेमा जाता है तो सुख के लिए । शराब पीता है तो सुख के लिए,

थोड़ी देर के लिए अपने दुःखों को दवाने के लिए। जीवन के अन्दर यह सोचने के लिए कि किसी प्रकार मुझे सुख मिल जाय। अब क्या होता है ? यह शरीर रूपी जमुना के अन्दर आनन्द रूपी गेंद खो गया है। और कृष्ण कौन है ? कृष्ण कौन है वह कृष्ण करने वाली चेतन सत्ता—पर वह परम आत्मास्वरूप, वह आतमस्वरूप निज रूपी कृष्ण, वह आत्मा-कृष्ण इस शरीर रूपी जमुना में छलाँग लगाता है गेंद लेने के लिए। और वह गेंद किसने रख लिया है अपने मुख में। मन रूपी काली नाग ने। जिसके हजारों संकल्पों के और विकल्पों के फन हैं। हजारों संकल्पों और विकल्पों के फल हैं उस कालीनाग ने इसको रख लिया है। और जिस समय यह आत्मा-रूपी कृष्ण इस मन को काबू करने चलता है तो जितनी भी इन्द्रियाँ हैं वे सारी जागृत हो जाती हैं। इन्द्रियाँ डराती हैं। तभी तो कहते हैं न महाराज, आगे-पीछे तो ध्यान नहीं रहता। पर जब भजन करने बैठे तो दुनिया-भर की बातें हमारे सामने आ जाती हैं। क्योंकि उस समय तुम बैठते तो हो नाग को नथने के लिए। और उस नाग को नथने के लिए जब तुम बैठते हो तो वे जितनी भी इन्द्रियाँ हैं, जितनी भी नागनिया हैं वे जागृत होती हैं। आत्मा को डराती हैं कहती हैं तू भाग जा, यह मन तेरे काबू होने का नहीं। अगर मन कहीं जाग गया तो तेरा नाश कर डालेगा लेकिन अगर आत्मा में दृढ़ता है, आत्मा में विश्वास है, है, धैर्य है और इन सबके साथ केवल यही नहीं बल्कि आत्मा के पास–प्रेम की बांसुरी बज रही है—उसके नाम की बांसुरी

बज रही है। जब वह उसके नाम की बांसुरी से किसी समय भी मन को मोहित कर लेता है तो भई ध्यान देना किसी ससय भी भक्ति में कुछ क्षण भी ऐसा आ जाय कि जबकि मन मोहित हो रहा है तो उसी समय ज्ञान की नकेल डाल दो, तुरन्त ज्ञान की नथ डाल दो और अब वही इन्द्रियाँ जो पहले कांटे मारती थी, डराती थी, धमकाती थी। आपकी आरती उतारने लगती है। इसी प्रकार एक दिन हमने अपनी diary में लिखा कि जिस चीज को देखना नहीं चाहिए उसको आँख देखती ही नहीं। जिसको सुनना नहीं चाहिये, उसको सुनना नहीं चाहिये और जिसको सोचना नहीं चाहिये, उसको मन सोचता ही नहीं—यह अवस्था आ जाती है क्योंकि यह संसार सारा सो रहा है न—तो इस संसार में सोने से जागने की निशानी क्या है ? जागने की निशानी क्या है।

"यह संसार रात्रि है भारी,
जिसमें सोती दुनिया सारी—
समझो तभी कि तुम हो जागे।"

तू जागने की निशानी ध्यान रख लेना, कोई दूसरा तुझे न बता सकेगा कि तुम जागे नहीं, दूसरा तो तुम्हारे बाहर की भक्ति को देखकर तुम्हारे बाहर के विचारों को देखकर, दूसरा तो तुम्हारे बाहर के ज्ञान को देखकर कहेगा, फलां बड़ा भक्त है फलां बड़ा सत्संगी है–फलां बड़ा धर्म का कर्म करने वाला है—लेकिन भई तुम्हारे जागने की निशानी तुम्हारे अन्दर बैठी है—और वह जागने की निशानी जरा ध्यान देना जरा अपने हृदय में नोट करके रखना वह कहता है।

यह संसार रात्रि—है भारी
समझो तब ही कि तुम हो जागे
जब मन विषयों से हे भागे

भगाना नहीं पड़े फर्क है बहुत भगाने में और भागने में भोग सामने आए और मन ठुकरा दे, विषय सामने आए और मन इन्कार कर दे, तृष्णा आए मन उनका निरादर कर दे, यह जागने की निशानी है—जिस समय कि इन्सान का मन जाग जाता है, और जब तक इन्सान इस अवस्था को नहीं पहचानता जब तक जिसका उसे दास बनाना चाहिए। या जिसका दास बनना चाहिये था उसको तो वह भूला हुआ है और जिसको उसे स्वामी बनाना था उसका दास बन कर दर-दर की ठोकर खा रहा है—एक दृष्टांत याद आ गया बड़ा सुन्दर दृष्टांत है। ध्यान देने की कोशिश करना, आनन्द सिन्धुरूपी एक राजा था जिसका चारों तरफ राज समाया हुआ था, चारों तरफ उसके राज की धूम थी। उसका एक इकलौता पुत्र जिसका नाम प्रताप था प्रताप इकलौता पुत्र था। वह आनन्दसिन्धु का पुत्र बड़ा ही प्रतापी अपने पिता के समान तेजस्वी, अभी बच्चा ही था प्रताप, एक दिन राजा के मन में विचार आया कि चलो आज जंगल में चलकर कुछ सैर करें। जंगल में चलकर कुछ दिन डेरा लगाएँ। जंगल के अन्दर पहुँच वहाँ tent वगैरह लगा दिये गए खेमे लगाये गए। जब टैन्टौ के अन्दर वह रहने लगा, दो-चार दिन बाद एक दिन राजा और रानी कहीं घूमने को गये थे, केवल प्रताप रूपी बधा आया के पास खेल रहा था nurse के पास खेल रहा

था। आया जो हैं वह अन्दर किसी काम से गई और उस बच्चे को वहाँ गुदेले पर लिटा दिया, इतने में उसी टैन्ट के पास से एक भेड़िया गुजरा, भेड़िया शायद आप जानते हैं कि भेड़िया को बच्चे उठाने का बड़ा शौक है, और भेड़िया हमेशा बच्चों को उठाकर ले जाता है। हाँ उसके उठाने की हिम्मत भी ऐसी होती है वह ऐसे उठाता है कि बच्चे को कहीं जख्म तक भी नहीं आता, तो इसलिए मैं कह रहा था उस भेड़िये ने प्रतापरूपी बच्चे को वह सुन्दर बच्चे प्रताप को देखा तो जहाँ पड़ा हुआ देखा, मुँह में उठाकर भाग गया। भागते-भागते बहुत दूर पहुँचा और भागते-भागते उसको प्यास लगी तो रास्ते में उसने पानी पीने के लिए बच्चे को तो नदी के किनारे रखा, और स्वयं जल पीने के लिये नदी पर गया। इतने में वह नजदीक ही चमारों की बस्ती थी, चमारों की बस्ती में एक चमार और एक चमारनी जोकि जंगल में लकड़ियाँ चुनने आये थे। उन्होंने इस सुन्दर पड़े हुए बच्चे को देखा, ज्यों-ही बच्चे को देखा त्योंही उनके घर सन्तान न थी उन्होंने उस बच्चे को उठाया और उठाकर अपने घर में ले आये। उसको पालने लगे और उसका नाम रख दिया मुफतचन्द था वह चाँद की तरह और मिला था वह मुफ्त में इसलिये उन्होंने उसका नाम क्या रख दिया था मुफ्तचन्द है और उसका छोटा nick name रख दिया, मुफ्तू मुफ्तू अब मुफ्तू उसे लोग कहने लगे अब वह बढ़ने लगा, वहीं पलने लगा और अपने को उस चमार का पुत्र मानने लगा। बड़ा होता चला गया, आखिर १६-१७ साल का हुआ। वह रोज गाय भेड़

चराने जाता था एक दिन गाय चराने जा रहा था कि नदी के किनारे एक सन्त गुजर रहे थे। वह यों ही गुनगुनाता हुआ जा रहा था तो जब सन्त को जाते देखा तो नमस्कार किया, सन्त ने कहा कि बेटा किसके पुत्र हो तो वह कहने लगा कि फलां चमार का पुत्र हूँ सन्त ने देखा कि यह तो तेजस्वी नज़र आता है आँखों से देखा कि यह तो तेजवान है अरे इसे तो किसी राजा का पुत्र होना चाहिये था, यह तो कहाँ चमार का पुत्र नजर आता है लेकिन शायद यह भूला हुआ है इसको कुछ-न-कुछ गलत फ़हमी जरूर है। लेकिन इसे अगर मैं ऐसा कहूँगा तो शायद यह मानेगा नहीं कहता है बेटा अगर मैं तुम्हें एक मन्त्र बतला दूँ तो उसका तुम रोज जाप करोगे। हाँ गुरुदेव बतलाओ मैं आपको गुरुदेव बनाता हूँ मुझे मन्त्र बतला दो। सन्त ने कहा कि देखो बेटा एक मन्त्र आज से रोज जाप करो कि "आनन्द सिन्धु केशव मुरारे" आनन्द सिन्धु केशव मुरारे वह कहता है गुरुदेव बहुत अच्छी बात है उसकी आदत तो थी गुनगुनाने की आदत तो थी वह रात दिन यही रट लगाने लगा आनन्द सिन्धु केशव मुरारे वह गाता रहा, ज्यों ही वह दिन भर गाय चराता और यही गाता रहे। उसको इसका इतना स्वभाव हो गया कि सोते-सोते भी यही गाता रहे और जागते में भी यही गाता रहता। कुछ दिनों के बाद उसी राजा आनन्द सिन्धु को एक महल बनाने की आवश्यकता पड़ी। और उसने कहा मजदूर की भरती करो तो यह मुफ्तू इसका बाप चमार जो उसका माना हुआ बाप था। वह चमार जो था वह भी दोनों भरती हो गए

अब वहाँ ये मजदूरों की टोली में भरती होकर मजदूरों का काम करने लगे रोज प्रति रोज दोनों ईंटें ढोते हैं। वहगारा ढोता है, रोज सामान उठाता है, रोज चारों ओर की ठोकरें खाता है। जो ठेकेदार है वह झिड़कियाँ देता है। जो बड़ा मजदूर है गालियाँ देता है। वह स.मान उठाता हैं, ईंटें ढोता है, ठोकरें खाता है और गालियाँ सुनता है। लेकिन यही नौकर और नौकरानियाँ जो इसके दास होने चाहिए थे उनकी बातें सुन-सुनकर ठोकरें खाता है। और फिर भी रोज ईंटों का भार ढोता है। आखिर कुछ दिन गुजर गये। एक दिन राजा के मन में विचार आया कि चलूँ चलकर देखूँ तो सही कि महल कितना बना है। उसने सोचकर वज़ीरों को हुंक्म दिया, परसों महल देखने चलेंगे। यह खबर सुनकर सब मजदूर बड़े खुश हैं। और यह मुफ्तू भी बड़ा खुश है। क्योंकि उसको अभ्यास हो गया था 'आनन्दसिन्धुकेशव मुरारे' गाने का। जिस समय राजा आया तो यह अपनी मस्ती में गा रहा था, 'आनन्दसिन्धुकेशव मुरारे'। जब राजा सब मजदूरों को इनाम देता हुआ इसके पास पहुँचा तो देखता क्या है कि तू कौन ? वह डरता हुआ कहता है उसका पुत्र। मैं उसका पुत्र हूँ। कहता है नहीं-नहीं, आँखों ने आँख को देखा, आत्मा ने आत्मा को पहचाना। पुरानी पहचान सामने आ गई। परन्तु कहने लगा, नहीं-नहीं यह मेरा प्रताप है। उसे पूछा क्या तेरा पुत्र है। नहीं, नहीं, चमार कहने लगा १६ वरस पहले यह फलाँ जगह में पड़ा मिला था। घर में खबर पहुँचा दी गई कि प्रताप मिल गया। राजा ने उसे गले से लगाया। चारों तरफ खुशी

मनाई जाने लगी। उसी समय वही ठेकेदार, वही मजदूर, वही इञ्जीनियर, वही उसे रोज झिड़कियाँ देते थे, रोज उसे डाँटते थे वह हाथ जोड़कर खड़े हो गये, राजकुमार क्षमा करना अगर हमसे कोई अपराध हो गया हों तो अब यह तो है एक दृष्टान्त, लेकिन इसको जीवन में ढालने की कोशिश कीजिये तोयह तो—आनन्दसिंधु वह परमात्मा, वह सर्वव्यापी, वह कण-कण के अन्दर समाने वाला हर रंग में जिसकी रंगत है, हर प्रकाश में जिसका प्रकाश है वह परमात्मा परम सिन्धु जिसका चारों तरफ वह जिसका विश्व में सारा राज्य फैला हुआ है, वह उसका उतना ही तेजमय रूपी पुत्र प्रताप यह मानव है जोकि अहंकार रूपी भेड़िये के हाथों से उठाया गया अहंकार रूपी भेड़िये से उठाकर मृत्यु-रूपी भेड़ियों के हाथों से लाया गया कहाँ ? संसाररूपी चमारों की बस्ती में, चमार यहाँ किसको कहते हैं। जो चमड़े की पहचान करे तो जो देह का पुजारी है जो देह को मानने वाला है, वह चमार है। राजा जनक की महफिल जमी हुई है चारों तरफ प्रश्न-पर-प्रश्न पूछे जा रहे हैं। कोई ऋषि-मुनि जवाब नहीं दे पाता। अष्टवंक वहाँ आते हैं अंग टेढ़े हैं, सारे सन्त-महात्मा मुनी उसको देखकर हँसी उड़ाते हैं। अष्टवंक कहता है राजा जनक मैने तो सुना था कि तेरी सभा बड़े योगियों, विद्वानों और ब्रह्मनिष्ठो की है। ब्रह्मनिष्ठ पुरुषों की है, मुझे तो आज यह समझ में आता है कि तेरी सारी सभा चमारों की है। राजा जनक कहता है क्या कहते हो महाराज, ऋषि जी क्या कह रहे हो। देखिये यह फलां योगी हैं, यह फलां सन्त है,

यह फलां महात्मा है। वह कहने लगा मैं इनको महात्मा मानने को तैयार नहीं। तुम जानते हो जो चमड़े की परख रखता है वह चमार होता है। उन्होंने मेरे आत्म-तत्त्व को नहीं पहचाना। वे मेरे टेढ़े-मेढ़े शरीर को देखकर हँस पड़े सोचा कि यह क्या जवाब देगा। यह नहीं जानते थे कि इन सब खिलौनों के अन्दर दिवाली के दिन बाजार में जाते है कोई घोड़ा बना हुआ, कोई गधा बना हुआ, कोई साहब बना हुआ, कोई मेम बनी हुई, कोई कृष्ण बना हुआ तो कोई राम बना हुआ। लेकिन सबको तोड़ा तो क्या निकला चीनी—चीनी भी कभी टूटी तो सबको तोड़ा तो निकली खांड। लेकिन खांड कभी टूटी तो वह कहने लगा अष्टावक्र कहता है। कई वार हम भूल में भूल कर जाते हैं। कई वार खांड को भी सच्चा खिलौना मान लेते हैं। भूल से कई वार देह को भी सच्चा मान लेते हैं वात में बात आ जाती है।

ज्यों केले के पात में पात पात में पात,
त्यों सन्त की बात में बात बात में बात।

तो इसलिए उस समय भूल कभी भी हो जाती है तो एक छोटी वात याद आ जाती है कि दिवाली का दिन था, घर में पति ने कहा पत्नी से कि पतिदेव आज घर में कोई सन्त भोजन करने आ जाय तो ज्यादा अच्छा है। पति बोला तो अच्छा बुला लाता हूँ। शहर के बाहर सन्त-द्वारा है वहाँ जाता हूँ और भोजन के लिए बुला लाता हूँ। जब वह वहाँ से चलने लगा तो पुत्र कहने लगा कि पिताजी आज मेरे लिये भी मिठाई, बाजार से चीनी के खिलौने लेते आना। तो

उसने कहा बहुत अच्छी बात है। वह पहले तो सन्तपुरे में पहुँचा,वहाँ दो सन्त ठहरे हुए थे उनसे कहा चलो महाराज घर में पधारो; घर चलकर भोजन करो। ऐसा करके उनको घर ला रहा था। रास्ते में याद आ गया कि पुत्र ने कहा था कि चीनी के खिलौने लेकर आना तो सन्तों को खड़ा किया बाजार में और बाजार में हलवाई की दुकान पर जाकर, चीनी की दुकान पर जाकर वहाँ भी उसने देखा कि दो चीनी की सन्त को मूर्ति बनी हुई हैं। एक बड़े वाले सन्त की मूर्ति और एक रुण्ड मुण्ड सन्त की वह चीनी की बनी हुई मूर्तियाँ खरीदी और घर में वापस आ गया और अब जब घर में ले आया और इतने में उन दो सन्तों को घर साथ में लाया। चौके में बिठाया, रसोई में गया। इधर वह दोनों सन्त जो चीनी के खिलौने लाया था वह उसने मेज पर रख दिये। रसोईघर में पत्नी को समझा रहा था कि भई जरा भोजन को परोस दे तो इतने में उनका पुत्र आया कहने लगा मेरे लिये लाये खिलौने, वह कहने लगा हाँ बेटा ? पुत्र कहने लगा क्या लाये, पिता ने कहा दो सन्त। तो पुत्र कहने लगा। इनको क्या करें, उसने कहा एक को तो तुम खा लेना और एक को मै खा लूँगा। अब वह सन्त बैठे हुए थे साथ वाले कमरे में। वह कहने लगे यह कसाई हैं कौन है जो हमें भोजन कराने लाया कि हमारा भोजन बनाने लाया। यह तो हमारा ही भोजन बनाता है। उन्होंने न आव देखा न ताव कमन्डल भी वहाँ छोड़ा और दोनों भाग निकले। अब दोनों भागे अब जो वह आ रहे हैं तो पीछे से वह आया और देखा कि

वह चौकी पर नहीं है दोनों भागे जा रहे हैं और वह पीछे भागने लगा और कहने लगा कि सन्त ठहर जाओ। वह कहने लगे कि देखो कसाई की हद। आखिर करते करते सन्तपुरे में जाकर पहुँचा और कहने लगा कि यह आपने क्यां किया? क्या हो गया महाराज? अरे मूर्ख तू तो हमें भोजन कराने ले गया था या हमारा भोजन करना चाहता था। उसने कहा, क्या बात है महाराज? वह कहने लगे कि तूने अपने पुत्र से ऐसा-ऐसा कहा है। वह बोला, महाराज, वह तो मैं चीनी के सन्त की बात कह रहा था। आपको तो मैं भोजन कराने के लिए ले गया था। मैं बाजार से चीनी के सन्त ले गया था। तो कभी-कभी ऐसे भी भूल जाते हैं, कभी-कभी हम देह को भी सच मान जाते हैं। अष्टावक्र जनक से कहता है कि मुझे तो यहाँ सारी सभा चमारों की नजर आती है। क्योंकि यह तो देह के पुजारी हैं। सारे ही सूरत के पुजारी नजर आते हैं, सीरत का पुजारी कोई नहीं नज़र आता। सब लिफाफे के पुजारी नजर आते हैं। सब तन का शृङ्गार कर रहे हैं। सब देह के शृङ्गार में लगे हुए हैं। मन का शृङ्गार कोई नहीं कर रहा सब तन के शृङ्गार में लग रहे हैं। कोई देही का ख्याल नहीं कर रहा है। तो भाई यह प्रताप-रूपी बच्चा बिछुड़ा आनन्द-रूपी पिता से। किसके कारण? अहंकार के कारण, खुदी के कारण।

खुदी के कारण यह खुदा से जुदा हुआ
खुदी को जो उसने मिटाया तो वह खुदा हुआ

जरा ध्यान देना एक लाइन पर—

"खोये पाये खुद खोकर के
I found the lost one by loosing myself
तो क्या हुआ—

खोये पाये खुद को खो करके,
अपना आप मिटा डाला,
अपना घर आप जला डाला,
दर्शन दिवाने हो करके,
खोये पाये खुद खो करके,
मन में न मिला, वन में न मिला,
धन में न मिला, जन में न मिला,
देखे सात ठौर टटोलकर के,
खोये पाये खुद खोकर के,

तो फिर क्या किया ? कहा—

तन मन धन की होली खेली,
जीवन की आहुति दे ली,
हँसना मिलता है रोकर के,
खोये पाये खुद खोकर के,
'प्रेमानन्द' वह अजब समाँ था,
प्रीतम मेंरे पास खड़ा था,
मै जाग चुका था सोकर के,
खोये पाये खुद खोकर के,

तो इसलिए वह अहंकार-रूपी भेड़िये के हाथों यह आनन्द-रूपी सिन्धु प्रताप बच्चा आनन्द-रूपी परमात्मा से बिछुड़कर संसार में आया। और संसार में आकर के चमारों की बस्ती में अपने

को देह मानता हुआ, सारे देह के साथ अपने-आपको जन्मता और मरता मानता हुआ, अपने-आपको सुखी और दुखी मानता हुआ, ध्यान देना, ज्ञानी हो जाने पर भी सुख और दुःख साथ रहते हैं। ज्ञान की ऊँची-से-ऊँची पराकाष्ठा पर भी सुख और दुःख आते रहते हैं। सन्त भी रोया करते हैं। लेकिन ध्यान देना, यह मत सोच लेना कि सन्त नहीं रोता। लेकिन सन्तों के और दुनिया वालों के आँसुओं में भेद होता है। दुनियादार के आँसू बाहर गिरा करते हैं और सन्त के आँसू अन्दर गिरा करते हैं। इसीलिए एक जगह पर कहा है—

किसी और के हो रहे हो किस धुन में जा रहे हो।
अपनी ये प्रेमियो क्या हालत बना रहे हो।
अरे किस कोढ़ ने है घेरा कैसी लगी बीमारी,
न यह छोड़ती है तुमको न तुम इसे छुड़ा रहे हो।
अरे, वेदों ने इस जनम को अनमोल है बताया,
क्यों भाग्यहीन खुद को भिखारी बना रहे हो।
सब छोड़ने के साथ प्रभु को भी छोड़ बैठे ?
अब कौन मुँह लगाकर मनुष्य कहा रहे हो।
अरे अब भी समय बहुत है कुछ अपना सुधार करले ?
माथे कलंक का क्यों टीका लगा रहे हो।
अरे चिल्लाते मर गये हम पीछे जगे तो क्या,
'प्रेमानन्द' से दिल जले को फिर क्यों जला रहे हो।
किसी और के हो रहे हो किस धुन में जा रहे हो।

अपनी इस जिन्दगी के अन्दर सन्त के हृदय में भी ठेस लगा करती है। लेकिन फर्क इतना होता है कि उसके आँसू अन्दर गिरते हैं

और दुनियादार के आँसू बाहर गिरते हैं।

तो जिन्दगी के अन्दर—

काँटा लगे किसी और को, दर्द हो हमें,
सारे जहाँ का दर्द मेरे जिगर में है।

तो ऐसी जिन्दगी के अन्दर तत्व होता है। लेकिन ज़रा विचार करके देखिए। तो मैं कह रहा था कि जब तक इन्सान इस तत्व को नहीं पहचानता तब तक संसार के अन्दर उस प्रताप-रूपी बच्चों का आनन्द सिन्धु से मिलाप न हुआ, तब तक वह उनकी ठोकरें खाता रहेगा। कामनाओं की ओर, भोगों की ओर, रोगों की ओर। इस संसार के अन्दर छोटी-छोटी इच्छाएँ उसे अपना नाच नचा डालेंगी। बार-बार वह विष्ठा के गढ़े में गिरेगा। बार-बार वह गन्दगी के गढ़े में गिरेगा। बार-बार वह पागल और दीवाना बनेगा। अरे भाई कई बार कहा है कि If drowning is to be the fate of man. अगर इन्सान को डूबना ही है If drowning is to be the fate of the man it is better to be drowned in the ocean of milk than in the pool of dung. अरे, अगर डूबना ही है तो कम-से-कम दूध के सागर में डूबो, अरे उस राम की मुहब्बत में तो डूबो, उसकी उल्फत में तो डूबो। अरे, अगर डूबते भी हो तो जिन्दगी में, विष्ठा के गढ़े में। अगर तुम्हें पागल ही बनना है, दीवाना ही बनना है तो उसके बन जाओ जिसके पागल बनकर संसार तुम्हारा पागल बन जाता है। कहता हैं—

"मैं वह दीवाना हूँ जिस पे लाख दीवाने हुए।

ध्यान देना—

मै वह मस्ताना हूँ जिस पर लाख मस्ताने हुए।
मैं वह दीवाना हूँ जिस पे लाख दीवाने हुए।
अरे, जब शमा बना के खुद को जलाया मैंने,
तो मैं वह शमा हूँ जिस पर लाख परवाने जले।

तो जिन्दगी के अन्दर इस तत्व में जब इस चीज को तुमने पहचाना, इस भेद को तुमने जाना तो तुमने देखा कि जब तुम स्वयं उसके बन गये, तुमने सब कुछ उसे समर्पण कर दिया तो सारा संसार तुम्हारा दास बन गया। लेकिन अगर तुमने अपनी जिन्दगी के अन्दर इस तत्व को न समझा, इस भेद को न जाना, इस राज़ को न समझा और संसार के अन्दर एक इच्छा के दास बनकर, एक वासना के दास बनकर ठोकरें खाते फिरे तो तब तक खाते फिरोगे जब तक प्रताप का आनन्द सिन्धु से मिलाप न हो जायगा। और आनन्द सिन्धु से कब तक मिलाप न होगा? जब तक सन्त-रूपी दलाल न मिलेगा। जब तक सन्त रूपी दलाल न मिलेगा तब तक सौदा नहीं होगा भाई। इसलिए, लेकिन अगर दलाल भी चिल्ला-चिल्लाकर थक गए और कोई गाहक ही न हो तो—

आशिक़ जहाँ में दौलतो इक़बाल क्या करे।
मुलको मकानों तेग़ों तबर ढाल क्या करे।
बेहाल हो रहा हो सो हाल क्या करे?
गाहक ही कुछ न ले तो दलाल क्या करे?
अरे, मरते हैं वह जो रखते हैं तन में जाँ।
और जो मर गये तो उन्हें फिर मौत कहाँ?

जिसका लगा हो दिल वह ज़रो माल क्या करे ?
दीवानह जाहो–हशमतो–इजलाल क्या करे ?
गाहक ही कुछ न लेवे तो दलाल क्या करे ?

तो जिन्दगी के अन्दर जब गाहक पैदा हो तो गाहक बनने के लिए क्या होना चाहिए ? The will to have and the power to have। बाजार में दुकान पर जाओ, किसी भी दुकान के अन्दर दाखिल हो जाओ तो कोई भी सामान खरीदने के लिए इन्हीं दो चीजों की जरूरत पड़ती है will to have लेने की इच्छा और लेने की कीमत। अगर कीमत है और इच्छा नहीं, तो भी नहीं ले सकोगे। और इच्छा है कीमत नहीं तो भी न ले सकोगे। Will to have and the power to have। जिन्दगी के अन्दर इसी प्रकार जब इस बाजार में पहुँचता है इन्सान, जब इस मार्ग में पहुँचता है इन्सान, तो जितनी वह उसकी कीमत देता है उतना उसकी जिन्दगी का सार उसे मिल जाता है तो इसलिये जीवन के इस शरणागति के तत्व को पहचान कर इस भक्ति के लिये इस तत्व को पहचान कर कि भक्ति का मतलब है जीवन के अन्दर उस प्रताप का, उस अहंकार का नाश करके अपने आपको देही न मानते हुए। अरे अपने आपको चमार का पुत्र न मानते हुए, बल्कि अपने आपको आनन्द सिन्धु का पुत्र मानते हुए उसकी शरण में हो जाना और उसके सार में हो जाना उसकी जब वह शरण में हो जाता है तो वास्तविकता में वह उसकी सारी जायदाद का मालिक होता है। भला तुम अपने पिता की सारी जायदाद के मालिक नहीं तो और कौन

होगा। लेकिन भाई पुत्र को भी फारखति दे दी जाती है। अगर वह भी अपने मार्ग पर ठीक नहीं चलता, अगर वह भी अपने कर्म को ठीक नहीं करता। अगर वह भी अपने कर्तव्य से गिर जाता है, तो पिता इस बात का विचार करते हुए भी वह मेरा ही पुत्र है, वह उसको फारखति दे देता है। वह अपनी will में लिख देता है कि इसको मैं अपनी दौलत नहीं दे सकता। क्योंकि इसको दौलत सँभालने का तरीका नहीं है क्योंकि उसको दौलत सँभालने की हिम्मत नहीं है। इसलिये यद्यपि यह मेरा पुत्र है मैं इसे अपनी दौलत से अलग करता हूँ। तो इस प्रकार हर इन्सान उस प्रभु का प्यारा पुत्र है। लेकिन जो उसके लिये मिले हुए धन को, जो उसके मिले हुए बल को, जो उसके मिले हुये वैभव को, जो उसकी मिली हुई भक्ति को, जो उसकी मिली हुई साधना का सदुपयोग नहीं करता तो एक दिन वह मालिक वापिस भी ले लेता है। और उसे उन चीजों से महरूम कर देता है। यह बात कहते हुए कि यद्यपि तू मेरा पुत्र था, भई लेकिन तू मेरी दौलत को सँभाल न सका इसलिये मैं वापिस लेता हूँ। तो इस प्रकार जिन्दगी मानव की जिन्दगी जो है यह अपने स्वामी तत्व को पहचानने के लिये है, अपनी मनुष्यता को पहचानने के लिये है। और इन्सानियत यह कहती हैं कि इन्सान तुझे अपने जीवन के अन्दर अपने कर्मों को ध्यान से करना होगा। अपने कर्मों को सँभाल कर करना होगा, तेरे कर्मों पर कभी कोई ऐसा दाग़ न आ जाय कि तुझे कर्मों के सामने आँख नीची करनी पड़ जायँ तुझे कर्मों के लिये अपने आप परेशान होना

पड़ जाय। इसलिये ए इन्सान हर कर्म को तू करते हुए अपने जीवन के अन्दर उस विवेक और भक्ति का सहारा ले ले। उस तत्व का सहारा ले ले और साथ में अपने जीवन के अन्दर कभी भी यह न समझ कि यह देह के सुख तेरे सुख हैं, यह देह के दुख तेरे दुख हैं यह सुख और दुख तेरी देह के सुख-दुख हैं, तो देह के सुखों से तू सुखी न हो जा और देह के दुखों से तू दुखी न हो जा क्योंकि देह के सुख और दुख तो आते रहेंगे। Let millions of rivers of happiness come to me and let millions of rivers of misery come to. I am no slave to happiness and no slave to misery.

लाखों सुखों के बादल उमड़कर आए तो मैं सुखों का दास नहीं
लाखों दुखों के बादल उमड़कर आए तो मैं दुखों का दास नहीं।

क्योंकि मैं जानता हूँ कि देह का दुख मेरा दुख नहीं और देह का सुख भी मेरा सुख नहीं, जब इस तत्व को मैं पहचानता हूँ, तो सब कर्म करते हुए भी यह नहीं कि फिर कर्म नहीं करता। मैंने पहले ही कह दिया कि ज्ञानी भी यह नहीं कि फिर कर्म नहीं करता, मैंने पहले ही कह दिया है ज्ञानी भी हँसता है ज्ञानी भी रोता है, ज्ञानी भी खेलता है ज्ञानी भी मचलता है। लेकिन वह कहता है कि किस तरह जिन्दगी के अन्दर यह कहा—

> कि दिल ही तो है न संगो खिरत दर्द से भर न आए क्यों
> रोएँगे हम हजार बार कोई हमें सताए क्यों

देरे नहीं हरम नहीं किसी अमीर का घर नहीं
बैठे हैं राह गुजर पै हमें कोई उठाए क्यों

कहता है दुनिया तो राह गुजर है, सराय है, यहाँ हम बैठे हुए हैं यहाँ से हमें कौन उठा सकता है ? जिन्दगी का सार तो कहने का मतलब क्या है। लेकिन यह सब कुछ करते हुए भी वह जानता है कि मैं कुछ नहीं मैं तो एक ही हूँ, मैं तो मैं ही हूँ I am I I am I I am I मेरे में और कुछ नहीं मैं यह तो कह सकता हूँ कि मैं यह नहीं मैं यह नहीं। लेकिन मैं तो मैं ही हूँ मेरे में कुछ और साथ नहीं लगाया जा सकता कि मैं यह हूँ इस तत्व को जब इन्सान पहचानता है कि I am it I am it I am it मैं यही हूँ, मैं यही हूँ, नहीं मैं वही हूँ। जब इस तत्व को इन्सान पहचानता है इस सार को, इस एकता को पहचान जाता है तो तब संसार के सब सुख और दुख सब कर्म करता हुआ भी जिस प्रकार देख लो न भाई, इक इन्सान दिन में तीन प्रकार के कर्म करता हैं। खासकर main ध्यान दीजियेगा जैसा कि घर में वह father & husband पिता और पति है, दफ्तर के अन्दर office के अन्दर वह officer है, और club के अन्दर वह member है, है न ऐसा ही club के अन्दर वह member है office के अन्दर वह officer है और घर के अन्दर पति और पिता husband and father है। अब ज्ञानी का यह मतलब समझ लिया जाय, अगर ज्ञान का यह तात्पर्य समझ लिया जाय कि एक ही प्रकार का कर्म करेगा सब जगह एक ही तरह का व्यवहार करेगा तो यह तो बड़ी कठिनाई है। आप ध्यान

दीजिये अब वही आदमी जो घर में तो पिता और पति है father and husband है office में officer है और club में member है अगर वह यह सोचे, अगर वह ज्ञानी हो जाय और अगर उसका कर्म एक ही जैसा हो जाय, मान लीजिये वह club में बैठा हुआ if he thinks himself to be husband and father some thing terrible will happen अगर कहीं वह अपने को सबका पिता और पति मानने लगे club में बैठे हुए तो मुश्किल हो जायगी न और अगर घर में बैठे हुए वह अपने आपको अफसर मानने लगे तो कि वह बटन दबाये तो उसकी उसकी धर्मपत्नी yes sir, कहती हुई उसके पास में चली आए तो काम चलेगा और दफ्तर में अगर आफिसर का रूप न धारण करता हुआ बल्कि member बनकर सबके साथ रहे तो दफ्तर का काम होगा ? लेकिन नहीं, दफ्तर में वह अफसर बनते हुए office में officer रहते हुए घर में पिता और पति रहते हुए और club में member रहते हुए, वह जानता है कि वह तो एक ही है। इसी प्रकार जब इन्सान अपने रूप को पहचान जाता है। अपने तत्व को समझता है, अपने आत्म-स्वरूप को जान जाता है। और आत्मा की पराकाष्ठा में रहता है जिन्दगी के अन्दर उसका व्यवहार जो होता है वह उसके खेल से होता है। उसका खेल होता है, वह यह जानता है कि वह उसके खेल से होता है, यह जानता है कि यह जो कुछ भी कर रहा हूँ वह यह सब कुछ है। लेकिन मैं तो मैं ही हूँ, मैं तो मैं ही हूँ, मैं तो वही एक स्वरूप ही हूँ।

दरिया से हुबाब की है यह सदा तू और नहीं मैं और नहीं,
वह बुलबुला भी दरया से कह उठता है तू और नहीं मैं और नहीं,
मुझको न समझ अपने से जुदा तू और नहीं मैं और नहीं,
आईना मुक़ाबिले रुख जो रखा शीशे के सामने,
शीशा जो रखा सामने मुँह देखने के लिए।
झट बोल उठा यूँ अक्स उसका,
क्यों देख के हैरां यार हुआ तुम और नहीं मैं और नहीं।
दाने ने भला खिरमन से कहा चुप रह, इस जा नहीं चूंबो-चिरा
वहदत की झलक कसरत में दिखा तुम और नहीं हम और नहीं

नासूत में आके यही देखा
है मेरी ही ज़ात से नश्वो-नुमा
जैसे दुम्बा से तार का हो रिश्ता
तुम और नहीं हम और नहीं
तू क्यों समझा मुझे गैर बता
अपना रुखे ज़ेबा न हमसे छिपा
चिक पर्दा उठा, टुक सामने आ
तुम और नहीं हम और नहीं

ग्यारह

जो मस्त हैं अज़ल के उनको शराब क्या है
व मक़तूल खतीरों को बुए कबाब क्या है
क्यों रूठते हो हमसे तकसीर क्या हमारी
हर दम की हम नशीनी फिर यह हिजाब क्या है

हम यह विचार कर रहे थे कि शरण गति के मार्ग पर चलता हुआ, समर्पण करता हुआ एक न एक दिन उस अवस्था पर पहुँच जाता है जब उसका मैं तत्व का कुछ भी अंश बाकी नहीं रहता। जब कि वहाँ मैं का तत्व बाकी नहीं रहता, जब कि वह उपासना करते वह उपासना की ऐसी अवस्था में पहुँचता है जब कि उसकी उपासना पूरी हो जाती है। जीवन की उपासना पूरी हो जाती है जीवन की प्रार्थना पूरी हो जाती है। प्रार्थना का वास्तविक अर्थ क्या है? prayer वास्तव में किसे कहते हैं प्रार्थना वह नहीं कि हम कुछ शब्दों को पढ़ डालें, प्रार्थना वह नहीं जिसमें हम सुबह कुछ मन्त्रों का उच्चारण कर डालें, प्रार्थना वह नहीं है जिसमें हमें सुबह ही जाकर प्रभु के सामने अपनी कुछ इच्छाओं को प्रकट कर दें।

उसे प्रार्थना नहीं कहते। वह भी प्रार्थना है पर जैसाकि मैं कहा करता हूँ कि वह भी प्रार्थना है लेकिन वह ही प्रार्थना नहीं, प्रार्थना का वास्तविक अर्थ है कि जिस समय इन्सान बिल्कुल उसका हो जाता है पर अर्थ हो जाना इसका नाम है प्रार्थना पर अर्थं हो जाना इतना उसके समर्पित हो जाना कि अपना पन कुछ बाकी न रहे, इतनी उपासना भी तो इसे ही कहते हैं आसन जैसे की उप प्रधान होता है उपासना जबकि भक्त को भगवान् के बिल्कुल नजदीक आसन मिल जाता हैं neared place to God मिल जाती है उसको उपासना की पूर्णता कहते हैं और उपासना की तीन स्थिति मानी गई हैं। उपासना की तीन स्थिति में से आप विचार करके देखिए जो पहली स्थिति उपासना की वह होती है जैसे कि एक पत्थर को गंगाजली के अन्दर डाल दीजिये, पत्थर को जव आप गंगाजल में डालते हैं तो पत्थर जो है वह वाहर से तो ठण्डा हो जाता हैं लेकिन उसके अन्दर कोई असर नहीं होता वैसा-का-वैसा सख्त है—अन्दर से वह वैसा-का-वैसा पत्थर है अन्तर से वह वैसे का वैसा ही वाहर से ठण्डा वाहर से शीतल हो गया लेकिन उसके अन्दर कोई असर नहीं हुआ—वह उपासना की पहली स्थिति है जब कि इन्सान भक्त जो है भजन करता है—सत्संग में बैठता है थोड़ी देर के लिए उसे बाहर का आनन्द प्राप्त होता है पर वास्तविकता में उस पर कोई असर नहीं पड़ता लेकिन उससे वढ़कर वह दूसरी स्थिति होती है जैसे कि कपड़े की गुड़िया को जब गंगाजल में डाल दिया जाय। कपड़े की गुड़िया को जब गंगाजल में डाल दिया या

आपने रुई के किसी बण्डल को गंगाजल में डाल दिया तो वह अन्दर बाहर से ठण्डी हो गई और अन्दर बाहर से वह शीतल हो गई—इसी प्रकार दूसरी स्थिति वह होती है जब भक्त भगवान् के भजन में इतना लीन होता है कि अन्दर और बाहर जो है उसके अन्दर शीतलता की लहरें उठने लगती हैं अभी भी भेद बाकी रह जाता है, अभी भी द्वैत बाकी रह जाता है—अभी भी उपासना पूर्णता पर नहीं पहुँचीं, अभी भी उपासना अलग-सी हो रही है इसलिए तीसरी अवस्था वह है जैसा कि आप मिशरी को गंगाजली में डाल दीजिए जब वह मिशरी गंगाजल का रूप हो जाती है और उसमें कोई भेद नहीं रहता फिर आप चीनी को और उसको अलग नहीं कर सकते, मिशरी गंगाजल में घुल गई और वह गंगाजल हो गई इसी प्रकार तीसरी एक ऐसी उपासना की स्थिति होती है जब कि भक्त भगवान् की जात में बिलकुल अपने आपको खो बैठता है। उसीका रूप हो जाता है और वास्तविकता में उस भक्ति के बाद और ज्ञान के बाद भक्ति शुरू होती है जिसको प्रेमभक्ति कहते हैं। ध्यान देना प्रेम में एक विशेषता है प्रेम-मार्ग में भक्ति-मार्ग से एक विशेषता यह है कि उधर ज्ञान तो सिद्धता है और साधन अलग है लेकिन उधर प्रेम साधन भी है और प्रेम मंजिल भी, प्रेम साधन भी हैं ओर प्रेम मंजिल भी है एक पहली भक्ति की जाती है उसको पाने के लिए और उसको पा लेने के बाद भक्ति की जाती है वास्तविकता में प्यार का रस लेने के लिए, जिसको कि प्रेमा भक्ति कहा, भक्ति साधना भी है और सिद्धता भी, भक्ति ज्ञान तक पहुँचने के लिए भी

और भक्ति ज्ञान के बाद ज्ञान का रस लेने के लिए भी जैसे कि पहले दिन आपसे कहा था कि मनुष्य की साधना कहाँ से शुरू होती है आपको याद होगा विश्वास से, सत्संग से उसके अन्दर विश्वास आया, विश्वास से उसके अन्दर श्रद्धा आई और श्रद्धा से ज्ञान हुआ और ज्ञान से प्रेम का विकास हुआ और प्रेम के विकास से आनन्द की प्राप्ति हुई। दूसरे शब्दों में सत्संग जमीन है और विश्वास का बीज पड़ता है और श्रद्धा का पेड़ पैदा होता है और ज्ञान का उसमें फल लगता है और प्रेम उस फल का रस है और आनन्द उस रस का अनुभव हैं– यह पेड़ का फल है अब आप बतलाए कि फल को भी फल लग जाता है यही ज्ञान हो जाने के बाद जैसा कि प्रह्लाद के साथ विष्णु खड़े हैं प्रकट हुए है, नरसिंह भगवान तो प्रह्लाद कहता है कि ऐ विष्णु मैं जानता हूँ कि मैं विष्णु और तेरा ही स्वरूप हूँ, मैं तेरे से अलग नहीं पर विष्णु होकर विष्णु का भजन कर रहा हूँ। विष्णु की उपासना कर रहा हूँ इस प्रकार भक्त के जीवन में एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि जब कि वह द्वैत का पर्दा वह duality का बिलकुल नाश हो जाता है और कहने लगता है कि मेरा ही स्वरूप है, मेरी ही जात है और मेरे और तेरे में कोई भेद नहीं है लेकिन मेरे और तेरे का कोई भेद न होते हुए भी जिस प्रकार ध्यान दीजिएगा जिस समय भक्त भगवान् के साथ एकान्त में होता हैं जिस समय······

२. वास्तविकता में अगर एकान्त का अर्थ देखना हो आपको। तो एकान्त कहते हैं "एको ही अन्ता" जहाँ कि एक ही लक्ष्य रह जाता है। और एकान्त वहाँ भी कहते हैं जहाँ अनेक का अन्त होता है। अनेकता का अन्त हुआ तो एकान्त और एक ही अन्त रहा, एको ही अन्ता कहीं पर दृष्टि नहीं तो उसको कहते हैं एकान्त। एकान्त उसको नहीं कहते कि कहीं कुटिया में बन्द करके बैठ गया। एकान्त उसे नहीं कहते कि कहीं जंगल में जाकर बैठ गया। एकान्त किसे कहते हैं? एक बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया जाता है मीरा के जीवन का, मीरा के जीवन की एक बड़ी सुन्दर मिसाल आती है। मीरा के जीवन में जिस समय वह द्वारका के अन्दर निवास करती थी उस समय, राणा की ओर से भेजा हुआ एक प्राणी वहाँ पर पहुँचा जो कि किसी भी प्रकार मीरा को अपने पथ से गिराना चाहता था, अपने मार्ग से गिराना चाहता था, पतित करना चाहता था। वह दो-तीन वर्ष तक जाकर द्वारकाजी में रहा। नित्य प्रतिदिन मीरा को फूल लाकर देता। एक दिन जिस समय मीरा पूजा करके निकली तो वह सामने खड़ा हो गया। साधु का भेष बनाया हुआ था उसने। जब साधु का भेष बनाकर बाहर खड़ा था तो मीरा को आई देखकर उसके पाँवों पर पड़ गया। तो मीरा ने कहा, कहो साधु बाबा, क्या बात है? उसने कहा, बात तो कुछ नहीं, मैं केवल आपकी कृपा चाहता हूँ। मीरा ने कहा, कृपा तो केवल भगवान् कर सकता है, कृपा तो केवल भगवान् की होती है। मैं तो उसकी मामूली सेविका हूँ। मेरी क्या कृपा होगी। तो फिर वह इस-

लिए कहता है। मीरा कहती है कि क्या कुछ माँगना चाहते हो ? वह कहने लगा कि ऐ देवी, मैं चाहता हूँ कि थोड़े समय के लिए तुम्हारे साथ एकान्त में एक बात करूँ। मीरा बोली, अच्छा तो ऐसा करना, आज रात को आरती के बाद शायद मैं तुमसे मिल सकूँगी। खैर समय हुआ, वह सज्जन दिन भर, क्योंकि जिस सयय इन्सान के मन में बुराइयाँ उठती हैं, इन्सान की कामनाएँ जब मन में उठती हैं तो इन्सान उन कामनाओं में इतना लीन हो जाता है, ये कामनाओं की ही वृत्तियाँ इंसान को न जाने कहाँ-कहाँ भटकाती हैं, न जाने कहाँ-कहाँ ठोकरें दिलाती हैं। इसलिए मैं हमेशा कहा करता हूँ कि To ride the horses of desires than to be driven by them. जिन्दगी के अन्दर तुम्हें अपनी देह का, अपनी इन्द्रियों का, अपने तत्व का स्वामी बनकर रहना पड़ेगा। Man the master of the temple must rule or perish. तो इन्सान को अपनी जिन्दगी में अपनी इच्छाओं का, अपनी वासनाओं का और अपनी तृष्णाओं का स्वामी वनकर रहना होगा। नहीं तो विषय और भोग एक दिन उसका नाश कर डालेंगे। तो वह साधु कामनाओं में लिप्त होकर कामनाओं की बातें करता रहा। सोचता रहा कि ऐसा करूँगा, ऐसा करूँगा। आखिर रात्रि का समय आया। १० बजे तक वह साधु उसी चिन्तन में बैठा रहा। उसी समय एक माई आई और कहने लगी, मीराबाई आपको बुलाती हैं। साधु बड़बड़ा-कर उठ बैठा कि एकान्त में बुलाती हैं। वह बोली, हाँ आपको बुलाती हैं। खैर माई आगे चली साधु पीछे चला। वहाँ पर

पहुँचकर क्या देखता है कि १०-१५ भक्त इधर बैठे हैं और १०-१५ माताएँ उधर बैठी हुई हैं और मीरा बीच में बैठी हुई है और उसके सामने एक आसन पड़ा हुआ है। मीरा उठकर खड़ी हुई और कहने लगी, आओ साधु बाबा, विराजो। ध्यान देना, यह बिलकुल एकान्त है। वड़ी अजीब हो, यह एकान्त है ? साधु के मुँह से निकला। तो मीरा वड़े प्यार से समझाने लगी। कहती है, साधु बाबा, तुम बताओ मैं क्या करूँ ? जिस समय मैं अकेली अपने कमरे में थी, जब मै एकान्त में गई, जब अकेलो मैं कमरे में गई तो क्या देखा ? जितनी-जितनी मैं अकेली होती जाती थी उतनी-उतनी मेरे साथ भगवान् की विशाल मूर्ति होती चली गई। जिस समय मैं बिलकुल अकेली कमरे में रह गई तो मेरा प्यारा बिलकुल साक्षात् रूप धारण करके मेरे सामने खड़ा था और मैं उसके साथ थी इसलिए मैं एकान्त में न रही। अब जिस समय मैं लोगों के बीच में आकर बैठी, इन भक्तों में आकर बैठी तो मेरा प्रभु छोटे-छोटे रूप धारण करके इन सबके अन्दर समा गया। अब मैं बिलकुल एकान्त में हूँ। अब तुम मुझसे बात कर लो। ध्यान देना, कितना जबरदस्त एकान्त है ! कितना ? जब कोई नहीं, जब मैं अकेली हूँ उस समय मेरा प्यारा मेरे सामने साक्षात् रूप धारण करके बैठा हुआ है। इसलिए वह एकान्त नहीं और सब दुनिया मेरे पास बैठी हुई है तो मैं पूर्ण एकान्त में हूँ। क्योंकि वह सबमें समाया हुआ है। इसीलिए एक जगह कहा है कि—

फकीरल मस्त हूँ जब वज्द में आता हूँ मैं।

रुह को बेदार करता जिस्म को गरमाता हूँ मैं।
जब जमाने में मुहब्बत की कमी पाता हूँ मैं।
बन के खुद मुहब्बत दुनिया पे छा जाता हूँ मैं।
गिरता हूँ दुनिया में मैं खुद-ब-खुद इस तरह,
दुनिया यह समझे कि जैसे ठोकरें खाता हूँ मैं।
इक सन्नाटा-सा छा जाता है कलबो रुह पर,
हाय वह आलम जब अपने आपको याद आ जाता हूँ मैं।

ध्यान देना इस लाइन पर—

जब वह होता है तो हर शै हो जाती है गुम,

जब प्यारा पास में होता है तो मुझे कोई दूसरी चीज दिखाई तक नहीं देती।

जब वह होता है तो जैसे हर शै हो जाती है गुम,
और जब वह नहीं तो हर शै में उसे पाता हूँ मैं।

विचार देना वह मेरे से अलग तो नहीं हुआ एक मिनट भी—

जब वह होता है तो जैसे हर शै हो जाती है गुम,
कहाँ जाऊँ किधर जाऊँ बचके ऐ 'प्रेमानन्द',
हर सिमत से कुचाए राम पहुँच जाता हूँ मैं।

कहता है किधर से भी चलूँ, किसी रास्ते से भी चलूँ, किसी मार्ग से भी चलूँ मैं तो वहीं पहुँच जाता हूँ। करूँ तो क्या करूँ? उससे बचकर कहाँ जाऊँ? जब मैं अकेला होता हूँ तो वह साकार रूप धारण करके, सीधा रूप धारण करके मुझसे बातें करता है। जब वह नहीं होता तो हर शै में उसकी सूरत दिखाई देती है। हर गुल में उसकी खुशबू आती है। तब मुझे हर सूरत में उसकी सूरत दिखाई देने लगती है।

कहता है कि बोलो अब मैं क्या करूँ। तो एकान्त का मतलब क्योंकि जहाँ वास्तविकता एकान्त मिल गया है तो इस प्रकार भाई एक अवस्था भक्त के जीवन में वह आती है जबकि वह यह जानते हुए भी कि वह उसका रूप हैं। उसकी जात है उसकी जात में समाकर वह उसके रूप का, वास्तविक दिव्य का जैसा कि गोपियों का प्रेम था। ज्ञानमय भक्ति थी उनकी कृष्ण के साथ। क्योंकि जिस समय ऊधो जाते हैं, ऊधो जब पहुँचते हैं तो वे ऊधो को क्या कहती हैं ? वे कहती हैं कि ऐ ऊधो, जो कुछ तुमने कहा वह हम सब जानती हैं। उस समय वे बहुत सुन्दर शब्दों में कहती हैं—

जो कुछ कहा तुमने हमसे वह बात हम सब जानत हैं।
शुद्ध स्वरूप सच्चिदानन्द घन यह भी हम तो मानत हैं।
जा कहियो घनश्याम से तुम मन से तो हम मानत हैं।
पर प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखिया नहीं मानत हैं।

अरे हम जानती हैं कि कृष्ण जो है वह ब्रह्मस्वरूप है, शुद्ध स्वरूप है, सच्चिदानन्द है, पूर्ण परमात्मा है, हमारी अपनी आत्मा है, हमारे से वह अलग नहीं, लेकिन फिर भी वही तो कहा न पहली लाइन में कि भई—

"क्यों रूठते हो हमसे तकसीर क्या हमारी।"

अरे क्या अपराध है हमारा कि हरदम की हम नशीनी या तो यह हो कि पल भर तुम हमसे दूर जाते हो। हरदम की हमनशीनी फिर यह हिजाब क्या है कहता हैं कि फिर यह पर्दा कैसा, फिर यह पर्दा कैसा, फिर यह बीच में दीवार कैसी ? जब हरदम की हमनशीनी है जब पल भी हमारा

साथ तुम्हारे से अलग नहीं तो इसलिए कहने का मेरा तात्पर्य क्या है ? कि भक्त की अवस्था एक ऐसी पहुँच जाती है जब कि वह जिन्दगी के अन्दर, हर चीज के अन्दर, हर रंगत के अन्दर उसका स्वरूप देखने लगता है। फिर भला आप बतलाइए जब सब रंग में जब सब रूप में वह प्यारा होता है तो फिर जिन्दगी के अन्दर इन्सान के अन्दर वह वास्तविकता आ जाती है वह सचाई वह सत्य आ जाता है वह वास्तविक सन्तपना आ जाता है कि वह तो फिर बुरा करने वालों के साथ भी बुराई नहीं कर सकता वह तो यहाँ तक कहने लगता है :—If any one does me foolisly wrong I shall return him with the protection of my ungruding love the more tne evil comes from him the more the good shall go from me. जितनी कि दूसरे से बुराई आती चली जायगी और कोई गलती से नादानी से ध्यान देना जो भी आपके साथ बुराई करता है, प्यारे ध्यान रखना एक बात, जो भी आपके साथ बुराई करता है, आपके साथ जो भी आपके साथ अपराध करता है आप उस नादान और अज्ञानी पर रहम करो, उस पर क्रोध न करो क्यों ? अगर उसे ज्ञान होता कि उसे यह नहीं करना तो वह न करता और जब वह उसे ज्ञान ही नहीं है, जब उसका बचपना है तब वह क्या है। क्योंकि अक्सर कहा जाता है—The worst type of sinners they are only my divine babies and no one can deny that baby has not got its own charm. कौन कह सकता है कि बचपने की शरारत अपना आनन्द

नहीं रखती है, कौन कहता है कि बच्चे की शरारत आनन्द नहीं देती तो भई कहा कि पापी की शरारत आनन्द नहीं देती क्या ? क्या उसका आत्मिक जीवन नहीं है जिस प्रकार कि शारीरिक जीवन का बचपन व जवानी और बुढ़ापा होता है इसी प्रकार आत्मिक जीवन का भी बचपन, जवानी और बुढ़ापा है। आज जो भोगों में लिप्त हो रहे हैं, आज जिन्हें ईश्वर का ख्याल तक नहीं आता, आज जो आत्म तत्व को सोचते ही नहीं, आज जिन्हें अपने-आपका ख्याल ही नहीं होता वह क्या है भाई वह बचपने में वह अभी आत्मिक जीवन का बचपना गुजार रहे हैं, हाँ, भेद केवल इतना ही है शारीरिक जीवन के अन्दर और आत्मिक जीवन के अन्दर की आत्मिक जीवन के अन्दर बुढ़ापा अच्छा है और शारीरिक जीवन का बुढ़ापा खराब है, यहाँ बचपन में सुख है और वहाँ बचपन में दुख ही दुख है। तो भई यह बतलाओ कि पहले दुख मिल जाय और पीछे सुख मिल जाय तो वह अच्छा कि पहले सुख मिल जाय और पीछे दुख ही दुख मिल जाय, पहले दुख मिल जाय तो अच्छा है न, पहले १६ साल पढ़ाई कर लो और फिर एम० ए० की डिग्री लेकर आनन्द लेते फिरो तो वह ज्यादा अच्छा है, या पहले डिग्री लेकर पीछे मुसीबत करते रहो, डिग्री मिलेगी कैसे पहले ? मेहनत करने के बाद, तो इसलिए जो आज बड़े-बड़े पापी हैं, बड़े-बड़े अज्ञानी हैं वह केवल बच्चे हैं वह केवल बच्चे हैं अभी इसलिए········life may start with a tear but must end with a smile. जिन्दगी का आगाज़ बेशक आँसुओं से हो पर अन्जाम मुस्कराहटों से होना

चाहिए इसीलिए तुलसीदास जी ने कहा—

तुलसी इस संसार में जब हम भये जग हँसा हम रोये,
ऐसी करनी कर चलो कि तुम हँसो जग रोये।

जब दुनिया में आये तो दुनिया हँस रही थी तुम्हारे आने की खुशी में, दुनिया बाजे बजा रही थी, दुनिया शहनाइयाँ बजा रही थी। दुनिया तेरे आने की खुशी को सोच रही थी और तू रोए जा रहा था, रोए जा रहा था, रोए भी क्यों जा रहा था यह भी बतला दे रोए भी क्यों जा रहा था—

अरे बचपन में रोने का उकदा आज हम पे है खुला कहता है बचपन में ही :

"आगाज में ही रो दिए अन्जाम के लिए"

आगाज में ही रोते थे, क्यों रोते थे जवानी में यह पता लगा, यह बुढ़ापे में पता लगा, अरे आते ही रोना शुरू कर दिया कि दुनिया में बरबाद जीवन कर चले जायँगे हम······आगाज में ही रोते थे। ध्यान देना जब तू आया तो दुनिया हँस रही थी और तू रो रहा था। ऐ इन्सान, कुछ ऐसी करनी कर जा कि कहीं बाद में चिल्लाना न पड़े, कि अब याद लगी आने :

अब याद लगी आने कुछ काम किया होता,
ज़रा करके ठिकाने मन हरि नाम लिया होता,
साँसों के अजब मोती गर यों न लुटे होते,
हरि नाम मधुर अमृत जी भरके पिया होता,
अरे धन धाम में जो ऐसी ममता न पड़ी होती,
इस जोश जवानी में कुछ होश किया होता,

अरे अब सौ वर्ष का जीना विना हरि के नाम क्या है,
दो दिन ही जिया होता कुछ करके जिया होता।

दो दिन जिया होता, कुछ करके जिया होता। इन्सान तेरी जिन्दगी दो दिन की भी हो जाती तो बहुत बड़ी थी। लेकिन वह दो दिन की जिन्दगी जिन्दगी होती, वह जिन्दगी जिन्दगी नहीं जिसे तू जिन्दगी कह रहा है। दो दिन की भी अगर तेरी जिन्दगी होती तो वह अच्छी थी लेकिन वह जीवन वास्तविक जीवन था जो जीवन तू बरबाद करके जीवन से चल पड़ा है इसलिये कहा कि :

धनधाम में जो ऐसी ममता न पड़ी होती
इस जोश जवानी में कुछ होश किया होता
अब सौ वर्ष का जीना बिना हरि नाम के क्या है
अरे दो दिन ही जिया होता कुछ करके जिया होता

जीवन के सफर में हम संभल-संभल चलते—कट जाते सभी बंधन कुछ काम किया होता अरे लेकिन यह याद तब आई जब्र पास कुछ न रहा—याद कब आई जब कुछ पास न रहा। ध्यान कब रहा जब प्राण जाने लगा, ध्यान कब आया जब प्राण जाने लगे—इसलिए भाई कहीं ऐसा न करो कि जिन्दगी के अन्दर यह मिला हुआ समय गुज़र जाये, मिला हुआ यह समय न गुज़र जाये इसलिए बेशक जिन्दगी को आगाज़ में इसलिए जिन्दगी का आगाज़ जो है जो कुछ भी खो चुके हो भाई लेकिन अब ध्यान देना कि आगे से तुम खो न बैठो, जो खो दिया सो खो दिया, जो गँवा दिया सो गवा दिया क्योंकि हो सकता है जो आज तुम्हारे पास है इसलिए कहा भाई, क्यों मारा-मारा

फिरता है—

क्यों बन में फिरा मारा-मारा अरे पहले क्यों जंगल में मारा-मारा फिरता रहा,

"अरे क्यों बन में फिरा मारा-मारा
कुचाए सनम तो इधर ही रहा"

प्यारा तो तेरे बहुत नजदीक बैठा हुआ था तू कहता फिरता रहा जैसा कि माई की सूई घर के अन्दर खो गई आँगन के अन्दर तो वह गई बाहर स्ट्रीट लाईट में ढूँढ़ने—जब वह उस स्ट्रीट लाईट के अन्दर ढूँढ़ रही थी, एक नौजवान आया कहता है क्या ढूँढ़ती हैं, कहने लगी बेटा सूई खो गई है अच्छा तो माँ मैं ढूँढ़े देता हूँ—थोड़ी देर वह भी ढूँढ़ता रहा था, थोड़ी देर के बाद पूछा माँ सूई कहाँ खोई थी—बेटा सूई तो अन्दर आँगन में खोई थी। सूई आँगन में अन्दर खोई और ढूँढ़ती बाहर हैं। कहने लगी बेटा आँगन में अन्धेरा है—आँगन में अन्धेरा है इस प्रकार भाई हमारे हृदय के अन्दर दोषों का अन्धेरा है··· वहाँ विषय विकार का अन्धकार है, भोगों का अन्धकार है इसीलिए वह अन्दर प्यारा तो नज़र नहीं आता इसीलिए तो अन्दर अपना आत्मस्वरूप नजर नहीं आता, पर हम उस आनंद की (Happiness) की खोज में मारे-मारे फिरते हैं—लेकिन सूई खोई घर में बाहर कहाँ मिलेगी बचपन में एक कहानी सुना करते थे कि मन्दिर में एक आदमी प्रसाद बाँट रहा था तो प्रसाद बाँटते एक आदमी ने पूछा कि भाई प्रसाद क्यों बाँट रहे हो—कहता है कि रात को मेरा घोड़ा चोरी हो गया था, अरे घोड़ा चोरी हो गया तो प्रसाद बाँटते हो क्या प्रसाद का

मतलब जानते हो क्या होता है प्रसाद का मतलब है प्रसन्नता, प्रसाद means happiness अब आप देखो भई आपके घर कोई सन्त आता है तो आप क्या करते हो कि पहले सन्त के आगे भोजन रख देते हैं और उसके बाद कहते हो लो अब सब प्रसाद खाओ क्या मतलब कि सन्त को खिलाने के बाद हम प्रसन्न हो गये—अब सब प्रसाद खाओ अब सब प्रसन्नता सें प्रसाद को खा लो—लेकिन अगर भई कोई सन्त तुम्हारे घर में आये और फलों का टोकरा तुमने मँगाया हो और बढ़िया-बढ़िया फल तो तुम अपने पास रख लो और जो सड़ा-गला फल नीचे हो वह सन्त के आगे रख दों तो क्या अच्छा लगेगा भई, जो सड़ा गला फल नीचे बच जाय वह अच्छा लगेगा उसको—न तुम्हारी शोभा न मेहमान की शोभा और न तुम्हें प्रसन्नता न तुम्हें Happiness लेकिन पहले वह सन्त के आगे फल रख दिया वह तो बन गया प्रसाद और जो पहले आपने खा लिया और फिर गला-सड़ा सन्त के आगे रख दिया तो न तुमको पसन्द न सन्त को पसन्द । तो देखो भाई बचपन और जवानी जो बढ़िया-बढ़िया फल है वह तो भोगों ने खा डाला और जो गला-सड़ा फल है वह भगवान को दे डाला कि भगवान अब तो तेरा भजन करेंगे । कान सुन नहीं सकते रसना बोल नहीं सकती । तो जब शेर के दांत नहीं रहते वह भी साग खाना शुरू कर देता है । वेश्या का ग्राहक नहीं होता तो वह भी माला पकड़ लेती है जब शेर के पास दाँत नहीं होते तो वह शाकाहारी बन जाता है । वह भी Vegetarian बन जाता है—वेश्या के पास जब कोई ग्राहक नहीं होता तो वह

भी माला लेकर बैठ जाती है, करे क्या वह बेचारी इसीलिए कहा :—

क्यों बन में फिरा मारा-मारा कुचाए सनम तो इधर ही रहा,
नाहक तू गया तलाश में वहां न इधर का रहा न उधर का रहा।

तुझे जिस्म बनाने का शौक रहा, अरे तुझे तो शौक रहा कि मेरा जिस्म, मेरा शरीर सुन्दर-सुन्दर हो जाय, स्वस्थ से स्वस्थ बना रहे लेकिन तुझे एक शौक था तो उसको भी एक जौक था; तुझे जिस्म बनाने का शौक रहा उसे इसे मिटाने का जौक; रहा बच्चे को जवान किया और जवान को बूढ़ा किया अरे सुन्दर और सुन्दरी में एक दिन झुरियाँ आईं, बुढ़ापा एक दिन लाठी लेकर चला कि कमर झुकी और एक दिन सीताराम करते हुए संसार से चल बसा तो इसलिए कहा कि तुझे जिस्म बनाने का शौक रहा उसे मिटाने का जौक रहा—

"हुआ देखते-देखते जिस्म भस्म
न इधर का रहा न उधर का रहा'

आगे ध्यान देना—

तू तलब में हक़ की जरूर रहा, अरे हम मानते कि तू ईश्वर को मानता था, हम मानते हैं कि तू सच्चाई की खोज करता था हम मानते हैं कि तेरे अन्दर सचाई जानने की जिज्ञासा थी लेकिन "तू तलब में हक़ की जरूर रहा वले नशए तुक्वबर में चूर रहा, लेकिन घमण्ड तुझ में भरा हुआ था ego भरा हुआ था tinge था तेरे अन्दर वह ego का था तेरे अन्दर वह I ness का tinge था—अभिमान भरा हुआ था कहता कि तू तलब में हक की जरूर नशए तुक्कबर में चूर

रहा—जो खुदी में रहा वह तो दूर रहा न इधर का रहा न उधर का रहा, अगली लाइन पर ध्यान देना।

तू मिले न उसे तो करे क्या पिया कितनी अजीब बात हैं तुम्हें याद होगी, कहते हैं न लोग कि भगवान् नहीं मिलता—कहते हैं कि हम पिया की तलाश करते हैं हमें पिया नहीं मिलता "तलाश उसको है जरूर पर वह मिलता है नहीं है कोई ऐसा किमियागर जो किमायाई दिखा दे—तलाश उसकी है जरूर……

कहता है कि हमें तो भई उसकी बड़ी तलाश है—नहीं-नहीं मैं नहीं मानता कि तुझे जिसकी बड़ी खोज है और वह न मिले कितनी उल्टी बात आपको दिखाई देती है। नहीं-नहीं तुझे भगवान् की खोज नहीं भगवान् को तेरी खोज है पर तू मिलता ही नहीं—तू मिलता ही नहीं घर में—तू तो भाग रहा है आज इस भोग में आज उस भोग में, भाग रहा है कभी इधर भाग रहा है कभी उधर, तेरी वासनाएँ और तृष्णाएँ तुझे एकदम की फुरसत नहीं लेने देतीं इसको आजकल सभ्यता civilization कहते—पूछा कि civilization किसे कहते हैं तो हमने कहा भाई आजकल के जमाने में civilization का मतलब है no time no time no time and no work also बिलकुल समय नहीं, बिलकुल समय नहीं और काम भी कोई कुछ काम नहीं। आज का ज़माना ही ऐसा है कि कहता है कि इसलिए तुझे फुरसत ही नहीं मिलती, उससे मिलने की—इसलिए कहा इस लाईन पर ध्यान देना—तू मिले न उसे तो करे क्या—पिया तो मजबूर हो जाता है

क्योंकि तू उसे नहीं मिलता, तू मिले न उसे तो करे क्या पियां तेरा टालमटोल में अटका जिया।

तू ने कभी भी पिया को न सौंपा जिया न इधर का रहा न उधर का रहा, अन्त में ध्यान देना विचार देना जीवन में तू टालमटोल में लटकता रहा आज थोड़ी-सी जवानी है आई अरे कोई नहीं अभी तो जवानी हैं कुछ धन कमा लो, आगे कुछ बुढ़ापा आया अरे बुढ़ापा आने तक भी सोचता रहा अब कर लूंगा। लेकिन कल-कल करते-करते वह कहते हैं न एक हलवाई के पास एक सन्त जाता था। रोज एक सन्त दूध पीने जाता था तो एक दिन हलवाई कहता है कि महाराज क्या हमें भी कभी अच्छे आनन्द की तरफ ले चलो। यह क्या करते हो कि आपतो मजे में रहते हो और हमें दुनियादारी में फँसा रखा है। कहता है कि तो चल हमारे साथ हम ले चलने को तैयार हैं। अगर चलना है तो तू चलने को तैयार हो लेकिन भाई एक बात है कि "हम तो खड़े बाजार में लेकर लाठी हाथ जो घर फूंके अपना सो चले हमारे साथ"—जो अपने घर को आग लगाये तो चले हमारे साथ, इसलिए एक जगह पर कहा कि—

"क्या पूछते हो यारो क्या नाम है हमारा
बेनाम भी हमी हैं और हर नाम है हमारा
घरवर को तुम जो पूछो बेघर बनो गे तो समझो
हर ठौर है हमारा हर धाम है हमारा
नामी हुए हैं तब से जब नाम है मिटाया
बदनाम है हमारा गुमनाम है हमारा

पीते हैं रोज लेकिन रहते हमेशा सूफी। ध्यान देना पीते
हैं रोज लेकिन
रहते हमेशा सूफी न है सुराही अपनी न जाम है हमारा,
अरे पाई थी जिस पे चढ़कर मन्सूर ने फज़ीलत
है वही ज़ीना अपना वही वाम है हमारा
दुनिया में जितने मज़हब हम दूर है इन सबसे
लेकिन है कुफ़्र न अपना इस्लाम है हमारा,
अरे कहता है बस बाँध ले तू बिस्तर दुनिया अब हो
चुकी है ?
आगाज़ है हमारा अन्ज़ाम है तुम्हारा
अरे-फलोफलो ऐ प्रेमियो अब हम तो मर मिटे हैं
आगाज़ है तुम्हारा अन्जाम है हमारा क्या पूछते हैं—
कहता है ओ भाई अब हम तो खत्म होने वाले हैं अब तुम अपने को समझलो, फूलो फलो प्रेमियो अब हम तो मर मिटे हैं। आगाज क्या पूछते हो यारो इसलिए तो जिन्दगी के अन्दर इस तत्व को कहता है कि भाई तू नहीं उसे मिला, सन्त से कहने लगा हलवाई कि महाराज एक दिन हमको भी ले चलो और भूलों के रहते चित्त में जिसके चैन कभी न आने पाय, अपना सुधार करता जाए इन्सान उसे ही कहते हैं, और "निर्बलों के काम में आए सदा, जग में सच्चा बलवान वही और जब धन की कुछ चाह न हो धनवान उसे ही कहते हैं।"
Richness does not imoly the money you possess but the money you can renounce
तुम कितने धनी हो ? जितने धन का तुम त्याग कर

सकते हो अगर तुम्हारी तिजोरियों में करोड़ों पड़ा है तो हम तुम्हें करोड़पति नहीं कहेंगे; लेकिन अगर तुम्हारे में उन करोड़ों को त्याग करने की हिम्मत है तो तुम करोड़पति हो, बल वही जो निर्बलों के काम में आ जाता है इसलिए कहा नर्बलों के काम जो आए सदा जग में सदा बलवान वही, और जब धन की, "जग में जो हानि देखती पड़ती वह निज भूलों के कारण हैं, जो भूल करे वह भोगेगा विधान इसे ही कहते हैं :– In exurable, impossible of evasion Lord made the law of karma and retired तो इसलिए इस तत्व को इस भेद को जानने की कोशिशि करो—इस राज़ को जानने की कोशिश करो तो जिन्दगी के अन्दर; वह सन्त कहने लगा कि भाई अगर तुम्हें चलना है तो हमारे साथ चल सकते हो, कहने लगा कि महाराज जरा दो बरस ठहर जाओ। मेरे पास पुत्र हैं तो वे थोड़ा बड़े होने वाले हैं एक एम० ए० पास कर बैठा है सो उसकी नौकरी लगने वाली है, बस महाराज दो बरस के बाद मुझे आकर ले जाना। सन्त ज़रा बहुत पहुँचे हुए थे, ठीक दो बरस के बाद फिर वहाँ पहुँच गए। कहने लगे चलेगा—कहता कि महाराज दोनों पुत्रों की शादी हो गई पर सोचता हूँ कि पोते का मुँह देखकर ही जाऊँ। अच्छी बात हैं दो साल के बाद फिर आ जाना, महाराज वह सन्त फिर दो साल के बाद पहुँचे कहने लगा क्यों भाई अब चलेगा तो वह कहने लगा कि महाराज आप सोचो तो सही कि एक पोता केवल एक साल का है लेकिन न जाने उसका मेरे साथ क्या संयोग हैं कि उसको मेरे साथ बड़ा प्यार है। महाराज वह तो

माँ के पास जाता ही नहीं, अपने पिता को भी पूछता नहीं बस सारा दिन मेरे पास ही रहता है। अभी भी मैंने दुकान पर उसे पंगूड़ा डाल दिया हैं, झूला डाल दिया है तो वह उसमें लेटा रहता है वह ज़रा होश में आले तो मै आपके साथ चलूँगा, दो साल के बाद फिर आए कहने लगे चलता है अब तो वह कहने लगे कि महाराज आपको दुनिया में कोई और आदमी नहीं मिलता ले जाने के लिए जो तुम मेरे पीछे ही पड़ गए हो, अरे तो कहने का क्या मतलब हैं कि बहुत समय टालमटोल में, सारा जीवन टालमटोल में आज नहीं तो कल, कल नहीं तो कल इसी तरह कल-कल करके जीवन बीत जाता है। कल-कल करते हुए जिन्दगी बीत जाती है। किसी जवान से कह दो कि कुछ कर लो भाई तो कहता है अभी बहुत जीवन पड़ा है बहुत पड़ा हैं पड़ा हैं, कई बार लोग कह देते हैं कि जो आज करना सो कल करना कल करना सो परसों, अरे जल्दी-जल्दी क्या करता है अभी तो जीना बरसों। अरे अभी तो बहुत जीना है जल्दी-जल्दी क्यों करता है लेकिन हमारे लोगों ने कहा है जो कल करना सो आज कर तुझे क्या भरोसा है कल का, अरे कुछ खबर नहीं है कल की यहाँ तो खटका लगा है पल-पल का। यहाँ तो पल पल का खटका है और तू कल की कहता है। बरसों जीना है तो इसलिए भाई कहने का मेरा मतलब क्या है ध्यान देना "तू मिले न उसे तो करे क्या पिया तेरा टालमटोल में अटका जिया। न इधर का रहा न उधर का रहा" तुझे दीदार का माना शौक रहा। तुझे मानते हैं कि दर्शन का शौक था, लेकिन भाई जीवन के अन्दर तुझे दर्शन का शौक था लेकिन वास्त-

विक में दर्शन का शौक तो था तव तक तुझे अभिमान रहा, तू घमण्ड में पड़ा रहा, "तेरी आँख में चूँकि फतूर रहा ध्यान देना बुलेशाह ने कहा बुलाया शोअसा थी बख नहीं बुलेशाद भगवान् हमारे से अरे प्यारा कोई हमसे कोई दूर नहीं बुलेया, शो आसी थी बख नहीं, बिन शो दो जग क़ख नहीं पर बेखन् वाली अख नहीं, तो जिंदड़ो दुख पई सहदीए देखने वाली आँख नहीं इसलिए जिन्दगी दुःख पयी सहदी है इसलिए कहा :--

तेरी आँख में क्योंकि फतूर रहा इसलिए तू दर्शन से दूर रहा और जब दीदे खुले तो नूर गया न इधर का रहा न उधर का रहा जब तक तो तेरी आँख में कसूर था तो तू दर्शन से दूर रहा और जब आँख खुली तो आँख का नूर जा चुका था। आँख में देखने की ताक़त बाकी नहीं रही थी, तो इसलिए भाई पदार्थों का सदुपयोग मिली हुई वस्तुओं का सदुपयोग करके हम जिन्दगी के अन्दर एक वार अपनी मन्जिल को पाले तो फिर यह घन यह दौलत यह कोठिया यह कारें यह बुरी नहीं भाई मैंने कई बार कहा यह धन-दौलत सब तुम्हारे लिए बनाए गए, तेरे लिए इनकी हस्ती नहीं यह तेरी हस्ती के लिए यह सब कुछ है, तेरे लिए यह सब बनाए हैं, तेरे लिए यह संसार बनाया गया, सूर्य उदय होता है सूर्य में प्रकाश होता है क्योंकि तेरी आँख यह कहती है कि यह प्रकाश है, तेरी आँख बन्द हो जाय तो कहाँ तेरे लिए प्रकाश हैं। दुनिया के चारों तरफ के फैले हुए वैभव दुनिया के चारों तरफ खिले हुए फूल दुनिया के फूलों की खुशबू दुनिया के बंड़े-बड़े महलों का आराम दुनिया के

बड़े-बड़े सुख केवल मेरी हस्ती से कायम हैं अगर मैं नहीं रहता तो वह सब बेकार हैं उनकी कोई कीमत नहीं उनका कोई अस्तित्व नहीं उनकी कोई कीमत नहीं क्योंकि मैं कहता हूँ कि सूर्य है इसलिए सूर्य का प्रकाश है मैं कहता हूँ कि संसार है इसलिए सँसार नज़र आता है। दूसरे शब्दों में तेरे रहने से इन सब चीजों की हस्ती है अगर तू नहीं रहता तो इनकी कोई हस्ती नहीं—लेकिन इन्सान तू अपनी कीमत को न जानकर इनकी हस्ती को मान रहा है। तू यह समझता है कि भोगों के लिए तेरी हस्ती है अरे तेरी हस्ती के लिए भोग बनाए गए हैं। मकान इसलिए बना कि तुम्हें रहना था या तू इसलिए बना कि मकान था ? तू अपने लिए मकान तैयार करता है। मकान किसके लिए तैयार होता है ? तेरे लिए। या तू इसलिए तैयार किया गया कि मकान बना हुआ था। तेरे लिए मकान तैयार किया गया प्यारे तेरे लिए मकान की इमारत खड़ी की गई। तेरे लिए भोग के सामान पैदा किये गए। तेरे लिए इस संसार का निर्माण हुआ। तेरे लिए वैभव और सुख हैं। यह विज्ञान के सुख, यह दुनिया के बड़े-बड़े पदार्थों के सुख तेरे लिए बनाये गए लेकिन तू इनके लिए नहीं बनाया गया। तू इनका master है, तू इनका स्वामी है, तू इनके अस्तित्व को पहचान। इनको अपने लिए इस्तेमाल करता हुआ तू किसी और का बनकर जी। जिसके लिए तू बनाया गया है। क्या तेरी जिन्दगी बगैर मतलब के बना दी गई है ? अगर दुनिया के सारे पदार्थ तेरे लिए बनाये गए तो तू किसलिए बनाया गया। तेरी जिन्दगी

क्या बिना मतलब के, बिना लक्ष्य के थी ।

A man without ideal is a penniless bank.
A smelless flower and a waterless tank.

Bank में पैसा न हो तो उसे बैंक कहोगे ? फूल में सुगन्ध न हो तो उसे फूल कहोगे ? तालाब में पानी न हो तो उसे तालाब कहोगे ? जिस जीवन में लक्ष्य न हो उसे जीवन कहोगे । इसलिए कई बार कहा—

जिन्दगी में जिन्दगी की शर्त गर पूरी न हो,

ध्यान देना इस लाइन पर—

जिन्दगी में जिन्दगी की शर्त गर पूरी न हो,
तो जिन्दगी को जिन्दगी से रूठ जाना चाहिए,

अगर जीवन में जीवन का लक्ष्य पूरा न हो सके तो वह जीवन जीवन नहीं, जिन्दगी जिन्दगी नहीं । जिस जिन्दगी के अन्दर रहते हुए हम अपनी इन्द्रियों के, हम अपने मन के और भोगों के स्वामी न बन सके । इसीलिए कहा कि यह सब कुछ तेरे मन के ख्यालों से है, तेरे मन की एकाग्रता से है—

It is mind that makes a man strong

कई बार आपसे कहा—

It is mind that makes a man strong
It is mind that throws in feeble throngs
It is mind that makes the mighty king
It is mind that them to poverty bring
It is mind that keeps the man astray
It is mind that puts him on the way
The world and God in mind are bound

When one is lost the other is found
Your mind is like an animal wild
By fixing on God it becometh mild
The mind is given to you as a faithful slave
By thoughts of bondage itself you gave
Clean this and you shall be,
Controlled by passion it is sure
The greatest man the world could see,
was of course he whose mind was pure
A mind controlled is a faithful chap
Sweeter of course than the mother's lap.

कहते हैं कि दुनिया में माँ की गोद से बढ़कर कोई बड़ा आनन्द नहीं होता। कहता है कि नहीं। उससे भी बड़ा एक मस्ती का आनन्द है। कहता है कि माँ की गोद से बढ़कर दुनिया में कोई आनन्द नहीं। लेकिन उससे भी बढ़कर एक आनन्द है और वह है मन की एकाग्रता।

A mind controlled is a faithful chap
Sweeter of course than the mother's lap.

इसीलिए कहा कि—

अपने मन को साध प्यारे अपने मन को साध।
तन है गाड़ी मन है घोड़ा जित चाहे ले जाए,
सच्चा साधक उसको मानो जो मन काबू पाए,
अरे बुद्धि रूपी बाग द्वारा ले जो इस को साध।
अपने मन को साध प्यारे अपने मन को साध॥
मन के हार में हार है मन के जीते जीत,

अपने आप ही आन मिलेंगे प्रीतम मन के मीत,
प्रीतम फिर क्यों दूर रहेंगे जो हो प्रेम अगाध ।
अगर अगाध प्रेम हो प्यारा कहीं दूर रह सकता है ?
प्रीतम फिर क्यों दूर रहेंगे जो हो प्रेम अगाध ।
अपने मन को साध प्यारे अपने मन को साध ।।
दर दर भटके ठोकर खावे लोभी कपटी कामी,
सब दुनिया है उसकी सेवक जो है अपना स्वामी,
चंचल मन जब बस में आया कौन करे अपराध ।
अपने मन को साध प्यारे अपने मन को साध ।।
मन के अन्दर स्वर्ग नरक हैं मन की अद्भुत काया,
प्रेमानन्द को सभी बराबर क्या अपना क्या पराया,
मन निग्रह में छिपा हुआ है प्रकृति का स्वाद ।
अपने मन को साध प्यारे अपने मन को साध ।।

तो अपने मन को काबू करले, अपने मन का स्वामी बन, अपनी देह का स्वामी बन और अपनी हस्ती को पहचान । फिर तू देखेगा कि जिस जिन्दगी को तू दुःखमय समझता है, जिस जीवन को तू नरकमय समझता है, जिसको तू दुःखों का संसार समझता था वह इस जीवन में सब कुछ है, भैया तेरे हाथ में है । Life is yours, make it or mar it. जिन्दगी तुम्हारे हाथों में है चाहे बना लो चाहे उसको बरबाद कर डालो । चाहे उसे बना लो चाहे बिगाड़ डालो । जिन्दगी तुम्हारे हाथों में है, इसका खेल तुम्हारे हाथों में है । अगर जिन्दगी को बना लोगे तो जिन्दगी बन जायगी । अगर इसको बिगाड़ डालोगे तो मौत के मुँह में चली जायगी ।

इसलिए अपने कर्मों को पहचानते हुए, अपने तत्व को जानते हुए भी अपनी हस्ती को देखते हुए मानव ! तू अपने जीवन के अन्दर खड़ा हो । और जागकर नींद से जाग—

"जाग प्यारे नींद से जाग,

अब तो देख ले घर में तेरे लगी है काम क्रोध की आग,
जाग प्यारे नींद से जाग,

जाग प्यारे, ऐसा जिन्दगी के अन्दर जाग ले प्यारे, जिन्दगी के अन्दर जाग

जाग प्यारे ऐसा न हो कि लुट जाए तेरा अमर सुहाग,
जाग प्यारे नींद से जाग,

कहीं ऐसा न हो कि तेरे जीवन का यह वास्तविक सुहाग लुट जाय, जिन्दगी की वास्तविक खुशी लुट जाय, जिन्दगी का वास्तविक तत्व दूर हो जाय । इसलिए उठ जाग ! और अपने मन का स्वामी बनता हुआ संसार तुम्हारे पास फिर भी रहेगा । अरे, भोग फिर भी तुम्हारे पास रहेगा । लेकिन तू अपनी देह का स्वामी बन सकेगा ? और अपने मन का स्वामी बन सकेगा । वह कैसे बनेगा ? ताकि तू संसार में रहता हुआ भी संसार का स्वामी बनकर जिए । इसको आगे फिर कहेंगे ।

बारह

तेरे दिल में हज़ारों महफ़िलें खाबिदा रहती है
ज़रा खिलवत में आ करके देख ओ महफ़िल देखने वाले
निगाह रख अपनी किश्ती पर ओ साहिल के तमन्नाई
कि तुगयानी में अकसर डूब जाते हैं यह साहिल देखने वाले

जीवन का लक्ष्य जान लेने के बाद, जीवन की मंजिल को जान लेने के बाद, किनारे को देख लेने के बाद ध्यान किश्ती पर होना चाहिए, ध्यान नाव पर होना चाहिए, ध्यान मार्ग पर होना चाहिए। किनारे को हमने देख लिया कि हमें फलाँ किनारे पर पहुँचना है। फलाँ हमारी मंजिल है। फलाँ-फलाँ हमारा लक्ष्य है। उस destination और उस destination पर पहुँचकर दम लेना हैं। और उस मंजिल पर हमें पहुँचना है। लेकिन उस मंजिल का हमने ध्यान कर लिया। अब अगर हम केवल मंजिल-मंजिल को चिल्लाते रहे कि हमारी मंजिल यह हैं, हमारा लक्ष्य यह हैं, और लक्ष्य का ध्यान करते हुए हम मार्ग को भूल जाते हैं तो हम कभी भी मंजिल पर पहुँच नहीं पाते। जैसे कि नाव में बैठे हुए हम दरिया में जा रहे

हैं। दरिया में हमारी नाव चल रही है। उस दरिया के अंदर हमारी नाव बहती हुई बढ़ी जा रही है। और हम जानते हैं कि हमें फलाँ किनारे पर पहुँचना हैं, फलाँ घाट पर पहुँचना है, फलाँ हमारी मंजिल है। लेकिन यह सब कुछ जानते हुए अगर आप यह बतलाइए कि हम उस चीज़ को भूल जाते हैं कि साथ में हमें किश्ती को भी चलाना है। अगर नाव को चलाने में हम नाव का ध्यान नहीं रखते तो बताओ क्या कभी हम किनारों पर पहुँच सकते हैं? ध्यान दीजिएगा—

'निगाह रख अपनी किश्ती पर ओ साहिल के तमन्नाई।' ओ किनारे पर पहुँचने की इच्छा करने वाले, ओ मंजिल को पाने की इच्छा करने वाले, ओ आत्म-तत्व को पहुँचने की इच्छा करने वाले पहले अपने जीवन के अन्दर उस मार्ग को अपनाने की कोशिश कर, पहले अपने रास्ते को ठीक कर ले, पहले अपने रास्ते का ख्याल कर ले। मंजिल पर तेरी नजर रहनी चाहिए। मंजिल में तेरा ख्याल रहना चाहिए। लेकिन रास्ते का ख्याल रहना चाहिए। ज़्यादा कीमत तो रास्ते की है। अगर रास्ता ही भटकता हुआ होगा, अगर रास्ता ही गुमशुदा है, अगर रास्ते का ही पता नहीं तो बोलिए मंजिल में कहाँ पहुँचेंगे। तो इसलिए—

'निगाह रह अपनी किश्ती पर ओ साहिल के तमन्नाई कि तुगयानी में अकसर डूब जाया करते हैं यह साहिल देखने वाले केवल किनारों को चिल्लाने वाले, केवल साहिल-साहिल कहने वाले, जिस समय तुगयानी आया करती है, जिस समय तूफ़ान आया करते हैं दरियाओं के अन्दर, उसमें यह सब डूब जाया

करते हैं। इसलिए कहा था भाई कि अगर जिन्दगी के अन्दर अपनी मंजिल की पूर्णता तक पहुँचना है तो सबसे पहले हमें अपने मार्ग को ठीक करना होगा, पहले हमें अपने जीवन का ध्यान करना होगा कि हमारा जीवन कैसा चल रहा है? केवल उस मंजिल को ध्यान देते हुए कि हमारा लक्ष्य है आत्म-तत्व को जानना। हमारा लक्ष्य है अपने-आपको जानना तुम्हारी मंजिल वह है जहाँ कि तू और मैं का भेद मिट गया। जहाँ कि तेरा और मेरा कुछ न रहे। लेकिन भाई, एक मंजिल को पहुँचने के लिए, उस मंजिल तक को जाने के लिए हमें अपने रास्ते को जानना होगा, हमें अपने रास्ते की ओर ध्यान देना होगा। हमें नाव का ध्यान रखना होगा कि कहीं नाव भँवर में न फँस जाय। इसलिए कहा कि—

लहरों के झूले पर राही अपनी नाव झुलाये जा
रे पतवार चलाये जा नैया पार लगाये जा

तेरा काम है पतवार चलाना। लेकिन अगर तू पतवार का ध्यान न करे, अगर जीवन के अन्दर तू नाव का ख्याल न करे और नाव का ख्याल न करते हुए केवल किनारा-किनारा चिल्लाता रहे तो कभी भी मंजिल पर न पहुँच सकेगा। इसलिए अपनी जिन्दगी के अन्दर, अपने विचारों के अन्दर, अपने जीवन के अन्दर, अपने कर्मों को पहले शुद्ध करने की कोशिश कर। अपने कर्मों को सुन्दर बनाने की कोशिश कर। self purification जो कि इस drama का पहला scene है, उस जीवन की शुद्धता को लाने की कोशिश कर। ताकि तेरा मन शुद्ध हो जाय। तेरे मन में कोई दोष न रहे। तेरी इंद्रियों

में कोई विकार न रहे। तेरी बुद्धि में कोई ग्रासक्ति वाकी न रहे। जब तेरी बुद्धि में ग्रासक्ति न होगी तो तेरे मन में दोष न होंगे। जब तेरी इन्द्रियों में विकार नहीं ग्रायेंगे तो उस समय तुझे ग्रपनी मंजिल पाने में देरी न लगेगी। लेकिन भाई, केवल मंजिल को चिल्लाते हुए ग्रगर रास्ते को भूल जाग्रोगे तो उस चीज़ का ध्यान जीवन में सब कुछ करते हुए भी जीवन गुज़र जायगा, ग्रौर जीवन में करते हुए भी जीवन गुज़र जायगा ग्रौर मंजिल को न पा सकोगे। इसलिए भाई, ग्रपने जीवन के ग्रन्दर पहले ग्रपने कर्मों का ध्यान रखो ग्रौर कर्मों के साथ-साथ फिर जिस समय जिन्दगी के साथ कर्मों का ध्यान रहेगा। ग्रक्सर लोग कह देते हैं कि महाराज, हम तो बँधे हुए हैं। हमको हालात ने बाँध रखा है। हमको हालात ने काबू कर रखा है। लेकिन भाई, ध्यान देना One who complains of the circumstances is still to be a man जो हालात का तकाज़ा करता है, जो हालात का ख्याल करता है, जो यह कहता है कि हालात ने मुझे बाँध रखा है, ग्ररे दुनिया के ग्रन्दर ऐ इन्सान, तुझे कोई वस्तु नहीं बाँध सकती केवल तेरे ख्यालों ने तुझे बाँध रखा है। तू ग्रपने ख्यालों से बँधा हुग्रा है ग्रौर ग्रपने ख्यालों से ही छूट सकेगा।

जो यह कहता है कि मुझे फलां ने बाँधा है मुझे फलां ने बाँध रखा है। वह भी ग्रभी इंसानियत की हद तक नहीं पहुँचा। वह ग्रभी मानवता की हद तक नहीं पहूँचा क्योंकि मानव जो है मानव को भगवान ने बंधनों के ऊपर उठाया है। वन्धन हालात उसके मुताबिक चलने चाहिए। नाकि उसे

हालात के मुताबिक चलना चाहिए इसलिए कहा है It is very easy to live in the world's opinion. दुनिया में रहते हुए दुनिया की बातों के साथ बह जाना बहुत आसान होता है दुनिया की राय में बह जाना बहुत आसान होता है दुनिया की लहर में बह जाना बहुत आसान होता है। It is very easy to live in the world of (today) world's opinion and it is also very easy to live in the solitude of ones own. और एकान्त में बैठे हुए अपनी मनमानी कर लेना बड़ा आसान होता है But really great man is he who lives in the world ofones own and enjoys multitude in solitude महान कौन है, महान वह है जो दुनिया में हैं जो अपने असूलों पै जी रहा है और जब एकान्त में है तो इसे सारे विश्व का ध्यान हो रहा हैं दुनिया में रहते हुए दुनिया से अलग है। और दुनिया से जब अलग है तो सारी दुनिया उसके अन्दर बसी हुई है। कुछ न करते हुए सब कुछ कर रहा है और सव कुछ करते हुए कुछ नहीं कर रहा है। कुछ न करते हुए इसीलिए कहा कृष्ण ने भी कहा one who finds in intense activity complete rest and complete rest in intense activity has become a yogi. जो इन्सान सब कर्म करते हुए अपने आपको पूर्णमय आराम में महसूस करता है और वह जो आराम करते हुए भी सब कुछ कर रहा है वह कहता है कि वह योगी अवस्था में पहुँच गया तो जिन्दगी के अन्दर अवस्था तो उस तक पहुँचनी है मंजिल तो

हमारी वही है जहाँ कि सारे विश्व का कार्य हमारे से हो रहा हो सारे संसार की फुरना एक हमारी फुरना से संसार चल रहा है। लेकिन हमें ख्यालों की ताकत हमारे ख्यालों से यह सारा संसार वंध रहा है। हम ख्यालों से ही वँधे हुए हैं और ख्यालों से ही हम आज़ाद हो सकते हैं, और यही ख्याल यही ताकत यही चिन्तन जब मज़बूत हो जाता है जब बढ़ जाता है तब इसी चिन्तन को will power कह देते हैं। संकलप शक्ति कह देते हैं। इसी को इन्सान कहते हैं कि फलां ने सिद्धी प्राप्त कर ली फलां को संकल्प सिद्धी कहते हैं। कि वह इन्सान के अन्दर वह will power हो जाती है वह ख्याल की एकाग्रता हो जाती है जिस एकाग्रता को पाकर जिस ख्याल की बुलन्दी को पाकर जिस भावना की महानता को जानने पर जिन्दगी में कहीं कमी नहीं रहती। फिर वहाँ दुनिया के विषय दुनिया के भोग दुनिया की वासनायें दुनिया के पदार्थ उसको दबा नहीं सकते—

उसे मालो दौलत से न वास्ता न गर्ज मकामो कयाम से,
जिसे कोई निस्बत खास हो शमां रूपी राम से।
मुझे दे रहा है तसल्लियाँ हर इक ताज़ा पैयाम से,
कभी आके मज़िरे आम पर कभी हट के मज़िरे आम से।
क्या रहा मुकाबला मुसीबतों का कदम पै कदम,
पार कर सब मंजिलें अब जा मिले है राम से।
भुझे गर्ज किसी से न वास्ता मुझे काम अपने काम से,
तेरी फिक्र से तेरी जिक्र से तेरी याद से तेरे नाम से।

अरे दुनिया के विषय है क्या वला ऐ माया तुझे हो जो हौसला ।

जरा कर ले आ के मुकाबिला मेरे एक मस्तीए जाम से,

ऐ दुनिया के विषय है क्या बना ए माया तुझे हो जो हौसला

जरा कर ले आके मुकाविला मेरे एक मस्तीए जाम से,

एक मेरे मस्ती के जाम से ए संसार अगर सारे दुनिया भर के नशे भी लेकर आ जायँ तो मेरे एक मस्ती के प्याले के आगे तेरे सारे नशे हेच हो जाते हैं। तेरे नशे खत्म हो जाते हैं, लेकिन यह नशा कहाँ मिलेगा ? यह नशा कैसे मिल सकेगा ? ध्यान देना कहते हैं मन को काबू कर लो भाई, मन को एकाग्र कर लो भाई लेकिन मन कब तक नहीं एकाग्र होगा जब तक कि उसको कोई बड़ी वस्तु न मिल जाएगी। जब तक कि वह कोई बड़ा नशा न पायेगा। तब तक मन कभी छोटा नशा छोड़ने को तैयार न हो सकेगा। इसलिये कहा कि—

लोभ मोह अज्ञान के फन्द भी छूटते नहीं छुड़ाने से,

भरने वाले भर लेते हैं पैमाना पैमाने से ।

वह तो प्याले भरने वाले अपने प्याले प्यालों से भर लेते हैं भैया कहीं प्याला लेकर किसी भरे हुये के पास पहुँच जाओ तो प्याला भर जायगा। नही तो छोड़ने से वह छूटा नहीं करते ।

लोभ मोह अज्ञान के फन्द भी छुटते नहीं छुड़ाने से,

भरने वाले—भर लेते हैं पैमाना पैमाने से ।

किसी भरे हुए अरे भरे हुए भी नहीं, छलकते हुये पैमाने से भरे हुये नहीं छलकते हुये पैमाने से जो पैमाना छलक रहा है

जो प्याला उछल रहा हो उस उछलते हुये प्याले से अगर तुम्हें कुछ मिल सके तो लो भाई। इसलिए जिस समय अर्जुन ने पूछा कि भगवान मेरा मन नहीं लगता मेरे अन्दर वासनायें हैं मेरे से यह माया काबू नहीं होती। भगवान कहते हैं ओ अर्जुन मेरी यह माया बुरी नहीं है यह माया बुरी नहीं हैं। लेकिन क्या कर अर्जुन, अर्जुन—This maya of mine is divine Come unto me and thou Shall be Saved ए अर्जुन तू मेरी शरण में आजा तो यह माया तुझ पर असर न कर सकेगी। भगवान ने यह नहीं कहा कि माया का नाश हो जायगा (Come unto me and you Shall be Saved) या मिट जायगी। भगवान ने यह नहीं कहा कि माया बिल्कुल खत्म हो जायगी। नहीं-नहीं भगवान ने सीधी-सी बात दे दी। माया तो जैसी है वैसे ही रहेगी ए अर्जुन तू मेरी शरण में आजा तो तुझ पर असर न करेगी। जो यह कह दें कि मैं दुनियां के सुख और दुख को बदल दूंगा जो यह कह दें कि दुनियां की अच्छाई और बुराई को बदल दूंगा वह वह बड़ी गलती पर हैं भई क्योंकि भाई World is mixture of opposites maya is nothing but statement of facts माया वाक़यात का बयान करती है और माया कहती है कि अच्छाई और बुराई संयोग और वियोग जन्म और मरण भोग और रोग इनको कोई अलग नहीं कर सका और न कर सकेगा। कोई ऐसी सुबह बतला दो जो शाम न लाती हो। कहता है

"झिलमिलाता ही चला जाता है यह नज़में शहरी'

प्रातःकाल का सितारा क्यों झिलमिला रहा है प्रातःकाल को कभी आपने एकाग्रचित से एकाग्रचित हो एक मिनट के लिए तो जो प्रातःकाल एक सितारा खड़ा होता है कभी उसको देखना किसी प्रातः ध्यान देना झिलमिलाता है कहता है क्यों काप रहा हैं यह सितारा कहते हैं

सुबह कहते हैं जिसे वह शाम का अफ़साना है

अरे यह प्रातःकाल शाम की कहानी बतला रही है, यह शाम की बात बतला रही है क्योंकि प्रातःकाल आते ही कहता है कि शाम आ रही है तो इस लिए जिन्दगी आते ही कह देती है कि मौत मिलेगी जन्म साथ ही मौत का वारन्ट लाता है. इसलिए कहा है—

इशरते दुनिया की दो लहज़ा के सिवा कुछ भी नहीं ।

दुनिया की ऐश दुनिया के भोग दो क्षण के सिवा कुछ नहीं,

कलबे खाक़ी से जब निकली हवा तो कुछ भी नहीं ।

इशरते दुनिया की दो लहज़ा के सिवा कुछ भी नहीं ।

अरे कलबे खाकी से जब निकली हवा तो कुछ भी नहीं ।

मिट्टी के पुतले से जब हवा निकल गई बाकी कुछ भी नहीं

ध्यान देना ।

बर्के गुल से भी ज्यादा जो थी नाज़ुक गुल बदन ।

फूल की पत्ती से भी कोमल जो सुन्दरियाँ थीं—बल्कि

आज उनका दुनियाँ में मिलता बाकी कुछ भी निशा नहीं ।

ल्ज्जिते दुनियाँ की समझो यारों उसकी मिल गई ।

जिसने यह समझ लिया कि दुनिया की मज़ा कुछ भी नहीं

लोग कहते हैं फगाँ भोगी

दुनिया का आनन्द ले रहा है। फलाँ बड़ा आनन्द ले रहा है वह बात याद आ जाती हैं कि एक फकीर राजा के महल के पास आया, राजा ने महल के पास पहुँच कर चने भुनने वाली भट्ठी थी वहाँ से थोड़ी राख निकाली और नीचे बिछा कर लेट गया। जब नीचे लेट गया तो राजा ने ऊपर से देखा कि क्या इस फकीर की जिन्दगी है। मेरे पास इतने वैभव हैं, इतना सामान हैं और यह नीचे राख पर सो रहा है। खैर! रात गुजर गई सुबह हो गई लेकिन मस्तानों की दुनियाँ को कौन जानता है—

फकीरों की दुनिया है सबसे निराली
सदा उनके चेहरों पर रहती है लाली
न मरने की चिन्ता न जीने की आशा
यही है असल में शहनशाहे आली क़हा है
राजी है सदा रज़ा पर प्रभु की
कोई करे पूजा कोई देवे गाली
फकीरों की—दुनियाँ है सबसे निराली

तो इसलिए इस विचार से उस राजा ने देखा, इस फकीर को कहता है क्या इसका जीवन है! मन में सोचने लगा खैर! रात गुज़र गई, रात गुज़रने के बाद प्रातःकाल छत के ऊपर खड़ा हो गया और छत के ऊपर खड़ा होकर फकीर का मज़ाक करने लगा, कहता है ओ बावा रात कैसी गुज़री! फकीर हँस पड़ा; मुझसे पूछते हो रात कैसी गुज़री कहता है तेरे से पूछता हूँ कि रात कैसी गुज़री? फकीर कहता है राजन्! आधी तो तेरी जैसी आधी तेरे से भी अच्छी। कहता है मेरे से

भी अच्छी कहता है ? हाँ, आधी तेरे से भी अच्छी फकीर कहता है सुन राजन्, आधी रात तू सोया और आधी रात मैं सोया दोनों को होश न था कि कहाँ पड़े हुए हैं राख पर पड़े हुए मुझे होश न था और बिस्तर पर पड़े तुझे होश न था। दोनों बराबर थे। नींद के अन्दर नींद में तू कहाँ था मुझे तुझे पता नहीं था और मैं नींद में कहाँ था मुझे पता नहीं था लेकिन आधी रात तूने भोगों में पड़कर जीवन का नाश किया और आधी रात मैंने प्रभु की याद में अपने दिलबर की याद में अपने प्यारे की याद में बिताया अपने प्रीतम की याद में आधी रात गुजार कर अपने जीवन का आनन्द लूटा। इसलिए राजन आधी रात तो तेरी जैसी गुज़री और आधी तेरे से भी अच्छी। इसलिए कहा लिज्ज़ते दुनिया को समझो यारो उसी को मिल गई। किसने लिया दुनिया का मजा क्या दुनिया का मज़ा वह लेगा जो भोगी है, क्या दुनिया का मज़ा वह लेगा जो पल पल में चिंतित हो रहा है जिसने पल-पल के अन्दर साजोसमान के अन्दर सब पदार्थों के अन्दर आसक्ति बाँध रखी है। जो पल-पल चिंताओं के अन्दर घुल-घुलकर मर रहा है चाहे वह धनी हो या निर्धन यह तो मैंने आगे भी कई बार कहा है कि धनी और निर्धन में ज्यादा भेद नहीं होता। एक बहुत मामूली-भेद है हालाँकि यह कहता हूँ—

कि दुनिया का जो बशहर है यारो वह सब गरीब है।
समझे जिसे अमीर थे निकला गरीब है
भूखा जो माँगने लगा इक सेठ से छदाम

कहने लगा कि बाबा माफ करो बन्दा गरीब है
पूछने लगा इक शाह से कहने लगा कि यों
बन्दा तो हुआ आजकल बिलकुल गरीब है।
नौकर भी है गरीब हैं आका गरीब हैं
राजा भी है गरीब प्रजा गरीब है
है घर में जिसके खाने को वह भी गरीब है
है भागता फिरता जो वह भी गरीब है
है कोठी जिसके रहने को वह भी गरीब है
जो माँगता फिरता है गलियों में वह भी गरीब है
अरे तू क्यों माँगता है भला किसी दुनिया दार से
अरे तू तो है फकीर पर वह तो गरीब है
तो कहता है कि भई अगर सभी गरीब हैं तो अमीर कौन है कहता है
शाह जो दिल का है वह कब गरीब है।
जो अपने मन का शाह है जो अपना स्वामी है
जो अपने मन का मालिक है कहता है उसमें गरीबी कहाँ ?
जो शाह है दिल का भला वह कब गरीब है
पैसों में रहता है जो वो ही गरीब है"

तो इसलिए अमीर और गरीब में ज्यादा भेद नहीं निर्धन और धनी में ज्यादा भेद नहीं। दोनों की हालत परेशान है लेकिन भेद इतना ही है मुझसे लोग अकसर पूछते हैं कि स्वामी जी अमीर और गरीब में क्या भेद है। भैया मैं तो मामूली-सा भेद समझता हूँ गरीब धन की इंतजार में मर

जाता है और अमीर उनकी संभाल में मर जाता है। हालत दोनों की खराब ही हैं। दोनों को चिन्ता की बीमारी, दोनों को दुख की बीमारी; दोनों को कोई-न-कोई कोढ़ लगा हुआ है। यह चिन्ता का कोढ़ सबसे बड़ा कोढ़ होता है। बाहर का कोढ़ जल्दी ठीक हो जाता है लेकिन यह चिन्ता का कोढ़ तो जीने नहीं देता जोवन-भर। इसलिए भई जिन्दगी के अन्दर दुनिया का आनन्द किसने लिया, दुनिया का मजा किसने लूटा अरे उसने लूटा जो बड़े-बड़े महलों के अन्दर बैठे हैं क्या? ध्यान देना मैंने कई बार कहा है महल बुरे नहीं, दुनिया बुरी नहीं लेकिन वह भई तुम्हारे मन में बस्ती हुई कोठियाँ और कारें तुम्हारे मन में बसा हुआ वह संसार वह तुम्हारे मन में वसी हुई दौलत बहुत बुरी है। मन में बसी हुई दौलत बहुत बुरी है। मन में बसा हुआ परिवार बहुत बुरा है। मन में बसी हुई कोठियाँ और कारें बहुत बुरी हैं। वह तुम्हें एक दिन रुला देगी। बाहर की कोठियाँ और कारें तुम्हें दुखदायी नहीं होंगी। इसलिये कहा कि दुनिया का मजा किसने लूटा "लिज्ज़तें दुनिया की यारो समझो उसी को मिल गई।" दुनिया का आनन्द किसने लिया उसने जिसने यह समझा कि दुनिया का मज़ा कुछ भी नहीं। लिज्ज़तें दुनिया को उसी को मिल गई, उसी को दुनिया का आनन्द मिल गया जिसने समझा कि दुनिया में मज़ा ही नहीं। जिसने देख लिया कि दुनिया का मज़ा कुछ भी नहीं। "फूल भी कहते थे सुबह मिलकर इक़ इंसान से" कि आज सुबह को जब मैं बाग में गया तो फूल मुझे चिल्लाकर कहने लगे फूल भी कहते थे सुबह मिलकर

हमसे

"एबशहर मेरी तरह तेरी वक़ा कुछ भी नहीं।"

एबशहर इंसान हमारी तरह तेरी कीमत कुछ भी नहीं कहता है "शोराए आफाक थे शीरीं ब्यानी में जो लोग जिनकी मीठी वाणी को सुनकर संसार नाच उठता था वाणी में जो वेग था"

"आज उनकी कबर से आती सदा कुछ भी नहीं।"
शोराए आफाक थे शीरी ब्यानी में जो लोग।"
मरते-मरते कह गया लुकमान सा दाना हकीम
दर हकीकत मौत की दवा यारो कुछ भी नहीं"

लुकमान जैसा हकीम जो छः महीने पहले वतला दिया करता था कि आज से छः महीने के बाद उनमें फलाँ मर्ज पैदा हो जायेगा। अभी से इसका इलाज कर लो। जिसकी दवाइयाँ जादू का सा असर रखती थीं। उसको लुकमान हकीम को क्या हुआ। मामूली-सी पेट में पेचिश हो गई। dysentry हो गई और dysentry होने से वह एक दिन पानी के किनारे पानी की नाली बह रही है उसके किनारे बैठा हुआ है लोग आते हैं कहते हैं कि हकीम साहब कहाँ गईं आपकी जादू की दवाइयाँ, कहाँ गईं आपकी जादू की दवाइयाँ आप क्यों नहीं दवाई का असर लेते। क्या आपकी दवाइयों में अब असर नहीं रहा। लुकमान ने उसी समय एक दवाई की पुड़िया उठाई और वहते हुए पानी के नाली के अन्दर डाल दी। उस चलती हुई नाली का पानी वहीं रुक गया।

कहता है मेरी दवाई का असर देखना चाहते हो तो देखो।

यह मेरी दवाई का इतना असर है कि चलती हुई नाली का पानी रुक सकता है पर मेरे अन्दर बहता हुआ पानी नहीं रुक सकता, क्योंकि मेरा परवाना आ गया है क्योंकि मेरी आवाज़ आ गई है क्योंकि मेरा बुलावा आ गया हैं अब मुझे दुनियाँ में कोई नहीं रोक सकता। तो इसलिए भाई लुकमान जैसे कह गए कि मौत की कोई दवा नहीं लेकिन कहते है कि मौत की कोई दवाई नहीं भला क्या कोई इलाज नहीं है मौत का वह कहते हैं Oh ye who lives in high palaces, oh my poor rich, oh my educated illiterate I have found the solution. By knowing him who is immortal, by knowing him who is knowledge existance and Bliss we can achieve that immortality and light.

कहता है आओ मेरे प्यारे, आओ मेरे गरीब धनी, आओ मेरे लिखे-पढ़े अनपढ़, एक तो वैसे ही अनपढ़ होते हैं एक लिखे-पढ़े अनपढ़ होते हैं आओ, मैने रास्ता ढूंढ़ लिया है आओ मै तुम्हें रास्ता बतलाता हूँ। उसको जान लेने से जो अजर-अमर अभिवाशी उसको जान लेने से जिसको मौत छू नहीं सकती जो काल का भी काल है कहता है उसको जान लेने से उसको पहिचान लेने से जो प्रकाशमय है जिसका चारों तरफ प्रकाश है जो हमेशा रहनेवाला है जो ज्ञानस्वरूप है कहता है उसको जान लेने से हम उस अमर पद को प्राप्त कर सकते हैं। उस प्रकाश को पा सकते हैं। तो भाई जिन्दगी के अन्दर हमें उस मंजिल की ओर बढ़ना है उस तत्व की ओर बढ़ना है जहाँ

मौत भी हमसे घबराने लगे। जहाँ जिन्दगी भी जिन्दगी पर नाज़ करने लगे। जिस ऐसे जीवन के अन्दर मरते हो कि दुनिया हमारी इज्जत करे, अरे कहता है कि ऐसी बदनामी दुनिया में करा दो। ध्यान देना—

"शोहरत भी जिस पे तरसनी हो वह रुसवाई और है"

अरे जिस पर शोहरत भी जिस पर संसार की प्रशंसा भी द्वेष करने लगती है कहता है वह रुसवाई और ही है वह बदनामी और है वह बदनामी और किस्म की है। शोहरत भी जिस पर तरसती हो। इस ख्याल की जो एकाग्रता जो Thoughts की concentration जो है विचारों का समूह जो है वही संकल्प सिद्धी पैदा कर देता है वह इन्सान जिस समय कि उसके अन्दर ख्यालात् होते हैं। एक मिसाल बड़ी सुन्दर है अक्सर सुनाया करता हूँ आपको मालूम होगा कि ख्याल के अन्दर कितनी ताकत होती है। पंजाब के अन्दर एक गाँव की बारात जा रही थी। कुछ लोगों की बारात जा रही थी गाँव के अन्दर से वह बारात गुज़री ज़िस समय बारात गुज़री वहाँ से तो रास्ते के अन्दर प्रातःकाल का समय था बैलगाड़ियों में बारात जा रही थी। तीन सज्जन वहाँ उतर पड़े इस विचार से कि यहाँ जरा लस्सी-वस्सी पी लें। पंजाब में आप जानते हैं कि अक्सर यह रिवाज होता है कि प्रातःकाल ही वह मट्ठा बनाते हैं लस्सी बनाते हैं दूध दही बिलोते हैं और मक्खन निकालते हैं तो मक्खन निकालकर वह छाछ पीते हैं तो वह सुबह-सुबह ही उन्होंने सोचा कि बहुत जंगल पानी होले बारात न जाने अगले गाँव में किस समय पहुँचेगी। इतने में हम जल्दी से जाकर उनको

मिल जायेंगे। यह तीनों सज़्जन उतरे और यह तीनों सज्जन जंगल पानी गए। वह जंगल पानी होकर जरूरियात से फारिग होकर जहाँ से अन्दर बिलोने की आवाज आ रही थी वहाँ जाकर दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई कौन है मां जी छाछ मिलेगा छाछ, तो अन्दर से आवाज आई हैं हाँ छाछ मिलेगा। थोड़ी देर बैठ जाओ अभी देती हूँ। पाँच मिनट बीत गये फिर आवाज देते हैं मां जी हमारे साथी आगे चले गये हैं हमको जल्दी जाना है क्या हमको छाछ मिलेगा कहा नहीं बेटा ! अभी मक्खन निकाला नहीं गया था उसने वैसे ही मटके को उलटा और तीन कटोरे मटके में से भरे और वह तीन कटोरे मटके में से भर कर सामने लाकर रख दिये। तीनों ने वह कटोरे पी लिये। तीनों ने वह बड़े-वड़े कटोरे लस्सी के पिये और वह तो चलते बने। अब जव वह चले गये तो कुछ देर के बाद जब माँ मक्खन निकालने लगी तो क्या देखती है कि उसी दही के मटके के अन्दर इतना लम्बा साँप पिसा हुआ हैं। अब मन में लगी सोचने कि यह तो बड़ी हद हो गई यह तो बड़ा जुल्म हो गया यह तो अत्याचार हो गया क्योंकि साँप का सारा ज़हर जो है वह छाछ में पिस गया और छाछ जो है वह उन सज्जनों ने पी लिया। उन तीनों की तो मौत हो जायगी। अब्र वह तीनों बच न सकेंगे। अब क्या किया जाय। बड़ी हैरान हो रही है। रोती है, चीखती है, चिल्लाती है क्या करूँ अरे तूने तो हत्या कर डाली। तीन आदमियों का ही आज सुबह-सुबह खून कर दिया, सारा दिन, असल में रात को क्या हुआ था। मटका रखा गया था आँगन

में उस समय एक साँप रींगता हुआ चला आया। दूध गर्म होने की वज़ह से उसी समय उसकी मृत्यु हो गई। और तो जब सुबह माँ ने बिलोया तो वह वैसे का वैसे बीच में पिस गया। अब वह लगी रोने यह क्या हो गया तूने तो तीन की हत्या कर डाली। अब कैसे बनेगा। आखिर सारा दिन उसी रोने-धोने में गुज़र गया। रात हो गई सुवह उसी प्रकार फिर नया मटका आ गया, दही बिलोई जाने लगी वह दही बिलो रही थी कि वही बारात वापिस आ रही थी। वह तीनों सज्जनों ने सोचा कि कल माँ के हाथ से बड़ी अच्छी लस्सी पीकर गये थे। आज फिर लस्सी पीकर चलो, वह फिर वहाँ आते हैं। वह तीनों जब वहाँ लस्सी पीने को आये। छाछ पीने के लिए आये तो आते ही माँ को आवाज दी बाहर से कि माँ छाछ मिलेगा! तो माँ ने सुना कि आवाज कलवाली है तो माँ ने कहा बेटा आ गये, आ गये बेटा बिल्कुल ठीक-ठाक हो न, बिल्कुल राजी हो न, कोई दुःख तो नहीं हुआ, कुछ दर्द तो नहीं, नहीं माँ, बिल्कुल ठीक हैं। बड़े मजे में आये हैं। अच्छा बेटा बिल्कुल ठीक हो न, बिल्कुल राजी हो न हाँ, माँ बिल्कुल राजी हैं। छाछ मिलेगा, हाँ मिलेगा। वह बैठ गये, थोड़ी देर के बाद माँ तीन कटोरे छाछ के लेकर आयी फिर पूछती हैं बेटा, ठीक हो न, बिल्कुल माँ तुम बार-बार हमसे यह क्यों पूछती है? क्या बात है आखिर बतला तो सही। कहने लगी बेटा क्या पूछते हो अरे कल यह मेरे साथ तो यह हालत हो गई कल मैंने तुम्हें तो ज़हर पिला दिया जो लस्सी मैने तुम्हें पिलायी थी- जो छाछ तुम्हें पिलायी थी उसमें साँप पिस गया था और वह साँप का ज़हर

तुम्हारे अन्दर चला गया। सच्चा वाकयात यह बतलाया है कि ज्योंही उस माँ ने यह कहा तो तीनों आदमियों के अन्दर से चीख निकली कहने लगे साँप ! जहर ! साँप का ख्याल आते ही दो आदमियों के मुँह के अन्दर से उलटी आयी और दोनों के दोनों वहाँ मौत के मुँह में चले गये। दोनों के दोनों वहाँ पर मरे तीसरा जो बचकर आया तो उसने लुधियाना के अन्दर यह बात आकर बतलायी। अब आप बतलाइये जहर ने मारा कि जहर के ख्याल ने मारा। तो दु:ख देनेवाली वस्तु जहर हुई या जहर का ख्याल हुआ। हमने तो एक जगह पर लिखा कि—

"इक बार मर जाय इक बार"
अगर मर जाय तो जीने का मज़ा आये तुझे।
और जहर अगर पीये तो अमृत का मज़ा आये तुझे।
और जहर अगर पीये तो शिवजी की तरह ओ जानें मन।
तो काल के भी काल बनने का मजा आये तुझे।
तो काल के भी कहा

जहर मीरा ने पी तो हो गयी मीरां अमर और जहर अगर पीये तो प्रलाहदी मजा आये तुझे और अगर मंजूर हो मंसूर-सा लेना मजा।

तो दार पड़ चढ़ जाये नजर शक्ले खुदा आये।
अगर मंसूर-सा मजा लेना हो तो फाँसी चढ़ जाये।

तो शक्ले खुदा नज़र आ जाये तो कहता है ख्याल इन्सान को गिराता है चीज नहीं गिराती ख्यालात की बुलन्दी इन्सान को उठा देती है और ख्याल की गिरावट इन्सान को गिरा देती है। तो भई अपने ख्यालों को ऊँचा रखो इसलिए तो कहा

शाहंशाहे ज़हान हैं साइल हुआ हैं तू—
पैदा कुने जमान है, डाइल हुआ है तू
खंजर की क्या मज़ाल कि इक जख्म कर सके
तेरा ही है ख्याल कि घायल हुआ है तू—?
सौ बार ग़रज होवे तो धो-धो पिये कदम
क्यों चीखता है मिहरो माह पै माइल हुआ है तू

अरे क्यों चीखना है हर एक के आगे सिर रगड़ता है कल दूसरी कामनाओं को दूसरों के आगे रखता है परसों तीसरी कामना को तीसरे के आगे रखना है कहता है

सौ बार गरज़ होवे तो धो-धो पियें कदम।
हमबग़ल तुझसे रहता है हर आन "राम" तो
बन पर्दा अपनी बस्ल में हाइल हुआ है तू।

वह तो स्वयं तुझसे मिला हुआ है तू ही उससे जुदा हो रहा है वह तो तुझसे मिला हुआ है तो प्यारे उस पर्दे को फाड़ दे जो तूने अपने ऊपर ओढ़ रखा है दोषों का पर्दा वह अज्ञान का पर्दा वह द्वैत का भेद जो तू ने अपने आगे रखा है। वह घूँघट पट जिस घूँघट के उठाने से तुझे वास्तविकता में पिया के दर्शन होते हैं इसलिए ओ प्यारे यह जो घूँघट का पर्दा यह जो दुई का पर्दा यह जो द्वेष का पर्दा और यह मोह और द्रोह का पर्दा संसार में दुख देने वाली स्तुएँ दो होती हैं एक मोह और द्रोह, मोह और द्रोह जब यह दो चीजें इंसान के जीवन में आ जाती हैं मोही भी जल-जलकर मरता है और द्रोही भी जल-जलकर मरता है तो मोह को बदलना चाहते हो मोही और द्रोही मोह और

द्रोह इंसान की जिन्दगी का नाश कर देते हैं। इसलिए अगर जीवन में दुखों से बचना चाहते हो, जीवन में अपने तत्व को पाना चाहते हो तो मोह और द्रोह को बदल डालो। राग और द्वेष को बदल डालो, राग सबसे बड़ी चीज़ है अब राग को दो रूपों में बदल डालो—राग को अनुराग में और राग को वैराग में; वैराग भोगों से अनुराग प्रभु चरणों से जितना जितना भोगों से वैराग बढ़ता जायगा उतना-उतना अनुराग बढ़ता जायगा और जितना-जितना उधर अनुराग होगा उतना-उतना भोगों से वैराग होगा। एक दिन ऐसा आयगा कि इधर अनुराग पूर्ण हो जायगा और उधर वैराग पूर्ण हो जायगा। वैराग की पूर्णता संसार से छुटकारा दिला देगी और अनुराग की पूर्णता प्रभु की जात में समा देगी। तो वह दोनों मार्ग वैराग और अनुराग तो जीवन में दोनों ही बढ़ाते चले जाओ, दोनों Complementry and supplementry Interdependant है एक दूसरे पर निर्भर हैं अनुराग बढ़ा वैराग बढ़ा और वैराग बढ़ा तो अनुराग बढ़ा और जहाँ यह दोनों बढ़ते चले गये वैराग और अनुराग तो एक दिन ऐसा आता है कि जिस समय इंसान का वैराग भी पूर्ण हो चुका होता है और अनुराग भी पूर्ण हो चुका होता है। तो वैराग की पूर्णता संसार की वास्तविकता को बतला देती है और अनुराग की पूर्णता उस आनन्द का अनुभव करा देती है उस मस्ती का अनुभव करा देती है इस-जीवन के अन्दर इस जिन्दगी में रहते हुए ही इस तत्व को देखो और यह तभी हो सकेगा जब अपने जीवन के अन्दर तुम

अपने मन को, मन का मतलब हैं ख्यालों को अपने ख्यालों को अपने काबू में रखोगे। वह कहते हैं Control your thoughts you will control your life, order your thoughts and you order you life. अपने विचारों को काबू कर लो जो जीवन तुम्हारे काबू हो जायगा। अपने विचारों पर हुक्म चलाओ तो जीवन तुम्हारे हुक्म से चलेगा तो इसलिए जिन्दगी के अन्दर इस चीज को जब तुम समझ जाओगे तो देखोगे कि इस ख्याल के अन्दर कितनी महान् ताकत है। यह ख्याल ही इंसान के जीवन का निर्माण कर रहा है असल में man is the Creation of his own thoughts और संसार में जो है वह अपने ही ख्यालों की उपज है। इसलिए अपने ख्यालों को महान् बनाने की कोशिश करो आप देखोगे कि यह अज्ञानता का पर्दा ज्यों ही फटेगा द्वैत का पर्दा ज्यों ही फटेगा तो फिर किस से राग और द्वेष कर सकोगे और फिर कौन है दूसरा जिससे तुम द्वेष कर सकोगे और किससे बुराई कर सकोगे। फिर तो हर रंग में तुम्हें उस प्यारे की सूरत नजर आती है और जब तक यह नजर नहीं आती इसलिए अपने मन को लगातार उसके चरणों में बाँधते चले-जाओ। उसकी कृपा की डोरी के साथ बाँधते हुए रस्सी के साथ बाँधते हुए अपने जीवन को मन को क्षण-क्षणके अन्दर कोई बड़ा नशा दिलाने की कोशिश करो। लोग कहते हैं महाराज मन नहीं लगता। भाई सच्ची बात है मन चाहता है खुशी, जब तक मन को कोई बड़ी चीज़ नहीं मिलती वह छोटी चीज़ का त्याग नहीं करता। जब तक किसी को दो हजार की नौकरी मिली

हो और जब तक उसको चार हजार की नौकरी नहीं मिलती वह दो हज़ार को नौकरी को छोड़ने को तैयार नहीं होता। इसी प्रकार जब तक मन को कोई बड़ा आनन्द नहीं होगा, कोई बड़ी मस्ती उसे न दिला दोगे, कोई बड़ा नशा उसे न पिला दोगे तब तक वह छोटे नशे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। जब तक उसे कोई बड़ा नशा न मिल जाय वह इधर से भी छोड़ दे और उधर से भी उसको न मिले तो उसकी हालत क्या होगी। इसलिए भई अपने जीवन में इस तत्व पर विचार करो, इस राज़ को समझो, इस भेद को जानो और इस भेद को जानकर अपने मन को लगातार इस चिन्तन में डालो कि किसी-न-किसी प्रकार एक दिन इस मन को वह मस्ती की हालत मिल जाय वह एक बूँद भी उसको उस नशे की पिलाई गई, एक बूँद भी उसे प्याले की मिल गई जिस नशे को पीकर इन्सान दुनिया की सब दौलत को भूल जाता है, सब ख्यालात को भूल जाता है। जहाँ बेख्याली आ जाती है और एक बूँद भी इसको उस नशे की मिल गई तो यह दुनिया के नशों की ओर भाग न सकेगा। जिस-जिसको भी इस नशे की एक बूँद मिल गई जिस-जिसने भी अपने जीवन के अन्दर इस एक तत्व को पहचान लिया कि इन्सान को इन्सान बनना है, इन्सान की जितनी इन्तजार होती है भगवान उतना जबरदस्त बेकरार होता है। लेकिन इन्सान भागता फिरता है, इन्सान भोगों में भाग रहा है भगवान तो इन्सान की खोज करता फिरता है। लेकिन इन्सान नहीं मिलता जिस दिन इन्सान भगवान को मिल जाता है वास्तविकता में इन्सान की सबसे बड़ी महानता यही है कि

वह भगवान को भी अपनी तरफ से व्याकुल बना लेता है। भगवान को भी बेकरार कर देता है, क्योंकि भक्त की इन्तजार जो है वह भगवान को बेकरार कर देती है। कहा एक प्रेमिका ने अपने प्रीतम को पत्र लिखा कि बहुत दूर २० मील पर प्रेमी रहता था कि कल शाम को तुम्हारा भोजन मेरे पास है। कल तुम्हें मेरे साथ भोजन करना होगा। मैं तुम्हारी इन्तजार करूँगी जब तक तुम न आओगे तब तक तुम्हारी थाली सजी हुई पडी रहेगी, तुम्हारे आने पर मैं भोजन करूँगी। रात को वह पत्र मिला, प्रीतम ने वह पत्र देखा प्रेमिका का पत्र है २० मील दूर जाना है रात में मोटर गाड़ी भी नहीं मिलती, सुबह होते ही चल पड़ा, ४-५ मील चला थकावट महसूस हुई, ख्याल आया कि थोड़ी देर बैठ जाऊँ तुरन्त अन्दर से ख्याल आया कि नहीं, नहीं बैठता नहीं क्योंकि जितनी देर मैं बैठूँगा उतनी देर उसे ज्यादा भूखा रहना पड़ेगा। उसकी इन्तजार का ख्याल आ जाता है बैठने लगता हैं फिर सोचता है नहीं, नहीं बैठता जहाँ २-४ मील के बाद ख्याल आता है कि थोड़ी देर बैठ जाऊँ वहाँ उसकी इन्तजार उसको याद आ जाती है और और वह उसकी इन्तजार को याद करते ही फिर चल देता है, ठहरता नहीं रास्ते में चलता चलता पहुँचता है वहाँ शाम के ७ बजे तो उसी प्रकार दरवाजों को खुले हुए, ध्यान देना भई दरवाजों को हमेशा खुला रखना कहीं ऐसा न हो कि प्रीतम तुम्हारे घर में आयें और तुम्हारा दरवाजा बन्द देखकर वापिस चला जाय, हर समय मैं तो कई बार कहा करता हूँ कि इस बात का ख्याल न करो कि भगवान

तू इस समय बे आजा अरे नहीं, नहीं जिस समय मेरे प्रभु तुम्हें समय हो मेरे समय की बात नहीं, जब तुम्हें समय हो जब तुम्हें ख्याल हो कि अब आना है जब तू सब तरफ से फारिग हो जाय और जब तुमको ख्याल आ जाय कि मैं जाकर भक्त से मिल आऊँ, तू आ जाना और मेरा दरवाजा खुला रहेगा। क्षण भर के लिए भी मै तेरे लिये अपना दरवाजा वन्द न कर सकूँगा। क्योंकि न जाने कब तुझे मेरा ख्याल आये मैंने कहा था न आगे कि हमें तो उसका ख्याल आए पर उसको हमारा ख्याल न आये तो कोई लाभ नहीं होता, भाई हमें उसके दर्शन हो जायँ तो कोई लाभ नहीं उसको हमारे दर्शन हो जायँ तो लाभ ही लाभ हो जाय, एक लाखोंपति के एक गरीब रोज दर्शन करता है भला वतलाइये वह गरीब लाखों पतियों के रोज दर्शन करता है, पर वह गरीब कभी अमीर हुआ ? लेकिन अगर लाखों पति की नज़र हो जांय गरीब पर तो निहाल हो गया न, तो मेरी नजर भगवान पर पड़ी रहे और भगवान सामने खड़े हों तो क्या लाभ है ? हाँ, भगवान की नज़र मेरे ऊपर पड़ जाती तो बस काम बन जाय लोग कहते हैं आ दर्शन दे, आ दर्शन दे। मैं कहता हूँ भई दर्शन कर ले दर्शन कर ले आकर और जरूरत है तो, जब तुझे फुरसत हो तो आकर दर्शन कर लेना क्योंकि अगर मैं दर्शन करूँगा तो कोई लाभ नहीं अगर मेरे दर्शन हो गये तो लाभ ही लाभ है। ठीक है न ? एक राजा की सवारी बाजारों से गुज़रती हो एक बहुत बड़े राजा को लाखों अमीर भी देख रहे हैं उसको, और लाखों गरीब भी देखते हैं लेकिन न तो

अमीर राजा के दर्शन से गरीब होता है न ही कोई गरीब राजा के दर्शन से अमीर होता है। लेकिन और किसी गरीब पर राजा की चलते-चलते नजर पड़ जाय कि उसको निहाल कर दो तो बस हो गया निहाल, तो इसलिए कीमत किसकी है? हमारी उस पर नज़र लगी रहे या उसकी हम पर? उसकी हमारे पर नज़र लगी रहे हमारी तो बस उसके चरणों में प्रीति लगी रहे। हमारे दिल में उसकी याद बनी रहे और उसके दिल में कभी-कभी हमारी फरियाद पहुँच जाय।

हमारी याद की कभी फरियाद उसके दिल में आ जाय तो बस समझ लो कि काम हो गया। तो न जाने किस समय उसके दिल में फरियाद पहुँच जाय, न जाने किस समय उसकी याद का ऐसा समय आ जाय कि उसके दिल में फरियाद पहुँच जाय तो भाई इसलिये दरवाजे को हमेशा अपने खुले रखो, तो बात कहाँ चल रही थी। कि दरवाजा जो है वह अपना खुला रखो वह प्रेमी प्रीतम जब प्रेमीका के घर में शाम को ७ बजे पहुँचा। प्रेमिका दरवाजे खोलकर इन्तजार कर रही थी। दूर से ही आते प्रीतम को देखा तो चरणों को छुआ और चरणों की छूकर कहती है ए प्यारे, तूने बहुत कष्ट उठाया हालांकि भाई एक बात ध्यान देना, किसी को प्यारा कहकर फिर उसको यह कहना कि तूने कष्ट उठाया यह प्यार का अपमान होता है। युधिष्ठिर के दरबार में कृष्ण ने देखा यज्ञ हो रहा था एक पांत भोजन कर बैठी थी दूसरी पांत खाने को बैठने वाली है। ब्राह्मण सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनकर खड़े हैं और उस समय कृष्ण ने देखा कि कोई कमरा साफ

करने नहीं आया तुरन्त उसने अपने पीताम्बर को ऊपर उठाया। दोनों हाथों से पत्तल इकट्ठे किये और पत्तल उठाकर एक तरफ फेंके। एक हाथ में बाल्टी ली एक हाथ में झाड़ू लिया था और कमरा साफ करने लगा। इतने में किसी ने जाकर युधिष्ठिर से कह दिया अरे अनर्थ हो गया है कृष्ण कमरा धो रहे हैं जिस समय युधिष्ठिर दौड़ा-दौड़ा आया आते ही उसने कृष्ण के दोनों हाथ पकड़ लिये और दोनों हाथ पकड़कर कहने लगा कि प्यारे, कृष्ण हँस पड़े अब प्यारे कहने के बाद तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते now I am quite safe अब मैं बिल्कुल safe हो गया हूँ, अब मैं सुरक्षित हो गया क्योंकि अगर प्यारा कहने के बाद तूने कहा कि यह तूने क्या किया तो यह प्यार का अपमान होगा। इसलिये तू चुप कर जा और मैं जो मर्जी करूँ तो वह कहने लगी प्रेमिका, कहती है प्यारे तूने बड़ा कष्ट उठाया इतनी दूर से आया तो प्रेमी कहने लगा, प्रेमिका तू भी तो मेरी इन्तजार में थी, तुझे भी तो मेरी इन्तजार थी। मैं तो हर समय थककर बैठ जाता, लेकिन तेरी इन्तजार ने मुझे मेरी सारी थकावट को भुला दिया, वास्तविकता में यह मेरी ताकत न थी तेरी ताकत ने ही मुझे यहाँ बुला लिया तो भगवान में इतनी ताकत नहीं होती कि वह आ सके, यह भक्त की ताकत होती है कि भगवान को बुला सके।

"अर्जो समां कहा तेरी जो तुझको पा सके"

कहता है कि ज़मीन-आसमान में इतनी ताकत कहाँ कि तुझको पा सके।

कितनी है भक्त की महानता ? तो इसलिए अपने जीवन के अन्दर इस इन्तजार को कायम करने की कोशिश करो। और यह इन्तजार होता है पवित्रता से। जीवन के अन्दर निर्मलता आ जाने से। Purity for the purity sake. जब ऐसी जिन्दगी बन जाती है तो फिर भक्त भगवान् से कुछ माँगता नहीं। जैसे कि कई-कई बार आपसे कहा कि If God wants anything he can have anything from me. अगर ईश्वर को मेरे से कुछ जरूरत हो तो वह ले सकता है। If God wants anything he can have it. I do not want anything from him. Who cares whether He is almighty or not ? I do not want any power from him nor any manifestation of his power. I love Him because I want to love him and he is God of love for me. that is quite enough for me. I do not want any more questions. कौन यह परवाह करता है कि ईश्वर शक्तिमान है या नहीं। कहता है कि किसे इस बात की परवाह है कि ईश्वर ताकत रखता है या नहीं ? लोग कहते हैं कि ईश्वर को क्यों मानें ? मैं कहता हूँ क्या जरूरत है मानने की ? अगर जान सकते हो तो जान लो। अगर केवल इसलिए मानते हो कि वह तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति कर दे तो बड़े धोखे में हो भाई। बड़ी गलती में हो बड़े गलत रास्ते पर जा रहे हो। भाई, तुम्हारे अन्दर भगवान् से ज्यादा ताकत है। क्योंकि भगवान् की ताकत नहीं कि इन्सान को सुधार सके। लेकिन इन्सान की ताकत है कि कि भगवान् को

बुला सके। इसलिए मैं कहा करता हूँ greatness of man इन्सान कितना महान् है। ऐ इन्सान तू अपनी महानता को पहचान ! यह तेरी ही महानता है कि तू इतना ऊँचा उठता है कि तुझे कुछ माँगने की जरूरत नहीं रहती। एक सन्त को देवताओं ने देखा कि यह बड़ा महान् हैं। इतना महान् है कि कुछ हद नहीं। देवताओं ने सोचा कि इसको जाकर कुछ देना चाहिए। तो वे भगवान् के दरबार में पहुँचे। भगवान् के दरबार में पहुँचकर उन्होंने कहा कि भगवन् ! मृत्यु-लोक संसार में एक सन्त है जो कि बड़ा महान् है। और जिसकी greatness से, जिसकी महानता से हम बड़े खुश हो चुके हैं। हम चाहते हैं कि उसे कुछ दें। भगवान् मन में तो हँस पड़े क्योंकि वे जानते थे कि सन्त हृदय क्या होता है। लेकिन फिर भी सोचने लगे कि इन देवताओं को अभिमान हो गया है। इनको जाने दो। ये सोचते हैं कि हम वर दे सकते हैं, हम वरदान दे सकते हैं। चलो इन्हें सन्त के पास जाने दो। पर भाई, यहाँ तो शहनशाहों की भी परवाह नहीं की जाती। सिकन्दर आलम जब भारत के अन्दर आता है और जब वह सन्त की तलाश में, साधु की तलाश में मैदाने-जंग जाता है क्योंकि उसके गुरु ने कहा था कि भारत से मेरे लिए तीन चीज़ें लेकर आना। एक तो भारत से गीता लेकर आना, एक गंगाजल लेकर आना और भारत की भूमि में बड़े-बड़े फकीर बड़े-बड़े सन्त होते हैं, तू भारत से एक फकीर लेकर आना। तो गंगाजल और गीता तो उसने मँगवा ली। जब उसने पोरस को हराया तब घोड़े पर चढ़कर जंगल में एक फकीर की

तलाश में गया। जब जंगल में पहुँचा तो क्या देखता है कि वहाँ दूर सामने एक कुटिया है। कुटिया में एक सन्त बैठा हुआ है। सन्त की कुटिया के बाहर एक कुत्ता बैठा है। इधर सिकन्दर ने अपने घोड़े को पेड़ से बाँध दिया और बड़ी शान के साथ, बड़े अभिमान के साथ ठक ठक करता आगे चला। लेकिन भाई सन्त में एक बात होती है कि अगर कोई प्रेम से आता है तो वह उसके आगे शीश झुका देते हैं। और अगर कोइ अभिमान के साथ आता है तो उन जैसा कोई बुरा नहीं होता। इसलिए कहा कि—

न शाह हूँ जहाँ का, न दर-दर का भिखारी हूँ
न मस्जिद का नमाजी हूँ न मंदिर का पुजारी हूँ
मैं एक अश्क हूँ प्रेम का और प्रेम की आँखों में पला हूँ
मैं प्रेम पुजारी हूँ और प्रेम भिखारी हूँ।

तो सन्त के सामने जब सिकन्दर आलम पहुँचा और कुत्ते ने देखा तो भौंकना शुरू कर दिया। सन्त ने दूसरी तरफ मुँह फेरा हुआ था। सन्त देख रहे थे कि अभिमान में आ रहा है। सिकन्दर को गुस्सा आया और कहने लगा, फकीर को कुत्ता रखने की क्या जरूरत है? तो अन्दर से आवाज आती है कि—

ता सगे दुनिया नजद नआयत

ऐ सिकन्दर! इसलिए यह कुत्ता रखा गया है ताकि तेरे जैसे दुनिया के कुत्ते अन्दर न आयें। बात कहाँ चल रही थी? कि देवता सन्त के पास पहुँच गए कि सन्त को किसी प्रकार कुछ दे दिया जाय। उन्होंने जाकर भगवान् से कहा कि हम

सन्त को कुछ देना चाहते चाहते हैं। भगवान् ने कहा था कि जो कुछ वह माँगे वह दे देना उसको वह उसको हम दे देंगे। देवता लोग सन्त के पास पहुँचे। क्यों? सन्त कहता है आओ देवताओ, तुम्हारा कैसे आगमन हुआ? वे बोले, हम इसलिए आये हैं कि तुम हमसे कुछ माँगो, बोलो हम तुम्हें क्या दें। सन्त ने कहा, मुझे क्या दोगे? मेरे पास क्या नहीं जो तुम दे सकते हो? देवता कहने लगे, नहीं-नहीं क्या तुमको धन दे दें, तुमको wealth दे दें। सन्त बोला, That is poison, यह तो ज़हर है। वे बोले, तो इज्जत दे देवें। सन्त कहता है, इसका कोई मतलब नहीं, meaningless है। वे बोले, फिर तेरे हाथ में ऐसी शक्ति दे दें कि तू रोगियों का रोग दूर कर सके। कहता है कि यह तो संसार का काम हैं। संसार भोगी बनता रहेगा। भोगी भोग भोगते रहेंगे। रोगी रोगी होते रहेंगे। मै काहे को मुसीबत मोल लूँ। भोग छोड़ना नहीं तो रोगों से बचना नहीं। मैं किस-किस का रोग दूर करता रहूँगा। यह तों जो भोग भोगेंगे वे रोग भी भोगेंगे। मुझे इससे कोई मतलब नहीं। देवता कहते हैं कि तेरे हाथ में ऐसी ताकत दे दें कि जिसके ऊपर भी तू हाथ रख दे तो वह यदि दुःखी हो तो सुखी हो जाय, भोगी हो तो योगी हो जाय। सन्त बोला, यह तो देवताओं का काम है। जिस पर देवता कृपा करेगा वह भगवान् के रास्ते में चला जायगा। मैं काहे को परेशान होता रहूँ। मुझे यह काम नहीं करना। यह सुनकर देवता बड़े हैरान हुए कि यह बड़ा अजीब आदमी है। इतना महान् इन्सान भी हो सकता है कि दुनिया

का कोई भी पदार्थ यह चाहता नहीं। उन्होंने कहा कि यह देवता का अपमान है। इस इन्सान की महानता ने आज देवता का अपमान कर दिया। आज देवताओं के सिर झुक रहे हैं। लेकिन मन में ईर्ष्या हो रही है कि इन्सान इतना ऊँचा हो सकता है कि देवताओं के आगे भी वह यह कह दे कि मुझे कुछ नहीं चाहिए। इतने में देवताओं ने आपस में सलाह की। और बोले, देखो सन्त या तो तुम हमसे कोइ वरदान माँग लो नहीं हम कोई वरदान तेरे ऊपर ठोस देंगे। उसने कहा यह बड़ी मुसीबत हो गइ। ये तो वगैर माँगे ही देना चाहते हैं। तो सन्त के मन में एक युक्ति पैदा हो गई और कहने लगा कि Very well Sir, very well Sir, I have found the solution. Give me the power that I may be doing lot of good to the whole world but I should be completely unconscions of all that.

ध्यान देना कितनी महान् बात कहता कि भगवान् मुझे एक वरदान—ए देवताओ मुझे एक वरदान देदो कि सारी दुनिया का मुझ से भला होता रहे पर मुझे उस भले का ज्ञान न हो। कितनी महनता है इतनी-सी बात हम कहते हैं हम इतना-सा दान करते हैं तो हम कहते हैं कि दुनिया को जरा सुना दो कि हमने इतना दान दे दिया। इतना-सा काम करके कहते हैं कि दुनिया को सुना दो हमने इतना काम कर दिया है कहता है कि दुनिया में यह बात कर दो कि मुझ से दुनिया का लगातार भला होता रहे पर मुझे उस भले का ज्ञान न हो।

देवताओं ने इस बात पर विचार करते हुए तथास्तु कहा और सोचा कि जब सन्त चला करेंगे, सन्त चले तो जब तो सन्त का साया आगे पड़ रहा हो तो उसमें कोई आए तो कुछ-न बने लेकिन सन्त का साया जब पीछे पड़ रहा हो तो उस समय में जो भी कदम रखेगा भोगी होगा तो योगी हो जायगा। दुखी होगा तो सुखी हो जायगा लाखों इन्सान उसके साया पर, चलते हुए साए का वास्तविक मतलब तो यह हैं दृष्टान्त दिया जाता है समझने के लिए जो भी सन्त की छत्र-छाया में जो सन्त की दिव्य उपदेशों की छाया में चलता जाए सन्त की छाया बनकर चलता जायगा उसको संसार के अन्दर कोई भी रोग और भोग सता न सकेगा इतना विचार करते हुए बाद में, सन्त के आगे सिर झुकाते हैं और देवता चलते बनते हैं मेरा कहने का मतलब है कि यह इन्सान की महानता है It is the greatness of man that man makes the God bow before Him.

यह इन्सान की महानता है जो भगवान् को भी इन्सान के आगे झुका देती है। और यह इन्सान की वह महानता है जो इन्सान को भगवान का दर्जा बतला देती है, इसलिए भाई अपनी महानता को पहचानो, realize your own greatness realize your own value, realize your own utility. अपनी value को पहचानो, अपनी कीमत को समझो दुनिया के बाजार में आकर,

"दुनिया के बाजार में आकर बन्दे भूल न जाना।
ऐसा सौदा करना यहाँ पड़े न घाटा खाना॥"